स्तालिन पुरस्कार प्राप्त उपन्यास

नया मनुष्य

जार्जिया प्रजातंत्र संघ के ख्यातनामा उपन्यास लेखक
श्री लियो किआचेली की महानकृति 'ग्वादी बिग्वा'
का हिन्दी रूपान्तर

अनुवादक

श्यामू संन्यासी



रवाणी एण्ड कम्पनी
प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता
भीमराज बिल्डिंग · ४०५ कालबादेवी, बम्बई–२

नया मनुष्य : : नवसर्जन पुस्तकमाला प्रकाशन-३

प्रथम संस्करण : अप्रैल १९५१

११०० प्रतियाँ

मूल्य

५-८-०

मुद्रक-प्रकाशक :

जमनादास माणेकचन्द रवाणी

अनेकान्त मुद्रणालय, मोटा आंकड़िया; काठियावाड़

प्रकाशकीय

प्रस्तुत उपन्यास सोवियत देश के ज्यार्जिया प्रजातंत्र संघ के किसानों के उस संघर्ष की कहानी है जो उन्हें अपने यहाँ की छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटी हुई खेती को तोड़कर उसके सामूहिकरण के समय करना पड़ा था।

उपन्यास का नायक ग्वाटी किश्या बत चलाक और हाजिर जवाबी में बेमिसाल है। उसकी सामाजिक हैसियत गरीब किसान की है। जनम भर उसने कामचोरी की है। सोवियत व्यवस्था की स्थापना के बाद भी वह सामूहिक परिश्रम और दायित्व से मुँह चुराता और मेहनत की कमाई के लिए समाज के शत्रु धनी और कुलक किसानों के हाथ का खिलौना बनता है। लेकिन बार-बार ठगे जाने पर वह सबक सीखता है। सामाजिक उत्तरदायित्व अपने पांच बच्चों का ख्याल और, सबसे अधिक, पड़ोसिन मरियम का प्रेम उसके विकास में सहायक बनता है। आखिर अपने पुराने संस्कारों से नाता तोड़कर नये जीवनमें प्रवेश करता और प्राणों पर खेलकर गांव की सामूहिक सम्पत्ति आरामिल की रक्षा करता है।

पुरानी मान्यताओं, पुराने संस्कारों व्यक्तिगत स्वामीत्व की सड़ियल भावनाओं की केंचुल छोड़कर नये मनुष्य के अवतरण की भव्य और पावन कथा ही इस उपन्यास की विषय-वस्तु है। लेखक ने चरित्र चित्रण में कमाल कर दिया है।

मझोले किसानों की अस्थिरता, नारी और पुरुष के नये सम्बन्ध और इन सबके प्रति सही स्वस्थ दृष्टिकोण बड़े ही कलात्मक ढंग से पेश किया गया है। विषय वस्तु और शैली सभी दृष्टियों से यह कृति अनुपम है। विश्वास किया जाता है कि इसके प्रकाशन से हिन्दीके पाठकों और लेखकों-सभी को प्रसन्नता होगी।

१

बारह बरस का एक लड़का बकरी का दूध दुह रहा था। बकरी एक खम्भे से बँधी थी। उस खम्भे पर शहतीरों से बनी एक कमरेवाली झोंपड़ी की आगे निकली हुई छत टिकी थी। लड़का बकरी के फैले हुए पाँवों के पास उकड़ूँ बैठा और अपने उघाड़े नङ्गे घुटनों के बीच दोहनी (जिस बर्तन में दूध दुहा जाता है) थामे बकरी के फूले हुए थनों को ज़ोर-ज़ोर से निचोड़ रहा था।

'शेका, हठ मत कर! दूध को 'झमोरे' मत (ऊपर मत चढ़ा)। मुझे दुह लेने दे। झमोरने से दूध उड़ जायगा।' उसने नाराज़ होकर कहा।

लेकिन बकरी अपनी पीठ को कुबड़ की तरह ऊँचा उठाये, पेट को पसलियों में खींचे, बिलकुल लापरवाही से अपने बच्चे को चाट रही थी, जो अपने शरीर को स्नेहपूर्वक अपनी माँ के शरीर के साथ रगड़ रहा था।

सवेरा होने को ही था। शारदीय उषःकाल का कुहरा झोंपड़ी के चारों ओर छा रहा था। निशाकालीन आर्द्रता हवा में घनीभूत हो रही थी और धरती पर बहते हुए पतले कीचड़ में परिवर्तित होने लगी थी।

कीचड़ में लड़के के पांव फिसल रहे थे। अपने आपको सभाले रखने के उसके सारे प्रयत्न निष्फल हुए जा रहे थे। इससे उसका क्रोध और भी बढ़ गया था।

झोंपड़ी का दरवाज़ा चर्र्-चूँ करता हुआ पूरा खुल गया। दरवाज़े की चौखट में मोटे पेट और लम्बे, अस्त-व्यस्त बालोंवाला एक आदमी खड़ा दिखलाई दिया। उसने अपना लबादा एक कन्धे पर डाल रखा था। उसके पांवों में सूअर के चमड़े की चप्पलें थीं, जो लिपटे हुए चिथड़ों के ऊपर तस्मों से बँधी थीं। उसने बड़ी सावधानी के साथ ऊँची देहलीज को पार किया। फुर्ती से अपने पीछे दरवाज़े को खींचकर बन्द किया, चुपके से चारों ओर एक निगाह डाली और तब लड़खड़ाते पांवों से जल्दी-जल्दी आँगन में आया।

दूध दुहनेवाले लड़के की ओर उसने देखा तक नहीं। लेकिन पास से गुजरते समय उसने लड़के को प्रोत्साहित करनेवाले स्नेह पूरित स्वर में कहा:

'इस शैतान की खाला से दूध निकलवाने का यही एक ढङ्ग है, बर्दगुनिया, ठीक यही ढङ्ग है! समुरी के थन की आखरी बूँद तक निचोड़ ले...इस जैसी चोटी और दूध समोरनेवाली बकरी सारे ओरकेतो गांव में दूसरी न होगी।'

इतना कहकर वह लड़के से कुछ क़दम के फासले पर खड़ा हो गया और इस तरह बोला मानो अपने आपसे कह रहा हो, परन्तु साथ ही लड़का भी सुन ले:

'तेरी माँ तक को तो इस चुड़ैल ने मौत के घाट उतार दिया...'

वह बीच आँगन में आ खड़ा हुआ और भिनसारे के वातावरण से मौसम का अन्दाज़ लगाने लगा: आज दिन भर मौसम कैसा रहेगा?

केवल आँखों पर भरोसा करना उसने ठीक न समझा। एक शिकारी कुत्ते की तरह नाक उठाकर, नथुने सिकोड़कर, ओठों से चटखारा लगाते हुए उसने फेफड़ों में हवा भरी। वह गन्ध और स्वाद दोनों ही के द्वारा मौसम को परखना चाहता था।

'हूँ ! तो आज दिन भर मौसम अच्छा रहनेवाला है, क्यों ? हां, सो तो है ही ।' उसने धीरे से अपने आपसे पूछा और तब स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर दिया। कई ऐसा वजह थे। जिसके कारण वह बड़ा ही प्रसन्न मालूम पड़ रहा था। उसने लड़के की ओर, जो अब भी बकरी से जूझ रहा था, एक निगाह डाली और अपनी प्रसन्नता में उसे भी साझीदार बनाने के इरादे से बोला 'क्यों मेरे लाड़ले क्या तूने कभी यह भी सुना है कि सवेरे का कुहरा एक लबादा है ? सूरज सोकर उठता है और अपने आपको लबादे में लपेट लेता है—फिर लबादा फेंक देता है और धरती पर सुनहरी किनार फैला देता है—इस सम्बन्ध में तुम्हारी पुस्तकों में क्या लिखा है ?'

लेकिन वर्दगुनिया अपने काम में ही तल्लीन रहा। उसने उस आदमी की बातों की ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया। इस पर वह झबराले बालोंवाला आदमी, बहुदपन से आँखें मिचकारता और नन्हें-नन्हें कदमों से चलता हुआ उसके समीप पहुँचा। लेकिन वह इस तरह खड़ा हुआ कि लड़का उसकी एक बाजू को न देख सके, जो किसी कारण से, उसके लबादे के नीचे से, कूबड़ की तरह ऊपर को उठ आई थी।

पास पहुँचकर लड़के के कन्धे को थपथपाते हुए उसने कहा—मेरी बात पर यकीन कर, मेरे लाडले ! यकीन कर कि तेरा बाप सच कह रहा है। मेरे सभी छोकरों में एक तू ही भला निकला है. और तो सब साले पाजी हैं। न किसी काम के, न काज के। बकासुर जैसा मुँह फाड़ देते हैं कि खाओ, ठूँसो, ठूँसो ! इस तरह. .'

उसने अपना चौड़ा और विकराल मुँह फैला दिया और उसमें बार-बार इस तरह मुट्ठी भरने लगा मानों कोई चीज गले के अन्दर ठूँस रहा हो !

'चार हैं, पूरे चार मुँह, जिन्हें इस तरह ठूँस-ठूँस कर भरना पड़ता है...तेरी तो गिनती ही नहीं है, वर्दगुनिया। और मेरी भी नहीं...और यह सब इतना बुरा न होता...'

अन्तिम शब्द कहते-कहते वह चिल्लाने लगा था। निश्चय ही वह उस बात को काफी महत्त्व दे रहा था। ऐसा लगता था कि उसकी आवाज़ ठेठ कलेजे में से उठ रही है। उसके स्वर में भय घृणा और आश्चर्य का भाव था।

'यह सब इतना बुरा न होता, यदि खानेवाले केवल चार ही होते; परन्तु यहाँ तो छह छः हैं।' अब उसने अपना स्वर धीमा कर दिया था और इस तरह बोल रहा था मानों अपने आपसे तर्क-वितर्क कर रहा हो—छह मुँह हैं। और, जो चाहे करो, हर मुँह को भरना ही पड़ता है।'

उसके सिर पर नमदे की एक टोपी थी, जो बदरङ्ग हो गई थी और टोपी की अपेक्षा चिड़िया का घोंसला ही अधिक मालूम पड़ती थी। कन्धे पर टँगा हुआ लबादा भी टोपी के ही रङ्ग का था। और उसके डील-डौल की अपेक्षा काफी लम्बा मालूम पड़ता था; लबादे के किनारे फट गये थे और चिन्दे नीचे लटक रहे थे। साफ दिखलाई पड़ रहा था कि टोपी उसीने लबादे में से काट कर बनाई है, क्योंकि किसी तरह बड़े-बड़े टाँके मार कर टुकड़े जोड़ दिये गये थे।

उसके पीले, हल्दिये चेहरे पर बालों की भरमार थी। दाढ़ी और मूछों के बाल बदरङ्ग और अस्त-व्यस्त हो रहे थे। बड़ी-बड़ी झबराली भौंहों के नीचे से सन्देह और नटखटपन से भरी छोटी, भूरी आँखें घूर रही थीं।

'और इतना तो तू भी जानता ही है, बर्देगुनिया, कि तेरे और मेरे मुँह में कोई एक दाना तक डालनेवाला नहीं, चाहे हम अपने मुँह पाताल तक ही क्यों न फाड़ दें। बोल, सच है कि नहीं? तू जानता ही है, मेरे लाड़ले, कि कितने आदमी हमारे काम का हिसाब रखते हैं!...उनसे छिपा कर एक दिन भी इधर-उधर करना, एक दिन भी बढ़ा लेना असम्भव ही है।'

लड़के के साथ इस तरह मित्रतापूर्वक और सहज विश्वास के ढङ्ग से बात करने का निश्चय ही कोई कारण था। लेकिन लड़का उस से मस न हुआ। उसने अपने पिता की बात को सुनकर भी अनसुनी कर दिया।

लड़के के इस व्यवहार से रुष्ट और सन्तप्त होकर वह आदमी परे हट गया और छत को थामनेवाले दूसरे खम्भे के पास जा खड़ा हुआ। वहाँ से उसने मर्दगुनिया को एक बार फिर कुपित दृष्टि से घूर कर देखा। जब उसे विश्वास हो गया कि लड़का दूध निकालने में मशगूल है तो उसने धीरे से, अपने लबादे के नीचे से, दरी का एक लम्बा चौड़ा झोला (थैली) निकाला और उसे जमीन पर रख दिया। झोला बीच में एक रस्सी से बँधा था और उसके निचले हिस्से में कोई चीज़ भरी हुई थी। फिर उसने अपने कन्धे पर से लबादा खींचकर इस तरह गोल गोल रख दिया कि वह थैली के लिए ओट का काम दे सके।

लबादा उतारने के बाद वह जिस कपड़े में दिखाई पड़ा वह बहुत ही फटा पुराना और गन्दा था। पुरानेपन के कारण वह कपड़ा बेडौल और कभी न धुलने के कारण सड़क की धूल की तरह बदरंग हो रहा था। कभी वह कपड़ा 'सिरकासियन' कोट रहा होगा। लेकिन इस समय उसका नामकरण करना कठिन था, क्योंकि कारतूस लटकाने के फन्दों की जगह उस पर काले कपड़े के पैवन्द लग थे। दुबल और कोे मपाढ़ की तरह उस आदमी का मशककनुमा पेट बाईं ओर को अधिक सूजा और उभरा हुआ था। पेट की इस कुरूपता के कारण उसकी ऊट पटाङ्ग आकृति और भी अधिक भौंड़ी हो गई थी। उसने अपनी कमर में एक सफेद पतली पट्टी, सामने की ओर गाँठ देकर बाँध रखी थी। उस पट्टी से बाईं ओर को एक लम्बा सा चाकू लटक रहा था, दाहिनी ओर को एक बटवा टँगा था, जिसमें से तम्बाकू पीने का पाईप झाँक रहा था।

लबादा उतारने के बाद उसने अपने दोनों हाथों को फैलाया, बड़े ही कामकाजी ढंग से कोट की बाँहों को कोहनी तक ऊँचा चढ़ाया, और

इस तरह सतर्क हो गया मानो किसी दुश्मन पर झपटने के लिए तैयार खड़ा है। वह अपने अँगूठों के बल खड़ा था, पेट को उसने अन्दर खींच लिया था और सारे शरीर को आगे की ओर झुका दिया था। उसकी आँखें बकरी के बच्चे पर जमी हुई थीं, जो अब भी अपनी माँ की गर्दन के साथ अपनी पीठ को रगड़ रहा था।

पंजों के बल चलता हुआ वह आदमी चुपचाप बकरी के पास होकर निकल गया। उसके हाव-भाव से ऐसा लगता था मानो वह कहीं दूर जाना चाहता है; वहीं पास-पड़ोस में ठहरना उसे अभीष्ट नहीं। लेकिन तभी वह एक दम बकरी के बच्चे पर झपट पड़ा और उसका कान पकड़ लिया। इस काम में उसने जो फुर्ती और चुस्ती दिखलाई वह उसके जैसे डील-डौलवाले आदमी के लिए लगभग असम्भव-सी ही थी। पकड़े जाते ही बकरी का बच्चा करुण स्वर में मिमियाने और मुक्त होने के लिए छटपटाने लगा। लेकिन उस आदमी ने उसे अपनी बाँहों में उठा लिया।

'अरे, शैतान के नाती! तू ही न मेरे बच्चों के मुँह का दूध चुरा जाता है! अब बोल? अच्छा सौतेला भाई जनमा है तू उनकी छाती पर!' उसने दाँत पीसते हुए कहा। और पलक मारते ही बच्चे को झोली में बन्द कर फीता कस दिया।

लड़का एक दम खड़ा हो गया और चकित होकर अपने पिता की ओर ताकने लगा।

'दादा, यह क्या कर रहे हो?' उसने डरे हुए स्वर में पूछा।

प्रश्न सुनते ही उसका पिता चौंक पड़ा और मुड़कर लड़के की ओर देखने लगा। जो दशा रंगे हाथों पकड़े जाने पर चोर की होती है, ठीक वही दशा उसकी हो गई। वह काँप उठा। क्षण भर के लिए तो उसे कुछ सुझाई ही न पड़ा। मारे गुस्से के वह केवल आँखें मिचकाता ही रह गया। लेकिन दूसरे ही क्षण अप्रत्याशित रूप से उसके चेहरे की

सारी कठोरता गायब हो गई। वह एक मीठी मुस्कराहट के साथ अपने बेटे की ओर देखने लगा।

'इतने ज़ोर से नहीं, ज़रा धीरे धीरे बोलो, बेटा!' अपने मुँह पर हथेली रख और झोंपड़ी के दरवाज़े की ओर तिरछी निगाहों से देखते हुए उसने कहा—इतने ज़ोर से नहीं! वे नन्हें शैतान तुम्हारी बात सुन लेंगे।'

वह अर्दगुनिया के समीप आ गया और झुककर उसने अपने कोट की जेब में से भिन्न भिन्न आकार की चार लकड़ियां निकालीं। लकड़ियों को अपनी हथेली पर फैलाकर उसने उन्हें अपने बेटे को दिखलाया।

'यह देखो, मेरे लाड़ले! और अब मेरी बात को ज़रा ध्यान देकर सुनो।' उसने बड़े ही धीमें और रहस्यपूर्ण ढङ्ग में कहना शुरू किया। 'तुम इस लकड़ी को देख रहे हो न?'

उसने सबसे लम्बी लकड़ी उठा ली और उसे लड़के के चेहरे के आगे हिलाने लगा।

'यह है गुतुनिया के पांव का नाप।' उसने फिर लड़के की आंखों में अपनी आंखें गड़ा दीं, मानो पूछ रहा हो: 'क्यों, तुम्हें आश्चर्य हो रहा है?'

'और देखो, यह' उसने ज़रा छोटी लकड़ी उठाते हुए कहा—यह है शितुनिया के पांव का नाप। और यह, देखो कितनी छोटी है! है न? यह है चिरिमो के पांव का नाप। और मैं तुम्हारे पांव का नाप भी लूँगा। अब तुम्हारी समझ में आ गया न कि मैं इस बकरे की औलाद को अपने फायदे के लिए बाज़ार नहीं ले जा रहा हूं। जाड़े के दिन आ रहे हैं। मैं सोचता हूं कि अपने बच्चों के लिए, और कुछ नहीं तो जूते ही खरीद दूं। सर्दियों में काम आएँगे। आज शुक्रवार है और मौसम भी चाहिये वैसा ही है। शुक्रवार को कस्बे में बाज़ार लगता है। उधर से

लौटते वक्त सम्भव है तुम लोगों के लिए कुछ मीठा-मीठा भी हाथ लग जाय। अब तुम्हीं बताओ, आदमी बेचारा क्या करे? क़िस्मत से हुआ भी तो बकरा। यदि बकरी होती तो हम रख लेते। जनती और दूध देती। बकरे को रख कर करेंगे भी क्या? घर में पहले ही पांच-पांच जोरदार बकरे पल रहे हैं। मैं उन्हीं से तङ्ग आ गया हूँ। इस कुत्ते को कहां बांधूं और क्या खिलाऊँ? समझ गये, मेरे लाड़ले!

उसने अतिरञ्जित स्वर में कहा। फिर बड़े मज़े में आकर हतबुद्धि हो रहे लड़के के पेट में अँगुली का ठूँसा दिया और उसे गुदगुदा दिया। बर्दगुनिया झेंपकर पीछे हट गया।

'दोहनी मत गिरा देना।' उसके पिता ने सचेत करते हुए कहा और बांह पकड़ कर उसे अपने निकट खींच लिया।

'यहां सीढ़ियों पर बैठ जा, मैं तेरे पांव का नाप भी ले लूँ...'

बर्दगुनिया ने सिर हिला दिया।

'मुझे नहीं चाहिये...गांव की ओर से मुझे जूते मिल जाएंगे।' उसने पूरी शक्ति से प्रतिवाद किया।

बर्दगुनिया की आँखें अपने पिता को धिक्कार रही थीं। पिता का व्यवहार सन्देहास्पद था। उसके शब्द बेटे के मन में विश्वास जाग्रत नहीं कर रहे थे। लेकिन अपने भावों को खुले रूप में प्रकट करने की बेटे की हिम्मत नहीं हो पा रही थी! बर्दगुनिया की सजग, चिन्ता भरी दृष्टि झोले पर पड़ी। उसकी चिन्ता का कारण बकरी का बच्चा नहीं, बल्कि वह चीज़ थी, जो नीचे, थैली के अगले हिस्से में मज़बूती के साथ बँधी रखी थी।

अपने बेटे की इस चेष्टा से वह आदमी डर गया। जल्दी से खम्भे के पास जाकर उसने लबादा अपने कन्धों पर ले लिया। और अपने बेटे को गंभीर दृष्टि से झोले को छिपाने के लिए उसके आगे खड़ा हो गया।

'और मैंने सोचा कि जब बाजार जा ही रहा हूँ तो क्यों न थोड़ी-सी तम्बाकू भी रखता चलूँ! बिक ही जायगी। यों ही पाई-पाई करके तो पैसा हाथ में आता है। चार जोड़ा जूते खरीदना कुछ हँसी-मज़ाक तो है नहीं।' लड़के के सन्देह को मिटाने की गरज से उसने बड़े ही सहज स्वर में यह बात कही। लेकिन जैसे ही उसने झुककर थैली अपने कन्धे पर ली मर्दगुनिया एक बार फिर बोल उठा:

'लेकिन दद्दा, काम का क्या होगा? कहीं भूल तो नहीं गये कि तुम्हें आज काम पर जाना है? गेरा कल आकर कह गये थे कि तुम्हें लकड़ी काटने के लिए जङ्गल में जाना ही पड़ेगा और जी चुराने से काम नहीं चलेगा। गेरा को तो तुम जानते ही हो, कितने कड़े आदमी हैं। कह गये हैं कि जो कामचोरी की और नहीं आये तो मकानवालों की सूची से नाम सफ़ा कर दिया जायगा। मुझे भी ताकीद कर दी थी कि तुम्हें उनका सन्देसा कह सुनाऊँ। वह कह रहे थे कि मकान बनाने के मामले में हमने सनरिया गाँववालों के साथ होड़ बदी है (प्रतियोगिता की है); और इस-लिए अपने गाँव के हर आदमी को इस काम में अपनी शक्ति भर हाथ बँटाना ही होगा।'

यह सुनकर उसका पिता तनकर खड़ा हो गया; उसने अपने हाथ में से वह थैली जमीन पर गिर जाने दी, और उसकी आँखें गुस्से के मारे चमकने लगीं।

वह क्रोध से उबल पड़ना चाहता था। उबलने जा ही रहा था; उसकी छाती फूल गई थी, गालियों की झड़ी लगने ही वाली थी। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने पैंतरा बदल दिया। यह निश्चय किया कि बेटे को शान्तिपूर्वक, मैत्रीपूर्ण ढङ्ग से समझाना ही ज्यादा उचित होगा।

'तो, मेरे लाड़ले, तुम भी औरों की तरह मकान की बात करने लगे हो, क्यों? लोग तो अनाप-शनाप बकेंगे ही, पर तुम क्यों उनकी बातों पर

भरोसा करते हो? यर्दगुनिया तुम अभी छोटे हो। अनुभवहीन हो। तुम कैसे समझ पाओगे...? न तो तुम्हारी दृष्टि और न तुम्हारी समझ ही अभी विकसित होने पाई है। अभी तुम नासमझ हो। मकान? यही तो तुम कह रहे हो? लेकिन मकान न तो मेरे दादा ने बनाया, और न मेरे बाप ने ही। और मैं सोचता हूँ कि मकान बनाना तो ठीक, इसके बारे में सोचना तक मेरी शान के खिलाफ होगा। मकान मुझे नहीं सुहाता। कद्दुए को कभी उड़ते सुना है? असम्भव! सब नानी की कहानी है। महज खयाली पुलाव! यह जो मकान की बात कहकर इतना शोर-गुल मचाया जा रहा है सब महज एक बे-सिर-पैर की कहानी है। खुदा खैर करे और हमें बख्शे।' वह एकदम चुप हो गया। अन्तिम बात अनचाहे ही, अनायास उसके मुँह से निकल गई थी। उसने एक गहरी साँस ली और बड़े ही कमसमझों के ढङ्ग से कहने लगा: 'हाँ, तुमने क्या कहा था? सन-रियावालों से होड़ बढ़ा गई है न? लेकिन उससे मुझे क्या मतलब? फिर भी, यदि मेरा ख्याल ही था, तो बतलाता हूँ कि हमें क्या करना होगा। यर्दगुनिया, स्कूल जाते समय, रास्ते में—लेकिन पहले दूध ला देना, आधा तुम पी सकते हो, बाकी का दही जमा देना, भूलना मत—हाँ, तो यह रहा था कि स्कूल जाते समय जङ्गल रास्ते में पड़ेगा। जङ्गल में जाकर गेरा को ढूँढ़ना और उसे कह देना कि दद्दा डाक्टर साहब के यहाँ गये हैं। जिन डाक्टर साहब के पास आप उन्हें पहले ले गये थे न उन्हीं के यहाँ गये हैं।' कह देना कि लौटने में शायद देर हो जाय, लेकिन काम पर हाज़िर ज़रूर होंगे। समझ गया न? अरे बेटा मैं तुझे यह बतलाना तो भूल ही गया कि मेरी सारी रात तड़पते बीती है। बस, मर ही गया था। तू तो सुख की मीठी नींद सोता रहा और मैं मारे दर्द के सारी रात 'हाय हाय' करता रहा। मछली की तरह तड़पते और कराहते हुए रात बीती है। मेरी 'हाय हाय' सुनकर बेचारे भगवान की नींद भी हराम हो गई होगी...'

उसने अपना लबादा ऊँचा उठाया। पेट के बाएं हिस्से पर, जो सूजन के

कारण ज्यादा उठा हुआ था, धीरे से हथेली रखकर दवाई और कराहते हुए बोला :

'बस, बर्दगुनिया, सारा दर्द यहीं है। यह मेरी जान लेकर ही छोड़ेगा! यह मेरी सत्यानाशी तिल्ली या जो भी नाम वे इसे दे दें! तुम्हारे दादा की जान भी इसी तिल्ली ने, यहीं इसी झोंपड़ा में ली थी। और आसार से तो ऐसा लगता है कि तुम्हारी माँ भी बेचारी इसी दरद में परलोक सिधारी। और लगता है कि अब यह मेरा भोग लेगी, इसी झोंपड़े में मेरा भोग लेकर ही पिण्ड छोड़ेगी, तभी मेरी मुक्ति होगी! और तब वे सूची से मेरा नाम उड़ा देंगे, मजानथानों की सूची से ही नहीं जिन्दा आदमियों की सूची से भी।'

उसका चेहरा विकृत हो गया, वह जोर से कराहा, उसने अपार दुःख से भरी हुई एक गहरी सांस ली और आगे बोला :

'एक बात और भी है बेटा! याद रखना, भूल मत जाना। मदरसे की छुट्टी के बाद बागबागान चले जाना ..तुम्हें वहाँ देखकर वे समझेंगे कि तुम दिन भर काम करते रहे हो ..और अपने साथ गुटुनिया को भी जरूर लेते जाना। वह कम से कम एक टोकनी पत्ती तो चुन ही सकता है। हाय मेरे राम! किसी तरह अच्छा हो जाऊँ, इस तिल्ली से छुटकारा मिले तो हमारे दिन तो फिरें...'

अपनी धूर्तता पर वह मन ही मन इतना प्रसन्न हुआ कि उसकी आँखें दीप्त हो उठीं। आधे चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई। बर्दगुनिया से आँखों की दीप्ति और मुस्कराहट छिपाने के लिए उसने चेहरा एक ओर को फेर लिया। फिर उसने थैली का मुँह पकड़कर उठाया और कराहते हुए उसे अपनी पीठ पर लाद लिया। एक हाथ को कमर पर इस तरह दाबया मानो बोझा भारी है और उसकी जान ही निकली जा रही है। उसने एक बार फिर बर्दगुनिया कि ओर देखा मानो उससे दया और सहानुभूति की भीख माँग रहा हो; और आँगन में आगे बढ़ा।

थैली में बन्द बकरी के बच्चे ने मिमियाना शुरू किया। आवाज़ सुनते ही उसकी माँ भी 'में-में' करने लगी।

ठीक उसी समय झोंपड़ी का दरवाज़ा खुला और चार अधनङ्गे बच्चे आँखें मलते और धक्का-मुक्की करते हुए सीढ़ियों की ओर लपके। बर्दगुनिश को उसके पिता ने जो छोटी-बड़ी लकड़ियाँ दिखलाई थीं उन्हीं के समान वे, विभिन्न डीलडौल और लम्बाईवाले थे। यह मजमा एक छोटे से कुत्ते के कारण और भी दर्शनीय हो उठा था, जो दहलीज पर अपने पन्जे और थुथनी रखे भौंक रहा था और इस बात की प्रतीक्षा में था, कि ये बाहर निकलें तो मैं भी बाहर जाकर आँगन में कूदूँ-फाँदूँ।

दो बड़े बच्चे तो उछलकर चौखट को सफा लाँघ गये। दोनो छोटे पेट के बल रेंग कर बाहर आये। बाहर आकर चारों सावधान में ठिठक कर खड़े हो गये और बाहर की ओर जानेवाले अपने पिता की पीठ की ओर टक लगाकर देखने लगे। कुत्ता उन सब में अधिक फुर्तीला निकला। वह सारे आँगन में दौड़ने और जोर-जोर से भौंकने लगा। बच्चे के मिमियाने की आवाज़ सुनकर चारों बच्चों ने एक साथ विगुल बजाना शुरू किया।

'मेरा बच्चा कहाँ है?' उनमें से एक ने पुकार मचाई।

'मेरा बच्चा!' दूसरे और तीसरे ने भी गला फाड़कर आवाज़ मिलाई।

'मेरा बकरी का बच्चा, दद्दा, मेरा बकरी का बच्चा!' सबसे छोटे चिरमी ने अपना विरोध प्रकट किया और इतने ऊँचे से गला बजाया कि, उसमें बाकी तीनों की आवाज़ डूब गई। उसने केवल गले से ही काम नहीं लिया, बल्कि आँखों से भी सावन-भादों की झड़ी लगा दी।

फटे चीथड़ों से झाँकते तुम्बियों जैसे चार कोमल, फूले हुए बचकाने पेट क्रन्दन की गत पर काँपने लगे; धूल, धूप और शीत में चिराई फटे आठ पाँव धरती पर पछाड़े जाने लगे।

आँगन में होकर चला जा रहा उनका पिता फुर्ती से पीछे की ओर मुड़ा। मुड़कर उसने धरती पर इस तरह हाथ फिराया मानों ओं-ओं कर पीछे

लगे हुए कुत्तों को भगाने के लिए पत्थर ढूँढ रहा हो। फिर सीधे होकर उसने हाथ को इस तरह घुमाया मानो गोफन चला रहा हो और लड़कों पर इस तरह गरज उठा कि उसके मुँह से झाग निकलने लगे :

'ठहरो तो सही यह तुम्हारी कचूमर ही निकाल देगा!'

सबसे पहले कुत्ते का पिल्ला ही था, जो पीछे लौटा। उसने सोचा कि अब पीछे हटने में ही अक्लमन्दी है। लेकिन वह इस तरह ख्यॉकें-ख्यॉकें करता जा रहा था मानो उसका खोपड़ा फूट ही गया हो।

बर्दगुनिया ने कुत्ते को आवाज़ दी :

'बुल्किया, लौट आ और चुप लगा, नहीं तो मार ही डालूँगा।'

उसने अपने दोनों हाथ इस तरह फैला दिये मानो बाँहों में समेटकर अपने सभी भाइयों को अन्दर ले जाना चाहता हो।

'अरे भागो, अन्दर आओ। नहीं तो दद्दू तुम्हें मार ही डालेगा!', उसने बड़े-बूढ़े के स्वर में कहा और धक्का देकर चारों को झोंपड़ी के अन्दर कर दिया।

फिर, दोहनी उठाकर वह लड़का भी उनके पीछे-पीछे झोंपड़ी के अन्दर चला गया।

२

रवादी सँकरी, कीचड़ भरी गली में आगे बढ़ा। गली के दोनों ओर घनी, ऊँची बागुड़ें लगी थीं। कीचड़ से बचने के लिए वह गली के किनारे, बागुड़ों के खम्भों का सहारा लेता, एक पत्थर से उछल कर दूसरे पर पाँव रखता, ढेलों और टीलों पर चढ़ता-उतरता चला जा रहा था। ज़रा-सा ध्यान चूकते ही गली के गहरे, चिपकने कीचड़ में फँस जाने का अन्देशा था। लेकिन असली खरी कसौटी तो आगे थी। कीचड़वाली

सड़क पर लम्बा रास्ता पार करना था। कन्धों पर वजनी थैली थी और उसमें बन्द बकरी का बच्चा छटपटा रहा था। उसकी यह छटपटाहट हर क़दम पर बाधक बनती जा रही थी; और चलने में ग्वारी का संतुलन बिगड़ जाता था।

स्वभाव से ही वह अपने आपसे बोलने और बड़बड़ाने का शौक़ीन था; ऊपर से बकरी के बच्चे की छटपटाहट ने उसका पारा गरम कर दिया था और वह ज़ोर-ज़ोर से गालियां बकने लगा था। गालियां वह किसी खास व्यक्ति या वस्तु को नहीं सभी को दे रहा था। और सो भी ऐसी चुन चुन कर कि यदि किसी तरह वे फलीभूत हो जातीं तो उसके गुस्से के आगे सारा ओरकेतो गांव ही जल-भुनकर खाक हो जाता। और तो और गालियाँ देने में उसने अपनी सात पुश्तों तक की खबर ले डाली थी। अपने पुरखों और परिवार के जीवित-मृत किसी को भी नहीं छोड़ा था।

गली को सही-सलामत पार कर आने के बाद मोड़ से होकर वह सड़क पर जा ही रहा था कि उसे एक नारी का कण्ठ-स्वर सुनाई दिया। यह स्वर कोनेवाले खेत की ऊंची बागड़ के अन्दर से आया था और उसी को उद्देश्य कर कहा गया था:

'ग्वारी, आज तुम्हें सवेरे-सवेरे हो क्या गया है? बड़ी फ़जर यों किस लिए इतने जोश-ख़रोश के साथ गालियां बक रहे हो?'

ग्वारी को आवाज़ पहिचानते देर न लगी। उस स्वर को सुनकर वह प्रसन्न हो उठा। चेहरे पर से क्रोध का भाव लुप्त हो गया और वहां एक मुस्कराहट फैल गई। लेकिन वह मुस्कराहट एक क्षण भर ही टिकने पाई होगी कि...

इस मुलाक़ात से होनेवाले अनिष्ट परिणाम का ध्यान उसे हो आया और उसकी सारी प्रसन्नता क्रोध और परेशानी में परिवर्तित हो गई। मारे डर के उसकी छाती कांप उठी और उसके जी में आया कि किसी तरह भाग कर जान बचाये। लेकिन भागकर जाता भी तो कहां? उसने अपने

चारों ओर एक निगाह डाली। दोनों ओर ऊँची ऊँची बागड़ों ने रास्ता रोक रखा था। भागकर आगे वह जा नहीं सकता था, क्योंकि सङ्कट वहीं तो मुँह बाये खड़ा था। तो फिर क्या करे? घर कि ओर लौट जाय? लेकिन उससे बुरी बात, अपमान की बात और क्या होती!

वह कान लगाकर टोह लेने लगा। बागड़ के अन्दर आँगन में क्या हो रहा है? देख क्यों न ले? उसने घनी ऊँची बागड़ की ओर आँखें घुमाईं लेकिन निगाह बागड़ के सिरों से टकराकर लौट आई। वह पंजों के बल खड़ा हो गया, लेकिन बागड़ काफी ऊँची थी।

उधर आँगन में पूरा सन्नाटा छा रहा था।

कहीं उसे भ्रम तो नहीं हो गया?

उसे आशा बँधी कि वह चुपचाप, बिना दिखाई दिये खिसक सकेगा। उसने आगे बढ़ने का निश्चय किया।

उसकी पड़ोसिन विधवा मरियम ओरवती गाँव के सामूहिक खेत की सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्त्री और 'शाक वर्कर'* थी। आज के दिन जब कि इतनी बढ़िया मौसम थी और गाँव में इतना सारा काम करने को पड़ा था, कोई सौदे-सुलफे के लिए बाज़ार जाय यह मरियम के मन अक्षम्य अपराध था। मरियम से मामला पड़ जाने पर बाज़ार जानेवाले की वह सिट्टी ही भुला देती। रवादी के लिए तो मरियम का सामना भूखे शेर के सामने से कम खतरनाक नहीं था। सारे गाव में वह एक ही कामचोर था। कई नागे करके वह पहले ही बदनाम हो चुका था।

'किसी तरह फाटक को सही सलामत पार कर जाऊँ फिर तो कोई फिकर नहीं,' उसने सोचा। फाटक से कुछ ही गज आगे गली मुड़ कर सड़क में जा लगती थी। एक बार सड़क पकड़ी कि फिर वह कितना ही चिल्लाती रहे, कौन सुनता है? क्यों न तकदीर आजमायी जाय? और रवादी आगे बढ़ा।

---

* शॉक वर्कर—अच्छे काम और परिश्रम के सम्बन्ध में दूसरों के आगे अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करनेवाले कार्यकर्ता।

लेकिन जहाँ बाघ का डर था वहीं शाम हुई। फाटक के बराबर आकर उसने एक निगाह अन्दर अहाते में डाली। मरियम वहाँ उसके इन्तज़ार में ही खड़ी थी। न्यादी के पहुँचते ही दोनो की निगाहें चार हुईं।

करीने से लगे फलद्रुप वृक्षों के बीच लकड़ी के तख्तों से बना एक छोटा-सा मकान था और उसके आगे चालीसेक बरस की एक महिला खड़ी थी। उसका लहँगा ऊपर की ओर घुटनों तक टंका था और वह एक बड़े वृक्ष की फल से लदी टहनियों को बाँध रही थी। उसने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ा रखी थीं। और हरी पत्तियों एवं फलों के बीच उसके पन्जे और बाजू बड़ी फुर्ती से चल रहे थे। अपने कसीले शरीर को फैले हुए दोनो पाँवों पर थामे वह आदमी की तरह खड़ी काम कर रही थी।

अब तो ओखली में सिर दिये बगैर कोई चारा नहीं था। मरियम से दो बातें करना ही होंगी। यह असम्भव था कि वह उससे बिना 'राम-राम शाम-शाम' किये किसी उचक्के-उठाईगिरे की तरह फाटक के आगे से चुपचाप निकल जाता। 'आदमी की घात मुसीबत में ही तो परखी जाती है।' उसने मन ही मन सोचा। अब तो सवाल मरियम को झाँसा देने, पीठ पर हिलते-डुलते मोले को उसकी निगाहों से बचाने और इतने सवेरे घर से निकलने के असली उद्देश्य को उससे छिपाने का था। यह सब कैसे किया जाय? आज उसकी हाज़िर-जवाबी, सूझबूझ और चतुराई की खरी परीक्षा की घड़ी आ पहुँची थी।

अपने बोझ को फाटक के खम्भे की आड़ में छिपाकर वह बागड़ पर झुक-सा गया और गर्दन लम्बी कर एक आँख से आँगन में देखने लगा। मरियम ने भी उसकी ओर देखा, परन्तु अपना काम बन्द नहीं किया।

लोक-कथा के नायक की तरह सुर-ताल के साथ चमको भरे स्वर में वह बोला :

'यह कौन है जो मुझ से बोल रहा है? ओ अदृश्य, तुम कौन हो! यदि मित्र हो तो सामने आओ, मुझसे छिपते क्यों हो?'

फिर वह हो-होकर हँस पड़ा।

उसके इस मसखरेपन ने मरियम को भी खुश कर दिया।

'अच्छा तो स्वादी, जैसा कि मैंने सोचा था, तुम नाराज़ नहीं हो? इतने सवेरे तुम्हें देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। लेकिन आज यह सूरज इतने सवेरे कैसे उग गया? नये घर की चिन्ता के मारे ही तो कहीं इतना जल्दी नहीं उठ बैठे हो? लो, मैं तो तुम्हें बधाई देना ही भूल गई: तुम्हारा नाम भी मकानवालों की सूची में लिख लिया गया है। मेरा को काफी परेशानी उठाना पड़ी। मगर तुम्हारे नन्हें-नन्हें बच्चों का खयाल जो था। भई, चलो, तुम्हारी मुसीबतों का अन्त होने आया। अब तुम्हें उस पुरानी कोठरी में घुटना नहीं पड़ेगा। बेचारी भगतिया आज की खुशी का दिन देखने को जिन्दा न रह सकी। आज वह रहती तो उसे कितनी खुशी होती! दुःख ही दुःख में मर गई। हम जीवितों के दुःख तो अब कटे। आगे सुख ही सुख है।'

उसकी यह बात सुनकर स्वादी को ज़रा भी खुशी नहीं हुई। 'घर की बात को लेकर ये सब बावले हो रहे हैं।' लेकिन इस समय उसने अपनी ओर से घर का प्रसङ्ग छेड़ना उचित नहीं समझा।

मरियम कहती चली जा रही थी:

'और अब तुम्हारे आगे काम किये बगैर कोई चारा नहीं है। तुम्हें काम करना ही पड़ेगा। देखो न तुम्हें कितना प्रोत्साहन दिया जा रहा है? तुम्हें अपने आपको इस प्रोत्साहन के योग्य साबित कर दिखाना होगा। समझे स्वादी? बकुल की ओर ही जा रहे हो न?'

स्वादी ने अपने आपको बड़ी संकटापन्न स्थिति में पाया। मरियम की तेज निगाहों के आगे उसकी बुद्धि कुण्ठित हो रही थी। उसकी समझ में नहीं आया कि मरियम की आँखों में धूल झोंकने और विषय को बदल देने के लिए क्या करे?

'हां,' उसने मरे हुए स्वर में कहा और मन ही मन अपने आपको उस नाग-फांस में से मुक्त करने की तरकीब सोचने लगा।

फिर उसने एकदम पैंतरा बदला। वह जल्दी-जल्दी बदले हुए स्वर में इस तरह बोलने लगा मानो उसने मरियम का प्रश्न सुना ही न हो :

'अरे मरियम, मैं तो तुम्हें 'राम-राम' कहना ही भूल गया. मुझे माफ करना भई। तुम्हारी वजह से मुझे बड़ा आराम है और खास कर मेरे बे-मां के बच्चों को। जो तुम दया कर उनकी सुध न लेती रहो तो उनके मुँह में दाना-पानी भी न पहुँचने पाये।' वह इसी झोंक में कहता चला गया : 'और तुम हो भी कितनी परिश्रमी! तुम्हारे हाथों में हुनर है।, अपने सिर की कसम, तुम्हारे ये हाथ पारस के हैं, जहां छुआ दो सोना बन जाय। कितना काम तुम करती हो? फिर भी देखो न अपने ही बच्चों की टहनियाँ बांधने में तुम पिछड़ गई। सामूहिक खेत के काम के कारण तुम्हें अपने काम के लिए समय और सुध ही कहाँ है? अरी भली मानस, मुझे ही कह दिया होता तो मैं तुम्हारा यह काम निपटा देता।'

मरियम खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसकी हँसी का कारण यह विचार था कि देखो, इस मानसीराम को। कैसी बातें कर रहा है? घर का काम तो होता नहीं है और कम्बख्त दूसरों की मदद करने की बातें कर रहा है! लेकिन प्रकट में सहज भाव से बोली :

'पेड़ ही कितने हैं कि तुम्हें तकलीफ दूं? मुझसे अकेले न भी बने तो सतमुनिया है ही मेरा हाथ बंटाने के लिए। खैर, सो तो ठीक है, लेकिन यह तो बतलाओ कि जङ्गल में जाने के लिए तुमने इतना लम्बा रास्ता क्यों चुना है?'

घूम फिर कर मरियम फिर उसी विषय पर आ गई जिससे त्यादी इतना भय खा रहा था।

परन्तु उसे अपनी सूझ-बूझ पर पूरा विश्वास था और इस बार भी वह इस संकट से किसी न किसी तरह उबर ही जाता, लेकिन बिन बादल की

गाज की तरह एक दूसरी ही मुसीबत [illegible]
खुरानुमा आवाज़ सुनकर थैनी में [illegible]
और करुण स्वर में मिमियाने लगा: [illegible]
मेरी जान पर आ बनी है, मुझे बचाओ" [illegible]
लिए उसने पूरी शक्ति लगा दी और [illegible]
हाथ पाँव फूल गये। उसकी [illegible]
जिस खम्भे की ओट में वह [illegible]
वह दरवाजे से टकराकर धड़ाम [illegible]
के पर काले उस बकरी के [illegible]
में भी उसने कोई कसर बाकी नहीं [illegible]

हाय, पहले ही उसकी [illegible]
का बच्चा अभी भी उसकी [illegible]
गई? लेकिन अब पठान [illegible]
मरियम के मुँह से एक [illegible]
खबर सुन ली हो।

'यह सब क्या [illegible]
बच्चा है? क्यों है? [illegible]

वह फुर्ती से [illegible]
फिर वहाँ अपनी [illegible]
आँखों से ओझल [illegible]
घूर कर उसने [illegible]।

'ओ हो! [illegible]
कि आज इतना [illegible]
ही गई थी [illegible]
बिना ही [illegible]
बाजार [illegible]

अपने साथियों के विश्वास का निरादर कर, ए अहसान फरामोश, तू काम से जी चुरा रहा है, क्यों? अपने बे-माँ के बच्चों को ठण्ड और भूख से बचाने की फ़िक्र भी तुझे नहीं! बता, इस बकरी के बच्चे को तू कहाँ और किस लिए लिये जा रहा है? जल्दी से मेरी बात का जवाब दे।'

ठीक उसी समय मरियम का विश्वासपात्र कुत्ता, जो उसका द्वारपाल भी था, अपनी दुम उठाये और रोएँ फुलाये कहीं से वहाँ दौड़ा आया, मानो वह पूछने आया था कि यह थैले झोले का क्या झमेला है? और उस झोले में यह मिमिया-मिमिया कर कौन शोर मचा रहा है?

कुत्ते के साथ ख्वादी का सम्बन्ध बहुत ही मैत्रीपूर्ण था और दोनों एक दूसरे को पहिचानते थे। मुरिया ने आते ही ख्वादी को पहिचान लिया और वह शान्त हो गया और अपनी मालकिन की ओर चकित होकर देखने लगा: 'अरे, यह तो हमारा ख्वादी है, तुमने इसे पहिचाना नहीं!'

कुत्ते को देखकर आत्मरक्षा के ख़्याल से ख्वादी दो क़दम पीछे हट गया। लेकिन मुरिया को शान्त खड़े देख उसका साहस लौट आया। उसने अपने दोनों हाथ आगे की ओर फैला दिये और पंजे झुकाते हुए कहने लगा:

'मरियम, इस बेकार की बात को यहीं छोड़ दो। यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास हो तो इस तरह की बात अपने मन में लाओ भी मत...'

और वह अपना हमेशा का रोना ले बैठा: डाक्टर ने इंजेक्शन देने के लिए बुलाया है, इसीलिए मुँह अन्धेरे घर से निकला हूँ! मजबूरी है। जाना ही पड़ेगा। यह तिल्ली बैरिन उसके प्राण लिये ले रही है। लगता है कि अपने बूढ़े बाप की तरह मरने पर ही उसे इस दुःख से छुटकारा मिलेगा। और अन्त घड़ी आने में अधिक समय शायद नहीं है।

अपने सूजे हुए पेट की ओर उसने मरियम का ध्यान आकर्षित किया। कपड़े का पल्ला लौट कर उसने उसे अपना पेट दिखलाते हुए कहा! 'यहाँ सुई लगेगी।' जहाँ उसने बतलाया था, वह जगह नीली पड़ गई थी।

और उसकी दया खाने वाला कोई नहीं है ..वह सिसकने लगा और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। 'डाक्टर से निपटने के बाद सोचा कि लौटते समय, बाजार में '

अपनी बात कहते कहते अवादी क्षण भर के लिए चुप हो गया। उसने अपने कोट की जेब में हाथ डाल कर छोटी बड़ी लकड़ियाँ निकालीं और उनमें से एक एक को अलग अलग उठाते हुए अपने लड़कों का नाम बोलने लगा। इस बार वह बदंगुनिया के नाम का उल्लेख करना भी नहीं भूला। फिर कराहत और आहें भरत हुए काफी लम्बी चौड़ी भूमिका बांध कर उसने बतलाया कि क्यों उसे मजबूर होकर बकरी का बच्चा बेचने का निर्णय करना पड़ा है। लाचार होकर ही वह ऐसा कर रहा है। इसके बाद अपने अकाट्य तर्कों से उसने मरियम को यह विश्वास दिला दिया कि जिस समय दूसरे लोग बाग काम के लिए आ ही रहे होंगे वह अपने सब काम निपटा कर शहर से लौट आयगा और (सामूहिक) खेत पर पहुँच जायगा। शहर है ही कितनी दूर, कुल बित्ता भर की तो दूरी ही है। और मरियम ने भी उसकी बात पर भरोसा कर लिया।

जब उसने मरियम को थोड़ा पिघलत देखा तो सोचा कि क्यों न इस कम में उसकी पूरी स्वीकृति ही प्राप्त कर ली जाय। यह ख्याल मन में आते ही वह इस तरह उछल-कूद करने लगा मानो किसी चीज को ढूँढ़ रहा हो। वह दौड़ कर बागड़ के पास गया, हाथों से ढूँढ़ ढांढ़ कर एक बड़ी-सी लकड़ी तोड़ी और पलक झँपाते मरियम के पास आ पहुँचा। फिर चेहरे पर याचना का भाव लाकर और लकड़ी उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला

'ज़रा अपनी सतसुनिया को भी गुना लो' वह बेचारी भी बाल-बच्चे की बच्ची है? मुझे अपने मन की कर लेन दो। देखा, मुझ दुखियारे का दिल न दुखाओ। तुम्हें मेरे सिर की सौगन्ध है। मेरी इतन सी बात मान लो। तुम मेरे लौंडों की सगी मा से भी अधिक देख-भाल करती हो। उनको नहलाती धुलाती और उनकी साफ सफाई करती हो। और यह सब

तुम मुफ्त करती हो। बिना किसी तरह का मुआवजा लिये। और मैं हूँ ही किस काबिल, जो तुम्हें कुछ दे सकूँ? मरियम, यदि तुम मेरी रिश्तेदार होती, दूर का कोई रिश्ता ही होता, तो मैं कुछ न कहता। पर जिस तरह तुम पड़ोसी-धर्म निबाह रही हो...मेरा भी तो तुम्हारे प्रति कुछ कर्त्तव्य हो जाता है न? और कुछ नहीं तो तुम्हारी बिटिया को ही कुछ दूँ। मेरे अभागे बच्चों के प्रति तुम जो ममता दिखलाती हो उसका कुछ तो बदला चुका सकूँ! उसके लिए भी एक जोड़ी जूता खरीदता लाऊँगा। फिर मन पर इतना बोझ न रहेगा। दूसरे, इस बकरी के बच्चे की परवरिश भी तो उसी ने की है। इस पर उसका भी अधिकार है। उसे झट से बुला दो तो उसके पांव का नाप ले लूँ। मुझे ज्यादा देर रोको मत। दिन चढ़ आयेगा और उधर अबेर हो जायेगी।'

रमज़ी इतने निष्कपट और सरल भाव तथा भावुकता से कह रहा था कि मरियम का सारा गुस्सा काफूर हो गया। बात सीधी उसके दिल में बैठ गई और आंखों में आंसू भी उभर आये। रमज़ी के प्रति कठोरता प्रदर्शित कर उसने कितना बड़ा अन्याय कर डाला था! इस ग़रीब, अभागे आदमी पर उसे दया क्यों न आई? फाकेकशी, बीमारी और परेशानी में भी इसके दिल का बड़प्पन तो देखो! कितनी उदारता और कृतज्ञता है इस आदमी के मन में! घर में बे-माँ के पाँच बच्चे हैं, न खुद के तन पर साबुत कपड़ा है और न पाँव में जूता है, फिर भी सतमुनिया को कुछ न कुछ देकर प्रसन्न करना चाहता है!

और मरियम इस तरह सुनती रही मानो रमज़ी ने सचमुच जूते लाकर उसकी बिटिया को पहिना ही दिये हों और अब केवल उसे धन्यवाद देना ही शेष रह गया हो! अन्त में वह बोली: 'नहीं भाई, सतमुनिया को जूतों की जरूरत नहीं है। फिर मेरे यही एक बेटी है और मैंने तुमसे तिगुना ज्यादा काम किया है, जब कि तुम्हें पांच बच्चों की फ़िकर करना है। मैं ऐसा अन्याय कदापि नहीं होने दूँगी।'

वह उसे फिर झिड़कने लगी, लेकिन इस बार उसके स्वर में गुस्सा नहीं स्नेह और सद्भावना की पुट थी : 'ज़रा अपनी ओर भी तो देखो। सोच-समझकर काम करना चाहिये। यों कब तक चलेगा ? तुम्हें गन्दा और चीथड़ों में घूमते देख हमारे दुश्मन तालियाँ बजाते हैं। इससे हमारे सामूहिक खेत की बदनामी होती है। हम लोग चाहते हैं कि तुम अच्छी तरह मकान बनाकर रहो। इस काम में तुम्हारी पूरी मदद की जायेगी। अच्छे-अच्छे कार्यकर्ताओं को काठ-कबाड़ा देने से इन्कार कर दिया गया है; परन्तु तुम्हारा नाम सूची में लिखा गया है। ज़रा सोचो तो कि यह कितनी बड़ी बात है ! और तुम हो कि इस काम से मुँह बिचका रहे हो। यह तो तुम अपने ही हाथों अपने पाँव पर कुल्हाड़ा मार रहे हो।

'गवादी, तुम्हें हो क्या गया है ? यह क्या हुलिया बना रखा है तुमने ? सारे चेहरे पर रीछ की तरह बाल उग आये हैं। कान और नाक भी बालों से अछूते नहीं बचे। कितना बेहूदा मालूम पड़ता है। कभी-कभी हजामत ही बना लिया करो। आदमी-सी शक्ल तो निकल आया करे। नाई के यहाँ जाना कुछ इतना कठिन तो है नहीं ! क्यों है न ? अरे भई, न हो तो थोड़ी देर के लिए मेरे यहीं चले आना। मैं ही तुम्हारी हजामत बना दूँगी। कुछ इतना कठिन काम तो है नहीं।'

मरियम का स्वर इतना मीठा, सरस कोमल, उदात्त और स्नेहपूर्ण था मानो स्वयं जीती-जागती धरती माता ही सामने खड़ी बोल रही हो।

गवादी को सपने में भी यह आशा नहीं थी कि सारा प्रसङ्ग इस खूबी के साथ निपट जायगा। उसने मन ही मन अपने भाग्य को सराहा और परमात्मा को धन्यवाद दिया।

उसने एक गहरी साँस ली और थोड़ा-सा मरियम की ओर झुक गया। काफी देर तक वह इसी तरह खड़ा मरियम की ओर टक लगाये देखता रहा। मानो उसकी आँखें कह रही थीं : 'हाँ, मैं अपने दुर्भाग्य की बात अच्छी तरह जानता हूँ। अपनी दुर्दशा मुझसे छिपी नहीं है।'

उसके चेहरे की एक-एक झुर्री मरियम को पुकार-पुकार कर कह रही थी कि तुम्हारी सलाह बेकार नहीं जाने पायेगी, कि इन झुर्रियों का स्वामी दुर्भाग्य और दरिद्रता के विरुद्ध संघर्ष के लिए कटिबद्ध होगा। उसने अपना एक हाथ इस तरह उठाया मानो प्रतिज्ञा करने जा रहा हो। अन्त में उसके मुँह से एक गहरी निश्वास की ध्वनि आई और उसने घनीभूत पीड़ा के स्वर में कहा :

'मुझ पर दया करो, मरियम! दया करो! इससे अधिक मैं तुम्हें कुछ भी कह न सकूँगा।'

इन शब्दों में एक गहरे पश्चात्ताप का भाव था और, ये शब्द ठेठ अन्तःकरण से कहे गये थे। फिर उसने एक घूँसा कसकर अपनी छाती में इतने ज़ोर से मारा कि उसका धमाका चारों ओर गूँज गया।

'हाय मेरे राम! मेरी अगलिगा को छीन कर तूने मुझे कहीं का न रखा।' इतना कह कर उसने मरियम की ओर से अपनी निगाहें हटा लीं और मुड़ कर लड़खड़ाता हुआ सड़क की ओर चल दिया।

मरियम का दिल भी भर आया था। अपने आप पर किसी तरह काबू पाकर वह अपने अभागे पड़ोसी की ओर देखती रही। उसके नारी-हृदय की सजग चिन्ता और करुणा उसकी कजरारी आँखों में घनीभूत हो आई थी। उसने पुकार कर कहा :

'अवादी! बकरी के बच्चे को बाहर निकाल कर डोरी से बाँध लो। तुम थकोगे नहीं और बच्चा भी आराम से चला चलेगा।'

अब तक अवादी सड़क पर पहुँच गया था। मरियम की आवाज़ सुन कर वह देखने के लिए पीछे की ओर मुड़ा लेकिन मरियम पेड़ों की घनी पत्तियों की ओट में हो गई थी।

उसका दिल खुशी से सराबोर हो उठा। अब वह अकेला था, बिलकुल अकेला! उसकी छाती पर से एक बोझ-सा हट गया था और उसने महसूस किया कि पीठ पर का बोझ भी बिल्कुल हल्का हो गया है।

चुटकी बजाते उसके चेहरे पर की दयनीयता लुप्त हो गई। गर्व और आत्मविश्वास के भाव से उसने चारों ओर एक निगाह डाली। अब उसे किसी का डर नहीं था। मरियम की सलाह के जवाब में उसने एक बहुत ही क्रूर और चुभती हुई बात कही, लेकिन बात इतने धीमे से कही गई थी कि मरियम सुन न सके।

'अरी अक्लमन्द की दुम, क्या तू यह सोचती है कि इतनी-सी बात भी मैं स्वयं नहीं सोच सकता था? बात इतनी सी ही तो नहीं है। यह कम्बख्त बकरी का बच्चा नीचे उतारे जाते ही चलने से इन्कार कर देगा और इसे खींचते खींचते मेरा दम ही फूल जायगा। इस मुसीबत में कौन पड़े? अब आया तुम्हारे भेजे में? अपनी औरत की औंधी खोपड़ी में यह नुस्खा घुसा सकती हो या नहीं?

मरियम ने डरा कर उसे जिस परेशानी में डाल दिया था, यह उसका बदला चुकाया जा रहा था। प्रतिशोध भी इतना मजेदार था कि वह खिलखिला पड़ा और हँसी की तरंगों के कारण उसका सारा शरीर, पहिनने के कपड़े और कन्धे पर की झोली सभी कुछ उछलने लगे।...लेकिन दूसरे ही क्षण वह एकदम चुप हो गया और अपने व्यवहार पर पश्चात्ताप-सा करता हुआ बोला.

'लेकिन, मरियम, यह मैं तुम्हारे बारे में नहीं, किसी दूसरी औरत के बारे में, मेरे सिर की सौगन्ध, किसी और के बारे में कह रहा हूँ। तुम्हारे बारे में भला मैं ऐसी बात अपने मुँह से निकाल सकता हूँ? और उसकी आँखों की पुतलियां असाधारण रूप से ऊपर नीचे घूम गईं।

३

सड़क अभी नयी ही बनी थी; कुछ ही दिनों पूर्व रास्ता समतल कर, मिट्टी बिछाई गई थी और रोलर चलाया गया था। इसलिए सड़क पर कीचड़ बिलकुल नहीं था। साफ-सुथरा रास्ता पाकर ग्यादी एक-सी तेज़ चाल से चलने लगा। उसने बकरी के बच्चे को झोले में से बाहर निकाला उसके गले में एक रस्सी बाँधी और अपने आगे उसे हाँक चला। मुक्त होते ही बच्चा सड़क पर चौकड़ियाँ भरने और दौड़ने लगा।

लेकिन ग्यादी के मन में से अभी दुश्चिन्ताओं का अन्त नहीं हो पाया था। उजेला हो गया था और हर क़दम पर वह डर बढ़ता जा रहा था कि सड़क पर कहीं कोई जान-पहिचान वाला न मिल जाय। मरियम की वजह से, और सिर्फ मरियम की ही वजह से यह देर हो गई थी! थोड़ी ही देर में चाय-फैक्ट्री की मोटर-लारियों का आवागमन शुरू हो जायेगा। असल में, इन मोटर लारियों के लिए ही यह रास्ता सुधारा गया था; ताकि ये चायबागान से पत्तियाँ भर कर कारखाने तक आसानी से ढो सकें। इतने सवेरे, ऐसे चलते रास्ते पर ग्यादी का देखा जाना स्वयं उसके लिए बहुत ही बुरा होता।

सड़क के दोनों ओर किसानों के निजी खेत और घर थे। उसने ध्यान से उन्हें देखते हुए सोचा कि क्या इन मकानों के पिछवाड़े वाले रास्ते पर होकर जाना अधिक उचित नहीं होगा? निश्चय ही पिछवाड़े का रास्ता अधिक निरापद और पास का था। लेकिन वह निश्चय नहीं कर पाया कि उधर पहुँचने के लिए किसके अहाते में होकर जाये! वहाँ के कुछ किसान उस पर भरोसा नहीं करते थे और जो भरोसा करनेवाले थे उनके मकान और बाड़े उसके रास्ते से काफ़ी दूर पड़ते थे।

बिना किसी निश्चय पर पहुँचे वह इसी प्रकार तेज़ी से चला जा रहा था। निश्चय न कर पाने के कारण उसे मन ही मन बड़ा गुस्सा आ रहा,

या और उसके नथुने फूलने लगे थे। कि चलते चलते उसने सामने, थोड़ी दूर पर, गोचा सलान्दिया का याहा देखा। गोचा भी समृद्धिक खेत पर काम करने वाला किसान था। सड़क पर से ही उसे एक अधूरा मकान दिखाई दिया, जिसकी दीवारें ऊँची ऊँची थीं। लकड़ी पर कुल्हाड़ा बजने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी।

'मैं तो सोचता था कि गोचा को पटिये और शहतीर देना बिलकुल बन्द कर दिया गया है, लेकिन वह तो इस तरह काम में भिड़ा है जैसे कुछ हुआ ही न हो।' ग्वादी को बड़ा आश्चर्य हुआ। 'और देखो, एक औरत भी उसकी सहायता कर रही है। मैं तो जानता ही हूँ कि वह दूसरों की तरह नहीं है '

और वह ज़ोर से बोला

'परमात्मा करे उसे अपने काम में पूरी सफलता मिले।'

ग्वादी ने उसकी सफलता की कामना इसलिए नहीं की थ कि गोचा भला आदमी था या ग्वादी को उसमें कोई दिलचस्पी थी। इस समय तो उसकी दिलचस्पी गोचा से अधिक गोचा के अहाते में थी, जिसमें होकर वह मकानों के पिछवाड़े क रास्ते पर पहुँच सके, और या अपने रास्त को घटा कर आधा कर ले। पिछवाड़े की ओर पहुँच जाने पर तो वह बिना किसी से मुठभेड़ किये ठेठ शहर तक निकल जायगा। दूसरे, गोचा को [redacted] भरोसे का आदमी समझता था। गोचा का दिमाग इतना फालतू नहीं था, जो उससे पूछता कि कहाँ स आ रहे हो, कहां जा रह हो, क्या ले जा रहे हो आदि। नुकसान तो दूर, उलटे कुछ फायदा ही हो जाने की सम्भावना थी। कहीं गोचा को उसकी दुर्दशा का हाल मालूम हो जाय तो मुमकिन है कि वह उसे अपनी बगीचों में से दस बीस नीबू ही द दे।

और ग्वादी ने कदम तेज़ किये।

सड़क की एक ओर खाई पड़ती थी। खाई क उस ओर से एक पगडण्डी बगीची की ओर घूम कर जाती थी। ग्वादी ने पग

डण्डी पर होकर जाना ही ठीक समझा। खाई के किनारे खड़े होकर वह उसकी चौड़ाई का अन्दाज लगाने लगा। फिर वह विचारों में डूब गया। इस फूले पेट, बड़े लबादे और भारी मोज़े के कारण वह कूद कर पार न जा सके और कहीं बीच खाड़ी में ही गिर पड़े तब? वहां और कोई तो था नहीं, जो उसकी हँसी उड़ाता; परन्तु बकरी का बचा भी यदि ऐसी हरकत देख ले तो उसके मन ग्वादी की इज्जत तीन कौड़ी की भी नहीं रह जायगी, और वह अपने मालिक का हुक्म मानने से सफ़ा इन्कार कर देगा। और ईमान की बात तो यह कि खाई कुछ कम चौड़ी नहीं थी।

उसने थोड़ा घूम-फिर कर कूदने की जगह चुनी, बकरी के बचे को खींच कर खाई के किनारे खड़ा किया, उसकी रस्सी को थोड़ी ढील दी और पुचकारा देकर बोला:

'हां, बेटा, अब दिखाओ ज़रा अपना करतब! देखें, तुम कैसा कूदते हो?'

बकरी का बचा अपने पिछले पांवों पर तन गया और गुड़ी-मुड़ी होकर जो उड़ान भरी तो पल्ले पार। कूद कर पहुँचा भी तो इतनी दूर कि जिसकी कल्पना तक ग्वादी ने नहीं की थी।

अब यह बतलाना मुश्किल है कि ग्वादी के हाथ से बचे की रस्सी कैसे छूट गई? छूट गई यह निश्चित है। छूट कर बल खाती, हवा में लहराती बचे के पीछे खाई के उस पार पहुँच गई।

ग्वादी के हाथ-पांव फूल गये। वह इतनी बड़ी भूल कैसे कर बैठा?

लेकिन भूल की छान-बीन करने का वक्त तो था नहीं; क्योंकि बकरी का बच्चा उस पार हवा की तरह उड़ा चला जा रहा था और रस्सी उसके पीछे घिसटती चली जा रही थी।

ग्वादी ने अपने शरीर को पीछे की ओर झटका दिया और छलांग मार कर कूद पड़ा। वह उस पार तो पहुँच गया; परन्तु जो पांव फिसला तो सिर के बल खाई में जा गिरा। खाई काफ़ी गहरी थी और उचक कर

ऊपर आने में ग्यादी को काफी परिश्रम करना पड़ा। किसी तरह ऊपर आकर पगडण्डी पर पहुँचा। अपनी चोट और रगड़ को भूल कर सब से पहले बकरी के बच्चे की सुध ली। वह शैतान का नाती सरर्टे की तरह चौकड़ियां भरता घर की ओर भागा चला जा रहा था।

सब कुछ भूल भाल कर ग्यादी बकरी के बच्चे के पीछे दौड़ने लगा। लेकिन कहाँ चार पांव की बकरी और कहाँ दो पांव का आदमी! फिर वह हवा से बातें कर रहा था। शीघ्र ही ग्यादी का दम भर आया। पेट में दर्द होने लगा। उसने दोनो हाथों से तिल्ली पकड़ ली और खड़ा हो गया। अब वह बच्चे को पुकार-पुकार कर बुलाने लगा। पहले प्यार से पुचकार कर आवाज़ दी; अच्छी-अच्छी चीज़ें खिलाने का वादा किया। जब बच्चा नहीं लौटा तो उसे डराने का निश्चय किया। 'अरे, लौट आ रे! जङ्गल में कहीं रास्ता भूल जायगा। कोई भेड़िया या सियार तेरी चटनी कर डालेगा। किसी आदमी के पाले पड़ गया है तो मारते-मारते चमड़ी उधेड़ देगा।' लेकिन बच्चे पर जब इतना भी असर न हुआ तो उसने उसे धमकी दी: 'देख, लौट आ, नहीं तो मैं ही तुझे हलाक कर डालूँगा।' लेकिन वह कम्बख्त भागा ही चला गया और थोड़ी ही देर में आँखों से ओझल हो गया।

ग्यादी ने अपना कपाल ठोक लिया।

'और चलो बेटा औरत की सलाह पर! यही नतीजा होता है औरत की औंधी अकल पर चलने का।' वह सांस लेने के लिए एक पत्थर पर बैठ गया और जी भर-भर कर अपने आपको कोसने लगा। उसके चेहरे पर इस तरह मुर्दनी छा गई मानो अभी अपने सगे बाप को दफ़ना कर चला आ रहा हो। आँखों में आँसू भर आये। वह एक नन्हें बच्चे की तरह सिसक सिसक कर रोने और सिर धुनने लगा।

जब उसका उद्वेग कुछ शान्त हुआ तो उसे याद आया कि झोले में बकरी के बच्चे के सिवा कुछ और चीज़ भी थी। उसने झोले को उठाया, गांठ

श्रौर मन्दर देखा। झोले में बीसेक चीकू थे, जो उसने बर्दगुनिया से चुरा-कर पिछली रात तोड़े थे। उसने सोचा, चलो क़िस्मत सिकन्दर है कि फल पिचके नहीं; मान लो, खाई में गिरते या बकरी के बचे के पीछे भागते समय वे पिचक ही जाते!

अपने फलों को सही-सलामत देख कर उसे इतनी खुशी हुई मानों वे उसे राह चलते सड़क पर पड़े मिल गये हों। उसके आंसू सूख गये और रुआंसे चेहरे पर हँसी की रेखा दौड़ गई।

अभी बगीचों में चीकू पकने नहीं पाये थे। उसके फल जल्दी आ गये थे और बाज़ार में नया फल हमेशा ऊँचे दामों पर बिकता है। चलो, भागते भूत की लँगोटी भली; ब्वादो ने सोचा। इन फलों के ही अच्छे पैसे उपज जायँगे। यह सही है कि जूते खरीदने के लिए अब वह पैसे नहीं जुटा पायेगा, लेकिन इन फलों के कारण उसे घर खाली हाथ भी नहीं लौटना पड़ेगा। बकरी के उस पाजी बच्चे ने न जाने किस जनम का बैर चुकाया है। उसकी सारी योजनाएँ और मन्सूबे मिट्टी में मिला दिये! लेकिन इसी का क्या भरोसा था कि वह बिक ही जाता? और मान लो कि बिक भी जाता तो कितने पैसे मिलते? मांस तो उसमें था नहीं, खाली हड्डियाँ और चमड़ी थी। देकर भी कोई क्या उसके लिए कारूँ का खजाना लुटा देता?

ब्वादो फिर आनन्दित हो उठा।

उसने कहा, 'जैसी बहे बयार पीठ ताहि पुनि तैसी दीजे।' वह उठा और शहर की ओर आगे बढ़ा। गोचा के अहाते से होकर जाने के अपने पूर्व निश्चय पर वह अब भी दृढ़ था।

ब्वादो और गोचा के स्वभाव में रंचमात्र भी साम्य नहीं था। अगर कोई साम्य था तो सिर्फ इतना ही कि दोनो सामूहिक खेत के सदस्य थे और दोनो काम से जी चुराने में एक-से थे। दोनो ही खेत का कम से कम काम करना चाहते थे। हफ्तों बीत जाते और गोचा खेत पर

नहीं जाता था। यही हाल ग्वादी का भी था। उसने भी बहुत कम दिनों काम किया था। इसके सिवा दोनों में जमीन आसमान का अन्तर था।

गोचा मझौला किसान था। खेती के काम में कुशल और बड़ा ही परिश्रमी। अपनी बगीची में उसने नीबू और चीकू के पेड़ लगाये थे और एक कृषि विशेषज्ञ से भी अधिक उनकी हिफाजत करता था। फलों की खेती करनेवाला सारे गाँव में वही पहला किसान था। उसकी बगीची नुमाइशी बन गई थी और उसमें पन्द्रह-पन्द्रह बरस के दो नीबू के पेड़ तो सारे जिले में दूर तक मशहूर हो चुके थे।

लेकिन इन सद्गुणों के बावजूद गोचा ओछे स्वभाव का अविश्वसनीय आदमी था। वह एक हठी और दुराग्रही किसान था। उसने कभी अपने आपको नये सोवियत समाज और नयी परिस्थितियों के अनुकूल नहीं बनाया। ग्वादी आलस्य, मूर्खता, अदूरदर्शिता और जन्मजात लुच्चेपन के कारण सामूहिक श्रम से जी चुराता था, परन्तु गोचा किन्हीं दूसरे ही कारणों से ऐसा करता था।

यदि ग्वादी ने सभी पहलुओं से सोचा होता तो उसकी समझ में आ जाता कि गोचा के अहाते से होकर जाना भी एक दम निरापद नहीं है। गोचा की लड़की नैया ओरकेती गाँव की युवा कम्युनिस्ट लीग की सेक्रेटरी थी और उससे मुठभेड़ हो जाना मरियम की मुठभेड़ से कहीं ज्यादा खतरनाक था।

और नैया केवल पार्टी सङ्गठन की सेक्रेटरी ही होती तो गनीमत थी, परन्तु वह सामूहिक खेत के अध्यक्ष गेरा की कट्टर सहायक एवं समर्थक, कह सकते हैं कि उसका दाहिना हाथ थी। सामूहिक खेत के काम से जी चुराने के लिए वह अकसर अपने पिता से भी लड़ती-झगड़ती रहती थी। फिर भला वह ग्वादी को कैसे छोड़ देती?

लेकिन सच तो यह है कि जब किस्मत सिकन्दर हो तो दुर्घटनाएँ भी सहायक हो जाती हैं। आज ग्वादी के साथ सुबह से यही हो रहा था।

पहले तो मरियम से मुठभेड़ हो गई; परन्तु उसका अन्त कितना मधुर रहा? फिर उस बकरी के बच्चे ने परेशान किया! और अब नैया का खतरा आ खड़ा हुआ। परन्तु इस समय तक तो वह अवश्य ही चाय-बागान पहुँच गई होगी। और मान लो कि मिल भी गई और आमना-सामना हो ही गया तो वह बड़ी शान्ति से कहेगा:

'झोले में खाना साथ लेकर जङ्गल की ओर जा रहा हूँ, बिटिया!'

चलो, हुई छुट्टी! नैया कुछ झोले को सँभालने या उसकी तलाशी लेने तो आयेगी नहीं। बकरी का बच्चा तो भाग ही गया है, इसलिए उसके असली इरादों का तो पता तक नहीं चल सकता। ऐसी परिस्थिति में नैया तो क्या अच्छे से अच्छे बैरिस्टर की भी आंखों में धूल झोंकना ग्वादी के बाएँ हाथ का खेल था।

वह गोचा के अहाते की ओर बढ़ा।

बगीची के बाहर, सड़क पर, सामूहिक खेत के जानवर खड़े थे और अहाते के अन्दर से उनके चरवाहे, पत्रवाला की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह गोचा के साथ बातें कर रहा था:

'ओरकेती में चरागाह तो बचे ही नहीं; तुम्हीं बतलाओ, मैं ढोरों को चराने कहां ले जाऊँ? सारी जमीन फाड़ डाली गई। कहते हैं यहां चाय उगेगी, वहां चीकू बोये जाएँगे, वहां फलाना-टिमका बोया जाएगा। कहीं बित्ता भर जमीन भी तो नहीं छोड़ी। पेड़ काट कर जङ्गल साफ किया तो वहां भी बाद में हल चलवा दिया। जङ्गल के किनारे चरागाह की ज़रा-सी पट्टी बची थी सो अब उसे भी खोद डाला है; कहते हैं, वहां फलों का बग़ीचा लगेगा।'

ग्वादी तेज़ी से आगे खुले हुए फाटक की ओर बढ़ा। वह बिलकुल निश्चिन्त हो गया था। रास्ता बिलकुल साफ़ था। किसी तरह का डर-भय नहीं था। चलो, सब झम्झट-झमेलों से मुक्ति हुई।

बगीचों के बीचों बीच पुराने ढङ्ग का एक नीचा और फैला हुआ मकान था। फाटक से मकान तक रोड़ों की एक सड़क बना दी गई थी। मकान

के सामने दोनों ओर नीबू के दो बड़े भारी पेड़ खड़े थे। उन पेड़ों के तनों के चारों ओर जमीन पर बागड़ लगा दी गई थी। पेड़ों की टहनियां खूब फैली हुई थीं और वे इतनी कसरत से फल रहे थे कि उन पर पत्तियों से अधिक फल दिखलाई पड़ते थे।

वहाँ से थोड़ा परे ईंटों की कुर्सी पर, एक ऊँचे मकान का ढांचा खड़ा था, जिसकी दीवारें लकड़ी के पटियों द्वारा बनाई जा रही थीं। पिछली दीवार छत तक पहुँच गई थी, शेष अभी अधूरी थीं। उस मकान के सामने लकड़ी के चिल्ले छिलपियां आदि बिखरे पड़े थे। वहीं एक जवान भैंस खड़ी जुगाली कर रही थी। माथे पर बड़ा सा सफेद चादला होने के कारण उसे निक्रोरा (चादली) कह कर पुकारते थे। भैंस के पास एक हाथ में कुल्हाड़ा थामे और दूसरे से भैंस की पीठ थप-थपाता हुआ मोचा खड़ा था। वह लोक कथा के दैत्य की तरह लम्ब तड़ङ्ग था और उसके हाथ की अँगुलियाँ शाहबलूत की जड़ों की तरह गँठीली और मुड़ी हुई थीं। पखवाला की बात सुनकर उसके चेहरे पर एक व्यंगपूर्ण मुस्कराहट फैल गई और घनी मूछों तथा छाती तक फैली सफेद दाढ़ी के बाल हिलने लगे।

उसने भैंस को चरवाहे के हवाले करते हुए कहा: 'चादली, जा, चरने जा। ढीठ बन कर खड़ी मत रह। जल्दी कर।' उसका स्वर धीमा परन्तु गहरा था।

सूरत शक्ल से पखवाला, आदमी नहीं चौपाया मालूम पड़ता था। उसकी पीठ झुकी हुई थी और सीना घुटनों से जा लगा था। यदि लाठी का सहारा न होता तो उसका सिर टांगों में जा फँसता और वह लोटन कबूतर बन जाता। उसकी पीठ बुढ़ापे के कारण नहीं, गठिया के कारण झुक गई थी। उमर तो अभी अधिक नहीं थी, परन्तु बिमारी ने उसे दोहरा कर दिया था।

छोटे-छोटे क़दम धरता पशुवाला भैंस के पीछे पहुँचा, उसकी पिछली टाँगों पर धीमे से, घुमा कर एक लाठी जमाई, ज़ोर से उसकी पूँछ मरोड़ी और गोचा के स्वर की नक़ल करता हुआ बोला :

'चल, माता चल, देर क्यों कर रही है ?'

गोचा थोड़ी दूर तक उनके साथ आया फिर उसने जाते हुए चरवाहे को पुकार कर कहा :

'पशुवाला भाई, मेहरबानी करके फाटक बन्द करते जाना।' फिर कुल्हाड़े को कांधे पर रख लम्बे डग भरता हुआ नये मकान की ओर चल दिया।

पशुवाला के सवालों से बचने के लिए एक संक्षिप्त-सा 'राम राम' कह कर ग्वादी जल्दी से फाटक के अन्दर दाख़िल हो गया। और चरवाहा कुछ कहे उसके पहले तो पेड़ों की ओट में पहुँच गया। चारवाहे की बात मुँह की मुँह में रह गई। ग्वादी के इस व्यवहार से वह कुपित हो गया और अपने पशुओं को टचकारा देते हुए उसने गाली दी: 'यह शैतान का बचा सवेरे-सवेरे कहां से आ मरा ?'

उस अधूरे मकान के पास पहुँच कर ग्वादी ने गूँजते हुए स्वर में गोचा से, जो एक सीढ़ी पर खड़ा था, 'राम-राम' कह कर बोलना शुरू किया :

'आज तो मुँह अँधेरे ही काम पर लग गये मालूम पड़ते हो। अभी भी काफी सवेरा है...'

जवाब देने से पहले गोचा ने गर्दन घुमा कर तिरछी निगाहों से ग्वादी की ओर देखा, फिर कुल्हाड़ी दीवार में फँसाई और सीढ़ी पर मुड़ कर खड़ा हो गया।

ग्वादी ने जान-बूझ कर बड़े ही कामकाजी ढङ्ग में कहना शुरू किया : 'मैं जङ्गल की ओर जा रहा था; सोचा कि चलो, राह में कामरेड गोचा से भी मिलता चलूँ।' उसके स्वर में श्लेष और परिहास का पुट विद्यमान

था 'सोचा, देख तो लो कि गोचा भी काम पर जा रहे हैं या नहीं? कहीं भूल तो नहीं गये। याद है न, आज सारे गाव को सामूहिक श्रम के लिए बुलाया गया है। तुम्हें तो मालूम ही होगा कि हमारे गाव ने सनारिया वालों के साथ होड़ बदी है। और हुकम छूटा है कि एक एक आदमी को काम पर हाजिर होना चाहिये। सो जाना तो पड़ेगा ही।'

गोचा मुँह से कुछ न बोला। वहीं खड़ा विस्मित दृष्टि से ग्वादी को घूरता रहा मानो इस बात का निश्चय कर रहा हो कि सामने ग्वादी ही खड़ा बातचीत करने का प्रयत्न कर रहा है या कोई और है? ग्वादी को उसका यह व्यवहार बड़ा ही विचित्र लगा, क्योंकि आमतौर पर गोचा कह कहा लगा कर ग्वादी का स्वागत किया करता था। उसे ग्वादी के बोलने की सांकेतिक और वक्रोक्तिपूर्ण शैली बड़ी पसन्द थी। स्वय भी मसखरा आदमी था। इसलिए समझ में नहीं आ रहा था कि आज दाल में काला क्या है?

'अगर मेरे हाथों में तुम्हारे हाथों जितना हुनर होता...' अपने स्वर को थोड़ा बदल कर ग्वादी ने फिर शुरू किया। लेकिन गोचा उसी तरह पत्थर की मूरत बना खड़ा रहा। यह देख ग्वादी ने बातचीत का विषय ही बदल दिया। बोला,

तुम्हारा घर तो करीब करीब तैयार हो गया है। और तुम तो कह रहे थे कि तुम्हें इमारती सामान नहीं दिया जा रहा है। लेकिन गांव के किस मरदूद में हिम्मत है जो तुम्हें इन्कार कर दे? चलो, अच्छा ही हुआ। तुमने अपना काम बना ही लिया। तुम नफे में रहे। तुम्हारी सफलता देख मुझे भी खुशी है, बहुत बहुत खुशी '

अब कहीं जाकर गोचा का मुँह खुला। उसका स्वर एक तो यों ही बुलन्द था और दूसरे इस समय वह पूरा गला फाड़कर चिल्ला रहा था

मेरी मज़ाक उड़ाने आया है क्यों? मुझसे बच कर ही रहना, कहे देता हूँ।'

ग्वादी की बोलती बन्द हो गई। काटो तो खून नहीं। उसकी समझ में नहीं आया कि गोचा इतना नाराज़ क्यों है? हो क्या गया! बिलकुल मरकना साँड हो रहा है। आखिर मामला क्या है? इस तरह घूर रहा है मानो ग्वादी उसका दुश्मन हो! उसकी उन आँखों और हाव-भाव को देख किसी के भी पाँव तले की धरती खिसक जायेगी; सूरमा भी डर जाये, फिर बेचारे ग्वादी की क्या बिसात? बहुत बहुत सोचने के बाद भी ग्वादी की समझ में नहीं आया कि हमेशा मित्र भाव से मिलनेवाला गोचा आज यों एकदम बौखलाया हुआ क्यों है?

लेकिन ग्वादी भी एक ही मीठा ठग था। काम बनाने के लिए इतना मीठा बन जाता और ऐसी बातें करता था कि सामनेवाला पानी-पानी हो जाय। इस मुसीबत में भी उसने अपनी मीठी ज़बान का सहारा लिया :

'यही तो बात है भैया! मैं कह रहा था कि गांव में एक जने की खुशी सारे गांव की खुशी है। तुम्हारी सफलता देख छाती गज भर चौड़ी हो जाती है। यकीन मानो, तुम्हारी सफलता, तुम्हारा लाभ और तुम्हारी बढ़नी सारे गांव की, हम सभी की बढ़ती और सफलता है! मुझे परमात्मा ने बनाया ही किस लायक है लेकिन तुम्हारी थोड़ी भी सहायता कर सकूँ तो समझूँगा कि जीवन सफल हो गया। अरे, कुछ नहीं तो काम में ही थोड़ा तुम्हारा हाथ बँटा दूँ। पर मेरी हालत तो तुमसे छिपी नहीं है। तुम तो जानते ही हो! रही जङ्गल में काम पर जाने की बात सो यहां कौन साला काम पर जा रहा है! क्या मैं नहीं जानता कि तुम्हें अपने ही कामों से फुर्सत नहीं? मैं तो मज़ाक कर रहा था। तुम्हें हँसाने की गरज से ये सब बातें कही थीं और तुम नाराज़ हो गये। इसमें भला नाराज़ होने की कौन बात थी?'

और ग्वादी ही-ही कर हँसने लगा।

गोचा ने बड़ी ही रुखाई से जवाब दिया: 'हाँ नाराज़ तो नहीं होना चाहिये, कहते तो तुम सच हो। लेकिन जङ्गल काटें-खोदें वे और दस-दस

पाटें साफ करें वे जो सामूहिक खेत में छूँछे हाथ आये हों। तुम और तुम्हारे भाई बन्द...'

'ठीक कहते हो भैया।' ग्वादी ने उतावलेपन न कहा। गोचा के मुँह से 'वे' सुनकर ग्वादी की चिन्ता मिटी की चलो, गोचा उससे नाखुश नहीं है। लेकिन उसका अनुमान झूठा साबित हुआ।

गोचा सीढ़ी का एक डण्डा नीचे उतर आया और इस तरह गरजने लगा मानो बारूद के ढेर में पलीता लगा दिया गया हो।

'सामूहिक खेत को बगीचा किसने दिया, तुमने या मैंने? बढ़िया, सिंचाई वाली जमीन किसने दी, तुमने या मैंने? पहले जितना मैंने दिया है उतना तुम भी दो फिर मुझसे अपनी तुलना करना।'

'सच कहते हो भैया!' ग्वादी ने नम्रतापूर्वक स्वीकार किया, लेकिन उसकी स्वीकृति की ओर ध्यान दिये बिना ही गोचा गरजता चला गया :

'सामूहिक खेत में बैल जोड़ी कौन लाया? और बैल जोड़ी भी कैसी? चिराग लेकर ढूँढ आओ फिर भी सौ सौ कोस तक देखने को नहीं मिलेगी। मैंने अपने हाथों से उन्हें पाल पोसकर बड़ा किया था। सगे बच्चों से ज्यादा उनकी हिफाजत की थी। पहले ऐसे बैल लाओ फिर मुझसे मुँह मारना, समझे?'

गोचा का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। ग्वादी को यह समझते देर न लगी कि गुस्से का कारण ये गड़े मुर्दे नहीं कोई और ही बात है। साथ ही यह डर भी था कि न जाने किस घड़ी गोचा अपना गुस्सा उसी पर उतारने लगे। उसने एक गहरी साँस ली और मन ही मन बोला 'आज सवेरे न जाने किसका मुँह देखा। तकदीर ही खोटी निकली। नहीं तो भला, गोचा क्यों आज सवेरे-सवेरे इन गुड़े मुर्दों को उखाड़ने बैठ जाता?

और उधर गोचा अभी भी चिल्लाता जा रहा था

आज से पहले भी आप जनम में कभी इतना जल्दी उठ कर काम पर गये हो? यों तन तोड़ कर मेहनत की है? मारे खुशी क रात

नींद नहीं आई होगी! बड़े खुश हो रहे हो न मन ही मन। मुझसे लेकर तुम्हें जो दे दिया गया है। अब यह जतलाने आये हो कि 'देखो, मैं भी तुम्हारी बराबरी का हो गया हूं!' लेकिन मेरे बराबर तुमने कभी मेहनत भी की थी? हमेशा मेरा विरोध ही करता रहा। आदमी की तरह हिम्मत से मन्जूर क्यों नहीं कर लेता है रे कमीने कुत्ते! 'हां, भैया! ठीक कहते हो भैया!' कह कर मेरा मुँह बन्द करना चाहता है! उस समय तू वहां मर गया था जब उन्होंने मुझे काठ-कबाड़ा न देकर अच्छा काम करनेवालों को देने का फैसला किया था? आरा-मिल की पूरी इमारती लकड़ी उन्हीं को दी जायेगी! और तू भी तो उनमें से एक है! कब से अच्छा काम करनेवाला बन गया है? नस्सारकेकिया* को भी तो तू मात करता है! इस हरामजादे को इमारती लकड़ी दी जायेगी! सूची में पहला नाम इसी का लिखा गया है। नाम ही नहीं लिखा गया है हाथ जोड़कर प्रार्थना भी की जा रही है कि 'श्रीमानजी, इमारती सामान लो और रहने के लिए घर बना लो।' कैसा जमाना आया है? ईमानदारों की कहीं पूछ नहीं। चोरों और कामचोरों को राजसिंहासन दिये जा रहे हैं! ज़रा शकल तो देखो। न ढङ्ग न घड़ा और हिमाकत यह कि मेरे सामने खड़ा ही-ही कर रहा है! अच्छा, तो आप मुझे काम पर बुलाने के लिए आये हैं, क्यों? लकड़ी तुम्हें मिलेगी और काम पर जाऊँ मैं? पर देखूँगा कि किसने अपनी माँ का दूध पिया है? किसका घर पहले बनता है? बिना तुम्हारी मदद के भी जो अपना घर पूरा न कर लूँ तो मेरा नाम गोचा नहीं।'

घूँसे तान तान कर गोचा ने अपना गर्जन-तर्जन समाप्त किया। उसके

* नस्सारकेकिया—जार्जिया की लोक-कथाओं में वर्णित एक नायक, जो अव्वल नम्बर का धूर्त, कामचोर, आलसी और लफङ्गा था। हर कठिनाई में वह अपनी हाज़िर-जवाबी के कारण कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेता था।

बोझ के कारण सीढ़ी कांपने और अधूरी दीवारें चरमराने लगी थीं। और कोई होता तो भाग खड़ा होता। लेकिन ग्वादी ने भी अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया। उसने अपनी ओर से सफाई देना शुरू की

'तुम भी कहां की बात ले बैठे, गोचा! किसी ने तुम्हें गलत बतला दिया है। किसी साले ने गप्प उड़ा दी है कि ग्वादी भी मकान बना रहा है। मैं और मकान बनाऊँगा? तुमने इस बात पर विश्वास भी कैसे कर लिया? सब झूठ है। हां, वे मुझे इमारती सामान ज़रूर दे रहे हैं। लेकिन मैं तो मांगने गया नहीं था। मान न मान मैं तेरा मेहमान वाली मसल है, मेरे भाई! अच्छा कार्यकर्ता? यहां कौन अच्छा कार्यकर्ता है? मैं तो हैरान हूँ कि तुमने इस गपोड़े पर विश्वास कैसे कर लिया? और मैं जंगल में काम करने जाऊँगा? जो काम करने जाऊँ तो समझ लेना कि ग्वादी अपने बाप की नहीं हराम की औलाद है! मैं तो बाजार जा रहा था। आज शुक्रवार जो है। सोचा, तुम्हारे बगीचे से होकर निकल जाऊँ इतना चक्कर बच जायेगा। भगवान की सौगन्ध खा कर कहता हूँ, यदि इसके सिवा दूसरी कोई बात मेरे मन में भी आई हो तो यहीं की यहीं मुझ पर गाज गिर पड़े, मैं तुम्हारे देखते देखते अन्धा और कोढ़ी हो जाऊँ।'

यह कह कर उसने माथे पर से टोपी उतारी और पूरी शक्ति से उसे जमीन पर दे मारा।

इस बार ग्वादी बिलकुल सोलहों आने सच बोल रहा था। लेकिन गोचा को उसकी बात का भरोसा नहीं हुआ। जिस तरह पहले उसने ग्वादी की झूठी बात को बिलकुल सच मान लिया था, उसी तरह इस बार उसने उसकी सच्ची बात को झूठ समझ लिया।

'अगर मेरे बगीचे में पांव भी आगे बढ़ाया है तो साले का खोपड़ा ही फोड़ दूँगा।' उसने गरज कर कहा और दोनों हाथों में कुल्हाड़ी थामे सिढ़ियों पर से नीचे झपटा।

यह देख ग्वादी सिर पर पांव रख कर भागा। यों ही हिम्मत का वह

कचा था। लेकिन यदि दिल का साहसी भी होता तो भी उसके पाँव उसे वहाँ खड़ा न रहने देते। किसी तरह उसने अपनी टोपी उठाई और भाग चला। सड़क पर आकर उसने दम लिया और बोला,

'अच्छे बचे। जान बची और लाखों पाये!'

४

अपमानित और पराजित ग्वादी चौराहे पर आ खड़ा हुआ और सोचने लगा कि अब किधर जाय: शहर की ओर या गाँव की ओर?

सूरज ऊपर उठ आया था। बाज़ार पहुँचने में काफ़ी देर हो गई थी। और फिर आज का दिन भी कुछ बहुत अच्छा नहीं मालूम पड़ रहा था। सवेरे से अपशकुन पर अपशकुन हो रहे थे। डर लगने लगा था कि आगे कहीं और कोई बड़ा अनिष्ट न हो जाय!

वह सोचने लगा: 'क्यों न काम पर ही पहुँच जाऊँ? कम से कम गैरा तो सन्तुष्ट हो ही जायगा।' लेकिन वह कोई पक्का निश्चय नहीं कर पा रहा था। इस समय उसे बहुत गुस्सा आ रहा था और उसका दिमाग़ गोचा के बारे में सोच रहा था।

'वह साला गोचे का बचा अपने आपको समझता क्या है? नये घर की आख़िर उसे ज़रूरत भी क्या है? पुराना घर काफ़ी अच्छा और मज़बूत है। शाहबलूत की लकड़ी इस्तेमाल की गई है। न बारिश में टपकता है, न बर्फ़ में दबता ही है। फिर क्यों नये मकान के पीछे पड़ा है? मेरे ऐसा घर हो तो मैं सात जनम भी दूसरे घर की बात न सोचूँ।'

यह नहीं कि ग्वादी गोचा की नाराज़ी का कारण जानता ही न हो। वह सब कुछ जानता था। ओरकेती गाँव की छोटी से छोटी बात, मामूली से मामूली घटना तक उससे छिपी नहीं रहती थी। वह जानता

था कि गोचा सर्दियों से पहले अपना मकान पूरा कर लेना चाहता है। लेकिन असल में बात मकान की नहीं कुछ दूसरी ही थी। यह मकान गोचा अपने लिए नहीं बना रहा था। उसके अपना कोई लड़का नहीं था। सिर्फ एक लड़की थी, इसलिए वह घरजँवाई लाना चाहता था। और यही वजह थी कि उसे घर पूरा करने की जल्दी पड़ी थी। उसने दहेज में लड़की को घर देने का निश्चय किया था। घरजँवाई के लिए भला उसने किसे चुना था?

वह बड़ी शान से कहता कि मैं कोई कसाई-चमार तो हूँ नहीं, जो अपनी लड़की किसी ऐरे गैरे नत्थूखैरे को ब्याह दे। जात-कुल सभी कुछ देखना पड़ता है। ये किरवा, असमानन्दिये, सलान्दिये तो मेरे घर की चौखट भी पार नहीं कर सकते। इनसे रिश्ता जोड़ कर कुल में बट्टा नहीं लगा सकता। एक वंश विरवे का पोरिया मुझे ढेलन्न मिल गया है। उसी के साथ लड़की के हाथ पीले कर दूँगा। वह मेरा घरजँवाई बन सकता है। मगर मजे की बात तो यह थी कि गोचा स्वयं भी सलान्दिया ही था और अब पैसा पाकर अपना कुल छिपाता फिरता था।

इधर ऊँच-नीच का ख्याल तो कभी से मिट गया था और कोई इक्कीस विरवे बीस विरवे वाली बात सोचता भी नहीं था और न इस बात का कोई अर्थ ही रह गया था। लेकिन ग्वादी को आश्चर्य तो इस बात पर था कि गोचा सलान्दियों का किरवों से ऊँचा समझता है। ग्वादी स्वयं किरवा था। लेकिन उसके आश्चर्य का कारण यह नहीं था। हकीकत यह थी कि किरवा से सलान्दिया ऐंठे समझे ही नहीं जाते थे, वस्तुतः थे भी। सभी जानते हैं कि सलान्दिया किरवों से नीचे हैं। जब सलान्दिया पोरियों के गुलाम थे उस समय किरवों की हैसियत स्वतन्त्र किसानों की थी। अब मुलाहिजा फर्माइये कि कौन ऊँचे हैं और कौन नीचे हैं? उच्च कुल के पोरियों के गुलाम होकर भी सलान्दिया स्वतन्त्र किरवा किसानों से नी

हो हुए न ? अब तुम चाहे जितने नखरे करो, सब हमेशा सच है !'

और आज गोचा की चपती कुछ उसके पारिवारिक नाम के कारण तो थी नहीं; और न ग्वादी की दुर्दशा उसके विवाह होने के कारण ही थी। किसी जमाने में उसकी गिनती भी अच्छे लोगों में की जाती थी। वह सदा का दरिद्री या विपन्न नहीं था। वह तो बुखार ने उसे हैरान कर दिया, तिल्ली बढ़कर पेट मशक हो गया और फिर घरवाली मर गई। मुसीबत कभी अकेले नहीं आती। आदमी ढाल में लुढ़कने लगता है तो लुढ़कता ही चला जाता है। लेकिन ग्वादी का भी एक जमाना था। आज भी उसके एक छोड़ पांच-पांच बेटे हैं और पांचों को खुद उसने पैदा किया था। और वह शेखीबाज गोचा एक बेटा भी पैदा नहीं कर सका। हुई भी तो लड़की। अब न जाने किसको घरजँवाई रखकर बेटे की हौंस पूरी करेगा। कहां पांच लड़के और कहां एक भी नहीं। अब तुम्हीं फैसला कर लो कि कौन ऊँचा है और कौन नीचा ? फिर भी औंधी खोपड़ी के लोग सलान्द्रियों को किन्नों से ऊँचा समझते हैं। अच्छा, मेरा को ही ले लो। वह भी किन्वा है। अब चिराग लेकर ढूँढ़ आओ तब भी तुम्हें सलान्द्रियों में ऐसा एक भी जवान नहीं मिलेगा। सलान्द्रिया तो ठीक पोरिया में भी कोई नहीं है। देखो, एक भी नाम बतला दो, जो मेरा का मुकाबला कर सके ? आरचिल ? हां, दूसरों से गनीमत है। इसी आरचिल पर तो गोचा ने दांत गड़ा रखे हैं, और सो भी इसलिए कि वह पोरिया है। बाकी सच पूछो तो तुम्हारा यह आरचिल भी...लेकिन आरचिल के बारे में कुछ कहना ग्वादी के लिए इतना आसान नहीं था, क्योंकि वह उसके साथ व्यावसायिक सूत्रों से बँधा था। लेकिन फिर भी उसे कहना ही पड़ा कि यह आरचिल, हां तुम्हारा आरचिल भी चोर है, चोर ! गोचा भले ही यह बात न जानता हो !

आरचिल का नाम आते ही ग्वादी के मन एक नयी शंका ने जन्म ले लिया। गोचा की इस शेखी का कि 'तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, मैं तुम्हारी सहायता के बिना भी अपना मकान पूरा कर लूँगा' अब

फूस की टट्टी है। एक फूँक मारो उड़ गई। अरे, क्या धरा है उस मुट-मरद में ? एक लत्ती देता, उताल हो जाना और अपने ही कुल्हाड़े से सिर फोड़ लेता। आये बड़े कुल्हाड़ा चलाने वाले। ग्यादी से पाला नहीं पड़ा है अभी भैयाजी का !'

इसी तरह गोचा पर उबलता, कभी ज़ोर से और कभी मन ही मन उस पर भिनकता ग्यादी चला जा रहा था। अपनी धुन में उसे यह सुध भी न रही कि शहर का रास्ता शुरू हो गया है और वह गांव से बाहर निकल आया है। गोचा के कुल्हड़ा तानने की बात ध्यान में आते ही उसका सारा तन-बदन गुस्से के मारे जल उठा; सांस ज़ोर-ज़ोर से चलने लगी और वह बीच सड़क में तन कर खड़ा हो गया। इतनी देर बाद गोचा का सामना करने को तैयार होने पर भी उसे किसी तरह की लज्जा नहीं महसूस हो रही थी। वह पैंतरा बदल कर मुकाबले के लिए खड़ा हो गया। एक पांव थोड़ा आगे को ओर बढ़ा कर उसने अपने चाकू की मुठिया इस तरह पकड़ली मानों तलवार पकड़े हो। और तब कहीं चल-पर उसे ख्याल आया कि वह बीच सड़क में खड़ा है और गांव काफी पीछे छूट गया है।

'अरे, मैं कहां आ पहुँचा ?' आश्चर्य चकित होकर वह बोल पड़ा और दूसरे ही क्षण अपना गुस्सा और हाथ में पकड़े हुए चाकू के अस्तित्व तक को भूल गया।

उसने अपने चारों ओर एक निगाह डाली। दाहिने हाथ की ओर, थोड़ी उचाई पर आटा मिल थी। वहां इन बल शुरू हो गई थी। इसका अर्थ यह था कि मिल चालू हो गई है। खटर-पटर और धड़ड़-धड़ की आवाज़ आ रही थी। उसने गुस्से की सांस ली। इसका नाम है तकदीर ! वह गही-सलामत गांव से बाहर निकल आया था। अब वापिस घर लौट जाने में तो कोई तुक्य या नहीं। मिल देखकर उसके मनमें नये-नये विचारों का तांता लग गया।

'ऐसा लगता है कि आज का दिन बेकार नहीं जाने पायेगा। यहां अपना कुछ न कुछ काम जरूर बन जायगा।'

वह अंगुठों के बल उचक कर बागुड़ के पीछे, मिल के अहाते के अन्दर देखने लगा। सम्भव है कि कोई परिचित देख जाय।

ठीक उसी समय मिल का फाटक खुला और एक घुड़सवार अन्दर से सड़क की ओर इस तरह आया मानो ग्वादी की अभिलाषा ही उसे खींच लाई हो। वह घुड़सवार निचाई की ओर घोड़ा दौड़ाने लगा। घुड़सवार को पहिचानते ग्वादी को देर न लगी। उसे देखते ही ग्वादी का मन खुशी के मारे नाच उठा। उसके जी में आया कि दौड़कर घुड़सवार को पकड़ ले। डर रहा था कि वह कहीं दूसरी ओर को मुड़ न जाय। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने सोचा कि इस तरह की जल्दबाजी ठीक न होगी इसलिए घुड़सवार की ओर से लापर्वाही का ढोंग कर वह अपनी राह चलने लगा। इस ढोंग का मुख्य कारण यह था कि घुड़सवार ने उसे देख लिया था, वह खुद भी ग्वादी को देखकर प्रसन्न हुआ था और हाथ का चाबुक ऊँचा उठाकर उसने संकेत किया 'ठहरना ज़रा, मुझे तुमसे कुछ काम है।' घुड़सवार की उत्सुकता को ग्वादी ने भांप लिया था। वह पता लगाना चाहता था कि देखें, घुड़सवार मिलने के लिए कितना उत्सुक है। इसीलिए उसने बहरी की चाल चली थी।

घुड़सवार सड़क पर आ पहुँचा। पक्की सड़क पर घोड़े की टापों का स्वर बजने लगा। वह ग्वादी की ओर ही सर पर दौड़ा चला आ रहा था। उसने पास आकर घोड़े की बाग खींची, घोड़े के धक्के से ग्वादी गिरते गिरते बचा। चाबुक की मुठिया से अपनी बालदार टोपी सिर पर पीछे की ओर धकेलते हुए उसने क्रुद्ध स्वर में कहा

'क्यों रे आवारे, तू बाजार क्या नहीं गया? क्या भूल गया कि आज शुक्रवार है?

ग्वादी कुछ कहने जा ही रहा था कि घुड़सवार ने पहले चारों ओर

देख कर यह निश्चय कर लिया कि कोई देख तो नहीं रहा है, फिर थोड़ा झुककर ग्वादी के कान में कहा:

'जल्दी से बाज़ार जा, नहीं तो समझ लेना कि शामत हो आगई है। वहाँ तेरे लायक एक काम है, समझा? उसमें तुझे भी हिस्सा मिलेगा। वहीं बतलाऊँगा...'

ग्वादी ने आपत्ति प्रकट की:

'अगर इतनी जल्दी है तो मुझे अपने पीछे घोड़े पर चढ़ा लो। हम दोनों साथ ही पहुँच जाएँगे। इसमें अच्छा और क्या होगा?'

घुड़सवार की भौंहों में बल पड़ गये। वह काठी में तन कर खड़ा हो गया। बाएँ हाथ से अपनी मूछों की ऊपर उठी हुई नोकों को सहलाते हुए उसने झिड़क कर कहा:

'अरे उल्लू के पट्ठे, तूने मुझे क्या समझा है? क्या मैं भी कोई बिस्वा-किस्वा हूँ?'

उसकी आँखें चमकने लगीं। उसने घोड़े की बाग मोड़ी, घोड़ा उड़ी लेकर आगे की ओर झपटा और हवा से बातें करने लगा।

उस घुड़सवार का नाम था मारचिल पोरिया। पहले वह आरा मिल का मालिक था; लेकिन जब आरा मिल को 'ओरकेती सामूहिक खेत' ने अपने अधिकार में कर लिया तो वही उसका मैनेजर बना दिया गया। मारचिल का जन्म एक सम्पन्न और कुलीन घराने में हुआ था। गोवा के भावी जामाता के रूप में इसी मारचिल का उल्लेख ग्वादी ने अपने विचारों में किया था; और इसी को उसने चोर भी बतलाया था। पुराने जमाने में ग्वादी मारचिल के बाप का असामी था और उसी सम्बन्ध के कारण मारचिल अब भी उसका अपने गन्दे कामों में कभी-जभी उपयोग कर लिया करता था। ग्वादी को पोरिया-कुटुम्ब की नौकरी छोड़े काफी अर्सा हो गया था और जमाना भी बदल गया था फिर भी पुराने मालिक और पुराने नौकर का वह गुप्त रिश्ता अभी तक चला आरहा था। कभी

पुराने मालिक को इन्कार करने का साहस न होने से, कभी मारचिल के डर के कारण, परन्तु अक्सर अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर ग्वादी उसका काम बजा दिया करता था। इन 'कर्मों' में उसका भी फायदा होजाता था, क्योंकि ये काम ऐसे होते थे जिनमें ग्वादी को किसी तरह का शारीरिक परिश्रम नहीं करना पड़ता था। इसीलिए मारचिल का प्रस्ताव सुनकर वह उछल पड़ा। 'चलो, किस्मत चेत तो गई है। मारचिल की कृपा से अपनी भी मुट्ठी गरम हो जायेगी। अब क्या है? बकरी के बच्चे के भाग जाने के बावजूद भी मैं अपने नन्हें बच्चों के लिए जूते खरीद सकूँगा।'

जब मारचिल आँखों से ओझल होगया तो उसने मारचिल के बतलाये हुए काम से होने वाले फायदे का मन ही मन हिसाब लगाया और अपने आप को दिलासा देते हुए बोला :

'बोलो ग्वादी कोई करे भी तो क्या? इन बदमाशों से छुटकारा कहाँ है? इनसे बिगाड़ कर कोई जायेगा कहाँ? ऐसों के साथ झूठ और दगे से ही काम लेना पड़ता है। पानी में रहकर मगर से तो बैर बांधा नहीं जा सकता। बोलो, सच कह रहा हूँ न?'

और वह तेज़ी से कदम बढ़ाता हुआ शहर की ओर चल पड़ा।

५

पहले का यह ऊँघता हुआ छोटा-सा देहाती शहर अब चहल पहल और सुन्दर इन्तजाम वाला जिला केन्द्र बन गया था। लेकिन उसकी पुरानी विशेषता, इतवार और शुक्रवार के दोनों साप्ताहिक बाजार अब भी बरकरार थे।

पुराने जमाने में यहां की आबादी अधिक नहीं थी। थोड़े से ही लोग रहते थे और बाजार के दिन खाने-पीने का और दूसरा सामान काफी

तादाद में भर लेते थे। फिर कोई ऐसा घर नहीं था, जिसके यहां छोटी बड़ी खेती-बाड़ी न हो। परन्तु अब परिस्थितियां बदल गई थीं। आसपास के देहातों में बड़े बड़े और सम्पन्न सामूहिक एवं संविगत कृषि क्षेत्रों का विकास हो गया था। इन 'कृषि क्षेत्रों' के कारण वहां की आबादी भी पहले से बढ़ कर दुगुनी हो गई थी। बाहर से कई मजदूर, कारीगर, मिस्त्री, शिक्षक, डाक्टर, कृषि-निरीक्षक आदि रहने आगये थे। अब शुक्रवार और रविवार के बाज़ारों से काम नहीं चलता था। फिर आसपास के किसानों का जीवनस्तर भी ऊँचा उठ गया था और कारखानों के तैयार माल की उनकी मांग बढ़ गई थी। वे शहर को काफी तादाद में अनाज देते थे और बहुत बड़ी तादाद में पक्का माल खरीद कर ले जाते थे! खरीद फरोस्त काफी बड़े पैमाने पर होने लगी थी। अब शहर में रोज ही एक बाजार सा लगा रहता था।

फिर आज तो शुक्रवार का दिन था। गांवों से आने वालों की भीड़ उमड़ी पड़ रही थ। बीच बाजार की ओर जाने वाली सड़कों पर तो इतनी भीड़ थे कि रास्ता चलना मुश्किल होगया था। गाड़ियों की चरर-चूँ बेचने के लिए लाये गये पशुओं का रंभाना मिमियाना, खरीद-फरोस्त करने वालों का शोर-शोर कान के पर्दे फाड़े दे रहा था। ऐसा लगता था मानों रास्ते पर हँसती, निनाद करती मानव गंगा ही बही जा रही हो।

त्यादी को हाट बाज़ार में बड़ा मज़ा आता था। अपरिचितों के साथ धक्का-मुक्की करने में उसे अपार सन्तोष मिलता था। यहां उसकी जवान पर कोई अंकुश लगाने वाला नहीं था। वह अपनी हाजिर जवाबी, मसख-रेपन और व्यंगवाणों का जी भर कर उपयोग कर सकता था। अपरिचितों के बीच उसका व्यवहार अपने गांव के व्यवहार से सर्वथा भिन्न होता था। यहां उसे अपनी मर्यादा को ठेस पहुँचने या किसी के हाथों अपमा-नित होने का ज़रा भी डर नहीं था। स्वभाव से ही वह अपनी मर्यादा और बड़प्पन के प्रति बड़ा सजग था और अजनबियों में तो बड़ी सफलता से

इन्हें निभा ले जाता था। सच पूछा जाय तो उसके अपने गांव वाले उसका ज़रा-सा भी सम्मान नहीं करते थे। वहां उसकी इज्जत तीन कौडी की समझी जाती थी। और यही उसके सबसे बड़े दुःख का कारण था। दुनिया में हर आदमी दूसरों की प्रशंसा और सम्मान का भूखा होता है। आदमी के लिए सांसकी तरह दूसरों का मान-पान और प्रतिष्ठा ज़रूरी है। ख्वादी के लिए यही चीज़ें अपने गांव में दुर्लभ थीं; लेकिन यहां हाट-बाजार में वह बड़ी सरलता से दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकता था और सुनने वालों से सम्मान भी प्राप्त कर लेता था।

फिर दूर देहात से आने वाले किसानों को भी बीच बजार में खड़े होकर गप्पा लड़ाना और सुनना सुनाना अच्छा लगता था। ख्वादी के बोलने का ढङ्ग और उसकी मज़ाकें उन्हें मोह लेती थीं। वे मन्त्र-मुग्ध होकर उसकी फिकरे बाजियां और व्यंग वाक्यों को सुनते थे। इतने अच्छे श्रोता पाकर ख्वादी भी खिल उठता था। और अपनी सारी प्रतिभा बिखेरने लगता था। उसे इसमें अपार आनन्द मिलता था।

चलते-चलते वह सामुहिक खेती के किसानों के एक झुण्ड के साथ जामिला, जो उसी की तरह शहर के पश्चिमी हिस्से से होकर चौड़ी सड़क के द्वारा बीच बाज़ार की ओर जा रहे थे।

उनमें उसे एक किसान दिखाई दिया, जो बकरी के गले में रस्सी बांधे उसे हांक कर ले जा रहा था। बकरी के साथ एक छोटा बच्चा भी था। ख्वादी का उस किसान से कोई परिचय नहीं था। फिर भी उसने बड़ी गम्भीरता से बकरी और बकरी के बच्चे के दाम पूछे। कीमत सुनकर उसने किसान को सलाह दी कि वह कीमत कम लगा रहा है। ज्यादा कीमत लगानी चाहिये। दुगना मांगना चाहिये। फिर उसने बतलाया कि कैसे वह स्वयं भी बकरी का एक बच्चा बेचने के लिए ला रहा था और रस्सी से बांधकर लाने पर भी कैसे वह तुड़ाकर भाग गया! वह बच्चा तो बड़ा

ही सुशील मालूम पड़ता है। देखो कितना समझदार और आज्ञाकारी है। ऐसे बचे के दाम तो ज़रूर ज्यादा मांगने चाहिये।

किसान ने आश्चर्य चकित होकर ख्वादी की ओर देखा और बोला:

'अरे चकम, तो उस बचे को मजबूत रस्सी से बांधकर लाना चाहिये था। फिर मजाल था कि भाग जाता?'

लेकिन ख्वादी ने बड़े ही आत्मविश्वास और आत्म निर्भरता के भाव से कहा:

'कहते तो तुम ठीक हो, लेकिन मेरे वाला बचा बकरे की नहीं, शैतान की औलाद है! मजबूत रस्सी से बांधने पर भी वह भाग जाता। बकरे भी इन्सान की तरह हैं। आदमियों की तरह कई बकरों में उचित-अनुचित का कोई खयाल नहीं होता; न दया होती है न शर्म। अपनी आदतों के साथ जनमते हैं। मेरे वाले बचे को तुम रस्सी तो क्या लोहे की जंजीर से भी बांध देते तो भी वह भाग जाता।'

इसके बाद वह अनुनयपूर्वक किसान से कहने लगा:

'अब मुझ पर इतनी मेहेरबानी करो कि तुम्हारे वाले इस बचे का क़ीमत बाजार में पांच रूबल लगा दो! खुशी-खुशी बिक जायगा। तब तुम भी कहोगे कि हां, ओरकेती सामूहिक खेत का किसान, बिरवा परिवार का पंद्राम यह ख्वादी सच कह रहा था!'

नाम सुन कर वह किसान क्षणभर के लिए तो दङ्ग रह गया। बीच सड़क पर रुक कर उसने सिर से पांव तक ख्वादी को अच्छी तरह घूर-घूर कर देखा और तब बोला—'अच्छा, तो ख्वादी तुम्हारा ही नाम है! ओरकेती के मशहूर ख्वादी तुम्हीं हो! तुम्हारी शोहरत सुन-सुन कर मैं सोचा करता था कि वह शाज बुझक्कड़ आखिर है कैसा! ओह् हो। क्या कहने हैं आपके!' इतना कह कर उस किसान ने वह क़हक़हा लगाया कि सड़क और आसपास के मकान की छतें तक हिल गईं।

जिस समय यह घटना घटी वे मेहराबदार सायबान वाली कुछ पुरानी दुकानों के सामने से आ रहे थे। थोड़ा ही आगे बढ़ने पर उन्हें गाने की

आवाज़ सुनाई दी। जहाँ से गाने की आवाज़ आ रही थी वहाँ पुराने ज़माने में एक कलाली (शराब घर) थी, लेकिन इन दिनों महराज वाली उस दुकान में सहयोगी भोजन-गृह खोल दिया गया था।

कौन कहाँ गा रहा है यह जानने के लिए ग्वादी बेचैन हो उठा। गाने वालों को सुरताल का ज़रा भी ज्ञान नहीं था और वे बड़े ही बेसुरे स्वर में गा रहे थे। ग्वादी स्वयं बड़ा अच्छा गवैया था और किसीका भी बेसुरा राग उसे अच्छा नहीं लगता था। गाने वालों में से एक आवाज़ उसे पहिचानी-सी लग रही थी, कहीं आरचिल तो नहीं है!

अपनी चाल धीमी कर वह सुनने लगा।

गाना रुक गया और वह फिर आगे बढ़ा।

ठीक उसी समय किसीने उसका नाम लेकर पुकारा.

'ग्वादी!'

वह फिरकनी की तरह पीछे की ओर मुड़ा। देखा तो भोजनगृह के दरवाज़े में आरचिल खड़ा था।

'कहाँ ऊँट की तरह नाक उठाये चला जा रहा है? चल, इधर मर!' आरचिल ने अधिकार पूर्ण स्वर में हुक्म सुनाया।

वह पचीसेक बरस का, औसत ऊँचाई वाला जवान था। घुटी हुई दाढ़ी वाले गेहुँए चेहरे पर बिच्छू के डंक की तरह बल्ली हुई मूछों की नोकें खड़ी थीं। उसने एक पुराना बदरङ्ग कोट पहिन रखा था। माथे पर भूरे रङ्ग की एक ऊँची टोपी कानों तक खिंची हुई थी। न जाने क्यों उसने अपने कोट का कालर उठा रखा था। मुलायम चमड़े के उसके एशियाई जूतों पर खूब रगड़-रगड़ कर पालिश मली गई थी और वे चमा-चम चमक रहे थे।

'अरे, मैं तो आप ही को तलाश रहा था।' ग्वादी ने जवाब दिया और चेहरे पर विनम्रता का भाव लाकर आरचिल के समीप दौड़ा आया। उसने झुक कर अभिवादन किया और अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

'अच्छा तुम्हें एक खुश खबर सुनाएं। बोलो, क्या दोगे?' आरचिल ने ग्वादी के आगे बढ़े हुए हाथ को निरादर पूर्वक परे ढकेल दिया और उसका कन्धा पकड़ कर पूरी ताक़त से उसे झकझोरते हुए कहा: 'बोलो, क्या दोगे?' फिर उसे अपने पास घसीट कर धीरे से उसके कान में कहा: 'अरे बुद्धू, सामूहिक खेत समिति ने तुझे पटिये देने का निश्चय किया है; कुछ सुना भी है?'

'खाली पटियों से क्या होगा, भैया? अकेले पटियों से तो मकान बना नहीं करते...'

'अरे उल्लू के पट्ठे, पटिये ही तो खास चीज़ हैं! अच्छा बतला, तुझे उन्होंने सूचित किया है या नहीं?' आरचिल ने उसे धक्का देकर कहा: 'इस खुश खबर के लिए तुझे मेरा मुँह मीठा करना ही पड़ेगा, समझा?'

फिर वह स्वयं ग्वादी के समीप आ खड़ा हुआ और अपनी तर्जनी उसकी नाक के आगे उठाकर घुड़की भरे स्वर में कहने लगा:

'यह तो तू और मैं दोनों ही जानते हैं कि आरामिल में स्याह-सफेद सब कुछ करना मेरे हाथ की बात है। अगर चाहूँ तो कल ही तुझे पटिये दे दूँ, और न चाहूँ तो पूरे बारह महीने तक टरकाऊँ और फिर भी कुछ न दूँ। आया कुछ समझ में? बस, तुझे तो सब पका-पकाया चाहिये। मेरे अपने बड़े परिश्रम से आरामिल खड़ी की और तुम वह मुझ से छीन लेना चाहते हो, क्यों? सच है न? लेकिन मेरे रहते तुम्हारे मन की हो न सकेगी! मैं तुम्हारे जैसों की नस अच्छी तरह पहिचानता हूँ।'

ग्वादी की नाक के आगे घूँसा तान कर उसने यह बात कही थी।

'आपके पिताजी ने मेरी पर वरिश की है और मैं उम्मीद करता हूँ कि आप का भी मुझ पर वैसा ही दया भाव बना रहेगा। यह भी भला कोई कहने की बात है?' ग्वादी ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।

आरचिल ने ग्वादी की कोहनी को झकझोरते हुए कहा: 'यहाँ मेरा कुछ सामान रखा है। तुझे यह सामान गांव ले जाना है, समझा? तुझे

उसकी मज़दूरी दी जायेगी और तेरे लड़कों को भी कुछ ईनाम मिल जायगा।'

'मेरे बड़े भाग, कि तुम्हारी चाकरी बजा सकूँ। मैंने आज तक कभी तुम्हारा कहना टाला है?' एक स्वामीभक्त कुत्ते की तरह उसकी आखों में देखते हुए ग्वादी ने धीरे से उत्तर दिया।

'इतना बड़ा झोला लाकर तून बड़ी अक्लमन्दी की। देखूँ इसके अन्दर क्या है?' आरचिल ने झोले पर एक निगाह डालते हुए पूछा।

कुछ नहीं है यही ज़रा-सा ' ग्वादी ने हकलाते हुए उत्तर दिया।

'होगा कुछ कचरा-कूड़ा कीमत तो कानी कौड़ी भी न होगी, पर मैं उसकी कीमत भी दे दूँगा। आरचिल ने ग्वादी की बात काट कर बीच में ही कहा। फिर ज़ोर से भोजनगृह का दरवाज़ा धकेल कर उसने तेज़ स्वर में कहा—'चल अन्दर मर।'

बड़े हाल में होकर वे दोनों एक छोटे से कमरे में पहुँचे, जहाँ पहले से ही दो आदमी टेबल के एक कोने के सामने बैठे थे। उनमें से एक सहयोगी वस्तुभण्डार का गुमाश्ता मैक्सिम था। ग्वादी उसे पहिचानता था। और उसे यह भी मालूम था कि वह आरचिल का जिगरी दोस्त है। दूसरा भूरे बालों और छँटी हुई मूछों वाला कोई अजनबी था। ग्वादीने उसे पहले कभी नहीं देखा था। शकल सूरत से वह ईस ओर का नहीं कहीं बाहर से आया हुआ मालूम पड़ता था।

ग्वादी को देख कर मैक्सिम बड़ा प्रसन्न हुआ, उसने अपनी छोटी सी फैशनेबल दाढ़ी उछालते हुए उठ कर उससे हाथ मिलाया और उसकी तबियत के हाल पूछे। उसकी आदत लोगों को तिरछी निगाहों से देखने की थी इस लिए ग्वादी को ऐसा लगा मानों वह ऐंचाताना हो।

आओ, नवागन्तुक की सेहत का जाम पीयें।' यह कहते हुए मैक्सिम ने लाल शराब का एक ग्लास भर कर ग्वादी के सामने रख दिया।

आरचिल ने अजनबी को ग्वादी का परिचय देते हुए कहा, 'यह कोई मामूली किसान नहीं खाक चकर है, सामूहिक खेत समिति ने इसके लिए

नया घर बनाने का निश्चय किया है।' फिर उसने ग्वादी से गाने का अनुरोध किया और कहा कि अच्छी तरह गाना, कहीं मेहमान के आगे शर्मिन्दा न होना पड़े। शराब की प्याली उठा कर उसने ग्वादी के ओठों से लगा दी और प्रस्ताव किया कि वह उसे एक ही घूँट में पी जाय।

जैसा कि रिवाज़ चलता आया है, ग्वादी इन्कार करने लगा। काफी बड़ी प्याली है, एक घूंट में तो खाली नहीं की जा सकती आदि-आदि।

'और, देखो भैया, मैं डाक्टर के यहां जा रहा हूं। वह मेरे सुई लगायेगा। मैं पी हुई दशा में उसके यहां कैसे जा सकूँगा?'

लेकिन किसीने उसके इस कथन पर विश्वास नहीं किया।

'क्या अहमक आदमी है! इतना भी नहीं जानता कि लाल शराब पेट की सभी बीमारियों के लिए रामबाण औषधि है। पीते ही सब रोग हवा हो जाते हैं। तिल्ली-पिल्ली सभी कट जायेगी और पेट पिचक कर बराबर हो जायेगा।' आरचिलने आग्रहपूर्वक कहा।

ग्वादी ने सब के साथ प्यालियां खनकाईं, फातिहा पढ़ा और यह कहते हुए एक घूंट में पूरा ग्लास खाली कर दिया कि खुदा सबको सेहत बख्शे। उसके बैठते पर दोस्तों ने 'आमीन' कहा और फिर उससे गाने का अनुरोध करने लगे।

आरचिल ग्वादी की बगल में बैठ गया। उसने अपना एक हाथ ग्वादी के कन्धे पर रख दिया और उसके मुँह के आगे अपना एक कान इस तरह लगा दिया मानों स्वर के छोटे से छोटे चढ़ाव-उतार को आत्मसात् कर अपना गला सुधारना चाहता हो। साथ ही वह ग्वादी की पीठ से लटकते हुए झोले को भी लगातार टटोलता जा रहा था।

'मालूम पड़ता है कि यह पाजी बाजार में बेचने के लिए सेव लाया है।' उसने अन्दाज लगाया और फिर जोर से बोला:

'क्यों बे, ये इतने से सेव क्यों लाया है? इनके पैसे ही कितने

मायेंगे ! हुँह्, ऊँट के मुँह में जीरा। झोला देखो तो हाथी समा जाय और उनमें सेव कुल जमा दस भी नहीं होंगे।'

ग्वादी कुछ कहे उसके पहले तो आरचिल ने झोले के अन्दर हाथ डाल दिया और पुकार उठाः 'अरे, सेव नहीं, चीकू हैं!'

उसने एक फल निकाल कर टेबल पर रखा और फिर झोले में हाथ डाल कर एक साथ पाँच-सात निकाल लिये। उन फलों को देख कर सबके सब उछल पड़े।

'ये तो मौसम से काफी पहले ही पक गये हैं।' भूरे बालों वाले उस आदमी ने भारी आवाज़ में कहा। उसने एक फल उठा लिया और उसे गौर से देखने लगा। अपने फलों के भाग्य के प्रति ग्वादी इतना चिन्तित हो उठा था कि उसे उस आदमी की बात ही नहीं सुनाई दी। वह केवल उसके चेहरे की ओर देखता रह गया, जिस पर नशे की हलकी सुर्खी दौड़ गई थी और आँखें मतवालेपन के कारण झपी जा रही थीं।

'ये फल मेरे अपने पेड़ों के हैं।' अपनी चिन्ता को किसी तरह छिपाते हुए ग्वादी ने सफाई पेश की: 'अधिक नहीं थोड़े ही हैं, पेड़ भी कुल जमा दो ही तो हैं। भगवान जाने ये इतने जल्दी कैसे पक गये? तोड़ कर लेता आया कि आप साहबों की नजर करूँगा।' और वह मुस्कराया लेकिन उसकी मुस्काहट ओठों पर ही रह गई।

अब तक आरचिल सभी फलों को झोले में से बाहर निकाल चुका था। उन्हें मेज पर फैला कर उसने घुड़की सुनाईः

'क्यों बे, हम से उड़ता है? सामूहिक खेत के बगीचे से चुरा लाया और अपने पेड़ों के बता रहा है! बेशरम कहीं का! लो जी खाओ!' अपने मित्रों की ओर फलों को बढ़ाते हुए उसने कहा 'माले मुफ्त, दिले बेरहम! चोरी का माल खाना हराम नहीं, हलाल है।'

मैक्सिम और उस अजनबी ने अपने हावभाव से ग्वादी पर लगाये गये चोरी के आरोप को हँसी में उड़ा दिया। हँस कर उन्होंने बतलाया कि

वे आरचिल की बात को कोई महत्त्व नहीं देते। उनके साथ ग्वादी भी हँसा और बहुत ज़ोर से हँसा, मानों कह रहा था कि आरचिल ने गाली नहीं दी है, केवल हँसी की है। उधर आरचिल और उसके साथी भूखे भेड़ियों की तरह फलों पर टूट पड़े थे।

यह न तो कोई बतला सकता है न इसकी कल्पना ही कर सकता है कि ग्वादी गाने क्यों लगा? क्यों कर उसे गाने की प्रेरणा हुई! अभी पहला फल छीला जाकर बाँटा ही जा रहा था कि उसने पंचम स्वर में 'हसन बेगुरी' का पुराना लोकगीत गाना शुरू कर दिया। उसका गला अच्छा था। और वह गाता भी खूब था। दूसरे भी उसके स्वर में स्वर मिलाने और बेसुरा न होने की पूरी कोशिश कर रहे थे। वह मसनवी खाता भी जाता था और गाता भी जाता था। लेकिन मैक्सिम पूरे मनोयोग के साथ खाने में जुटा हुआ था और कभी जभी अपने फटे गले से गा भी उठता था।

ग्वादी गाता गया और अपने स्वर को मध्यम से तीव्र पर खींचता चला गया। उसने अपनी आँखें मूँद ली थीं। वह अपने फलों को इन पेटुओं के पेट में जाते हुए देख नहीं सकता था। इसलिए कभी ज़रा-सी आँख खुल जाती थी तो तुरन्त मूँद लेता था। उसके स्वर में निराशा का क्रन्दन गूँजने लगा। ऐसा लग रहा था मानों उसका यह स्वर ठेठ स्वर्ग तक जाकर फरियाद सुनयेगा और ग्वादी धीरे उठेगा:

जब एक भी फल नहीं बचा तो आरचिल और उसकी मित्र मण्डली उठ खड़ी हुई।

उन्हें दूसरे ज़रूरी काम निपटाना थे और नाश्ते-पानी में ही काफ़ी वक्त बीत गया था। सब ने फलों के लिए ग्वादी को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और बदले में दिल-दिखाकर उसे शराब का तीसरा ग्लास पिलाया।

आरचिल ने मित्र के पैसे चुकाये। फिर ग्वादी को एक ओर बुलाकर कहा:

'झट से मैक्सिम के साथ चला जा। वह तुझे जो कुछ दे उसे झोले में रख कर अच्छी तरह बांध लेना और सावधानी से गांव ले जाना। यहां ठहरने की कोई ज़रूरत नहीं है। अब तेरे पास बाज़ार में बेचने के लिए बचा ही क्या है? और खाली मटरगश्ती से कोई लाभ होने वाला नहीं। झोला शाम तक अपने घर पर ही रखना। अन्धेरा हो जाने के बाद मेरे घर ले आना। गांव वालों की निगाह बचा कर लाना। खबरदार, कोई तुझे देखने न पाये। यदि किसी तरह की गफलत की तो याद रखना, पटियों से ही नहीं, जानसे भी हाथ धोना पड़ेगा!' उसने कमर की पेटी बराबर करने के बहाने कोट के बटन खोल कर पेटी से लटकते पिस्तौल की नली उसे दिखला दी।

ग्रादी पर इसका कोई खास असर नहीं हुआ। अपने ओठों पर जबान फिरा कर उसने कुछ कहना चाहा, लेकिन शब्द उसके गले से बाहर नहीं निकल सके। नशे के कारण उसका सिर चकराने लगा था और पन छिन जाने के कारण दिल रो रहा था। किसी तरह शक्ति बटोर कर उसने मारचिल को जतलाया कि उसे थोड़े से पैसों की ज़रूरत है। घर पर कुछ न कुछ ले जाने का वह बच्चों को आश्वासन दे आया है। मारचिल ने उसे मजूरी देने का वादा भी किया है। जैसी बाद में, वैसी पहले। मारचिल के लिए तो दोनों एक समान हैं।

मारचिल अधमुँदी आँखों से खड़ा सुनता रहा और बोला:

इतना लोभ मत कर। तेरा पैसा कहीं भागा नहीं जाता है। पहले सामान घर पहुँचा दे। फिर मजूरी भी मिलेगी और बच्चों के लिए इनाम भी। मारचिल का वायदा हमेशा पक्का होता है। कह कर मुकर जाना मर्दों का काम नहीं। अब यहां से चलना फिरता नजर आ, नहीं तो तू तेरी जाने। डण्डे का बल चलाना पड़ेगा।' ग्रादी को पूरी ताकत के साथ दरवाजे की ओर धकेलते हुए उसने अपनी बात पूरी की।

८

६

दुपहर होने के पहले ही ग्वादी गाँव लौट आया। वह पसीने में तर-बतर हो गया था। उसका दम फूल रहा था। लेकिन उस पूरे भरे हुए झोले को उसने सहीसलामत घर पहुँचा दिया।

लोगों की निगाहों से बचने के लिए वह खेतों में होता और काफी लम्बा चक्कर लगाता हुआ आया था। बोझ तो कुछ अधिक नहीं था, लेकिन झोला काफी फूल गया था और बड़ा असुविधाजनक हो गया था। फिर रास्ते में वह एक ऐसी मुसीबत में फँस गया कि न पूछो बात। मारे डर के जान ही निकल गई थी। लेकिन किसी तरह बचकर निकल आया।

सड़क का कुछ हिस्सा जंगल में भी पड़ता था। और आज जंगल में ओरफेरी के सभी सामूहिक किसान पेड़ काटने के लिए गये हुए थे। चरागाह की सीमा पर जङ्गल की जो घनी पट्टी है, वहीं काम लगाया गया था। और यह बात ग्वादी के दिमाग़ से सफा उतर गई थी। घने जङ्गल में न तो उसे कुछ दिखलाई पड़ा और न कुछ सुनाई ही दिया। इस क़दर सन्नाटा था कि कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि कहीं पास-पड़ोस ही में, एक दो नहीं, गाँव के सभी किसान काम में भिड़े हैं।

ग्वादी अपने विचारों में डूबा चला आ रहा था। आज उसके साथ कुछ कम आश्चर्य जनक घटनाएँ नहीं घटी थीं और वह उन्हीं का तारतम्य बैठाने में मशगूल हो रहा था।

तभी एकाएक बादल गरजने और बिजली कड़कने की आवाज़ सुनाई दी। थोड़ी-थोड़ी देर में ज़ोर के धमाके होने लगे और सारा जङ्गल काँप उठा।

सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि ग्वादी सुध-बुध ही भूल गया। जैसे ही उसे अपनी परिस्थिति का भान हुआ वह दौड़ कर समीप के पेड़ के नीचे पहुँचा, धरती पर औंधा लेट गया, और दोनों हाथों से पेड़ की उभरी हुई जड़ें कस कर पकड़ लीं।

पहले तो उसने सोचा कि भाग कर किसी तरह जान बचाये। लेकिन दूसरे ही क्षण उसे झोले का खयाल हो आया और वह अपनी जान बचाने की बात भूल गया। उसने पीठ पर से झोला उतारा, लबादे से उसे ढक दिया और उस पर लेट गया। मानलो कि वह बच गया और अपने साथियों द्वारा इस स्थिति में देख लिया गया! ओह, तब तो वह बे मौत मर जायेगा। झोले में उस तरह के सामान के साथ वह किसी को अपना मुँह तक नहीं दिखा सकेगा। इससे तो बेहतर है वह झोले और लबादे के साथ ही टुकड़े-टुकड़े होकर हवा में उड़ा दिया जाय, धूल में मिला दिया जाय!

उसने डरते-डरते ऊपर आसमान की ओर देखा! वृक्षों के बीच में से ढेर सारा धुआँ ऊपर उठ रहा था, और टहनियाँ, छाल तथा तने के टुकड़े, जड़ें आदि ऊपर उड़ रहे थे। हवा के एक तेज़ झोंके ने राख और सड़ी मिट्टी चारों ओर फैला दी थी। ऐसा लगता था मानों जङ्गल पर किसीने बड़ी-सी छतरी तान दी हो। ढेर सी राख पेड़ों पर छिड़क दी गई थी।

अभीतक आदमी का कहीं कोई चिह्न नज़र नहीं आ रहा था, लेकिन हठात् शोरगुल सुनाई पड़ा और सीटियाँ बजने लगीं। दूसरे ही क्षण सारे जङ्गल में गेरा [redacted] स्वर बन्दूक की गोली की तरह गूँज गया

'राइफ़ल खाली नहीं! बिलकुल सावधान! अपनी जगह से तिलभर भी मत हटो!'

फिर जङ्गल में सन्नाटा छा गया। त्यादी ने भी पूरी फरमाबरदारी के साथ गेरा के आदेश का पालन किया। दम साधे, अपने सीने के नीचे झोले को दबाये, उसने पूरी शक्ति के साथ जड़ों को पकड़ लिया।

एकबार और ज़ोर का धड़ाका हुआ। कान के पर्दे फट गये। जिस पेड़ के नीचे वह लेटा था वह ज़ोरों से थर्रा उठा और कुछ पीली पत्तियाँ उसके सिर पर आ गिरीं।

मारे डर के त्यादी की घिग्घी बंध गई। 'अब मरे! वे मुझे भी बारूद से उड़ाये दे रहे हैं!'

वह कूद कर खड़ा हो गया। अरे, वह तो बिलकुल सहीसलामत है। उसका तो एक बाल भी बांका नहीं हुआ। उसने झोला उठाया; दूसरे पेड़ के नीचे दौड़ा चला गया; और उसके तने के पीछे छिप कर बैठ गया।

वहां से थोड़ी ही दूर पर एक ढाल शुरू होता था, जो घनी झाड़ियों से ढका हुआ था। ब्वादी ने अपना झोला लबादा उठाया और लपक कर झाड़ियों में घुस गया। फिर जिस तरह ढाल पर पत्थर लुढ़कता है उसी तरह लुढ़कता हुआ नीचे पहुँच गया। ठेठ नीचे तलहटी में पहुँच कर ही वह सांस लेने के लिए रुका। सामने मामूली-सा चढ़ाव पड़ता था। इस जगह से रास्ता काट कर ब्वादी जङ्गल से बाहर निकल गया। तब कहीं उसके जीमें जी आया।

वह मौत के मुँह में से सहीसलामत निकल गया...किसीने उसे देखा भी नहीं। लेकिन जब तक वह अपने घर नहीं पहुँच गया और आंगन में आकर फाटक नहीं बन्द कर लिया उसका डर दूर न हुआ। घर पहुँचने के बाद उसे पता चला कि वह बुरी तरह थक गया है। उसके पांव मन-मन भर के हो गये और घुटने कांपने लगे।

आखेट का काम तो वह पहले भी कई बार कर चुका था, लेकिन इस तरह डरने और घबराने का यह पहला ही अवसर था।

लेकिन क्या उसकी मति मारी गई थी, जो वह सीधा जङ्गल में उस जगह पहुँच गया? ऐन सवेरे से ही वह उस जगह से दूर भाग जाने की कोशिश कर रहा था; फिर समझ में नहीं आता था कि बिना देखे-भाले एकदम वहां पहुँच कैसे गया!

आज का दिन ही अपशकुनिया था। एक के बाद एक मुसीबतें आती ही आ रही थीं। रास्ते चलते बखेड़ा खड़ा हो रहा था। बात न बात का नाम पर, उसीमें से झड़पें बढ़ रही थीं। घर से चल ही रहा था कि बदरी के बच्चे को लेकर लौंडों ने आसमान सिर पर उठा लिया और उसका शकुन

बिगाड़ दिया। दो कदम आगे बढ़ा तो मरियम से पाला पड़ गया और बड़ी मुश्किल से जान छूटी। आगे बढ़ा तो गोचा की गालियाँ मिलीं और कुल्हाड़े से सिर फटते फटते बचा। आज का दिन ही बुरा था, नहीं तो उस साले आरचिल से क्यों मुलाकात होती और क्यों उसे अपनी जान जोखों में डालना पड़ती।

मर भुक्खों की तरह वे उसके फल खा गये, उसे लूट लिया। बेचारे बर्देसुनियाने कितनी हौंसों से पेड़ों को खाद-पानी दिया और फलों की हिफाजत की थी। अभी कहीं फल पक नहीं थे। उसके वे फल तो सोने के मोल बिक जाते सोने के मोल परन्तु लुटेरोंने उसे लूट लिया...फिर उसके झोले को चोरी के माल से भर कर उसीके माथ पर रख दिया और उसे घर की ओर ढकेल दिया...

बाज़ार देखने और किसी से दो बातें तक करने का अवसर उसे नहीं मिला था और यही कारण था कि वह गुस्से के मारे आगबबूला हो रहा था। मन की ऐसी दशा रहने पर वह तो क्या कोई भी सड़क तक पर रास्ता भूल जाता। फिर जङ्गल में भटकना कौन बड़ी बात थी! अरे जब वह अपने नये मकान की ही बात भूल गया तो फिर उसे यह कैसे याद रहता कि वहां जङ्गल में काम लगा है?

सिर्फ एक बात से मन को तस्कीन बँधती थी, और वह यह कि आरचिल से अच्छी मज़दूरी ऐंठी जा सकेगी। इस तरह सँभव है कि वह अपनी क्षतिपूर्ति कर सके। अगर बोझा मामूली होता तो कोई बात नहीं थी, परन्तु चोरी के माल को ठिकाने पहुँचाना बड़ी जोखिम का काम होता है। ऐसे कामों के लिए अधिक नहीं तो कम से कम तिगुनी मज़-दूरी तो माँगनी ही चाहिये। इस बार यदि आरचिल ने कम पैसा दिया, जैसा कि वह पहले भी दो एक बार कर चुका है, तो वह फेंक देगा, लेगा नहीं। उसीके मुँह पर दे मारेगा, फिर जो होना हो, हो!

जब वह घर पहुँचा तो झोंपड़ी के दरवाज़े में ताला पड़ा था। और

आंगन में कोई नहीं था। बच्चे, बकरी और बकरी के बच्चे का कहीं पता भी नहीं था।

ऐसा लग रहा था मानों झोंपड़ी किसी सजीव प्राणी की तरह गुस्से में भर कर उसे घूर रही हो। चारों ओर बिलकुल सन्नाटा था और घर-आंगन सांय-सांय कर रहा था।

बच्चों की तो उसे कुछ चिन्ता नहीं थी। उसे मालूम था कि उनमें से तीन तो मदरसे गये होंगे और दो किंडरगार्टन। लेकिन बकरी के बच्चे की बात सोच कर वह चिन्तित हो उठा। बच्चा कहां गया होगा? मारे चिन्ता के वह परेशान हो उठा। और अहाते में उसे खोजने लगा।

'ऊँहू। पता नहीं चलता। कहीं खो तो नहीं गया?'

अब उसके पेट में धीमा-धीमा दर्द भी शुरू हो गया था। उसने सोचा, काश वह डाक्टर के पास जाकर इन्जेक्शन लगवा आता! लेकिन उन शैतानों ने तो उसे इतनी भी छुट्टी भी नहीं दी थी अब यह दर्द दिन भर हैरान करेगा!

वह सायबान के नीचे आ गया और पीठ के झोले को दरवाज़े की ऊँची चौखट से टिका कर बैठ गया। झोले को उतारने की शक्ति उसमें नहीं थी और यों बैठने में उसे आराम मिल रहा था।

अहा, चारों ओर कितनी शान्ति थी!

श्यादी, तुम बूढ़े तो नहीं हुए जा रहे हो?

वह स्थिर बैठा, विचारों में खो गया।

वह आराम से लेटना, अपने मन से सभी चिन्ताओं को दूर निकाल फेंकना चाहता था।

उसने अपने सामने फैले अहाते को बड़े गौर से देखा, मानों आज पहली मर्तबा देख रहा हो। सामने ताड़ का एक नंगा बूढ़ा वृक्ष खड़ा था। उस पर एक भी पत्ता नहीं था। अंगूर की एक बेल उससे लिपट रही थी। बेल के पत्ते भी गिर गये थे। बच्चों ने पकने से पहले ही

अंगूरों को साफ कर डाला था। जो गुच्छे काफी ऊपर होने के कारण उनकी पहुँच के बाहर थे, उन पर चिड़ियों ने चोंच चलाई थीं। इधर चिड़ियों की इतनी भरमार थी कि हर आंगन अहाते और बगीचों में झुण्ड की झुण्ड देखने को मिल जाती थीं। ग्यादी को चिड़ियां अच्छी लगती थीं। वे फलों को खा जातीं और यों नुकसान तो करती थीं, परन्तु बदले में चहक-चहक कर गाना भी सुना देती थीं। चिड़ियों का चहकना ग्यादी को बहुत भाता था और वह घण्टों बैठा उन्हें सुनता रहता था। चिड़ियां न हों तो जग का आंगन ही सूना हो जाय।

चिड़ियों की याद आते ही एक दुःखदाई विचार उसके मन में उदित हुआ। एक बार कहीं से चील उसके आंगन में उतर आई थी और चूजों को देख कर ऐसी गिद्ध गई थी कि उसने सारा पटड़ा ही साफ कर दिया। एक-एक चूजे को दबोच कर ले गई। फिर उसने मुर्गी पर डोरे डालना शुरू किये और यदि ग्यादी स्वयं मुर्गी को हलाल न कर डालता तो वह उसे भी उठा ले जाती।

बड़ी बेरहम चील थी। जरूर कहीं दूर से भटक कर इधर आ निकली थी। हलका काला और भूरा रङ्ग था। देखते ही पता लग जाता था कि वह परदेशी है। इस तरह की चीलें इधर नहीं हुआ करतीं। मँडराती हुई आंगन में उतर आई थी। और धरती पर इस तरह चलने लगती थी मानों उसके बाप का ही राज हो! चोंच क्या थी लोहा था लोहा, चोंच को कभी नीचा तो करती ही नहीं थी, हमेशा झपटने के लिए तैयार रहती थी। बच्चे तो दर किनार, ग्यादी तक से भय नहीं खाती थी। सीना फुला कर और अकड़ कर इस तरह घूमती थी मानों कह रही हो: इस अहाते की मालकिन मैं हूँ। मुझ से बच कर ही रहना। यम के दूत की तरह चूजों पर झपटती थी। एक भी न छोड़ा उसने। सब को गड्डप गई। फिर भी उसे यक़ीन नहीं आ रहा था और चूजों को हर जगह ढूँढ़ती फिरती थी। हर वक्त झोंपड़ी पर निगाहें गड़ये रहती थी। बाद बाद में

रमादी ने हाथ हिला कर पूँछा और दो अपने मन की भड़ास बाहर निकाली।

फिर लबादे की कमर पेटी की गाँठ खोल कर वह उठ खड़ा हुआ और दरवाज़ा खोलने के विचार से कुण्डी को हाथ लगा ही रहा था कि उसे झोंपड़ी के पिछवाड़े की ओर से किसी के उछलने-कूदने की आवाज़ आती सुनाई दी। उसने कान लगाया तो आवाज़ बन्द हो गई थी; परन्तु दूसरे ही क्षण फिर सुनाई दी।

यह खुरों के बजने की आवाज़ थी। ऐसा लग रहा था मानो पिछवाड़े की ओर कोई घोड़ा दौड़ रहा हो। एक पिल्ला भौंकने लगा। रमादी मुड़ कर देखने जा ही रहा था कि गले में रस्सी बाँधे बकरी का बच्चा सामने आ खड़ा हुआ। पुतकिया अपनी ज़बान निकाले उसका पीछा कर रहा था। बकरी का बच्चा रमादी की ओर लपका, लेकिन अधबीच में ही ठिठक कर चकित सा खड़ा रह गया। फिर एक ऊँची नस्ल के घोड़े की तरह गर्दन घुमा कर और खुरों को जमा कर उसे देखने लगा, मानो पूछ रहा हो कि 'तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे?'

तब उसने चौकड़ी भरी। क्षण भर के लिए कलाबाज़ियों
को हवा में उछला और आँगन में दौड़ने लगा।
पास आ... हुआ और फूँ फूँ कर कहने
इस ... ह दें।' लेकिन उसने रमादी
न ... समझा और भाग कर

के उछल ही पड़ा।
ने दोनों हाथों को

तो उसने मुर्गी पर भी दांव लगाना शुरू कर दिया था। लेकिन जब वे उसे मार कर खा गये तो वह गुस्से से पागल हो उठी; फुदकती हुई दरवाज़े तक चली आई, और गर्दन झुका कर टेढ़ी निगाहों से अन्दर देखने लगी। इत्मिनान कर लेना चाहती थी कि अन्दर कुछ छिपा तो नहीं है। दिन में भी उसकी आंखें अंगारे की तरह जलती रहती थीं। बड़ी मुश्किल से उसने ग्वादी के आंगन का पिण्ड छोड़ा था।

जिस दिन अगतिया मरी उसी दिन से उस चील ने आंगन में झपटे मारना शुरू कर दिये थे। बेचारी अगतिया ने चूजे, बतख, मुर्गे-मुर्गियां पाल-पोस कर सारा आंगन भर दिया था। लेकिन उसके मरते ही सब के सब गायब हो गये।

जब वह मरी तो चिरमी पूरे साल भर का भी नहीं हुआ था। उसकी बीमारी कुछ समझ में नहीं आई। चार दिन की बीमारी में ही प्राण छूट गये। थोड़ा-सा बुखार आया और बदन सूज कर ढोल हो गया। सूजन के मारे बदन इतना फैल गया था कि खटिया पर भी नहीं अँटता था। देख कर दिल कांप जाता था। भगवान करे, ऐसी बीमारी किसी के सात जनम के वैरी को भी न हो।

ज़रूर तिल्ली का उपद्रव रहा होगा। इस सत्यानाशी तिल्ली ने ही हमारा सर्वनाश किया है। बेचारे बच्चे दर-दर के भिखारी हो गये। हाय, मैंने ऐसा कौनसा गुनाह किया था कि मेरी घरवाली यों बीमार पड़ कर मर गई? पाँच-पाँच बच्चे हैं, और जिन में चार के मुँह का तो अभी दूध भी नहीं सूखा है। अभी उसकी उम्र ही क्या थी? मरियम की ही उमर की थी। मगर मरियम तो जिन्दा है और उस बेचारी की हड्डियों का पता नहीं, मीटी में कभी की गल गई होंगी। यदि भगवान अगतिया को भी मरियम की-सी तन्दुरुस्ती दे देता तो उसका क्या बिगड़ जाता? यह है उस अन्यायी का न्याय! और फिर भी लोगबाग कहते हैं कि वह दयालु है, न्यायशील है...हुँह, वे भरे-पेट वाले और कहेंगे भी तो क्या?

ग्वादी ने हाथ हिला कर थूका और यों अपने मन की भड़ास बाहर निकाली।

फिर लबादे की कमर पेटी की गांठ खोल कर वह उठ खड़ा हुआ और दरवाज़ा खोलने के विचार से कुण्डी को हाथ लगा ही रहा था कि उसे झोंपड़ी के पिछवाड़े की ओर से किसी के उछलने-कूदने का आवाज़ आनी सुनाई दी। उसने कान लगाया तो आवाज़ बन्द हो गई थी, परन्तु दूसरे ही क्षण फिर सुनाई दी।

वह खुरों के बजने की आवाज़ थी। ऐसा लग रहा था मानो पिछवाड़े की ओर कोई घोड़ा दौड़ रहा हो। एक पिल्ला भौंकने लगा। ग्वादी मुड़ कर देखने जा ही रहा था कि गले में रस्सी बांधे बकरी का बच्चा सायबान में आ खड़ा हुआ। बुतश्या अपनी जबान निकाले उसका पीछा कर रहा था। बकरी का बच्चा ग्वादी की ओर लपका, लेकिन अधबीच में ही हिचक कर चकित-सा खड़ा रह गया। फिर एक ऊँची नस्ल के घोड़े की तरह गर्दन घुमा कर और खुरों को जमा कर उसे देखने लगा, मानो पूछ रहा हो कि 'तुम यहां कैसे आ पहुँचे?'

फिर दूसरे ही क्षण उसने चौकड़ी भरी। क्षण भर के लिए कलाबाजियाँ दिखलाईं, पिछले पांवों को हवा में उछाला और आंगन में दौड़ने लगा। बुतश्या ग्वादी के पांवों के पास आ खड़ा हुआ और कूँ कूँ कर कहने लगा 'चलो, दोनो मिल कर इस पाजी को पकड़ लें।' लेकिन उसने ग्वादी का पुकारा सुनने के लिए ठहरना भी उचित नहीं समझा और भाग कर बकरी के बच्चे के पीछे पड़ गया।

बकरी के बच्चे को देख कर ग्वादी तो मारे खुशी के उछल ही पड़ा। उसने कुण्डी छोड़ दी और आंगन की ओर लपका। अपने दोनो हाथों को सामने की ओर फैलाये वह दौड़ने और पुकारने लगा

'ओहो, ओहो!'

तो उसने मुर्गी पर भी दाँव लगाना शुरू कर दिया था। लेकिन जब वे उसे मार कर खा गये तो वह गुस्से से पागल हो उठी; फुदकती हुई दरवाज़े तक चली आई, और गर्दन झुका कर टेढ़ी निगाहों से अन्दर देखने लगी। इत्मिनान कर लेना चाहती थी कि अन्दर कुछ छिपा तो नहीं है। दिन में भी उसकी आँखें अंगारे की तरह जलती रहती थीं। बड़ी मुश्किल से उसने स्वादी के आँगन का पिण्ड छोड़ा था।

जिस दिन अगतिया मरी उसी दिन से उस चील ने आँगन में झपटे मारना शुरू कर दिये थे। बेचारी अगतिया ने चूज़े, बतख, मुर्गे-मुर्गियाँ पाल-पोस कर सारा आँगन भर दिया था। लेकिन उसके मरते ही सब के सब गायब हो गये।

जब वह मरी तो चिरमी पूरे साल भर का भी नहीं हुआ था। उसकी बीमारी कुछ समझ में नहीं आई। चार दिन की बीमारी में ही प्राण छूट गये। थोड़ा-सा बुखार आया और बदन सूज कर ढोल हो गया। सूजन के मारे बदन इतना फैल गया था कि खटिया पर भी नहीं अँटता था। देख कर दिल काँप जाता था। भगवान करे, ऐसी बीमारी किसी के सात जनम के बैरी को भी न हो।

ज़रूर तिल्ली का उपद्रव रहा होगा। इस सत्यानाशी तिल्ली ने ही हमारा सर्वनाश किया है! बेचारे बच्चे दर-दर के भिखारी हो गये। हाय, मैंने ऐसा कौनसा गुनाह किया था कि मेरी घरवाली यों बीमार पड़ कर मर गई? पाँच-पाँच बच्चे हैं, और जिन में चार के मुँह का तो अभी दूध भी नहीं सूखा है। अभी उसकी उम्र ही क्या थी? मरियम की ही उमर की थी। मगर मरियम तो जिन्दा है और उस बेचारी की हड्डियों का पता नहीं, मीट्टी में कभी की गल गई होंगी। यदि भगवान अगतिया को भी मरियम की-सी तन्दुरुस्ती दे देता तो उसका क्या बिगड़ जाता? यह है उस अन्यायी का न्याय! और फिर भी लोगबाग कहते हैं कि वह दयालु है, न्यायशील है...हुँह, वे भरे-पेट वाले और कहेंगे भी तो क्या?

ग्वादी ने हाथ हिला कर थूका और यों अपने मन की भड़ास बाहर निकाली।

फिर लबादे की कमर पेटी की गाँठ खोल कर वह उठ खड़ा हुआ और दरवाज़ा खोलने के विचार से कुण्डी को हाथ लगा ही रहा था कि उसे झोंपड़ी के पिछवाड़े की ओर से किसी के उछलने-कूदने की आवाज़ आती सुनाई दी। उसने कान लगाया तो आवाज़ बन्द हो गई थी, परन्तु दूसरे ही क्षण फिर सुनाई दी।

यह खुरों के बजने की आवाज़ थी। ऐसा लग रहा था मानो पिछवाड़े की ओर कोई घोड़ा दौड़ रहा हो। एक पिल्ला भौंकने लगा। ग्वादी मुड़ कर देखने जा ही रहा था कि गले में रस्सी बाँधे बकरी का बच्चा सायबान में आ खड़ा हुआ। पुतनिया अपनी जबान निकाल उसका पीछा कर रहा था। बकरी का बच्चा ग्वादी की ओर लपका, लेकिन अधबीच में ही हिल्ला कर चकित-सा खड़ा रह गया। फिर एक ऊँची नस्ल के घोड़े की तरह गर्दन घुमा कर और खुरों को जमा कर उसे देखने लगा, मानो पूछ रहा हो कि 'तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे?'

फिर दूसरे ही क्षण उसने चौकड़ी भरी। क्षण भर के लिए कलाबाजियाँ दिखलाईं, पिछले पाँवों को हवा में उछाला और आँगन में दौड़ने लगा। पुतनिया ग्वादी के पाँवों के पास आ खड़ा हुआ और कूँ कूँ कर कहने लगा 'चलो, दोनों मिल कर इस पाजी को पकड़ लें।' लेकिन उसने ग्वादी का पुकारना सुनने के लिए ठहरना भी उचित नहीं समझा और भाग कर बकरी के बच्चे के पीछे पड़ गया।

बकरी के बच्चे को देख कर ग्वादी तो मारे खुशी के उछल ही पड़ा। उसने कुण्डी छोड़ दी और आँगन की ओर लपका। अपने दोनों हाथों को सामने की ओर फैलाये वह दौड़ने और पुकारने लगा

'ओहो, ओहो!'

बचे का मिल जाना इतना अनपेक्षित था कि उसकी छाती भर आई। बार-बार वह एक इसी वाक्य को दुहराने लगा 'ओहो, ओहो!'

जब उसका उद्वेग थोड़ा शान्त हुआ तो वह बीच आंगन में खड़ा होकर बकरी के बच्चे को पुकारने लगा:

'चल, समझौता कर लें। आ, इधर आ! सौगन्ध खा कर कहता हूँ कि तुझे अँगुली भी नहीं अड़ाऊँगा। तू मुझ से ज्यादा समझदार निकला। तेरी समझदारी पर मैं खुश हूँ। बिलकुल नाराज़ नहीं हूँ। नाराज़ होने का मुझे अधिकार तक नहीं रहा। यदि तूने मेरी बात मानली होती तो इस समय तक कभी का मौत के मुंह में पहुँच जाता, कूदने-फांदने के लिए जिन्दा न बचता। जो गत उन फलों की हुई वही तेरी भी होती। तू कितना समझदार है कि रस्सी तक नहीं गंवाई! उसे भी सहेज कर ले आया; शाबाश!'

लेकिन बकरी का बच्चा जिस फुर्ती से आया था उसी फुर्ती से गायब हो गया। ग्वादी उसे ठीक से देख भी नहीं सका।

बचे को देख कर ग्वादी का जी हलका होगया। वह दिन भर की अपनी दुश्चिन्ताओं और तकलीफों को, जो उसे भुगतना पड़ी थीं, भूल गया।

'अच्छा, अच्छा; खूब खेलो-कूदो और खुशियां मनाओ!' उसने बचे को इजाजत देदी, और लौट आकर दरवाज़ा खोला। फिर झोले और लबादे को घसीटते हुए झोंपड़ी के अन्दर प्रवेश किया।

अब सवाल था कि शाम तक के लिए झोले को छिपा कर कहां रखा जाय? उसे बचों की निगाहों से बचाना जरूरी था। घर में 'डागला' (मचान) ही सब से अधिक सुरक्षित जगह थी। पहले भी वह ऐसे कामों में डागले का उपयोग कर चुका था। वह जगह बच्चों की पहुँच के बाहर थी। वहीं घर की वह सन्दूक भी रखी थी, जिसमें ग्वादी का सारा माल-मता-उसका सिर का सिपाई कोट, रेशमी जाकीट, उसके दादा की तलवार और

कमरबन्द आदि सुरक्षित धरे थे। मगतिया को लुभाने और उसका दिल जीतने के विचार से उसने ये कपड़े बनवाये थे और अन्तिम बार उन्हें शादी के समय पहिना था। उसी दिन उसने पेटी बांध कर तलवार भी लटकाई थी। बस, उसके बाद से फिर कभी उन कपड़ों को पहिनने का अवसर नहीं आया था। इस लिए उसने उन कपड़ों को पेटी में बन्दकर, पेटी को डागले पर रख दिया था। और एक तरह से उनका अस्तित्व ही भूल-सा गया था। कभी जभी कुछ ढूंढ़ने-ढांढ़ने के लिए डागळे पर चढ़ना तो पेटी को देख कर पुरानी स्मृतियां जाग उठती थीं...

खटिया पर खड़े होकर उसने झोले को ऊपर खिसका दिया। अच्छी तरह देख कर इत्मिनान कर लिया कि झोला नीचे से दीखता तो नहीं है। फिर उसने मारचित आदि को वह गालियां सुनाई कि खुद उसे भी शर्म आ गई और अपने आपको अंगुली से धमकाता हुआ वह बोला

'और तुम्हीं कौन अच्छे हो? चोर की मदद करने वाले को क्या कहेंगे! चोर ही तो कहेंगे न? चोर का साथी चोर!'

झोंपड़ी में अंधेरा था। काली दीवालों को हाथ से टटोलते हुए उसने अपना फेंटा ढूंढ़ा, ज़ोर से झटक कर उसे साफ किया और कमर से बांध लिया। फिर कोने में से कुल्हाड़ी उठा कर बाहर निकल आया, दरवाजे की सिटकनी बन्द की और सीधा जङ्गल का रास्ता लिया।

७

उस दिन काम करने के लिए जङ्गल का जो हिस्सा चुना गया था वह मोरकेती पहाड़ी के एक ढाल पर अवस्थित था। जङ्गल के इस हिस्से से सटा हुआ ही चरागाह था, जो क्रमशः नीचे की ओर ढलता हुआ चाय बागान से जा लगा था। चायबागान की कटी छटी क्यारियां गांव से शुरू होकर कवायद करते हुए सैनिकों की तरह व्यवस्थित ढङ्ग से चढ़ती-चढ़ती

ठेठ पहाड़ी पर पहुँच गई थी। यह पहाड़ी अति रमणिक और मोरकेती ■ दर्शनीय स्थल थी। गांव की आबादी बढ़ते-बढ़ते जङ्गल की सीमा तक आ पहुँची थी। बगीचों में भी मकान बन गये थे और चरागाह के एक हिस्से में गांव के सब रास्ते-गलियां और सड़कें-आकर मिल गये थे। यहीं से बाहर जाने के रास्ते शुरू होते थे।

जहाँ से बाहर जाने के रास्ते शुरू होते थे वहाँ खड़े रहने पर बड़ा ही सुन्दर प्राकृतिक दृश्य दिखलाई पड़ता था। दूर तक हिमाच्छादित शैल शृंखलाएँ फैली हुई थीं; जो दूरी के कारण गहरे नीले रङ्ग की दिखलाई पड़ती थीं। पश्चिम में यह शृंखला आसमान में घुल मिल गई थी। इस ओर, हवा शान्त रहने पर, कभी-कभी ऐसी स्वच्छ नीलिमा दिखलाई पड़ती थी मानों समुद्र लहरा रहा हो।

जङ्गल काफी पुराना, बीचमें बहुत घना और दुर्गम, लेकिन किनारों पर छितराया हुआ था। यहाँ झाड़-झँखाड़ की बहुतायत थी। साखू आदि इमारती लकड़ी के पेड़ों के साथ ही साथ यहाँ-वहाँ बलूत के पेड़ भी थे।

सामूहिक खेत के मध्यक्ष ने पहले जङ्गल का 'सर्वे' कर लिया था और इमारती लकड़ी के लिए उपयोगी पेड़ों पर चिह्न लगवा दिये थे, ताकि पेड़ काटने और जङ्गल साफ करने वालों को अपने काम में असुविधा ■ हो। आज भी, हमेशा की तरह लोगबाग टोलियां बना कर ही काम कर रहे थे। कोई पेड़ गिरा रहे थे, कोई तने और टहनियों को आरों से काट रहे थे और कोई लट्ठों को घसीट कर चरागाह में एक जगह जमाकर रहे थे। बड़े लट्ठे बैलों से खींच कर ले जाये जाते थे; परन्तु छोटे लट्ठों को हाथों से ही ठेल दिया जाता था।

ठूँठ और गहरी जड़ों को सुरंगों से उड़ाया जा रहा था। यह काम गेरा स्वयं अपनी देख-रेख में करवा रहा था।

दुपहर तक उस दिन के लिए निश्चित किये हुए सभी पेड़ गिरा दिये गये और ठूँठ तथा जड़ें सुरङ्गों से उखाड़ दी गईं, अब तो तनों को साफ

करना, मारों से लट्ठे काटना और उन्हें चरागाह में जमाना बाकी रह गया था। यहां वहां टहनियों और छाल आदि को आग में जलाया जा रहा था। धुएँ की एक मोटी पर्त सारे जङ्गल और जङ्गल के साफ किये हुए हिस्से पर छा गई थी।

रशादी ने सड़क छोड़ कर जङ्गल की राह काम की जगह पर पहुँचने का निश्चय किया। वह एक झाड़ी में छिपकर बैठ गया और वहां से काम करने वालों की टोह लेने लगा। काम पर पहुँचने से पहले वह सारी स्थिति का अन्दाज़ कर लेना चाहता था। गेरा के सामने न जाने में ही कुशल थी। इतनी देर करके पहुँचने पर वह मन ही मन डर रहा था और उसे शर्म भी मालूम पड़ रही थी। चाहता था कि कोई परिचित या मित्र दिख जाएँ तो वह चुपचाप उनकी टोली में सम्मिलित होकर इस तरह काम शुरू कर दे मानों कुछ हुआ ही न हो। वह उन्हें समझा देगा कि वे उसके देर से पहुँचने का जिक्र भी न करें।

लेकिन जङ्गल में धुआं इस क़दर भर गया था कि वह अपनी जगह से काम करने वालों को पहिचान नहीं पा रहा था। उसने कई झाड़ियों बदलीं पर कुछ लाभ न हुआ। हवा को भी ठीक इसी समय दुश्मनी सूझी और उसने जङ्गल में, अन्दर की ओर को रुख किया। इससे सारा धुआ रशादी की ओर आने लगा और उसके सामने धुएँ की एक अभेद्य दीवार ही खड़ी हो गई।

तब उसने थोड़ा पास जाकर देखने का निश्चय किया। उसकी योजना यह थी कि वह धुएँ की ओट लेता हुआ खुद्द में पहुँच जायगा। लेकिन अभी वह दो कदम भी नहीं गया था कि किसी चीज़ के ज़ोर से गिरने की आवाज़ आई और कोई भारी चीज़ धुएँ को बिखेरती हुई उसके समीप होकर तेज़ी से निकल गई। उसका धक्का इतने ज़ोर का लगा कि वह गिरते गिरते बचा।

वह बचने के लिए एक झाड़ी में दुबकने जा ही रहा था कि किसी ने लपक कर उसे धक्का दिया और चिल्लाने लगा

'सड़क से अलग हो जाओ, कामरेड, सड़क से अलग हो जाओ। आँखें तो नहीं फूट गई हैं? अपनी जान देने के लिए क्यों हमारे बीच में आ रहे हो!'

ग्वादी ने कोई जवाब नहीं दिया। चुप रहने में ही उसने कुशल समझी। लेकिन बोलने वाले को उसने तत्काल पहिचान लिया। किसी तरह उसकी निगाहों से बचना चाहिये। लेकिन उसी समय हवा के एक झपटे ने धुएँ को बिखेर दिया और सब कुछ साफ-साफ दिखने लगा।

ग्वादी के सामने टोली का नायक जोसिमी खड़ा था। धुएँ और धूल से काले हो रहे उसके चेहरे से पसीने की धाराएँ बह रही थीं। उसके कपाल पर एक लाल रुमाल बँधा था और वह अपने हाथों में बलूत का एक बड़ा-सा मजबूत डण्डा लिये हुए था। उसने अपनी फूली हुई लाल-लाल आँखों से ग्वादी की ओर देखा और टक लगाये उसे देखता ही रह गया। उसके मोटे डीलडौल और सारे हावभाव से गहरा विस्मय प्रकट हो रहा था। उसने अपने भारी भरकम कन्धों को उचकाते हुए इतने धीरे से कहा मानों केवल अपने को ही सुना रहा हो:

'यह कम्बख्त यहाँ कहाँ से आ मरा?'

'यदि मैं मर जाता तो बतलाओ तुम मेरे बच्चों को क्या जवाब देते?' ग्वादी ने बड़े ही शान्त भाव से और मजा लेते हुए जोसिमी से पूछा।

'हम उनकी परवरिश तुम से कहीं अच्छी करते। बड़े आये अपने बच्चों की परवरिश करने वाले!' फिर कुपित स्वर में पूछा: 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'

'वही, जो दूसरे सब कर रहे हैं? यदि मैं फुर्ती से बच न गया होता तो तुमने तो मुझे अपने लट्ठे से मार ही डाला था।'

'लट्ठा' शब्द सुन कर जोसिमी ने मुड़ कर देखा। वह लट्ठा अपने आप ही नीचे की ओर लुढ़कता चला जा रहा था। उसने बलूत के डण्डे से इशारा करते हुए चिल्ला कर कहा।

'जाओ, उसे लुढ़का कर चरागाह में पहुँचा दो।' इतना कह कर वह दूसरी ओर चला गया।

अन्धा क्या मांगे, दो आखें ! ग्वादी भी यही चाहता था। सब कुछ भूल भालकर वह लट्ठे के पीछे दौड़ा। लेकिन लट्ठा झाड़ झंखाड़ में कहीं फँस गया और वहीं रुका रह गया। समीप ही एक बैल जोड़ी बड़े भारी तने को खींचे लिये जा रही थी। कुछ किसान बैलों को सहारा दे रहे थे। जब ग्वादी फ्रपटता हुआ उनके पास से निकला तो सबने एक स्वर में कहा

'वाह मेरे शेर, क्या कहने हैं! किस शान से पड़ा लट्ठे को लुढ़काये लिये जा रहा है। जीयो बेटा!'

अपनी तारीफ सुनी तो ग्वादी की छाती गज भर चौड़ी हो गई। आज वह भी दिखा देगा कि काम करने में ग्वादी किसी से कम नहीं है। जोश में आकर उसने लट्ठे के नीचे कन्धा लगाया और ज़ोर करने लगा। लेकिन उसने एक बड़ी भूल कर डाली। लट्ठे को बीचोंबीच से ठेलने के बदले एक सिरे से ठेला। ज़रा सा ज़ोर लगते ही लट्ठा एक ओर को खिसक कर फिर नीचे की ओर लुढ़कने लगा। लट्ठा जो खिसका तो ग्वादी का सतुलन बिगड़ गया, वह गुड़ीमुड़ी होता हुआ धड़ाम से ज़मीन पर चारों खाने चित् आ गिरा और कराहने लगा।

देखने वालों के चेहरों पर मुस्कराहट फैल गई और कुछ तो ज़ोर से खिलखिला भी पड़े। बैल रोक दिये गये। हँसी और गिरने की आवाज़ सुनी तो जो दूर काम कर रहे थे वे भी समीप दौड़े आये। ग्वादी के चारों ओर अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई। सब के सब मिल कर उसकी मज़ाक उड़ाने और हँसने लगे।

किसी तरह ग्वादी ने अपना सिर उठाया। लोगों को हँसते और अपनी खिल्ली उड़ाते देख उसने कुहनी के सहारे करवट बदली और अपने चारों ओर खड़े लोगों को रुआँसे स्वर में कहने लगा

'हँस लो, भाई, मेरी फूटी तक़दीर पर तुम लोग भी जी भर कर हँस लो। भगवान ने तुम्हें तन्दुरस्त बनाया है इस लिए हँसो और खूब हँसो। अगर मैं बीमार न होता और मेरी छाती पर बिना माँ के पाँच-पाँच बच्चे न होते तो मैं भी हँसता। मुझ अभागे, कमज़ोर और बीमार की मुसीबत देखकर, भगवान की सौगन्ध है, जो तुम न हँसो।'

हँसी एकदम रुक गई। मिट्टी लगे पसीने वाले चेहरे गम्भीर हो गये।

इस बीच गेरा और ज़ोसिमी भी वहाँ आ गये थे।

'बड़े अजीब आदमी हो जी तुम! मैंने तुम से यह कब कहा था कि उस लट्ठे के पीछे अपनी जान ही दे देना।' ज़ोसिमी ने उसे झिड़कते हुए कहा लेकिन उसके स्वर में संवेदना का गहरा पुट भी था। लेकिन जब उसने यह देखा कि ग्वादी को कहीं चोट-फेट नहीं लगी है तो प्रसन्न होकर अपने सदा के ऊँचे स्वर में बोला: 'क्या मरियल आदमी हो, तुम भी! अच्छा, अब उठ खड़े हो, मेरे शेर!'

गेरा वहाँ से थोड़ी दूर पर खड़ा था। ग्वादी ने जब अपनी छोटी-छोटी आँखों से उसकी ओर देखा तो आँखें मिलते ही गेरा के चेहरे से चिन्ता मिट गई और उसने मुस्करा कर कहा:

'तो तुम डर गये थे, क्यों? लेकिन तुम्हें कहीं चोट तो लगी नहीं है, फिर डरने का कारण ही क्या है?'

समीप आकर उसने अपना एक हाथ आगे बढ़ा दिया। उसकी आस्तीनें कुहनी से भी ऊपर तक चढ़ी हुई थीं।

'लो, उठ आओ, अब! मैं तो यही समझ रहा था कि तुम यहाँ नहीं हो। मुझसे कहा गया था कि मालसीरामजी शहर डाक्टर के यहाँ तशरीफ ले गये हैं।'

अपनी पूरी शक्ति से गेरा के हाथ को पकड़ते हुए ग्वादी ने जवाब दिया:

'लेकिन मैं उसके साथ रात बिताने तो गया नहीं था। देर तो ज़रूर हो गई; लेकिन अधिक नहीं।'

गेरा ने घास के तिनके की तरह खींच कर उसे खड़ा कर दिया।

'उठो और तन कर सिपाही की तरह खड़े हो जाओ।' इतना कह कर विनोदपूर्वक ग्वादी के कन्धे पर एक धौल जमाया मानों कह रहा हो इन्हें ज़रा मज़बूत बनाओ।

लेकिन ग्वादी एकदम तन कर खड़ा न हो सका। एक हाथ से पेट और दूसरे से कमर दबाते हुए वह बड़ी कठिनाई पूर्वक सीधा हुआ। फिर गेरा की ओर मुड़ कर बड़े ही सहज स्वर में बोला

'किसी ने मुझ से कहा कि गेरा तुम्हारे लिए एक नया मकान बनाने वाला है। यह सुन मैंने भी सोचा कि चलो भाई, काम करके दिखलायें। और मैं आकर लट्ठों को ढकेलने में जुट गया।'

जिस तरह तेज़ हवा चलने से बादल फट जाते हैं, और सूरज की किरनों के आगे कुहरा उड़ जाता है उसी प्रकार इस बातचीत को सुन कर गम्भीरता का वातावरण हँसी खुशी में बदल गया। सब को यह विश्वास हो गया कि ग्वादी को कहीं चोट नहीं लगी है। सबक सब मिल कर उससे हँसी-मज़ाक करने लगे। सब स ऊँचा स्वर ओनिसी का था

'कब्र में भी उसकी यह ज़बान कैंची की तरह चलती ही रहेगी। चुप रहना तो बन्दा जानता ही नहीं है। खुदा तुम्हें तन्दुरस्ती बख्शे, ग्वादी।' उसने हँसते हुए कहा और उसकी हँसी इतनी मधुर और निष्कपट थी मानो चरागाह में किसीने रङ्ग-बिरंगे मोती बिखेर दिये ह। ओनिसी अँगूर की पुरानी जड़ की तरह हृष्ट पुष्ट और गँठियल था। सब से अलग अपने 'पाइप' से धुआं निकालता और कुल्हाड़े को कन्धे पर रखे वह खड़ा था। उसके सिर पर भूरे रङ्ग के घुँघट बाले बाल थे। तम्बाकू के धुँए से धूमिल हो रही दाढ़ी सूखी घास की तरह मालूम पड़ती थी। बालों के जटाजूट में भूरी आँखें और तोते सी नुकीली नाक खो से गये थे। उसकी शक्ल सूरत बिलकुल नीलकण्ठ से मिलती-जुलती थी।

ग्वादी उसकी बात का जवाब देने के लिए मरा जा रहा था लेकिन टोली के नायक ज़ोसिमी ने यह अवसर ही नहीं आने दिया। उसने आस-पास खड़े लोगों को सम्बोधित कर कहा।

'चलो, काम में लगा जाय। और ओनिसी, तुम भी हाथ बँटाओ। मसखरापन ग्वादी के लिए ही छोड़ दो।' यह कह कर उसने बल्लम की अपनी लकड़ी एक लट्ठे के नीचे फँसा दी। सभी उसकी मदद पर दौड़ गये और ओनिसी भी सब के साथ मिल कर ज़ोर करने लगा।

अब घटना-स्थल पर केवल गेरा और ग्वादी ही रह गये थे। गेरा ने एक बार फिर ग्वादी को सिर से पाँव तक अच्छी तरह देखा और धीरे से कहा:

'तुम थोड़ी देर तक आराम कर लो। ज़रा घबराहट कम हो जाय उसके बाद काम शुरू करना।' फिर सबको सुना कर ज़ोर से बोला:

'नये घर की बात को लेकर तुम्हें भ्रम हो गया है। सामूहिक खेत समिति तुम्हारे लिए घर नहीं बना रही है। नया घर पाने के लिए तुमने कुछ भी नहीं किया है। इसके लिए तुम्हें बर्दग़ुनिया और उसके भाइयों को धन्यवाद देना चाहिये। समझे कामरेड! यह घर उनका है और उन्हीं के लिए बनाया जायेगा।'

जवाब देने के दो अच्छे अवसर यों ही निकल गये थे। [redacted] ओनिसी और ज़ोसिमी को निरुत्तर नहीं कर पाया था। और अब इतना अच्छा अवसर वह यों ही नहीं छोड़ सकता था। उसने भी सबको सुना कर कहा:

'क्या कहा तुमने, कि घर पाने के लिए मैंने कुछ नहीं किया है? अगर आप ऐसा सोचते हैं तो यह आप की बड़ी भूल है! मैंने जो काम किया है उसके आगे घर समुरा क्या चीज़ है! देश और सरकार को ये पाँच बेटे किसने दिये हैं? मैंने या किसी अन्य ने? तुम्हारे लेखे इसकी कोई क़ीमत ही नहीं? पाँच बहादुर, पाँच बढ़िया कार्यकर्ता! ज़रा, मेरे इस काम का भी हिसाब रखना, क्योंकि हिसाब रखने और काम गिनाने के तुम

बड़े शौकीन हो! और यह समझना ठीक न होगा कि इतने महान कार्य के लिए एक मकान देकर ही आप मुझे टरका सकेंगे!'

ओनिसी ने हाथ का काम छोड़ कर ग्वादी की ओर देखा और वही मधुर, निष्कपट हँसी हँस कर कहा :

'मान गये उस्ताद, क्या जबान है तुम्हारी भी! माशा अल्लाह! दिखने में तो तुम ऐसे हो कि कोई फूंक मारे तो उड़ जाओ! पर जबान तुम्हारी गजब की है! लेकिन, भाई मेरे, पांच पिल्लों की परवरिश करने पर तुम्हें मकान मिल रहा है और यहां पांच-पांच शेर खिला पिला कर बड़े कर दिये किसी साले ने छदाम को भी न पूछा। इस लिए अब क्यों...'

'ओनिसी, तुम भी कहां पुराने जमाने की बातें ले बैठे हो? अब जमाना बदल गया है। फिर तुम्हारे शेर भी अब बड़े हो गये हैं, तुम्हें दूसरों की मदद की ज़रूरत ही क्या है? वे चाहें तो तुम्हारे लिए मकान ही क्या महल भी खड़ा कर सकते हैं। और फिर खास बात तो परवरिश करने की है!' ग्वादी यों सहज ही हार मानने वाला नहीं था।

ओनिसी की टोली वाले ग्वादी की बात सुन कर बोल उठे: 'शाबाश, ग्वादी, शाबाश!' और ओनिसी निरुत्तर रह गया। कोई उसकी बात भी सुनने को तैयार नहीं था। उसने भी मैदान छोड़ दिया और अपने साथियों की मदद करने लगा। जो पूरी ताकत लगा कर एक भारी भरकम तने को ठेल रहे थे।

८

बलूत का वह तना काफी परेशान करने वाला साबित हुआ। लोगबाग ठेलते ठालते उसे चरागाह तक ले ही आये थे कि उसने ढाल पर नीचे की ओर लुढ़कना शुरू कर दिया। ज़ोसिमी की टोली ने उसे 'भाग्य भरोसे छोड़ने का निश्चय कर ही लिया था। ज्यादा से ज्यादा वह घास

तक लुढ़केगा, उसके आगे नहीं—कि उसी समय उनका ध्यान ढोरों की ओर गया, जो चरागाह में चर रहे थे। उन्हें वहां छोड़ कर चरवाहा परसवाला कहीं गायब हो गया था। घास चरती हुई कुछ गायें तने के सामने ही चली आ रही थीं। उन्होंने नाम ले-लेकर परसवाला को पुकारा लेकिन उसका कहीं पता नहीं था। कुछ लोग तने के पीछे दौड़े! उसे गायों की ओर लुढ़कते देख सभी चिन्तित हो उठे थे और कुछ चिल्ला-चिल्ला कर गायों को डराने और दूर हटाने की कोशिश में लग गये थे।

तना थोड़ा-सा लुढ़क कर बाईं ओर को इस तरह मुड़ गया मानों उसने आदमियों की चिल्लाहट सुन ली हो और एक गहरी खाई की ओर लुढ़कने लगा। खाई के किनारे पर धूल का बादल-सा उठा और लट्टू की तरह नाचता हुआ वह तना उसकी पेंदी में जा गिरा।

पलक झांपते ही ज़ोसिमी की पूरी टोली खाई के किनारे पर जा खड़ी हुई। लेकिन उस भारी तने को वहां से बाहर निकालना इतना सरल नहीं था। कोई चारा न देख उन्होंने बैलों को लाने का निश्चय किया।

अभी वे यह सोच ही रहे थे कि किस ओर से उस तने को बाहर खींचना आसान होगा कि सफेद चांदले वाली एक भैंस चरती-चरती उधर आ निकली। निदोरा (चांदली) दीनदुनिया से बेखबर चरने में मशगूल थी। उसे न तो तने से कुछ लेना देना था और न तने के आस-पास खड़े उन आदमियों से ही।

कुछ लोग बैलों को लेने के लिए चल भी दिये थे। लेकिन भैंस को देख कर ज़ोसिमी को एक बढ़िया तरकीब सूझ गई। पास पहुँच कर उसने भैंस को अच्छी तरह देखा। फिर उसने जाते हुए आदमियों को पुकारा और संकेत से उन्हें रोक कर कहा: 'ठहरना ज़रा।' फिर ओनिसी की ओर मुड़ कर बोला:

'क्यों, यह तो गोचा की भैंस है न? पहिचाना, ओनिसी?'

'पहिचाना क्यों नहीं?' ओनिसी ने उत्तर दिया।

दूसरों ने भी पहिचान कर समर्थन किया कि हां, भैंस तो गोचा की ही है।

क्षणभर के लिए ज़ोसिमी चुप रहा। जब वह बोलने लगा तो उसका स्वर थोड़ा सा ईर्ष्यालु हो उठा था।

'गोचा कड़ी मशक्कत से जी चुरा रहा है चाहे उसका काम में हमारी हड्डी-पसली भी क्यों न बराबर हो जाये ! तो हम उसकी भैंस का उपयोग क्यों न करें? मालिक की एवज़ी में भैंस ही सही। वह तने को बाहर खींचने में तो हमारी सहायता कर ही सकती है।'

नायक के प्रस्ताव का उसकी सारी टोली ने समर्थन किया। सबका समर्थन पाकर वह दूने उत्साह से काम में लग गया और आदेश देने लगा!

'इस तने ने हमारा काफी समय बर्बाद कर दिया है। इसे अच्छी तरह रस्सियों से बांध दो!'

थोड़ी देर बाद गोचा सलान्दिया की भैंस उस आफत के पर काले तने को खाई से बाहर खींच रही थी।

जब वहां का काम पूरा हो गया तो ज़ोसिमी जङ्गल की सीमा पर आया। वहां उसका ध्यान एक आदमी की ओर गया जो लट्ठों के हर ढेर के पास जाकर उन्हें अपने हण्टर की मुठिया से बजाता हुआ गिन रहा था। वह आदमी हाल ही में वहां आया था और एक घोड़ा, जिसकी कि लगाम गर्दन पर पड़ी हुई थी, उसके पीछे पीछे चल रहा था। अच्छी तरह देखने के बाद ज़ोसिमी ने उसे पहिचाना। वह आरचिल पोरिया था।

भैंस को हांकने वालों का प्रसन्न स्वर जब आरचिल को सुनाई दिया तो उसने मुड़कर देखा। ज़ोसिमी को वहां खड़ा देख उसने पुकार कर कहा:

'शाबाश, कामरेड, ज़ोसिमी! भई, मान गये तुम्हारा गिरा! मुझे तो यह विश्वास नहीं था कि तुम इतना काम करवा लोगे।'

वह ज़ोसिमी की ओर आगे बढ़ा। घोड़ा भी सधे हुए जानवर की तरह उसके पीछे पीछे ठुमकता हुआ चल रहा था।

'शाबाश, साथियो!' आरचिल ने सभी को सम्बोधित कर बड़े ही उत्साह से कहना शुरू किया: 'हमारा गांव सम्पन्न हो रहा है। इस सम्बन्ध में किसी की दो राय नहीं हो सकती! क्या बढ़िया सागौन और बलूत आप लोगों ने काटे हैं? इतनी बढ़िया लकड़ी आपको मिल कहां गई? एक-एक लट्ठा ही इतना बड़ा है कि उसमें पूरा-का-पूरा मकान बन जाय।'

फिर धीरे से, उलझना भरे स्वर में बोला:

'लेकिन आप लोगों ने एक काम बिगाड़ डाला है। मुझे उसका भी उल्लेख कर ही देना चाहिये। लट्ठे आपने फिर एक नाप के नहीं काटे हैं। एक से लट्ठे न होने से वहां मेरी मामिल का काम बढ़ जाता है। मैंने गेरा को एक बात का खयाल रखने के लिए पहले से ही कह दिया था...'

बोलते-बोलते वह बीच में ही रुक गया। ऐसा लगता था मानों उसकी जबान तालू से सट गई है। उसने ज़ोर से अपना निचला ओठ काटा और विस्मित होकर, आंखें मिचकाते हुए, तने से जुती हुई भैंस को देखने लगा। वह इस तरह देख रहा था मानों उसके सामने निकोरा नहीं कोई प्रेत खड़ा हो। दूसरे ही क्षण उसने अपने आप पर काबू पा लिया और अपने गहरे विस्मय को छिपाने के लिए ज़ोसिमी की ओर देख कर मुस्कराने लगा। फिर भैंस की ओर इशारा किया और आंख मारते हुए बोला:

'यदि मैं भूलता नहीं तो यह भैंस गोचा की है। यह यहां कैसे आ गई? गोचा ने इसे सामूहिक खेत समिति के हवाले तो निश्चय ही नहीं किया है?' और वह जबर्दस्ती की एक हंसी हंसा।

'हां, है तो निकोरा ही। गोचा ने इसे अपनी एवजी पर काम करने के लिए भेजा है। उसने कहलाया है कि मुझे तो वक्त है नहीं, परन्तु साथ ही मैं दूसरों से पिछड़ना भी नहीं चाहता इस लिए निकोरा को भेज रहा हूं।' ज़ोसिमी ने हंस कर जवाब दिया लेकिन उसकी हंसी भी आरचिल की हंसी की ही तरह अस्वाभाविक थी।

'' 'सवासोलह आने सच है। अब यदि उसे अपनी भैंस को आराम देना है तो खुद आकर उसकी जगह ले।' ओनिसी ने जल कर कहा। फिर अपनी कुल्हाड़ी की बेंट से भैंस को हाँकते हुए चरागाह की ओर ले चला।

उसने झट से ताड़ लिया कि ज़रूर दाल में कुछ काला है इस लिए विषय परिवर्तन करते हुए बोला :

'गोचा और उसकी भैंस जाय भाड़ में। मुझे दोनों से कोई मतलब नहीं।'

'हाँ, तो मैं क्या कह रहा था? मैंने गोरा से कह दिया था कि सभी लट्ठे एक-सी लम्बाई के काटे जायें। लेकिन इस बात का ध्यान नहीं रखा गया। अब हमें कतरन निकालनी पड़ेगी और उस में काफी समय लग जायगा। जो हो गया सो हो गया, अब आगे से खयाल रखना, जोसीमि!' फिर अपने चारों ओर देख कर उसने पूछा: 'गेरा कहाँ है? क्या कोई बतला सकता है? जिला दफ्तर वालों ने मेरे हाथ उसे कुछ देने के लिए भेजा है। असल में मैं उसीके लिए आया था।'

'अभी क्षणभर पहले तो यहीं रहा था।' जोसिमो ने उस दिशा की ओर संकेत करते हुए कहा, जहाँ थोड़ी देर पहले ग्वादी लट्ठे को ठेलते हुए गिर पड़ा था।

ग्वादी इस भी वहीं पड़ा था। कुहनी के सहारे वह एक विशालकाय बलूत के कटे हुए तने से टिका, पाँव पर पाँव चढ़ाये बड़े ही आराम के साथ तम्बाकू पी रहा था।

'उधर, जहाँ ग्वादी आराम कर रहा है न, वहीं खड़ा था। शायद उसे मालूम हो कि वह कहाँ गया है?' एक युवक ने कहा।

आरचिल घोड़े पर सवार होकर ग्वादी की तरफ चला।

'बेटे ने बीमार होने का बहाना किया है!' आरचिल ने मन ही मन सोचा और उसके चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई। क्योंकि ग्वादी छाया में राजाधिराज की तरह लेटा तम्बाकू पी रहा था जब कि उसके दूसरे साथी

पास ही अपना पसीना बहा रहे थे। वह ग्वादी के बिलकुल समीप नहीं गया; लेकिन थोड़े फासले पर घोड़ा रोक कर पूछा :

'क्यों दोस्त, बतला सकते हो, गेरा कहाँ मिलेगा?'

ग्वादी को उसके मन की बात जानते देर न लगी। 'देखा, हरामी कितनी सावधानी से पूछ रहा है, जैसे हम कुछ जानते ही न हों।' उसने भी ऐसा बहाना किया मानो आरचिल को पहिचानता ही न हो। आरचिल के प्रश्न का जवाब देने में भी उसने कोई जल्दी नहीं की। वह उसी तरह चैन से पड़ा रहा और लापर्वा ही से आरचिल की ओर देखता रहा। अन्त में थोड़ा-सा सिर उठा कर और तम्बाकू का पाइप मुँह में एक ओर दबा कर उसने जङ्गल की ओर इशारा किया और बड़े ही ठसके से बोला।

'गोषा की लड़की नेया यहाँ थी, और उसे उधर ले गई है।' इतना कह कर उसने बड़े ही रहस्यपूर्ण ढङ्ग से सिर हिलाया मानों बतला रहा हो कि बड़े ही भेद की बात बतला दी है; यह ऐसा भेद है जो वह अपने जिगरी दोस्त को भी शायद न बतलाता। 'मेरे खयाल में चाय-बागान गये होंगे। वह जङ्गल दिख रहा है न? उस दिशा में उधर, लेकिन यहाँ से तुम देख नहीं सकोगे...

'झूठ बोलते हो। उस ओर तो एक भी चायबागान नहीं है।' आरचिल ने डपट कर कहा और उसकी भौंहों में बल पड़ गया। ग्वादी का तीर ठीक निशाने पर बैठा था, क्योंकि आरचिल उसकी बात सुन कर ही तिल मिला उठा था। 'कहते हो, चायबागान भी गये हैं और जङ्गल में भी गये हैं? यह कैसे हो सकता है? क्या वाहियात बकते हो!' उसने अविश्वासपूर्वक ग्वादी की ओर देखा, लेकिन ग्वादी ने अविचलित स्वर में कहा:

'यहाँ तो जो देखा है सो कह रहे हैं।'

अब आरचिल के लिए अपनी घबराहट छिपाना मुश्किल हो गया। जिस दिशा की ओर ग्वादी ने संकेत किया था वह उस ओर अधीरतापूर्वक

देखने लगा। लेकिन उसे वहाँ न तो मेरा दीख पड़ा न मैया ही। उसका चेहरा लटक गया।

क्रोध से आग बबूला होकर उसने घोड़े को एक चाबुक जमाया और काठी में खड़े होकर जङ्गल की ओर सरपट दौड़ चला। लेकिन थोड़ी ही दूर जाकर रुक गया।

'हाँ हाँ, इसी रास्ते गये हैं।' ग्वादी ने पुकार कर कहा। उसे आश्चर्य हो रहा था कि वह बीच में ही क्यों रुक गया है।

लेकिन घोड़े पर सवार होकर इस तरह दिन दहाड़े, मेरा और मैया के पीछे भागना आरचिल ने अपनी शान के खिलाफ समझा। उसने घोड़े की बाग मोड़ी, तड़ातड़ चाबुक बरसाये और गाँव की ओर लौट पड़ा। लौटते समय उसने ग्वादी की ओर देखा तक नहीं।

चाबुक की आवाज़ सुन कर ग्वादी को अपने तीर के निशाने पर लगने में ज़रा भी सन्देह नहीं रह गया। उसने बड़ी सफलता से आरचिल के मन में सन्देह का विष घोल दिया था। निश्चय ही इस समय आरचिल के जी में होलिया सुलग रही होगी। ग्वादी परम सन्तोष के साथ फिर टाँगें पसार कर लेट गया। घोड़े की पीठ पर झुकी हुई आरचिल की पीठ ही उसकी झुँझलाहट का पता दे रही थी। साले की रीढ़ ही तोड़ दी। और उलझना बेटा, ग्वादी से।

ग्वादी एक विष बुझी हँसी हँसा। रात की नींद न हराम हो जाय तो—मेरा नाम ग्वादी नहीं। मेरा और मैया सब जङ्गल में गये हैं। सुनकर उसकी छाती पर साँप न लोटे तो क्या हो।

'तड़पने दो साले को। वह है ही इस क़ाबिल। क्यों प्यारे, जब मेरे फल निकाल कर अपने उन मुफ़्तख़ोर साथियों को हँसते हँसते बाँट रहे थे तब क्षणभर के लिए भी सोचा था कि मुझ पर क्या बीत रही है? तुम्हारे बाप का माल था, क्यों बेटा, या सड़क चलते मिल गया था, एँ?'

और वह फिर हँसने लगा हमेशा की तरह खिल-खिल करता हुआ नहीं बल्कि ज़ोर-ज़ोर से। मारे खुशी के उसकी छाती फटने लगी। उसके मन में आया कि वह चिल्ला-चिल्ला कर सारी दुनिया को अपने प्रतिशोध की, आरचिल को उल्लू बनाने की बात कह सुनाये ताकि हर आदमी उसकी इस विजय की बात को जान जाये। लेकिन नहीं, यह असम्भव था! उसने एक गहरी सांस ली और फेफड़ों में बहुत-सी हवा भर कर मुँह बजाने लगा। इस समय अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने का सिर्फ यही एक ढङ्ग उसके सामने था।

६

आरचिल घोड़े को सरपट दौड़ता जङ्गल से गांव की ओर चला। वह न तो अपने घर गया, न आरचिल ही ठहरा। उसका लक्ष्य गोचा सलाम्दिया का मकान था; और उसके फाटक पर पहुँचकर ही उसने घोड़े की बाग खींची। उसने स्वयं ही फाटक खोला और अहाते में दाखिल हो गया।

गोचा अपने अधूरे मकान के पास, एक चौकी पर पटिया रखकर रन्दा मार रहा था। उसकी पत्नी तसिया समीप ही एक छोटी तिपाई पर आराम से बैठी ऊनी मोजे बुन रही थी। एक पुराना, टेढ़ा-मेढ़ा चश्मा उसकी नाक पर टिका हुआ था। इस चश्मे में कमानियां नहीं थीं; दो डोरियाँ सिर के पीछे बांध कर उसने किसी तरह चश्मे को अटका लिया था। उसकी अँगुलियों में सलाइयां इतनी फुर्ती से नाच रही थीं कि देखने वाले की निगाहें ही नहीं ठहरने पाती थीं।

आरचिल के आगमन की ओर सबसे पहले तसिया का ही ध्यान गया। उसने चश्मा अपने कपाल पर चढ़ा लिया, बुनाई के सामान को

समेटा और उठ खड़ी हुई। उसने अपने लहँगे की सलवटें ठीक कीं और सिर पर बँधे हुए रुमाल को सँभाला।

'मारचिन आये हैं, उनके सामने जाओ।' उसने बिल्कुल धीमी आवाज़ में अपने पति से कहा और स्वयं आदरपूर्वक पीछे हट गई।

गोचा हाथ का काम छोड़कर अतिथि की अभ्यर्थना के लिए आगे बढ़ा।

"मैं खुद ही तुम्हारे यहां आने की सोच रहा था, मुझे तुमसे एक बड़ा ज़रूरी काम था" गोचा ने कहा और घोड़े के समीप पहुँचकर उसने एक हाथ से लगाम और दूसरे से रकाब को पकड़ लिया, और आदरपूर्वक उसे घोड़े से नीचे उतरने का आमन्त्रण दिया।

पहले तो मारचिन ने 'समय नहीं है, बहुत-से काम हैं' आदि आदि कहकर इन्कार किया, लेकिन अन्त में गोचा का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। अपने मेज़बान को उतरने में सहायता देने के लिए धन्यवाद देते हुए उसने घोड़े को चौकी से बांध दिया। इस काम से निवृत्त होकर उसने अपने 'ओवरकोट' की जेब में से एक लम्बा सा पुलिन्दा बाहर निकाला।

'मैं आपकी लड़की के लिए यह छोटी सी भेंट लाया था, लेकिन वह तो कहीं दिखाई नहीं दी...तसिया चाची, आप मेहरबानी कर वह उसे मेरी ओर से दे दीजियेगा। मैं अब इसे घर नहीं ले जाऊँगा।' अन्तिम बात उसने तसिया की ओर मुड़कर कही।

'हाय हाय।' पुलिन्दे को बड़ी ही उत्सुकता से देखते हुए तसिया ने जवाब दिया: 'वह निगोड़ी तो चायबागान गई है। जाना तो मुझे भी था, लेकिन क्या करूँ, ये नहीं मानते।'

वह टक लगाये पुलिन्दे की ओर देख रही थी। मारचिन ने पुलिन्दे को अपने हाथों में नचाते हुए शिकायत की।

'अरे चाची, मैं चायबागान भी गया था। वह तो वहां भी नहीं है। लोगों ने बतलाया कि जङ्गल में गई है। और सो भी अकेली...'

वह पशोपेश में पड़ गया। उस एकदम इतना सब नहीं बतला

चाहिये था। इसलिए धीरे से बोला : 'देखो, चाची, तुम्हारे कौन दस-पांच लड़कियां हैं ? फिर जवान लड़की का यों जिस-तिस के साथ जहां-तहां फिरते रहना अच्छा भी तो नहीं मालूम पड़ता। मैं तो तुम्हारे ही भले के लिए कह रहा हूं...'

वह फिर अधबीच में ही रुक गया। कहना कुछ चाहता था और मुँह से निकल कुछ और ही जाता था। न तो लहजे और न शब्दों में ही वह बात आ पाती थी। वह नैया के सम्बन्ध में रजादी के मुँह से सुनी हुई बात को लेकर उसके माता-पिता के साथ मज़ाक करना चाहता था। इसमें उसके दोनों ही मतलब पूरे हो जाते थे। परन्तु बात जम नहीं रही थी। फिर उसने सोचा कि 'बेटी के व्यवहार के लिए माँ को दोष देना कहां तक उचित होगा ? अच्छा तो यही होगा कि वह स्वयं नैया से इस सम्बन्ध में चर्चा करे।' लेकिन मुँह से निकली बात हाथ से निकले तीर की तरह है, जो लौटकर कभी नहीं आती। अन्त में उसने ओठों पर ज़बर्दस्ती मुस्कराहट लाकर वह पुलिन्दा तसिया को थमा दिया और बोला :

'मैं तो मजाक कर रहा था, चाची; लड़की के जङ्गल में भटकगश्ती करते फिरने के लिए तुम्हें क्यों कोसा जाय ?...लो इसे रखलो, परन्तु नैया को यह मालुम न होने पाये कि यह भेंट मेरी ओर से है।'

उसे यह पुलिन्दा देते हुए देख गोचा ने कहा :

'आरचिल, हम पहले ही तुम्हारे उपकारों के बोझ से दबे हुए हैं, हमें अधिक कांटों में मत खींचो। और यों पानी की तरह पैसा बहाना भी तो ठीक नहीं।'

फिर आवाज़ को ऊँची उठाकर वह अपनी घरवाली पर टूट पड़ा :

'क्यों री, मैंने तुझे कहा नहीं था ? हज़ार बार कह चुका हूं कि इतनी बड़ी धींगरी का खेतों और जङ्गलों में भटकते फिरना अच्छा नहीं। किसी दिन मुँह काला करायेगी हमारा। कहते-कहते हार गया कि उसे यों

मत भटकने दो, उसपर कड़ी निगाह रखा कर। आगे से इसतरह की शिकायत नहीं आनी चाहिये। नहीं तो मेरे जैसा एक न होगा। दोनो मां-बेटियों को...'

आरचिल गोचा को शान्त करने लगा और हाथ पकड़ कर उसे घर की तरफ लाते हुए बोला :

'तुम तो ज़रा से में नाराज़ होगये। मैंने कुछ इसलिए तो कहा नहीं था कि तुम अपना पित्ता गरम कर लो। और यह भी कोई नाराज़ होने की बात है, भला? जवान लड़की को और सो भी कम्युनिस्ट लड़की को तुम ताला-चाभी में तो बन्द करने से रहे! हटाओ, मारो गोली। इतनी-सी बात के लिए नाराज़ भी क्या होना..'

गोचा का पारा जितनी जल्दी गरम हुआ था उतना ही जल्दी ठण्डा भी हो गया। चौकी पर झुकते हुए उसने अपनी घरवाली की ओर एक निगाह डाली। तलिया अब भी अपने हाथ में आरचिल वाला पुलिन्दा इस तरह थामे खड़ी थी मानों वह कोई अमूल्य वस्तु हो; लेकिन उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थी। उसे गुस्सा भी आ रहा था परन्तु उसने कुछ न कहना ही उचित समझा। डरती थी की उसका बोलना कहीं नैया के हक़ में बुरा न साबित हो। उसे अपने पति के शब्द विषबुझे बाणों की तरह लगे थे लेकिन नैया का ख्याल कर वह लहू की घूंट पीकर रह गई। तभी उसे यह भी ख्याल आया कि कहीं मेरे चुप रहने से तो नैया का अनिष्ट नहीं हो जायगा। और वह कुछ कहने जा ही रही थी कि गोचा ने स्निग्धतापूर्वक कहा:

'खड़ी देख क्या रही है? मेहमान के लिए कुछ फल और शराब की बोतल ला। उनकी खातिरदारी करना है या नहीं?'

'हाय इतनी-सी बात भी मुझ निगोड़ी को क्यों न सूझी?' तलिया ने प्रफुल्लित होकर कहा और तेज़ी से मकान के अन्दर चली गई। आरचिल वाले पुलिन्दे को अपने दोनों हाथों में आगे की ओर वह बड़ी ही सावधानी से थामे लिये जा रही थी।

चाहिये था। इसलिए धीरे से बोला
लड़कियां हैं ! फिर जवान लड़की का
फिरते रहना अच्छा भी तो नहीं माल
के लिए कह रहा हूँ...'

वह फिर अधबीच में ही रुक
मुँह से निकल कुछ और ही जाता
ही वह बात आ पाती थी। वह
सुनी हुई बात को लेकर उसके मा
था। इसमें उसके दोनों ही मतलब
नहीं रही थी। फिर उसने सोचा
दोष देना कहां तक उचित होगा।
नैया से इस सम्बन्ध में चर्चा क
निकले तीर की तरह है, जो लौ
ओठों पर जबर्दस्ती मुस्कराहट ल
और बोला :

'मैं तो मजाक कर रहा था
करते फिरने के लिए तुम्हें क्यों
को यह मालूम न होने पाये कि

उसे यह पुलिन्दा देते हुए

'आरचिन, हम पहले ही तुम
अधिक कांटों में मत खींचो।
ठीक नहीं।'

फिर आवाज़ को ऊँची उठ .

'क्यों री, मैंने तुझे कहा नह
इतनी बड़ी धींगरी का खेलों और
किसी दिन मुँह काला करायेगी हमार

कर सको। क्या खयाल है, वह तुम्हारी बात मान जायगा?' गोचा ने व्यग्रता-पूर्वक कहा। इस समय उसे सामूहिक खेतों के ऐतिहासिक भविष्य की अपेक्षा अपने दैनन्दिन हानि-लाभ की ही अधिक चिन्ता होरही थी।

लेकिन मारचिन्न के दिमाग में दूसरे ही विचार चक्कर काट रहे थे। वह अपनी ही हांकता चला गया :

'सौ-पचास पटिये मेरे लिए कुछ नहीं है। वे तो मै तुम्हें यों ही दे सकता हूँ। मेरा से पूछने की कोई ज़रूरत नहीं। अरे, अगर वे मुझ पर एक पूरा कमीशन भी बैठा दें और एक-एक छिल्पे तक का हिसाब रखें तब भी उतने पटिये तो मैं तुम्हें दे ही दूँगा। अभी तक बिना किसी से पूछे-ताछे देता ही रहा हूँ न। कमीशन तो कमीशन खुद मेरा भी आ खड़ा हो तब भी थोड़े-थोड़े कर किसी तरह पहुँचा ही दूँगा। इसकी तुम चिन्ता न करो। आखिर मिल का मालिक कौन है? मै ही तो हूँ। क्या वे समझते हैं कि दस बीस कपल्ली में मैं उनकी गुलामी करने लगूँगा और सारा मिल उनके हवाले कर दूँगा? आखिर वे सोचते क्या हैं? लेकिन खास बात यह नहीं है। खास बात यह है कि सामूहिक खेत की योजना अब लड़खड़ाने लगा है। समझलो कि अन्तिम घड़ी आ पहुँची है। आश्चर्य है कि तुम्हें यह सब दिखलाई नहीं दे रहा है। ज़रा आंख खोलकर देखो, दुनिया में क्या होरहा है? तुम तो समझदार आदमी हो। उन्होंने किसानों को अपनी वह काश्त की जमीन लौटा दी है। यह सच है कि सारी जमीन नहीं लौटाई है लेकिन बगीचे और बाड़े तो लौटा ही दिये हैं। ज़रा सोच देखो इसका क्या मतलब होता है? इसका मतलब यह है कि अब अन्तघड़ी आ पहुँची है। सामूहिक खेतों को एकदम तोड़ देना तो उनके लिए भी सम्भव नहीं है। सब काम इसी तरह धीरे धीरे किये जाते हैं। कुछ हँसीमज़ाक तो है नहीं कि उठे और हुक्म निकाल दिया। अब सुना है कि दुधारू जानवरों को लौटाने की बातचीत चल रही है। इसी तरह थोड़ा थोड़ा करके, एक एक चीज़ लौटा कर सामूहिक खेत तोड़ जायेंगे। यदि ऐसा नहीं किया तो, मैं ठीक कह रहा हूँ, यह सरकार टिक नहीं सकती। मेरी बात

गोचा ने चौकी पर फैले हुए बुरादे और छिल्पों को साफ किया ताकि आरचिल बैठ सके।

'क्यों गोचा, मकान का काम कैसा क्या चल रहा है? तख्तों की तो कोई कमी नहीं है न?' आरचिल ने चौकी के एक कोने पर बैठते हुए पूछा। फिर नये मकान की दीवारों की ऊँचाई का नाप लेने के लिए एक निगाह उसभोर डाली।

'बस, यह समझ लो कि तुम्हारे दुश्मनों की अन्तिम सांसों की तरह मेरे तख्तों का हाल है। तुम्हारे आने से पहले मैं आखरी तख्ते पर रन्दा चला रहा था।' गोचा ने दु:खित स्वर में कहा और धीरे से पूछा: 'क्या तुम किसीतरह मेरी मदद नहीं कर सकते?'

'क्यों नहीं कर सकता? बड़ी खुशी से। तख्तों के बारे में तुम ज़रा भी चिन्ता मत करो।' आरचिल ने झट से जवाब दिया। वह थोड़ी देर तक [illegible] सोचता रहा और अन्त में गम्भीरतापूर्वक बोला: 'सामूहिक खेतों के तोड़े जाते ही...'

आरचिल के इस कथन को सुनकर गोचा ने समझा कि वह मज़ाक कर रहा है इस लिए बोला:

'तब तो मैं कहीं का न रहूँगा। तुम उनके तोड़े जाने की बात कह रहे हो, लेकिन मैं तो जिधर देखता हूं उधर मुझे सामूहिक खेत बनते दिखलाई पड़ रहे हैं। इस समय उनके तोड़े जाने का सवाल ही कहां उठता है?'

'बात यों नहीं है। कम्युन तो उन्होंने तोड़ ही दिये। और जब कम्युन तक तोड़ डाले तो ये सामूहिक खेत हैं किस खेत की मूली!'

'मैं तो ऐसा होते देख नहीं रहा हूँ। खैर। पर यह बतआओ कि क्या किसी दूसरी तरह से मेरी मदद नहीं की जा सकती? और सामान तो मैं कहीं न कहीं से ले ही आऊँगा, खास ज़रूरत तख्तों की है। अधिक नहीं दोड़े से ही तख्ते कम पड़ गये हैं। अगर तुम किसी तरह गेरा को राज़ी

कर सको। क्या खयाल है, वह तुम्हारी बात मान जायगा ?' गोचा ने व्यग्रता पूर्वक कहा। इस समय उसे सामूहिक खेतों के ऐतिहासिक भविष्य की अपेक्षा अपने दैनन्दिन हानि-लाभ की ही अधिक चिन्ता होरही थी।

लेकिन आरचिल के दिमाग में दूसरे ही विचार चक्कर काट रहे थे। वह अपनी ही हाँकता चला गया

'सौ-पचास पटिये मेरे लिए कुछ नहीं है। वे तो मै तुम्हें यों ही दे सकता हूँ। गरा से पूछने की कोई जरूरत नहीं। अरे, अगर वे मुझ पर एक पूरा कमीशन भी बैठा दें और एक-एक छिल्पे तक का हिसाब रखें तब भी उतने पटिये तो मैं तुम्हें दे ही दूँगा। अभी तक बिना किसी से पूछे-ताछे देता ही रहा हूँ न। कमीशन तो कमीशन खुद गेरा भी आ खड़ा हो तब भी थोड़े-थोड़े कर किसी तरह पहुँचा ही दूँगा। इसकी तुम चिन्ता न करो। आखिर मिल का मालिक कौन है? मै ही तो हूँ। क्या वे समझते हैं कि दस बीस रुपल्ली में मैं उनकी गुलामी करने लगूँगा और सारा मिल उनके हवाले कर दूँगा? आखिर वे सोचते क्या हैं? लेकिन खास बात यह नहीं है। खास बात यह है कि सामूहिक खेत की योजना अब लड़खड़ाने लगी है। समझलो कि अन्तिम घड़ी आ पहुँची है। आश्चर्य है कि तुम्हें यह सब दिखलाई नहीं दे रहा है। ज़रा आँख खोलकर देखो, दुनिया में क्या होरहा है? तुम तो समझदार आदमी हो। उन्होंने किसानों को अपनी घरू काश्त की जमीन लौटा दी है। यह सच है कि सारी जमीन नहीं लौटाई है लेकिन बगीचे और बाड़े तो लौटा ही दिये हैं! ज़रा सोच देखो इसका क्या मतलब होता है? इसका मतलब यह है कि अब अन्तघड़ी आ पहुँची है। सामूहिक खेतों को एकदम तोड़ देना तो उनके लिए भी सम्भव नहीं है। सब काम इसी तरह धीरे धीरे किये जाते हैं। कुछ हँसीमज़ाक तो है नहीं कि उठे और हुक्म निकाल दिया। अब सुना है कि दुधारू जानवरों को लौटाने की बातचीत चल रही है। इसी तरह थोड़ा थोड़ा करके, एक एक चीज़ लौटा कर सामूहिक खेत तोड़े जायेंगे। यदि ऐसा नहीं किया तो, मैं ठीक कह रहा हूँ, यह सरकार टिक नहीं सकती। मेरी बात

गांठ बांध लेना। जो सामूहिक खेत में शरीक नहीं हुए हैं या समय रहते हो उनसे अलग हो गये हैं, देख लेना, आगे चलकर वही फायदे में रहेंगे। मैं तो सोचता हूँ कि अपनी इस अक्लमन्दी के लिए संभव है कि उन्हें राजा की ओर से पुरस्कृत भी किया जाय।' वह एकदम चुप हो गया और प्रश्नसूचकदृष्टि से गोचा की ओर देखने लगा। फिर थोड़ी देर बाद एक दूसरे ही स्वर में कहने लगा :

'दुधारू जानवरों का नाम लेते ही मुझे तुम्हारी भैंस निलोरा की याद हो आई। वहां जङ्गल में कामरेड लोग उससे लड़े और तने खींचने का काम ले रहे हैं। खुद अपनी आंखों से देखकर चला आ रहा हूँ। ग़रीब बेचारी एक भारी-भरकम तने से जुती उसे खन्दका में से बाहर खींच रही थी। मुझे उस पर दया तो बहुत आई लेकिन क्या करता! बुरी तरह लड़खड़ा रही थी; सीधा खड़े रहते भी नहीं बन रहा था। देखकर मैं तो आश्चर्य-चकित ही रह गया। सोचा, कहीं गोचा पागल तो नहीं हो गये? क्या सोचकर उन्होंने अपनी दुधारू भैंस सामूहिक खेत समिति को दे डाली? मेरा खयाल है कि तुमने कभी उससे ऐसा काम नहीं लिया होगा। बोलो, लिया था?'

गोचा, जो अभी तक चौकी के सहारे थोड़ा झुक कर खड़ा था इस बात को सुनकर एकदम सीधा खड़ा हो गया। बौखलाहट के कारण उसकी भौंहें कपाल में चढ़ गईं और वह आरचिल को इस तरह देखने लगा मानों कच्चा ही चबा जायगा।

'किस साले ने कहा कि मैंने अपनी भैंस सामूहिक खेत के हवाले कर दी?' उसने तपे-तुले स्वर में पूछा और उसकी चढ़ी हुई भौंहें इसतरह यथास्थान आगईं जैसे चिड़िया के पर हों।

'सामूहिक खेत के किसान कह रहे थे। अवश्य ही वे झूठ बोल रहे होंगे। लेकिन यदि तुमने सच ही भैंस नहीं दी है तो उन्हें इस बात का जवाब देना पड़ेगा। आज सारा काम कायदे-क़ानून से चलता है; तुम्हारी

चीज़ तुम्हारी अपनी है और तुम्हारी आज्ञा के बिना कोई उसे छू तक नहीं सकता। सालों पर मुक़द्दमा दायर कर दो।'

'अरे, मैं उन सालों के खोपड़े रंग दूँगा। अदालत में जायें वे, जो कमज़ोर हों। बन्दे को अपने बाजुओं का भरोसा है। अपना मामला मैं आप ही निपट लूँगा।' वह आगबबूला हो गया। चौकी पर कड़वी काटने का एक छोटा सा कुल्हाड़ा पड़ा था। उसने उसे उठा लिया और झपट कर अहाते के बाहर निकल गया।

मारचिल ने यह नहीं सोचा था कि मामला यहां तक आगे बढ़ जायगा। अब वह किसी तरह गोचा को रोकने की कोशिश करने लगा। चौकी पर से कूद कर वह उसके पीछे, चिल्लाता हुआ दौड़ा:

'फौजदारी करने से कोई लाभ नहीं। उलटे मुसीबत में फँस जाओगे। मेरा कहा मानो, इस मामले में कानूनी काररवाई ही फायदेमन्द है।'

लेकिन गोचा ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

जब गोचा यों बम के गोले की तरह चला जा रहा था, ठीक उसी समय तसिया घर में से बाहर निकली। उसके दोनों हाथ फलों की तश्तरियों में उलझे थे और एक बगल में शराब की बोतल दबी हुई थी। वह तेज़ी से कदम रखती हुई नये घर की ओर आई। जब गोचा किसी का माथा फोड़ने और किसी को मौत के घाट उतारने की बात करता हुआ अन्धड़ की तरह उसके पास से निकला तो उस बेचारी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह जहां की तहां ठिठक कर खड़ी रह गई और मुँह बाये उसकी ओर देखने लगी; फिर तत्काल ही बोली:

'मेहमान को अकेला छोड़ कर तुम कहां जा रहे हो? हाय राम, हो क्या गया है? ज़रा मैं भी तो सुनूँ।' और वह भी उसके पीछे फाटक की ओर दौड़ी। लेकिन गोचा ने उसकी बात पर भी कोई ध्यान नहीं दिया और दो ही छलांगों में फाटक के बाहर पहुँच गया।

मारचिल ने तसिया को शान्त करने का प्रयत्न करते हुए गोचा के अनपेक्षित रूप से भभक उठने का कारण कह सुनाया :

'किसी ने उनसे कह दिया है कि निकोरा भी तुम से छीन ली जायेगी। वह इसी बात की छान-बीन करने के लिए गये हैं। तुम किसी बात की चिन्ता मत करो। वह जल्दी ही लौट आयेंगे।' आरचिल ने उसे ढाढ़स बँधाई।

यह सुन कर तसिया के तो होश-हवास ही गुम हो गये। निकोरा को खोने के विचार मात्र से वह काँप उठी और उसके हाथ से तश्तरियाँ गिरते-गिरते बचीं।

'हाय-हाय, यह हो ही कैसे सकता है? घर में एक वही तो दुधारू जानवर है। जिसके घर में अकेला एक गोरू उसको भी ले लेने की बात तो अभी तक सुनी नहीं गई थी।'

'यही तो मैं भी कह रहा हूँ। लेकिन कोई सुने तब न? गोचा को ज़रूर ग़लतफहमी हो गयी है।'

तसिया की चिन्ता और परेशानी का आरचिल पोरिया पर ज़रा भी असर नहीं हुआ। उसने चुपचाप उसके हाथ से फलों की तश्तरी और शराब की बोतल ले ली।

तसिया का ध्यान बँटाने के लिए बोतल को उजाले की ओर उठा कर देखते हुए उसने कहा :

'नये बाग़ के अँगूरों की शराब है, क्यों? देखने से तो यही मालूम पड़ता है! 'इज़ाबेला' अँगूरों की बनी होती तो कभी की खट्टी हो गई होती। वे तो किसी काम के न...'

१०

जब निकोरा ने उस तने को खींच-खांच कर यथास्थान लगा दिया तो लोगों ने सोचा कि दूसरे लट्ठों के लिए भी उसे क्यों न जोता जाय? ओनिसी की इस सलाह पर दूसरी टोली आगे आई। इस टोली में ओनिसी के लड़के भी थे। वे बड़ी देर से एक विशालकाय तने को ठेल रहे थे। बांका तिरछा और बेडौल होने के कारण वह तना अपनी जगह से आगे खिसकता ही नहीं था। लोगों का दम फूल आया था वे पसीने में शराबोर हो गये थे और अभी तना चरागाह की ओर मुश्किल से हाथ दो हाथ खिसका होगा।

जी भर कर आराम कर लेने के बाद श्वादी बिग्वा इस दूसरी टोली के साथ लग गया था। पहले वह तने को पीछे की ओर से ठेलता रहा, फिर दौड़ कर आगे आया। वह ज़रूरत से ज़्यादा शोर मचा रहा था लेकिन मानना पड़ेगा कि ताकत लगाने में भी उसने अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी थी। जब उसके साथी निकोरा को लाये और उसे तने से जोत दिया तो पहले तो श्वादी उसे पहिचान ही न पाया। उसने यही सोचा कि वे लोग अपनी ही भैंस इस काम के लिए ले आये हैं। यह देख उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। भैंस को हांकने का काम उसने अपने जिम्मे लिया। कटी हुई टहनियों के ढेर में से उसने एक लम्बी, पतली और लचकीली टहनी उठा कर कामचलाऊ छड़ी बनाली और 'चल चल, हट हट' करता हुआ भैंस को हांकने लगा।

टोली के नायक जोसिमो को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। उसे डर था कि भैंस को लेकर कहीं झगड़ा खड़ा न हो जाय। परन्तु इस सम्बन्ध में उसने अपने साथियों से कुछ भी नहीं कहा। उसने सोचा कि चलो, एक तना और खींच दें। जानवर काफी हृष्ट-पुष्ट है। इतने से काम

में उसका कुछ बिगड़ नहीं जायगा। यह सोच कर उसने अपनी दिलजमई कर ली। और यदि झगड़ा उठ भी खड़ा हुआ तो वह अन्यत्र चला जायेगा और ऐसा बहाना करेगा कि वह दूसरी जगह काम में लगा था और सब कुछ उसकी अनुपस्थिति में हुआ है।

ठीक उसी समय तूफान की तरह गोचा सलान्दिया ने चरागाह में प्रवेश किया। अपने लम्बे-पूरे डील-डौल के कारण वह पेड़ की तरह मालूम पड़ रहा था। चरागाह के बीचोंबीच खड़े होकर उसने धूप से बचने के लिए आँखों पर हाथ की ओट की और चारों ओर देखने लगा।

अपनी निकोरा को पहिचानते उसे ज़रा भी देर न लगी। उसने देखा कि बेचारी भैंस एक विशाल तने से जुती उसे खींच रही है। हठात् उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने आँखें मल कर एक बार फिर देखा और उसकी शिराएँ तन गईं। उसके मुँह से एक अस्फुट-सी हुङ्कार सुनाई दी और वह अपने दाँत पीसने लगा। फिर कड़ब काटने की कुल्हाड़ी को तलवार की तरह घुमाता हुआ वह आगे लपका।

वह लम्बे-लम्बे डग भरता अपने मजबूत पाँवों से धरती को कँपाता अपने दुश्मनों पर झपटा। सारे चरागाह में उसके पाँवों की धमक निहाई पर बजने वाले घन की तरह गूँज उठी और उसके पावों के नीचे धरती इस तरह दब गई, मानों वह मिट्टी पर नहीं, ताज़ी बरफ पर चल रहा हो।

तभी एकाएक उसे यह खयाल आया कि यों सीधे आक्रमण करना उचित न होगा। वे उसे देख लेंगे और मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाएँगे। उसने दिशा बदल दी और टेढ़े-मेढ़े रास्ते से खन्दकों में छिपता, टीलों की ओट लेता आगे की ओर बढ़ा। वह उन लोगों पर एकाएक टूट पड़ना चाहता था ताकि निर्ममतापूर्वक उन्हें उनके चौरकर्म की सजा दी जा सके।

गोचा के साथ-साथ उसकी डरावनी परछाईं भी भागी चली जा रही थी। वह छाया ज़ोसिमी के ऊपर होकर निकल गई, जो उन लोगों से थोड़े फ़ासले पर खड़ा था। फिर हरी दूब पर फिसलती हुई एक लट्ठे पर फैल

गई : छाशा में गोचा के चौड़े कन्धे दैत्याकार हो उठे थे। जिस समय छाया लड़े पर फैली उस समय निज़ोरा उस विशाल तने को खींचती हुई लढ़े के पास पहुँच रही थी। हरी दूब पर उस विशालकाय छाया को देख कर ज़ोसिमी ने गोचा की ओर देखा और उसके पांव तले की धरती खिसक गई। गोचा यहाँ कहां से आ गया? अभी वह सोच ही रहा था की गोचा तूफ़ानमेल की तरह आगे बढ़ गया और किसानों को उद्देश्य कर ललकार उठा 'अरे हिजड़ो देखूं कौन मरद है, जो छाती ठोक कर सामने आता है?'

कड़कती बिजली की तरह उसकी यह ललकार सारे चरागाह में गूँज गई। सभी किसान यन्त्रवत् खड़े हो गये। किसी ने आगे बढ़कर भैंस को रोका। गोचा के आकस्मिक आगमन ने सभी घबरा से गये थे।

और भैंस के मुँह के पास खड़े ग्बादी के तो हाथ पांव ही फूल गये। आज वह जैसा किंकर्तव्यविमूढ़ हुआ वैसा जीवन में पहले कभी न हुआ था। पहले तो उसे अपनी आंखों पर ही विश्वास न हुआ। गोचा और यहां? असम्भव! लेकिन जब उसकी ललकार सुनी तो विश्वास करना ही पड़ा। और तब कहीं उसका ध्यान भैंस के चादले की ओर गया। उस चादले को देख कर सारी परिस्थिति उसके खयाल में आगई। हाय, सर्वनाश हो गया! मारे डर के वह कांप उठा। भैंस के पास से उछलकर वह इस तरह दूर जा खड़ा हुआ मानों काला नाग देख लिया हो। उसने हाथ की छड़ी अलग फेंक दी और धीरे से अपने साथियों की पीठ के पीछे जा छिपा।

लेकिन ओनिसी के लिए ऐसा करना सम्भव नहीं था। वह पीछे नहीं हट सकता था। उसने सोचा कि यदि गोचा की चुनौती स्वीकार न की तो वह शेर हो जायगा और फिर उससे निपटना मुश्किल ही नहीं असम्भव होगा। घबराने से काम नहीं चलेगा। ठीक एक नीलकण्ठ की तरह अपना चोंचनुमा मुँह को आगे की ओर कर उसने तीखी आवाज़ में कहा.



'यहाँ कौन हिजड़ा है ? हिजड़ा तो तू है जो हमेशा अपनी औरत के लहँगे में छिपा बैठा रहता है और हम मर्दों के साथ काम पर आने से जी चुराता है। यहाँ तो सभी मरद हैं और काम कर रहे हैं!' और ओनिसो अपनी झुकी हुई पीठ को तान कर सीधा खड़ा हो गया। अपने लड़कों के पास आकर उसने दोनों हाथों से कुल्हाड़ी का बेंट पकड़ लिया और पैंतरा बदल कर हमला करने के लिए तैयार उनके सामने आ खड़ा हुआ।

गोचा ने आँखें सिकोड़ कर उस पिद्दी समान बूढ़े की ओर देखा। बूढ़े का यह जोश देख कर उसे मन ही मन बड़ा मजा आया; परन्तु अपने चेहरे से उसने यह भाव जरा भी प्रकट नहीं होने दिया।

'अरे जानता हूँ, जैसा टाँटिया पहलवान है तू!' फिर अपने चारों ओर देख कर बोला: 'अरे हरामियो, दुधारू भैंस को जोतते शर्म नहीं आई तुम्हें। 'यही मरदानगी है तुम्हारी ?'

फिर निकोरा के पास जाकर, रस्सी हिलाते हुए, ओनिसो की ओर मुड़कर और डपट कर हुकुम चलाया:

'खोल इसे! अभी हाल खोल!'

'पहले अपने आप को इसकी जगह जोत! फिर मैं खोलूँगा! बोल है मँजूर? नहीं तो मेरी जाने बलाय! तू अपने आपको समझता क्या है? लकड़ी काटना क्या तेरा काम नहीं है? आया बड़ा लाट साब का बच्चा। चल हट्, चलता बन! खबरदार जो भैंस को हाथ लगाया है तो।'

ओनिसो ने गरम होकर कहा। अब वह किसी से दबने वाला नहीं था। गोचा ने 'टाँटिया पहलवान' कह कर जिस तिरस्कार से उसकी शक्ति का उल्लेख किया था वह उसकी बर्दाश्त के बाहर था। उसने निश्चय किया कि जान पर खेल कर भी वह गोचा को बतला देगा कि ओनिसो कभी घास का नहीं बना है! और वह बिलकुल निडर हो गया!

गोचा का पित्ता फिर भड़क उठा।

'मेरी भैंस और मैं ही उसे हाथ न लगाऊँ? देखूँ, तू कौन होता है

मुझे रोकने वाला ?' इतना कह कर वह अपनी कुल्हाड़ी को तलवार की तरह घुमाता हुआ गरजने लगा। उधर ओनिसी का कुल्हाड़ा भी हवा में चमकने लगा था।

फिर गर्जन तर्जन और कुहराम का क्या पूछना ?

ज़ोसिमी को यह समझते देर न लगी कि गोचा झगड़ा करने के इरादे से ही यहाँ आया है। वह ज़रूर सामूहिक खेती वाले किसानों से उलझेगा। इसलिए वह भी गोचा के पीछे लगा वहाँ आ पहुँचा। उसने सोचा कि भैंस को लेकर यदि दोनों दलों में कहा-सुनी हुई तो बीच बचाव कर समझा देगा। लेकिन उसने यह तो सपन में भी नहीं सोचा था कि आपस में कुल्हाड़े चल जाएँगे। इसलिए जब उसने गोचा को कुल्हाड़ी घुमाते हुए देखा तो उसे उसने दोनों हाथों में जकड़ लिया।

छोड़ दो इसे!' उसने चिल्ला कर कहा और गोचा को सँभलने का मौका दिये बिना ही, पलक झँपाते उसके हाथ में से कुल्हाड़ी छीन ली।

दूसरे किसान ओनिसी और गोचा के बीच में 'हां-हा' करते आ खड़े हुए थे। ओनिसी के बड़े लड़के ने ज़ोर देकर अपने पिता से कहा:

'तुम रहने दो काका, मुझे ही इससे निपट लेने दो।' और वह भी ओनिसी के आगे आ खड़ा हुआ था। यह देख कर कि गोचा का हथियार छिन गया है ओनिसी ने अपना कुल्हाड़ा नीचा कर लिया।

अब तक चरागाह में काम करने वाले हर आदमी को इस झगड़े की बात मालूम हो गई थी। कानों कान यह खबर जङ्गल में भी पहुँच गई और वहाँ से उड़ते-उड़ते चायबागान तक आ पहुँची। गोचा का गर्जन तर्जन सुनकर पास पड़ौस के सभी किसान घटना-स्थल पर दौड़े आये थे। जो दूर थे वे भी भय भागे चले आ रहे थे। ओरकेनी का पूरा सामूहिक खेत ही चरागाह में इकट्ठा हो गया था।

'गोचा सलान्दिया मारपीट पर उतर आया है।' चायबागान में भी यह खबर पहुँची और पत्तियाँ चुनती हुई औरतें काम छोड़-छोड़ कर जङ्गल की ओर भागीं।

गेरा घूम फिर कर काम का निरीक्षण कर रहा था। एक टोली को हिदायतें देकर वह दूसरी की ओर आ ही रहा था कि उसने हो हल्ला सुना और लोगों को भागते हुए देखा। वह खड़ा हो गया और जिस ओर से शोरगुल सुनाई दे रहा था उस ओर देखने लगा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। इस शोरगुल का क्या मतलब है? कौन लड़ रहे हैं और लड़ाई का कारण क्या हो सकता है? चरागाह छोड़े अभी उसे आधा घण्टा भी नहीं हुआ था और इतने से समय में आखिर ऐसी कौनसी बात पैदा हो गई? सब लोग चारों ओर से चरागाह की ओर दौड़े चले जा रहे थे। उसे भी वहां जल्दी पहुँचना चाहिये। और वह चाय के पौधों के बीच लम्बी छलांगें भरता हुआ दौड़ने लगा।

जब नैया ने यह सुना कि उसका पिता किसी से झगड़ बैठा है तो वह बड़ी देर तक अनिश्चय के-से भाव से अपनी जगह पर खड़ी रही। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे। पहले तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ। लेकिन जब उसके पड़ौस में काम करती हुई विधवा मरियम भी टोकरी फेंक कर भागी तो वह एकदम चिन्तित हो उठी। उसकी छाती ज़ोरों से धड़कने लगी; अपने लहँगे के छोर में भरी चाय की पत्तियों को एक हाथ में थामे वह भी दूसरों के पीछे-पीछे चरागाह की ओर दौड़ने लगी।

११

गोचा निरस्त्र कर दिया गया था। ज़ोसिमी खड़ा उसे समझा रहा था। लेकिन अभी गोचा का क्रोध शान्त नहीं हुआ था। हथियारों की लड़ाई तो टल गई थी, लेकिन अब दोनों प्रतिद्वन्दी वाणी के अमोघ अस्त्र का प्रयोग कर रहे थे। ज़ोसिमी इस फन में उस्ताद था। उसके शब्दबाण बड़े ही पैने और अचूक थे। उसके इस आक्रमण के आगे गोचा बुरी तरह पिट रहा था।

झगड़े का मूल कारण, भैंस तो कभी की भुलादी गई थी। और एक बड़े ही व्यापक आधार पर शाब्दिक लड़ाई लड़ी जा रही थी। सामूहिक खेत के सभी सदस्यों की ओर से ओनिसी ने गोचा की लानत मलामत शुरू की। उसने गोचा पर आरोप लगाये कि वह समाज के साथ गद्दारी कर रहा है, उसने अपने आप को सामूहिक खेत से अलग सा कर लिया है और सामूहिक श्रम से, सब के साथ मिल कर काम करने से, जी चुराता है। फिर एक विजेता की तरह दूसरे किसानों की ओर मुड़ कर बोला:

'गोचा सलान्दिया के भेजे में यह बात क्यों नहीं समाती है कि हिरन कितना ही क्यों न उछले, आना उसे आखिर धरती पर ही पड़ेगा। गोचा हमारे सिर पर पांव रख कर आगे नहीं बढ़ सकता। आना उसे आखिर हमारी ही शरण में पड़ेगा।'

लोगों की प्रशंसा से भी अधिक गोचा के निहत्थे हाथों को देखकर—गोचा की कुल्हाड़ी छीन ली गयी थी जबकि उसके हाथों में अभी भी कुल्हाड़ा मौजूद था—वह और भी अधिक उत्साहित हुआ और उसी विजय-दर्प से आगे बोला:

'वह कितना ही हाथ पांव क्यों न मारे, हमारी मदद के बिना सौ जनम में भी अपना मकान पूरा नहीं कर सकता। चाहे तो मेरी बात को गांठ बाँध ले। क्यों कामरेडो, ठीक कह रहा हूँ न?'

'बिलकुल ठीक, सफासोनह आने ठीक!' सारा चरागाह गूँज उठा।

'तो गोचा अपने कान के पर्दे खोलकर अच्छी तरह सुन ले कि हमारी मदद के बिना वह कभी अपना मकान पूरा नहीं कर सकता। जो झूठ कह रहा हूँ तो मेरा नाम ओनिसी नहीं!'

उत्तर में एक अट्टहास की ध्वनि सुनाई दी- 'अब समझ में आया कि आप का पेट क्यों दुख रहा है! मेरा मकान तो पूरा भी होने आया मगर आप के मकानों का अभी कहीं पता-ठिकाना भी नहीं है। बस, इसी

ओनिसी को बड़े-बूढ़ों की तरह सीख देते देख गोचा जल भुन कर खाक हो गया। उसकी बात काट कर उसने कहा: 'गोचा के हाथ नहीं गल गये हैं कि वह तुम्हारे आगे भीख मांगने आये। मैं मर जाऊँगा लेकिन तुम्हारे आगे हाथ नहीं फैलाऊंगा। और वह तन कर खड़ा हो गया और उपेक्षा से ओनिसी की ओर देखने लगा।

'ठहरो जी, मुझे अपनी बात पूरी कर लेने दो। बीच बीच में टांग मत घुसेड़ो।' क्योंकि वह केवल सीख ही नहीं, धमकी भी देना चाहता था 'नहीं तो, अच्छी तरह समझ लो कि मिल से चोरी चोरी जो पटिये तुम्हें मिले हैं वे सब के सब लौटाना पड़ेंगे। राज़ी से लौटाओ, नाराज़ी से लौटाओ पर लौटना ज़रूर होंगे। जो झूठ कहूँ तो मेरा नाम ओनिसी नहीं। हां तो, तुमने अपने आपको समझा क्या है?

'देखूँ कौन मेरे तख्तों को हाथ लगाता है?' गोचा ने ऐंठ कर कहा। लेकिन सन्देह और आशङ्का का सांप उसकी छाती पर लोटने लगा था और उसके स्वर में विह्वलता की गूँज साफ़ सुनाई दे रही थी। अपनी इस कमज़ोरी पर स्वयं उसे भी आश्चर्य हुआ। इस दुर्बलता को छिपाने के लिए उसने तीखे स्वर में फिर दुहराया: 'देखूं कौन मेरे तख्तों को हाथ लगाता है! कौन उन्हें वापिस मांगता है?'

कहने को तो वह कह गया परन्तु ओनिसी की धमकी सुनकर उसके होश गुम हो गये थे। निश्चय ही तख्ते उससे छीने जा सकते हैं। विचार मात्र से उसके पांव कांपने लगे। ओनिसी का जवाब सुनने के लिए उसके प्राण ही कानों में आ बैठे थे।

'क्या यह भी मुझी को बतलाना होगा? जैसे तुम जानते ही न हो!'

ओनिसी के तीर ठीक निशाने पर बैठ रहे थे। अपनी बात के असर को वह खूब समझ रहा था। उसने और भी निर्मम होकर कहा

'पटिये वापिस लेने वाले तुम्हारे पुराने दोस्त, वे कुलक (धनी किसान) नहीं होंगे!'

ओनिसी की यह बात सुन कर वहां खड़े सब किसान एक साथ हँस पड़े।

'वाह, क्या कहने हैं ओनिसी के!'

'अरे, पूरा बालिस्टर है, बालिस्टर!'

हठात् ही-ही हा-हा के बीच भीड़ के पीछे से किसी का धीमा-सा स्वर सुनाई पड़ा :

'ईमान की बात तो यह है कि गोचा की दुम अभी तक कुलक किसानों के साथ बँधी हुई है।'

कहने वाले का धीमा, अस्फुट स्वर हलाहल विष में बुझा हुआ था। सुनने वाले चौंक पड़े और चारों ओर देखने लगे। वे कहने वाले का पता लगाना चाहते थे। जो सामने खड़े थे वे पीछे की ओर और जो पीछे खड़े थे वे अपनी गर्दन तान-तान कर आगे की ओर देखने लगे। लेकिन बोलने वाले का कहीं पता नहीं था।

किन्हीं का यह खयाल था कि ऐसी बात केवल ग्वारी ही कह सकता है। लेकिन वह तो यहां था ही नहीं, कभी का खिसक गया था और दूसरे वह स्वर भी उसका नहीं मालूम पड़ता था।

गोचा भी यह जानने के लिए व्यग्र हो उठा कि यों सबके सामने उसका अपमान किसने किया है? किसने उसकी कुलक-पूँछ का भण्डा-फोड़ किया है? लेकिन एक चेहरे का दूसरे चेहरे से और एक ध्वनि का दूसरी ध्वनि से भेद करना उसके लिए मुश्किल हो गया था। उसे सब चेहरे एक से मालूम पड़ रहे थे और ऐसा लग रहा था मानों उसके चारों ओर खड़े सबके सब आदमी एक ही स्वर में वही जहरीली बात दुहरा रहे हों।

वह बौखला गया और पागल साँड की तरह फ़ुफ़कारें मारने लगा, लेकिन उसके चारों ओर लोहे की अभेद्य दीवार की तरह लोगबाग खड़े थे इसलिए उसे मन मार कर रह जाना पड़ा। अन्त में उसका ध्यान जोसिमो की ओर गया जो विचार-मग्न मुद्रा में पास ही खड़ा था। देखकर गोचा के आश्चर्य

का पार न रहा। उस समूह में वही एक आदमी था, जो हँस नहीं रहा था और जो हाथ बाँधे चुप खड़ा था। वह जोसिमी को इस तरह देखने लगा मानों उसे पहले कभी देखा ही न हो आज जीवन में पहली बार देख रहा हो। हाँ वह जोसिमो ही था और बड़ी ही सहानुभूति और अनुकम्पा की दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था। किसी चीज़ के बेंट को अपनी छाती से लगाये, दोनो हाथ छाती पर बाँधे वह चुप खड़ा था। गोचा ने देखते ही उस बेंट को पहिचान लिया।

'तो जोसिमी, मैं कुलक हूँ? मैं—मैं कुलक हूँ? लाओ, मेरी कुल्हाड़ी लौटा दो।' ज़ोर ज़ोर से साँस लेता हुआ वह उसकी ओर बढ़ा।

जोसिमी इस विस्फोट से विचलित नहीं हुआ। वह चुपचाप गोचा की ओर देखता रहा और कुल्हाड़ी को और भी परे हटाते हुए शान्त पर दृढ़ स्वर में बोला

'गोचा, कुछ समझ में नहीं आता कि तुम्हें हो क्या गया है? क्यों हम से रार मोल ले रहे हो? सुबह से हम काम में जुटे हैं। हम में से प्रत्येक ने कम से कम बीस बीस लट्ठे और तने तो ठेले ही होंगे। और जैसा कि तुम देख रहे हो हमारा बाल भी बाँका नहीं हुआ है। सबके सब सही सलामत तुम्हारे आगे खड़े हैं। तुम्हारी भैंस ने केवल दो लट्ठे खींचे हैं और सो भी जङ्गल से यहाँ तक नहीं, खाली चरागाह चरागाह में ही। और इतनी सी बात के लिए तुम हमारी जान लेने पर उतारू हो गये हो। ज़रा सोचना तो चाहिए। एक तुम्हारी ही नहीं सभी की भैंसें इस काम में लगाई गई हैं। भला, तुम्हारी ही भैंस में ऐसे कौन से सुर्ख़ाब के पर लगे हैं।

लेकिन गोचा को समझौता स्वीकार नहीं था। अब सवाल केवल भैंस का ही नहीं उसके अस्तित्व का भी था। उसे 'कुलक' कहकर पुकारा गया था और नष्ट कर देने की धमकी दी गई थी। उसे लगा जैसे जोसिमी जान बूझकर इस बात पर पर्दा डालने का प्रयत्न कर रहा है। क्या उसने ये

शब्द नहीं सुने कि 'गोचा कि तुम कुलक किसानों के साथ बँधी है'? इस बात का तो सिर्फ यही मतलब निकलता है कि गोचा नालायक है!'

'नायक साहब, मेरी बात का जवाब दो। भैंस की बात कहकर हमें उल्लू बनाने का प्रयत्न मत करो। मैं अपनी बात का साफ-साफ जवाब चाहता हूँ। मैं कुलक हूँ या नहीं?' उसने ज़ोसिमी का पीछा पकड़ते हुए कहा, और अपने दैत्याकार शरीर को थोड़ा झुकाकर अपना कान ज़ोसिमी के मुँह के आगे लगा दिया।

लेकिन ज़ोसिमी को न जाने क्या हो गया था। उसने गोचा की बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह थोड़ा परे हट गया और उत्तेजित भीड़ के सिरों पर होती हुई उसकी निगाहें सामने की ओर देखने लगीं।

सामने अवश्य ही ऐसा कुछ था जिसकी उपस्थिति मात्र से चरागाह में सन्नाटा हो गया था। अब न तो कोई हँस रहा था, न फ़िकरे बाज़ियाँ ही हो रही थीं। ओनिसी भी चुप हो गया था। गोचा ने भी इस परिवर्तन को लक्ष्य किया लेकिन कारण उसकी समझ में नहीं आया। चारों ओर इतनी शान्ति थी कि उसे अपने दिल की धड़कन तक सुनाई दे रही थी। इस शान्ति का मतलब उसने यही लगाया कि दूसरे लोग भी उसकी तरह ज़ोसिमी का उत्तर सुनने के लिए दम साधे खड़े हैं। इसलिए उसने अपने कान को थोड़ा और ज़ोसिमी के मुँह के निकट कर दिया।

'क्यों मेरे प्राण खाये जा रहे हो? चुप भी रहोगे या नहीं?' ज़ोसिमी ने क्रुद्ध कर कहा और हाथ पकड़ कर गोचा को ज़ोर से परे ढकेल दिया। फिर जिस दिशा में देख रहा था उसी ओर तेज़ी से चल दिया।

यह देख गोचा आगबबूला हो उठा।

'यही तुम्हारा जवाब है, ज़ोसिमी? तुम भी मुझे कुलक समझते हो?' वह चिल्लाता हुआ उसके पीछे भागा।

लेकिन ज़ोसिमी ने मुड़ कर देखा तक नहीं; वह फुर्ती से लोगों की भीड़ के पीछे अदृश्य हो गया।

गोचा का चेहरा देखने काबिल हो गया था। क्षणभर के लिए तो वह किंकर्तव्यविमूढ़ सा रह गया, लेकिन दूसरे ही क्षण कहने लगा :

'तो यह बात है! अब मेरी समझ में आया कि मुझे तख्ते क्यों नहीं दिये जा रहे हैं! यह कौन नहीं जानता कि कुलक के पास से उसकी जमा-जथा छीन लो, परन्तु उसे कुछ मत दो' फिर मैं ही इस बात को कैसे भूल गया था? और उन्होंने मेरी भैंस भी इसीलिए ले ली कि मैं कुलक हूँ। सच है न?'

उसने अपनी लम्बी-लम्बी भुजाओं को हिलाया और स्वर को ज़रा ऊँचा करके कहने लगा :

'अच्छी बात है यदि मैं कुलक हूँ तो ले लो मेरी भैंस। नहीं चाहिये मुझे वह भी।'

लोगों को दमसाधे चुप खड़े देख उसने यही समझा कि लोग उसकी बातों को गौर से सुन रहे हैं। लेकिन दूसरे ही क्षण उसका यह मोह भङ्ग हो गया और उसके मुँह की बात मुँह में ही रह गई। सुनना तो दरकिनार लोग उसकी ओर देख भी नहीं रहे थे। वे सब टक लगाये उस ओर देख रहे थे जिस ओर ज़ोसिमी गया था। गोचा ने भी उस ओर देखा। एक आदमी छोटे से टीले पर खड़ा उसकी बात सुन रहा था। गहरे विस्मय के कारण उसके कन्धे ऊँचे उठ आये थे। वह आदमी और कोई नहीं, सामूहिक खेत की प्रबन्ध-समिति का अध्यक्ष गेरा था।

गेरा के निकट पहुँच कर ज़ोसिमी ने भैंस की ओर इशारा करते और गोचा की कुल्हाड़ी को, जिसे वह अब भी अपने हाथ में थामे था, हिलाते हुए कुछ कहना शुरू किया। ओन्सिी भी ज़ोसिमी के पीछे दुड़की लगाता हुआ वहाँ पहुँच गया और उसके पीछे जा खड़ा हुआ।

अभी गोचा गेरा के आने के कारणों और परिणामों की कल्पना भी नहीं कर पाया था कि गेरा ने ज़ोसिमी की बात को बीच में ही काट कर अपनी तीखी और स्पष्ट आवाज़ में कहा

'ओनिसी भैंस को एकदम खोल दो!'

वहाँ खड़े सामूहिक खेत के किसानों में एक हलकी-सी फुस-फुसाहट सुनाई दी और दूसरे ही क्षण सन्नाटा हो गया।

ओनिसी इस तरह उछल पड़ा मानों गोली लगी हो।

'वह खोले जिसने उसे जोता है। मेरी जाने बला।' और लौटकर भीड़ में इस तरह आ मिला जैसे चूहा अपने बिल में समा गया हो।

गोचा ने यह तो सपने में भी नहीं सोचा था।

गेरा के हस्तक्षेप, खुले समर्थन और ओनिसी के पलायन को देख कर प्रसन्न हो उठा। आखिर उसने भी तो यही कहा था कि ओनिसी भैंस को छोड़ दे। इस से अधिक वह चाहता ही क्या था! लेकिन दूसरे ही क्षण उसका शङ्काशील हृदय असमञ्जस में पड़ गया: वे जानबूझे कर रहे हैं, कहीं उनका इरादा इस तरह सारे मामले को रफा-दफा कर देने का तो नहीं है! लगता तो कुछ ऐसा ही है।

तभी उसे यह खयाल भी आया कि गेरा डर गया है। यह तो मानना ही पड़ेगा कि सामूहिक खेत के किसानों ने ग़ैर-क़ानूनी काम किया है। अब गेरा सारे मामले की लीपापोती करना चाहता है। किसी तरह अपना गला छुड़ाने की कोशिश कर रहा है।

तो गोचा ने भी कुछ कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। वह उन्हें इतनी आसानी से छोड़ने वाला नहीं। मीठी बातों से दिलबस्तगी करने के फेर में वह हर्गिज़ नहीं पड़ने का। ओनिसी को तकलीफ करने की कोई ज़रूरत नहीं। यदि वह भैंस छोड़ दे तब भी उसका अपराध कम नहीं हो जाता। यदि गेरा यह सोचता है कि इतने से मामला निपट जायगा तो यह उसकी भूल है। गोचा कभी उसकी चाल को सफल नहीं होने देगा। बड़े हाकिम बन कर आ गये, हुक्म सुना दिया और मामला रफ़ा-दफ़ा कर दिया। अभी गोचा जैसों से पाला नहीं पड़ा है! हाँ, अकेली भैंस का ही सवाल होता तो मामला निपट जाता। लेकिन उसका अपमान किया गया है! उसे

गालियाँ दी गई हैं। उसे चुलक कहा गया है। और फिर वे आसानी से छूटना चाहते हैं? मीठी मीठी बातें करके मामले को आपस में खुटाना चाहते हैं? असम्भव! गोचा के जीते जी यह कभी हो नहीं सकेगा। और मजा तो देखो, यह कल का लौंडा, ज़रा सा पिल्ला उसकी आंखों में धूल झोंकने चला है। गोचा ने अपने बाल कुछ धूप में सफेद नहीं किये हैं।

इस विचार ने उसमें नयी शक्ति पैदा कर दी। 'दुश्मन घबरा रहा है। मर्मान्तक चोट करने का ठीक यही समय है। मत चूके चौहान! गोचा, मेरे बहादुर, आगे बढ़ और पूरी ताकत से वार कर। यह वक्त कमज़ोरी दिखलाने का नहीं, वज्र की तरह कठोर बनने का है।'

एक ही झपट्टे में वह किसानों के घेरे में से बाहर निकल आया और चिल्ला कर गेरा से बोला

'तकलीफ करने की कोई ज़रूरत नहीं। कोनिसी भैंस को नहीं खोलना चाहता, न खोल। खोलने की कोई ज़रूरत भी नहीं। मैं कह चुका हूँ कि भैंस मुझे नहीं चाहिये। मरद की बात एक होती है। मेरी बात पत्थर की लकीर हुई। मैं कुलक हूँ। मेरी एक एक चीज़ मुझ से छीन लो, इसी काम के लिए तो तुम नियुक्त किये गये हो। आये बड़े सूरमा बनकर! मामले को उलझते देखा तो आप खड़े हुए। लगे हें हें करने। मुझे तुम से कुछ नहीं चाहिये। वह खड़ी है भैंस मैं जा रहा हूँ।'

घमण्ड भरे स्वर में वह चिल्लाया और मुड़कर चल दिया

'मैं भी देख लूँगा किस की माँ ने सर सोंठ खाई है। देखूँगा कि कौन छिनका क्या लेता है?

लेकिन उसकी राह में एक नया ही रोड़ा आ खड़ा हुआ। दूसरी लड़कियों के साथ वहाँ आकर नेया अभी गेरा की ओर मुड़ी ही थी कि उसने अपने पिता को जाते हुए देखा। देखते ही वह उसकी राह रोक कर खड़ी हो गई। वह एक हाथ से सिर की टोपी और दूसरे से चाय

की परियों से भरी लहँगे की किनार थामे हुए थी। दौड़ने के कारण उसकी साँस भर आई थी। अपने पिता के इस व्यवहार से वह भयभीत हो उठी थी, और उसकी बड़ी नीली आँखें फटी की फटी रह गई थीं। ज़ोर-ज़ोर से साँस लेते हुए उसने बड़ी कठिनाईपूर्वक अपने पिता से पूछा:

'पिताजी, आप को हो क्या गया? आप यहाँ कर क्या रहे थे?'

उसने अपने दोनों हाथ फैला दिये। गोचा ने उसके फैले हुए हाथों को ज़ोर से पकड़ लिया और काँपते हुए तीखे कर्कश स्वर में चिल्ला उठा:

'अच्छा हुआ कि तू भी आ गई! चल घर चल, सीधे। ख़बरदार जो फिर कभी इधर आई है तो टाँग ही तोड़ डालूँगा।' जिस तरह मुर्गी अपने चूज़ों की रक्षा के लिए डैने फैला लेती है उसी प्रकार नैया के कन्धों को ज़ोर से पकड़ कर वह उसे अपने साथ समेटने लगा।

'क्या कहा आपने? चलूँ, कहाँ चलूँ?'

नैया की समझ में नहीं आया कि उसका पिता आख़िर चाहता क्या है? उसने बड़ी कुशलता से अपने आप को पिता की पकड़ में से मुक्त कर लिया लेकिन एक गड्ढे में पाँव के मोच खा जाने के कारण वह लड़खड़ा गई। किसी तरह दोनों हाथ फैला कर उसने बड़ी मुश्किल से अपने आप को गिरने से बचाया।

देखने वालों में गुस्से की एक लहर दौड़ गई। उन्होंने समझा कि क्रुद्ध गोचा ने अपनी लड़की को धक्का दिया है। कुछ ने उसे फटकार सुनाई और कुछ बाप-बेटी की ओर लपके। सब से अधिक गुस्सा तो नैया की सहेलियों को आ रहा था।

'कामरेड गोचा, तुम अपनी मर्यादा का उल्लंघन कर रहे हो! यह क्या दिमाक़त है?' उन्होंने इस तरह चीख़ कर कहा मानों उसे फाड़ ही खाएँगी।

विधवा मरियम तो बारूद के ढेर की तरह भड़क उठी और लगी उसे कोसने:

'अरे मदुंए तुझे हो क्या गया है? इतनी बेशरमी भी किस काम की? जवान बेटी पर हाथ उठाते शरम नहीं आती? क्यों मार रहा है बेचारी को? कहीं तेरा दिमाग तो नहीं फिर गया है?'

यद्यपि बाप बेटी के मामले में उसे कुछ लेना देना नहीं था, फिर भी वह गोचा का रास्ता रोक कर खड़ी हो गई। उधर नैया के भी कई मददगार निकल आये और उसे घेर कर खड़े हो गये।

'हट जा, मेरे रास्ते से! कहे देता हूं, नहीं तो ठीक न होगा! तू कौन होती है बीच में पड़ने वाली? मैं उसका बाप हूँ, जो चाहे करूँगा।' उसने गरज कर कहा और नैया को पकड़ने के लिए लपका, जो किसानों से घिरी खड़ी थी।

जब गेरा ने यह देखा तो वह नैया के समीप चला आया और उस से आग्रह करने लगा कि वह अपने पिता के साथ घर लौट जाय। लेकिन नैया ने अस्वीकार कर दिया।

'नहीं लौटती! क्यों लौट जाऊं? क्या मैं दूध पीती बच्ची हूँ?' वह काफी उत्तेजित हो गई थी।

'तो कामरेड नैया, ऐसी दशा में मुझे यह कहना पड़ेगा कि तुम अपने पिता को घर ले जाओ। इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है? गोचा को ऐसा प्रतीत होने दो कि वही तुम्हें लिये जा रहा है, लेकिन असल में तुम्हीं उसे ले जाओगी। समझ गईं न मेरा मतलब?' उसने मुस्कराते हुए कहा।

'गेरा, यह भी कोई हँसी मजाक का वक्त है? मैं ऐसा कभी नहीं कर सकती!' नैया ने हठपूर्वक कहा।

अब गेरा गम्भीर होकर बोला

'इस समय इससे अच्छी कोई तरकीब नहीं है, नैया। अपने पिता को तो तुम अच्छी तरह जानती ही हो। उसका स्वभाव तुम से छिपा नहीं है। वह कभी मानेगा नहीं। और मेरे खयाल में तो गलती हमारे लोगों की ही

है। जान बूझ कर उकसावा देने की नीयत से ही यह काम किया गया है। उसका निपटारा तो हम बाद में करेंगे। लेकिन सबसे पहले तो यह ज़रूरी है कि इस झगड़े को किसी तरह ख़तम किया जाय। मेरी बात मानो; वक्त ज़ाया न करो। जो कुछ हो रहा है सो तो तुम भी देख ही रही हो...'

नैया थोड़ी देर सोचती रही।

उधर गोचा हो-हल्ला मचा रहा था कि नैया को अपने बाप का कहना मानना ही होगा। उसने धमकी भी दे डाली कि यदि कहना न माना तो फिर उसके जैसा बुरा कोई न होगा। अपने गले की पूरी ताक़त लगा कर वह दहाड़ा :

'आयेगी कैसे नहीं? चुटिया पकड़ कर घसीट ले जाऊँगा। इन्कार करती है? अपने बाप का कहना भी नहीं मानेगी? चल, हो आगे।'

नैया जाने को राज़ी हो गई।

'अच्छा पिताजी, चल रही हूँ।' गोचा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ लेकिन नैया चली आ रही थी।

'हूँ, अब आई सीधे रास्ते पर।' उसने नैया का हाथ पकड़ लिया और उसे प्रतिरोध न करते देख लोगों की ओर एक विजेता की भांति देखा। फिर दोनो बाप-बेटी साथ-साथ क़दम मिलाते हुए गांव की ओर चल दिये।

सामूहिक खेत के किसान अपनी जगह पर चुप खड़े उन्हें देखते रह गये।

कुछ दूर चलने के बाद नैया ने क़दम बढ़ाये और अपने पिता से आगे निकल गई। अपने आप को अकेला पाकर गोचा ठिठक कर खड़ा हो गया। फिर सीना फुला कर, हाथ हिलाते और तर्जनी अँगुली से धमकाते हुए उसने कर्कश स्वर में कहा :

'भागी कहां चली जा रही है? सुनती है कि नहीं! चल, यहां आ! मेरे साथ-साथ चल!'

नैया ने पहले मुँह तो बिगाड़ लिया, लेकिन और कोई चारा न देख साथ साथ हो गई। एक बार फिर बाप बेटी साथ-साथ चलने लगे।

इस तमाशे को देख किसान लोग अपनी हँसी न रोक सके।

जब नैया और गोचा आंखों से ओझल हो गये तो गेरा ने भैंस का रस्सा हाथ में लिया। निकोरा अब भी जुती हुई थी, वह तने के पास खड़ी सब ओर से बेसबर जुगाली कर रही थी। स्वादी निर्द्वन्द और निश्चिन्त होकर उसके पास ही तने पर आराम से बैठा था। जाने क्या सोचकर उसने अपना चाकू खोल लिया था और उसका उपयोग न होते देख उससे खिलवाड़ कर रहा था।

गेरा थोड़ी देर तक खड़ा सोचता रहा, फिर उसने ज़ोर से पुकारा :

'कामरेड, जोसिमी !'

आवाज सुनते ही ज़ोसिमे लोगों के झुण्ड में से बाहर निकला। उसने गेरा की ओर देखा तक नहीं, गोचा की कुल्हाड़ी को चुपचाप कमर में खोंसा और भैंस की ओर बढ़ गया। फिर सिर झुकाकर भैंस की रस्सी खोलने लगा। स्वादी ने भी हाथ बँटाने का निश्चय किया। उसने चाकू अपनी कमर के हवाले किया और भैंस के आगे पीछे नाचने लगा, साथ ही वह ज़ोर ज़ोर से कराहता जाता था मानो इसतरह अभी हाल की घटनाओं पर टिप्पणियां कर रहा हो।

'मगर सब से मज़े की बात तो यह है, ज़ोसिमी,' उसने एक गांठ खोलते हुए बड़े ही धीमे स्वर में कहा: 'कि भैंस को इस बात की ज़रा भी पर्वाह नहीं है कि उसका मालिक कौन है ? सामूहिक खेत, गोचा, मैं या तुम कोई भी मालिक हो, उसकी बला से ! देखो, कितनी लापर्वाही से खड़ी जुगाली कर रही है। लेकिन गोचा तुम या मैं मारे चिन्ता के मरे जा रहे हैं। क्या तुम मुझे इसका कारण बतला सकते हो ?'

ज़ोसिमी ने जवाब देने की तकलीफ नहीं गवारा की। स्वादी ने फिर कहा :

'क्यों जी कारण बतला सकते हो या नहीं?'

ज़ोसिमी भैंस के मुँह पर बँधा फन्दा खींचता हुआ नाराज़गी के साथ बोला : 'चुप रहो जी, क्या बड़-बड़ लगा रखी है!' और उसने फन्दे को इसतरह फेंका कि वह ग्वादी की गर्दन में जा पड़ा।

गेरा उनके समीप आया और बोला :

'ग्वादी, भैंस को लेजाकर झट से उसके मालिक के घर पहुँचा आओ।'

फिर ज़ोसिमो की ओर मुड़कर उसे झिड़की सुनाई :

'ज़ोसिमी, मुझे तुम से ऐसी आशा नहीं थी। यह तुमने क्या किया!'

'और कोई चारा नहीं था।' ज़ोसिमी ने गेरा से आँखें चुराते हुए कहा। फिर कुल्हाड़ी को कमर से निकाला और ग्वादी की ओर बढ़ाते हुए कहा :

'लो, इसे भी लेते जाओ! यह तोहफा उसको नजर कर देना।' उसने तोहफे और नजर पर काफी ज़ोर दिया था।

१२

ग्वादी भैंस को हांक कर ले चला।

उसने चरागाह में से ही गांव की ओर को रुख किया। उसका विचार अपने घर की ओर होकर जाने का था ताकि लड़कों के बारे में पता लगाया जा सके। वह जानना चाहता था कि लड़के घर लौट आये हैं या नहीं।

गांव की सीमा पर जहां सड़क मुड़ती थी, मक्का का एक छोटा-सा खेत खड़ा था। इस खेत का मालिक कोई व्यक्तिगत किसान था और ऐसा प्रतीत होता था मानो खेत भुला दिया गया हो। खेत की मेंड़ पर कँटीली झाड़ियां खड़ी थीं। मक्का अभी पक ही रही थी और यहां वहां पौधों पर भुट्टे दिखाई दे रहे थे। चक्कर बचाने के लिए ग्वादी ने भैंस को खेत में डाल

दिया। हठात् उसका ध्यान झाड़ियों में से उठते हुए धुएँ की ओर गया। धुएँ की एक पतली सी रेखा आसमान में ऊपर की ओर उठती चली जा रही थी। उसने सोचा कि किसी ने झाड़ी में आग लगा दी है।

इत्मिनान करने के लिए उसने अपने चारों ओर देखा। खेत का मालिक कहीं पास पड़ोस में ही होना चाहिये।' इस विचार के साथ ही वह प्रसन्न हो उठा। 'किसी की संगति में बाकी समय बड़े चैन से कट जायगा। उस झगड़े-झमेले के बीच में एकबार भी नहीं बोला। गूँगे की तरह मुँह बन्द किये सुनता रहा।' अब उसकी जबान में खुजली सी मच रही थी।

खेत से निकल कर वह वहाँ आया जहाँ से धुआँ उठ रहा था। निकट आकर उसने जो कुछ देखा उससे उसके आश्चर्य का वारापार नहीं रहा उसकी आँखें ठेठ कपाल में चढ़ गईं।

'ज़रा इस हरामज़ादे को तो देखो। कैसा लाटसाहब की तरह टाँगें पसारे खर्राटे ले रहा है। उस सारे झगड़े की जड़ तो यही है।'

एक झाड़ी के निकट धीमी धीमी आग जल रही थी। कुछ सूखी टह-नियों से धुआँ उठ रहा था। आग पर एक भुट्टा रखा था, जो एक ओर से थोड़ा-सा जल गया था। समीप ही एक वृक्ष के नीचे चरवाहा परबराला सूखी कड़बी पर, सिरहाने अपना पैंगा लगाये, दोहर-सा कुछ ओढ़े गुड़ी-मुड़ी पड़ा सो रहा था। उसकी बगल में एक छोटा-सा बर्तन रखा था और चारों ओर भुट्टे के ऊपर के छिलके बिखरे हुए थे। वह इसतरह सो रहा था मानों उसे साँप सूँघ गया हो। जब वह साँस छोड़ता तो उसका पोपला मुँह खुल जाता था और जब वह नाक से साँस खींचता तो मुँह पानी में उठने वाले बुदबुदों की आवाज़ के साथ बन्द हो जाता था।

थोड़ी देर तक तो ज्वादी खड़ा मन्त्रमुग्ध-सा देखता रहा। फिर उसे आग पर रखे भुट्टे का खयाल हो आया। उसने सोचा कि भुट्टे को जल जाने देना महा मूर्खता होगी।

उसने आग पर भुट्टे को इधर-उधर फिरा कर उठा लिया। मक्का के मोती-से दानों को देख कर उसके मुँह में पानी भर आया। उसने चारेक दाने मुँह में डाले। भुना बड़ा ही स्वादिष्ट था। वह आग के पास उकडूँ बैठ गया और भुट्टे पर हाथ साफ करने लगा। जब भुट्टा खा चुका तो उसने 'डोंडिये' को आग पर रख दिया और उठ खड़ा हुआ।

भुट्टा खाते समय वह बार-बार परववाला की ओर देखता जाता था कि कहीं वह जाग तो नहीं गया है।

लेकिन परववाला मुर्दे की तरह पड़ा था। भुट्टा खा चुकने के बाद ग्वादी को जोरों की प्यास लगी। उसने बर्तन की ओर हाथ बढ़ाया। बर्तन काफी भारी था। परववाला ने मुश्किल से आधा पीया होगा।

ग्वादी ने बर्तन के मुँह पर ढँके पत्ते हटा दिये और उसे उठा कर ओठों से लगा लिया। एक घूँट पीते ही वह इसतरह चौंक पड़ा मानों ततैया ने डँस लिया हो और बोला :

'ऐं, यह शराब तो नहीं है!'

उसने अपने ओठों पर जबान फिराई।

'हूँ, है तो शराब ही, खालिस शराब!'

इसका नाम है क़िस्मत। खुदा जब देता है तो यों ही छप्पर फाड़कर देता है!

उसने जोंक की तरह बर्तन को मुँह से चिपका लिया। हूँ, शराब ही है, पानी नहीं। वह 'घुटर-घुटर' की आवाज़ करता हुआ पीने लगा। जब पूरा बर्तन खाली हो गया तभी उसने उससे अपना मुँह हटाया।

'अब समझ में आया कि यह कुबड़ा इसतरह क्यों पड़ा सो रहा है! साला सूअर पीये हुए है!' शराब का नाम लेते ही उसके चेहरे पर हँसी दौड़ गई। क्योंकि शराब काफी बढ़िया थी। बर्तन को उसने यथास्थान रख दिया और पूर्ववत् पत्ते ढंक दिये। फिर पाईप जला कर मुँह से लगाया और धुएँ के बादल उड़ाने लगा। अन्त में एक तिरछी

निगाह परथवाला पर डालकर वह भैंस को हांकता हुआ वहां से आगे बढ़ा।

ढाल से नीचे उतरते हुए उसने गाना शुरू किया। वह प्रसन्नता से ओतप्रोत हो रहा था।

'इसका नाम है जिन्दगी!' उसने अपने आप को घुड़कते हुए कहा। देनेवाले ने परथवाला को शराब इसलिए दी होगी कि वह उसकी गाय भैंस को अच्छी तरह चराये और किसी का नुकसान न करने दे। लेकिन उस उल्लू के पट्ठे ने यह नहीं सोचा कि शराब पीते ही आदमी का सिर भारी हो जाता है और नींद आने लगती है। और जहां नींद आई कि गाय भटकी! लेकिन यदि परथवाला रोज इस तरह क्वटर खाली करता हो तो मैं उसकी तारीफ ही करूँगा। रोज एक क्वटर शराब इसका नाम है जिन्दगी!'

चरवाहा बनने के लिए स्वयं ग्वाशी ने कुछ कम प्रयत्न नहीं किये थे, लेकिन न जाने क्यों गाववालों ने परथवाला को ही पसन्द किया। यदि ग्वाशी को पहले मालूम हो गया होता कि चरवाहे की जिन्दगी इतनी चैन की है तो वह किसी की न चलने देता और चरवाहा बनकर ही दम लेता!

और तब जिन्दगी कितने चैन से कटती! शराब पीयो और टांगें पसार कर सोओ इससे अधिक और किसी को चाहिये भी क्या? नहीं, अब वह परथवाला को एक मिनट भी चैन नहीं लेने देगा। वह काफी हरामखोरी कर चुका है। उसे हटाना ही होगा। खूब खा पी लिया है! अब नहीं चलने दिया जायेगा। गेरा के ध्यान में यह बात लाना ही होगी। यदि वह अपने काम पर मुस्तैद रहता तो आज का यह सारा झगड़ा-झमेला क्यों होता? क्यों गोचा की भैंस भटकती और क्यों कोई उसे काम पर जोतता? यह तो सफा तोड़फोड़ है! समाज तुम्हें खाना देता है, कपड़ा देता है ऊपर से तुम रिश्वत ले लेते हो, फिर भी काम नहीं करते! इतने सब के बाद तो काम करना चाहिये! लेकिन आप हैं कि

'कामधेनु है तू तो निगोरा! तुम्हारी दुधारू भैंस तो आस-पास में चार-चार कोस तक नहीं होगी।'

अब उसके विचार एक दूसरी ही धारा में बहने लगे थे।

'ईमान की बात तो यह है कि ऐसी बढ़िया भैंस का मालिक गोचा नहीं ग्वादी होना चाहिये...गोचा को भला भैंस की जरूरत भी क्या है? उसके जैसे हट्टे-कट्टे आदमी को दूध नहीं देना चाहिये। यदि वह सच में आदमी है तो उसे वोदका या शराब पीना चाहिये। अब रही तसिया...' सो ग्वादी जानता था कि उसे दूध ज़रा भी नहीं सुहाता। तमिया को चटपटी तरकारी और कढ़ी दे दो, बस फिर उसे कुछ नहीं चाहिये। 'और नया? हां, संभव है कि वह अब भी दूध पीती हो। लेकिन वह अकेली कितना पी सकती है? अधिक से अधिक दिनभर में सेर सवा सेर पी जायेगी। बस। लेकिन ग्वादी की हालत तो बिलकुल जुदी है। उसके लड़कों को—और एक नहीं पांच पांच हैं अब—भी दूध की जरूरत है। अभी तो उन बेचारों के दांत भी नहीं आये हैं! और घर में एक मरियल बकरी है। एक बकरी का दूध ही कितना होता है। सच ही कहा है कि—जहां दांत वहां चने नहीं, जहां चने वहां नहीं दांत! यह है भगवान का न्याय! यदि मेरा सच्चा संशलिस्ट है तो उसे चाहिये कि वह गोचा से भैंस छीन कर ग्वादी को दे दे! नहीं तो और सोशलिज्म कहते किसे हैं!'

यदि ग्वादी सामूहिक खेत समिति का अध्यक्ष होता तो सारी दुनिया को इस तरह बदल देता कि कोई पहिचान ही न पाता...

लेकिन सब से पहले तो मैं इस बात का जवाब चाहता हूं कि भैंस ग्वादी के पास न होकर गोचा के पास क्यों है? आखिर क्यों? इसका मतलब क्या होता है?

ऐसी अच्छी भैंस को ग्वादी कभी बेचने नहीं ले जायगा। वह गोचा से अधिक अच्छी तरह उसकी देख-माल करेगा। क्या वह गाय भैंस पालना नहीं जानता? अच्छे दुधारू जानवर की भला कौन हिफाजत नहीं करेगा?

घड़ाभर शराब उँड़ेलली, गरमागरम भुत्ते पर हाथ साफ किया और दिन-दुपहर में टाँगें फैलाकर नवाब की तरह खर्राटे भर रहे हैं! मार को इसकी इजाजत किसने दी है? और तो और आग जलाकर यों ही छोड़ दी; उसे बुझाया तक नहीं। मान लो, जङ्गल में आग लग जाती तो क्या होता? तब तुम क्या दे देते? लोगों ने बड़े-बड़े बलिदान किये हैं, अपार कष्ट सहे हैं तब कहीं आज का दिन देखने को मिला है; और सारी जनता निर्माण कार्य में लगी है। हर कोई मकान बना रहा है और तुम अपनी हरामखोरी के कारण जङ्गल ही जला देते। जङ्गल जल जाता तो तुम्हारा क्या बिगड़ता? सौ जनम भी तुमसे उसकी भरपाई न होती।

हुँ हूँ हूँ!' उसने स्वर को खींचकर कहा।

और अनायास ही वह स्वर खिंचता-खिंचता गाने में परिवर्तित होगया और वह ज़ोर-ज़ोर से गाने लगा। उसे अपने ही गाने की आवाज़ बड़ी भली लग रही थी और जबतक उसका मन नहीं भर गया वह गाता रहा।

'ऐसा लगता है कि परबवाला की शराब ने मेरा गला साफ़ कर दिया है।' उसने मन ही मन शराब की तारीफ़ करते हुए कहा।

निकोरा ठिठक कर खड़ी हो गई थी। यहां से पहाड़ी रास्ता खड़े जीने की तरह सीधा नीचे को जाता था। ग्वादी ने भैंस की पूँछ मरोड़ कर कुल्हाड़ी की बेंट से दो-एक हूदे जमाये और चिल्लाकर उसे आगे की ओर खदेड़ा भैंस धीरे-धीरे पाँव दबाती हुई नीचे उतरने लगी। पूँछ और पिछले पाँवों के बीच होती हुई ग्वादी की निगाह भैंस के थन पर जा लगी। उसके थन भरी हुई मशक की तरह फूले-फूले लटक रहे थे। ऐसा लगता था कि बस फट ही जाएँगे। जब भैंस चलती थी तो थन हिलते और जांघों से टकराते जाते थे।

'क्या थन हैं! ज़रा देखो तो सही!' ग्वादी ने आश्चर्यचकित होकर कहा और ज़रा निकट आकर ध्यान से देखने लगा। भैंस के थन को हाथ से सँभालते हुए उसने तारीफ़ के पुल बाँध दिये:

'कामधेनु है तू तो निजोरा! तुमसी दुधारू भैंस तो आस-पास में चार-चार कोस तक नहीं होगी।'

अब उसके विचार एक दूसरी ही धारा में बहने लगे थे।

'ईमान की बात तो यह है कि ऐसी बढ़िया भैंस का मालिक गोचा नहीं ज्वादी होना चाहिये...गोचा को भला भैंस की जरूरत भी क्या है? उसके जैसे हट्टे-कट्टे आदमी को दूध नहीं देना चाहिये। यदि वह सच में आदमी है तो उसे वादकाया शराब पीना चाहिये। अब रही तसिया...' सो ज्वादी जानता था कि उसे दूध ज़रा भी नहीं सुहाता। तसिया को चटपटी तरकारी और फक्री दे दो, बस फिर उसे कुछ नहीं चाहिये। 'और मैया? हां, सम्भव है कि वह अब भी दूध पीती हो। लेकिन वह अकेली कितना पी सकती है? अधिक से अधिक दिनभर में सेर सवा सेर पी जायेगी। बस। लेकिन ज्वादी की हालत तो बिलकुल जुदी है। उसके लड़कों को—और एक नहीं पांच पाच हैं अब—भी दूध की ज़रूरत है। अभी तो उन बेचारों के दांत भी नहीं आये हैं! और घर में एक मरियल बकरी है। एक बकरी का दूध ही कितना होता है। सच ही कहा है कि—जहां दांत वहां चने नहीं, जहां चने वहां नहीं दांत! यह है भगवान का न्याय! यदि मेरा सच्चा सोशलिस्ट है तो उसे चाहिये कि वह गोचा से भैंस छीन कर ज्वादी को दे दे! नहीं तो और सोशलिज्म कहते कैसे है!'

यदि ज्वादी सामूहिक खेत समिति का अध्यक्ष होता तो सारी दुनिया को इस तरह बदल देता कि कोई पहिचान ही न पाता ..

लेकिन सब से पहले तो मैं इस बात का जवाब चाहता हूँ कि भैंस ज्वादी के पास न होकर गोचा के पास क्यों है? आखिर क्यों? इसका मतलब क्या होता है?

ऐसी अच्छी भैंस को ज्वादी कभी बेचने नहीं ले जायगा। वह गोचा से अधिक अच्छी तरह उसकी देख-भाल करेगा। क्या वह गाय भैंस पालना नहीं जानता? अच्छे दुधारू जानवर की भला कौन हिफाजत नहीं करेगा?

जितनी हिफाजत करोगे उतना अधिक दूध मिलेगा। ऐसा जानवर तो घर की लक्ष्मी है। यदि वह किसी तरह उसके घर में आ जाय तो त्वादी की तक़दीर खुल जाय।

'तक़दीर ही नहीं खुल जायगी घर में दूध की नदियाँ बहने लगेंगी। दूध, दही, मक्खन, पनीर किसी चीज़ की कमी नहीं रहेगी। पनीर बज़ार में दस रूबल का ज़रा सा मिलता है और सो भी खालिस नहीं! घर के पनीर-मक्खन की तो बात ही निराली है! और छाछ! लेकिन दूध-दही के आगे छाछ को कौन पूछेगा? पर छाछ पुतकिया को पिलाया करेंगे। महीना दिन जाते तो देखने काबिल हो जायगा। गरम की हुई छाछ कुत्तों के लिए बड़ी मुफ़ीद होती है। और थोड़ा दूध दही मिलते ही लौंडे भी चेत आएँगे, जादू मन्तर की तरह बढ़ने लगेंगे। फिर सप्ताह दिन में नहीं, घण्टों में बदन भरने लगेगा और देखते देखते अच्छे खासे पट्ठे तैयार हो जाएँगे। एक-दो नहीं पूरे पांच पहलवान, पांच पाण्डवों की तरह। फिर क्या पूछना है; तब तो अपनी पांचों घी में होंगी। घर की आमदनी एकदम पंचगुनी हो जायेगी। लेकिन उतनी सम्पदा रखेंगे कहां? उस छोटे से घर में तो अँटेगी भी नहीं। पिछले साल प्रत्येक श्रम-दिन की आठ रूबल नक़द, और कुछ मक्का, दाल, चावल आदि के हिसाब से मजदूरी दी गई थी। भैंस आ जाने के बाद और पांचों पट्ठे तैयार हो जाने के बाद पँचगुने आठ यानी चालीस रूबल और पँचगुना मक्का दाल-चावल मिलने लगेगा। लेकिन यह तो पिछले साल के हिसाब से हुआ। इस साल तो सुना है कि प्रति श्रम-दिन के लिए ग्यारह रूबल दिया जायगा। (पँचगुने ग्यारह उसके लिए इतनी बड़ी संख्या थी, जिसे वह जोड़ नहीं पाया)। और यह सब केवल एक भैंस का प्रताप होगा। आज यह लक्ष्मी गोचा के पास है लेकिन वहाँ इसका कोई उपयोग नहीं। अभागे के एक भी लड़का नहीं, फिर भला उसे दूध की ज़रूरत भी क्या है!'

क्या दुनिया में न्याय उठ ही गया है? क्या कहीं कोई ऐसा न्यायी

नहीं जो इस अन्याय का अन्त कर भैंस ग्वादी के हवाले कर दे ?

उसने बार बार हिसाब लगाया और वह जितना ही अधिक हिसाब लगाता था उसकी परेशानी उतनी ही अधिक बढ़ती जाती थी। उसकी आँखें भैंस के थन पर चिपक-सी गई थीं और उनमें जलन होने लगी थी।

अब वह अपने घर पहुँच गया था। उसने भैंस को रोका और बच्चों को आवाज़ दी।

बिलकुल सन्नाटा था। उसने दूसरी बार पुकारा लेकिन कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला। फिर एकदम मोला बनकर अधमुँदी आँखों से उसने चारों ओर देखा पास पड़ोस में कोई नहीं था। थोड़ी देर तक वह खड़ा सोचता रहा और उसके बाद झोंपड़ी की ओर मुड़कर फिर आवाज़ दी

'अरे छोकरो! कोई हो तो इधर आओ!'

न चिड़ी न चिड़ी का पूत! बिलकुल सन्नाटा। लड़के अभी स्कूल से नहीं लौटे थे।

ग्वादी थोड़ी देर तक और सोचता रहा, लेकिन उसके कान सजग थे और वह टोह भी लेता जाता था।

जब उसे विश्वास हो गया कि घर और उसके आस पास भी कोई नहीं है तो उसने भैंस की पीठ थप थपाई और बड़े ही धीमे स्वर में स्नेहपूर्वक कहा

'चल, मेरी लछमी, चल। उधर नहीं, इधर अहाते में चल, देवी!'

और वह भैंस को हाक कर अहाते में ले आया।

थोड़ी देर बाद निक्रोरा ग्वादी के आंगन में एक वृक्ष तले खड़ी पगुरा रही थी, और ग्वादी गोचा सलान्दिया की भैंस के नीचे बैठा बड़ी लगन से एक बड़े बर्तन में उसका दूध दुह रहा था।

जो उसकी बगल में जीते जागते पहाड़ की तरह चल रहा था, देखने का निश्चय किया। गोचा बिलकुल अपने नाक की सीध में देखता हुआ चला जा रहा था। वह न बाएँ देखता था न दाएँ। ऐसा लगता था मानो उसकी गर्दन ही ऐंठ गई हो।

'पिताजी, आपने सबके साथ झगड़ा क्यों किया?' नैया ने भीतस्वर में आदरपूर्वक पूछा। गोचा ने उत्तर नहीं दिया। उसने ऐसा बहाना किया मानो प्रश्न सुना ही न हो।

'इसका परिणाम बुरा होगा, पिताजी!' गोचा को उत्तर न देते देख वह उसी स्वर में आगे बोली लेकिन झगड़े का कारण क्या था? तने को खींचने के लिए वे निकोरा को जोतते नहीं तो क्या करते?'

उसने सहज ऊँचे स्वर में दृढ़तापूर्वक कहा

हां, इसके लिए उन्हें अनुमति लेना चाहिये थी, और बिना अनुमति के निकोरा को जोत कर उन्होंने अनुचित किया। इसका जवाब उनसे तलब किया जायगा। यों ही नहीं छोड़ दिया जायगा।'

और फिर स्वर को धीमा करके कहने लगी

'लेकिन ज़रा आप ही सोचिये कि इतनी सी बात के लिए लोगों से यों लड़ना कहांतक उचित है?

गोचा चलते चलते एकदम रुक गया और उसने क्रोधपूर्वक अपनी लड़की की ओर देखा।

'आई बड़ी मुझे सीख देने वाली। तू होती कौन है? खबरदार जो मुँह खोला तो!' उसने डपट दिया और अँगुली से सड़क की ओर इशारा करता हुआ बोला चल, कदम बढ़ा!'

इतना अपमान नैया की बर्दाश्त के बाहर था, लेकिन किसी तरह अपने आप पर काबू पाकर वह चलती रही। अनचाहे ही उसकी चाल धीमी पड़ गई। कुछ कदम चलने के बाद किसी तरह साहस बटोर कर उसने फिर पूछा

१३

थोड़ी देर तक गोचा और नैया चुपचाप चलते रहे। बाप-बेटी दोनों में से कोई कुछ न बोला। गोचा ऊपर से तो शान्त मालूम पड़ता था; लेकिन वस्तुतः ऐसी बात नहीं थी। उसके अन्दर विक्षोभ का समुद्र हिलोरें ले रहा था। उसके चलने के ढङ्ग से ही यह बात साफ दिखाई दे जाती थी।

नैया बातचीत करने के लिए व्यग्र हो रही थी और उचित अवसर की प्रतीक्षा में थी। लेकिन ऐसा अवसर आ नहीं रहा था। जैसे-जैसे चरागाह पीछे छूटता गया उसका क्रोध भी बढ़ता गया और वह क्रोध के मारे काँपने लगी। लेकिन वह अपने पिता पर इतनी क्रुद्ध नहीं थी, जितनी कि स्वयं और गेरा पर।

'मैंने इसे मंजूर क्यों कर लिया? गेरा की बात मानकर पिताजी के पीछे दौड़ी क्यों चली आई?'

कितना अपमानजनक! गेरा ने बुरी तरह फँसा दिया। कितनी वाहियात बात है! और लोग अभीतक मुझे निरी बच्ची ही समझते हैं। हूँ भी मैं बच्ची ही!

झगड़े के कारण का पता अभीतक नैया को नहीं लगा था। वह परेशान थी कि आखिर पिताजी ने झगड़ा क्यों किया? गेरा ने जल्दी-जल्दी निकोला के बारे में कुछ कहा था। लेकिन इतनी-सी बात के लिए खून खच्चर तक मामला पहुँच जाने की बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। एक भैंस के लिए भला कौन इस तरह दुनिया से बैर बाँधेगा? वह अपने पिता से ही इस सम्बन्ध में पूछना चाहती थी।

अब वे गाँव के समीप आ गये थे। नैया ने अपने पिता की ओर,

जो उसकी मगज में जीते जागते पहाड़ की तरह चल रहा था, देखने का निश्चय किया। गोचा बिलकुल अपने नाक की सीध में देखता हुआ चला जा रहा था। वह न बाएँ देखता था न दाएँ। ऐसा लगता था मानो उसकी गर्दन ही ऐंठ गई हो।

'पिताजी, आपने सबके साथ झगड़ा क्यों किया?' नैया ने भीतस्वर में आदरपूर्वक पूछा। गोचा ने उत्तर नहीं दिया। उसने ऐसा बहाना किया मानो प्रश्न सुना ही न हो।

'इसका परिणाम बुरा होगा, पिताजी!' गोचा को उत्तर न देते देख वह उसी स्वर में आगे बोली: 'लेकिन झगड़े का कारण क्या था? तने को खींचने के लिए वे निकोरा को जोतते नहीं तो क्या करते?'

उसने सहज ऊँचे स्वर में दृढतापूर्वक कहा.

'हां, इसके लिए उन्हें अनुमति लेना चाहिये थी; और बिना अनुमति के निकोरा को जोत कर उन्होंने अनुचित किया। इसका जवाब उनसे तलब किया जायगा। यों ही नहीं छोड़ दिया जायगा।'

और फिर स्वर को धीमा करके कहने लगी

'लेकिन ज़रा आप ही सोचिये कि इतनी सी बात के लिए लोगों से यों लड़ना कहांतक उचित है?'

गोचा चलते-चलते एकदम रुक गया और उसने क्रोधपूर्वक अपनी लड़की की ओर देखा।

'आई बड़ी मुझे सीख देने वाली। तू होती कौन है? खबरदार जो मुँह खोला तो!' उसने डपट दिया और अंगुली से सड़क की ओर इशारा करता हुआ बोला 'चल, क़दम बढ़ा।'

इतना अपमान नैया की बर्दाश्त के बाहर था, लेकिन किसी तरह अपने आप पर काबू पाकर वह चलती रही। अनचाहे ही उसकी चाल धीमी पड़ गई। कुछ कदम चलने के बाद किसी तरह साहस बटोर कर उसने फिर पूछा

'लेकिन आप मुझे घर क्यों खींचे लिये जा रहे हैं? कुछ मेरी भी तो समझ में आये?'

'चुपचाप चली चल। घर पहुँचने पर सब कुछ समझ में आ जायेगा।' उसने पहले ही की तरह डाँट कर कहा और साथ चलने के लिए अँगुली से आदेश दिया।

अब बात करने में कोई सार नहीं था। उसने निश्चय किया कि पीछे रह जाय और लौट कर चरागाह में अपने साथियों से जा मिले।

लेकिन वह अपने इस निश्चय को कार्यरूप में परिणत नहीं कर सकी। उसकी हिम्मत ने जवाब दे दिया। उसके पाँवों ने पीछे की ओर मुड़ने से इन्कार कर दिया। ऐसा लग रहा था मानो उसका पिता किसी अदृश्य रस्सी से बांध कर उसे खींचता हुआ लिये जा रहा हो। उसके मन में डर से अधिक दुर्बलता थी। इस समय उसके मन की दृढ़ता और निश्चयात्मकता न जाने कहाँ गायब हो गई थी। बहुत प्रयत्न करने पर भी उसे इस दुर्बलता के कारण का पता नहीं चला। पिता की निकटता ने जैसे उसकी सारी शक्ति ही हर ली थी और उसके हाथ-पाँव बांध दिये थे। वह मन ही मन उससे घृणा करने लगी।

कितनी आतुरता से वह भारी भरकम शरीर आगे की ओर बढ़ता जा रहा था! नैया को ऐसा लगा मानो वह उसका पिता नहीं, मनुष्य भी नहीं केवल एक जड़पिण्ड है; या कोई भयानक दैत्य जिसने उसकी बुद्धि को कुण्ठित कर मुक्ति के सभी रास्ते रोक दिये हैं!

वह अपने पिता के व्यवहार और आज के अपने आचरण पर जितना ही विचार करती थी उसकी परेशानी उतनी ही अधिक बढ़ती जाती थी। नहीं चाहते हुए भी क्यों वह बराबर उसके आगे आत्मसमर्पण करती चली जा रही थी? और यह विचार उसकी परेशानी को क्रोध में परिवर्तित किये दे रहा था।

अब वे गाँव में पहुँच गये थे और घरों के आगे से होकर जा रहे थे।

पड़ोसियों ने उनकी ओर एक प्रश्नसूचक दृष्टि डाली भला इस समय बाप और बेटी साथ साथ क्यों चले जा रहे हैं?

कुछ लोग गोचा से बातचीत करने के लिए आगे भी आये, लेकिन उसका चेहरा देखकर उन्होंने उसे छेड़ना उचित न समझा।

इस तरह बाप और बेटी गाव में होते हुए अपने घर पहुँचे। घर पर गोचा की छोटी बहिन सलोमी आई हुई थी।

सलोमी ओरकेती गाव में ही रहती थी और अपने भाई भाभी से मिलने कभी कभी ▮▮ जाया करती थी। इस समय ननद भौजाई पुराने घर के बरामदे में बैठी फलियां छील रही थीं। अपने पति को नैय के साथ आते देख तमिया समझ गई कि ज़रूर झगड़ा हुआ है। उसने सलोमी की ओर एक भेद भरी दृष्टि डालते हुए कहा

'बहिन जी, तुम बीचबचाव करना। मेरे बस का तो है नहीं। ऐसा लगता है कि बाप बेटी में झगड़ा हो गया है।'

हाथ का काम छोड़कर दोनों औरतें घर के मालिक की अभ्यर्थना के लिए उठ खड़ी हुईं। परिवार के दूसरे सदस्यों की तरह सलोमी अपने भाई से डरती नहीं थी।

'क्या बात है भैया? इतने नाराज़ क्यों हो? क्या हुआ?' उसने अपनी गूँजते हुए स्वर में पूछा।

गोचा ने सलोमी की बात का जवाब देना तो दूर देखा तक नहीं। चुपचाप घर की दिशा में चलता रहा। सलोमी उसकी राह से हट कर नैया की ओर मुड़ी

'तू तो अपनी बुआ को भूल ही गई चिड़िया! कभी मिलने के लिए भी नहीं आती? दिनभर करती क्या है? क्या इतना अधिक काम रहता है कि पांच मिनट की भी फुर्सत नहीं मिलती? कभी कभी तो मिल जाया कर। आ, इधर आ'

उसने नैया को छाती से लगाया और ठोड़ी उठाकर स्नेहपूर्वक चुम्बन लिया।

'तुमसे मिलने आने की इसे फुर्सत नहीं है सलोमी! दिनभर खेतों और जङ्गलों में मटरगश्ती करती फिरती है या फिर मीटिङ्गों में बैठी रहती है। लेकिन बस, आज से सबकुछ बन्द! जो इसकी अक्ल ठिकाने न ला दी तो मेरा नाम गोचा नहीं!' फिर अपनी पत्नी की ओर मुड़कर ऊँचे स्वर में बोला:

'पहले ही मेरा कहा मानकर इस पर निगाह रखती तो आज मुझे यों क्यों झींकना पड़ता! इसकी देखरेख का ज़िम्मा तेरा है। अच्छीतरह सुनले कि आगे मुझे कभी इस मामले में दखल देने की ज़रूरत न पड़े। याद है, वह आदमी अभी थोड़ी देर पहले क्या कह गया है?'

तसिया ने चुप रहने में ही कुशल समझी।

लेकिन सलोमी तो चुप नहीं रह सकती थी। उसने गोचा को आड़े हाथों लिया:

'लेकिन हम भी तो सुनें कि आखिर मामला क्या है! छोरी बेचारी थर-थर कांप रही है और उसके चेहरे का सारा नूर ही उतर गया है।'

गोचा ने अपनी बहिन की बात सुनी-अनसुनी कर दी और मकान की ओर हाथ उठाते हुए अधिकारपूर्ण स्वर में बोला:

'चल, अन्दर जा! जो क़दम आंगन से बाहर निकाला है तो बस शामत ही आई समझना!'

तसिया और सलोमी नैया का हाथ पकड़ कर उसे बरामदे में ले आईं और एक कुर्सी पर बैठा दिया। फिर दोनों उसके पास अण्डे सेती मुर्गियों की तरह खड़ी हो गईं।

बरामदे के पास ही, आँगन में एक शहतीर पड़ा था। गोचा धम्-से उसके ऊपर बैठ गया। फिर धीरे धीरे, इस तरह बोलने लगा मानो अपने आप से कह रहा हो:

'परमात्मा ने मुझे लड़का नहीं दिया लड़की को ही लड़का समझता रहा। सोचा था पढ़ लिख कर सयानी हो जायगी और अपने बाप का सुख देगी। इसलिए मदरसे में भर्ती करवा दिया। मिडिल में पहुँची तो मैं खुशी से नाच उठा। अपने बच्चों की उन्नति करते वक्त भला किस बाप को प्रसन्नता न होगी? मैंने कभी इसकी बात न टाली। इसकी हर ज़िद पूरी की। इसके सुख को अपना सुख माना, लेकिन यह मेरी न जाने किस जनम की बैरिन निकली। अभी घरता में से जगह भी नहीं पाई थी कि कहने लगी मैं तो आज से युवा कम्युनिस्ट हूँ और मुझे यह करना है और यह करना है, और यहाँ जाना है और वहाँ जाना है। मैंने एक शब्द तक न कहा। सोचा। अभी बच्ची है मन की कर लेने दो। लेकिन इसने तो उस दिन से ऐसी आँखें फेरीं कि बाप को बाप नहीं समझती है। और मेरी भी आँखें ऐसी फूटीं कि सबकुछ देख कर भी कुछ न देखा। यह तो कुल शील की सारी मर्यादा छोड़ कर किसा-किसा जैसे नीचों के साथ रिश्ते जोड़ने और मुझे पाठ पढ़ाने लगी। सामूहिक खेत शुरू होते ही मेरे पीछे पड़ी कि शरीक हो जाओ! शरीक होना ही चाहिये! इच्छा न होते हुए भी शामिल हो जाना चाहिये! हम मजे में रहेंगे! और यह औरत भी—उसने तसिया कि ओर इशारा कर कहा—ऐसी कमबख्त है कि क्या बताऊँ? दोनो माँ बेटी ने मिल कर मेरी रात की नींद और दिन का चैन हराम कर दिया। और आज इन्हीं सामूहिक खेत वालों ने मेरी क्या गति कर डाली है?

भला सुनें तो कि क्या गति की है? हम सब सामूहिक खेत में हैं। हमारी तुम्हारी हालत एक सी है। जरा सोच देखो! पुराने जमाने में क्या तुम कभी अपने बूते पर इतना अच्छा मकान बना सकते थे? यह गति जरूर की है उन्होंने तुम्हारी, और तो तुम्हारा कोई नुकसान किया नहीं है। फायदा ही हुआ है।' सतोमी के स्वर में मीठा उपालम्भ था।

गोचा अपनी जगह पर खड़ा हो गया उसने दोनो पैर जरा फैला दिये और कमर पर हाथ रख कर बोला

'वे कहते हैं कि मैं कुलक हूं और मुझे अपने पास कुछ भी रखने का हक़ नहीं है ! उन्होंने कहा कि भैंस भी तुम्हारी नहीं है और मुझसे बिना पूछे ही उसे छीन भी लिया।'

'तुम कह क्या रहे हो!' तसिया चीख पड़ी।

ऐसा कभी नहीं हो सकता गोचा! अवश्य किसी ने तुमसे मज़ाक किया है। भला, ऐसा भी कहीं हो सकता है?' सलोमी ने गोचा की बात का विरोध किया।

'और तो और मेरी सगी बेटी तक मेरे खिलाफ हो गई, और मुझे कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रखा। सब के सब वहां थे, दुनियाभर के झूठे, लबाड़िये और ढोंगी, कोनिसी और चिरके और अक्की और चमार; और इन धौरों ने उनका साथ दिया। अपने बाप का नहीं उन चमारों का साथ दिया। बड़ी मुश्किल से मैं इसे घसीट कर यहां तक ला सका। नहीं, मैं इसे कभी माफ नहीं करूँगा, हर्गिज माफ नहीं करूँगा। राज़ी से, नाराज़ी से इसे मेरे मन के मुताबिक चलना ही पड़ेगा...'

वह इतना उत्तेजित हो गया था कि अपनी जगह पर स्थिर खड़ा न रह सका और बरामदे के सामने चहलक़दमी करने लगा। फिर नैया की ओर मुड़ कर ज़ोर से चिल्लाया:

'जो आंगन से क़दम बाहर निकाला है, तो टांग ही तोड़ दूँगा; सुना !'

तसिया चाहती थी कि बीचबचाव करे अपने पति को शान्त करने के लिए कुछ बोले, लेकिन उसमें इतना आत्मविश्वास नहीं था। डरती थी कि मामला कहीं और भी उलझ न जाय और उसका पति शान्त होने के बदले और भी अधिक नाराज़ न हो उठे। गोचा बरामदे के आगे चहलक़दमी करता रहा। उसे चुप होते देख तसिया ने अवसर से लाभ उठाने की सोची। नैया के सिर को ज़ोर से दबाते हुए उसने कोमल स्वर में कहना शुरू किया:

'सुना री, तेरे पिता ने क्या कहा है ! उनकी बात गांठ बांध लीजो। और दूसरा तुझे सीख देने वाला है ही कौन ? तेरे कामरेडों की बात और है और बाप की बात और है ! सुना चिड़िया ..'

अपनी बात से परिस्थिति बिगड़ते न देख उसका आत्मविश्वास बढ़ा और उसने अधिक निडरता से आगे शुरू किया यदि वह कहते हैं कि आँगन से पाँव बाहर मत निकालना तो हर्गिज़ मत निकालना। उनका कहना कभी मत टालना। याद है यही तो मैंने भी कहा था। कहा था न? अब तू बड़ी हुई। तुझे घर में रहना चाहिये। ज़रा अपनी ओर भी ध्यान दे। दूध पीती बच्ची तो है नहीं। शादी लायक उमर हुई। जवानों की कमी नहीं है। एक से एक बढ़ कर तेरी राह में आँखें बिछाने को तैयार खड़े हैं। बेचारे तेरी इतनी इज्जत करते हैं कि सामने मुँह तक नहीं खोलते। बाद में आकर पूछते हैं कि नैया कहाँ है नैया कैसी है नैया कहाँ गई है? अरे 'बिटिया, चिराग लेकर ढूँढ़ने पर भी तुझ जैसी लड़की दस और दस बीस कोस तक नहीं मिलेगी। आज ही किसी ने तेरे लिए एक अच्छा सा उपहार भेजा है। देखेगी? ला आऊँ? बड़ी अच्छी चीज़ मालूम पड़ती है। तुझे ज़रूर पसन्द आएगी।'

तमिया दौड़ी हुई अन्दर घर में चली गई और दूसरे ही क्षण मारचिल पोरिया वाला पुलिन्दा उठा लाई।

'ऐन वक्त पर ही मुझे इसकी सुधि हो आई। सोचती हूँ कि अब सारा झगड़ा टण्टा शान्त हो जायगा।' उसने मन ही मन कहा।

एक अपरिचित तीखी गन्ध नैया के नथुनों में भर गई। वह डिबिया पर बने गल लेबल और बड़े-बड़े अक्षरों को आश्चर्यचकित होकर पढ़ने लगी।

'अरे बिटिया, मुझे तो इन चीज़ों का नाम तक नहीं मालूम, कैसी-कैसी चीज़ें बनने लगी हैं।' तमिया ने फिर कहना शुरू किया 'यह कागज़ में रुई में लिपटी हुई चीज़ साबुन मालूम पड़ती है। इससे तुम अपना हाथ मुँह धोना। और इस दवा यह रेशमी कागज़ में लिपटी हुई चीज़ क्या है? इस पर तो किसी सुन्दर औरत की तसवीर बनी है। इसको सूँघो तो सही। क्यों बढ़िया है न? और इसकी सुगन्ध? हाय राम, सुगन्ध भी क्या बढ़िया है! सच, तुम भी ज़रूर तारीफ करोगी।'

'कौन लाया है इसे?' नैया ने तड़प कर पूछा। घृणा और क्रोध से वह कांपने लगी थी।

तसिया सोच-विचार में पड़ गई: बतलाऊँ या न बतलाऊँ? उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से सलोमी की ओर देखा।

'भैया बताएँगे। लाने वाले को भैया अवश्य पसन्द करते हैं। नहीं तो लाने की उसकी हिम्मत ही क्यों हो...'

लेकिन एक ऐसी अप्रत्याशित घटना घटी कि सलोमी की बात अधूरी ही रह गई।

बूआ की बात से नैया के तनबदन में आग लग गई। उसने आव देखा न ताव; फुर्ती से खड़े होकर हाथ का एक ऐसा झपट्टा उस डिबिया पर मारा कि वह डिबिया तसिया के हाथ से छूट कर बरामदे के कोने में जा गिरी। यू. डी. कोलोन की शीशी दीवाल से टकरा कर फूट गई और साबुन लुढ़कता हुआ गोचा के पांव के पास जाकर गिरा।

'आगे से कभी इस तरह की बात की है तो...' नैया अपनी मां पर चिल्ला उठी। वह फुर्ती से घर के अन्दर चली गई। और दरवाज़ा बन्द कर लिया।

सबकुछ पलक मारते ही हो गया। तसिया बेचारी के काटो तो खून नहीं। गोचा भी चकित रह गया। वह आंखें फाड़े बारी-बारी से साबुन और बन्द दरवाज़े की ओर देखने लगा। उसके नथुने फूल गये; वह ज़ोर-ज़ोर से सांस लेने लगा और अन्त में उसके मुँह से एक भयंकर ध्वनि सुनाई दी:

'ए छोकरी, सुनती है! चल, आकर उठा यह सब!'

अन्दर से जवाब नदारद!

'ए चुड़ैल सुनती है कि नहीं; आकर उठाती है या...' गोचा फिर गरज उठा और दरवाज़े की ओर आगे बढ़ा।

'जाने भी दो भैया, ऐसी भी क्या नाराज़ी! उठा लेगी, अभी नहीं थोड़ी देर बाद ही सही!' सलोमी बीचबचाव के लिए अपनी जगह से उठी और दोनों हाथ फैलाये गोचा की राह रोक कर खड़ी हो गई।

लेकिन तसिया को कुछ न सूझा तो मरे हुए स्वर में अपने आप को ही कोसने लगी :

'हाय, हाय, सारी गलती तो मुझ निगोड़ी की ही है !'

फिर खाली डिबिया की ओर हाथ बढ़ा कर उसने यू डी. कोलोन की फूटी हुई शीशी को छुआ और तब साबुन उठाने के लिए बरामदे से नीचे आंगन में उतरी।

'खबरदार जो तूने हाथ लगाया है तो !'

वह साबुन उठाने झुकी ही थी कि उसके पति ने अधिकारपूर्ण स्वर में उसे वहीं का वहीं रोक दिया। तसिया हाथ फैलाये पत्थर की मूरत की तरह, स्तब्ध झुकी रह गई।

'भैया, तुम तो जुलम कर रहे हो। मां ने उठाया तो क्या और बेटी ने उठाया तो क्या ? अब तो ज़रा शान्त हो जाओ। ऐसा भी क्या गुस्सा...' सलोमी ने अपने भाई को शान्त करने की गरज से कहा।

'मैं और शान्त हो जाऊँ ? सलोमी, यह तू मुझसे कह रही है ? तू नहीं जानती सलोमी कि मेरे दिल पर क्या बीत रही है ? नये जमाने ने एक ही काम अच्छा किया है। आज सभी बराबर है। न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा। न पोरिया ऊँचे हैं, न सतान्दिया हेठे। पहले का जमाना तो तुझे याद ही होगा। तुरालिया पोरिया का कैसा दबदबा था ? उसके नाम से सारा गांव कांपता था। लेकिन आज सवेरे उसीका लड़का भेंट लेकर मेरे दरवाज़े पर आता और नैया के साथ अपनी शादी कर देने का आग्रह करता है। तू ही सोच भला यह कोई छोटी-मोटी बात है ? सवाल साबुन शीशी का नहीं इज्जत और मर्यादा का है। वह मेरी इज्जत बढ़ा रहा है यह चुड़ैल मेरी इज्जत को गारत करने पर तुली है ! मिजाज तो देखो इसका। अपने आप को मल्का महारानी से कम नहीं समझती ! मरी कुतिया की औलाद !'

वह सलोमी को एक ओर ढकेल दरवाज़े की ओर बढ़ने का प्रयत्न करने लगा, साथ ही चिल्लाता जाता था :

हे-अ! सुना कि नहीं हरामज़ादी, आकर उठाती है सीधे से या...'

लेकिन सलोमी भी अपने भाई की ही बहिन थी। वह इतनी आसानी से हार मान लेने वाली औरत नहीं थी।

'अच्छा भाई उठा लेगी वह! यह ऐसा कौन हिमालय काम है जिसके लिए तुम यों गला फाड़ रहे हो? अभी नहीं, थोड़ी देर बाद उठा लेगी। बच्ची है; नाहक उसे डरा रहे हो!'

'क्या तुम यह समझती हो कि मैं जो यह रातदिन एक करके नया मकान बना रहा हूँ सो मेरे अपने लिए है? साठ बरस तो दुक्खम्-सुक्खम् इस घर में काट दिये! अब मरने के दिन आये। कब्र में पाँव लटकाये बैठा हूँ। अपने लिए नया घर क्या बनाऊँगा! लेकिन मैं सोचता हूँ कि जो आदमी जनमभर अच्छे मकान में रहा उसे इस झोंपड़ी में कैसे यहाँ ठहराऊँगा? उसने मेरी मदद की है। जो कुछ उससे बन सकता है मेरे लिए करता है। और उसके लिए मुझे उसके सामने घिघियाना नहीं पड़ता, जमीन पर नाक नहीं रगड़ना पड़ती। वह मेरा सम्मान करता है और मैं उसके आगे इज्जत से सिर ऊँचा करके खड़ा हो सकता हूँ। यह क्या कोई मामूली बात है? सच है कि मैं किसान हूँ, एक समय गुलाम भी था; लेकिन मैं भी आदमी हूँ, अपनी क़ीमत पहिचानता हूँ। तुम कहोगी कि पोदिया फक्कड़ है। उसे अपनी जमीन और मकान से वंचित कर दिया गया है। हुँ ह! ये बेकार की बातें हैं। ऐसी बातों का कोई महत्व नहीं। उसे उसकी अक्ल से तो कोई वंचित नहीं कर सका है! उसका अनुभव तो कोई उससे छीन नहीं सका है! उसकी समझदारी और व्यवहार-कुशलता सब भी उसके साथ है। वह सुन्दर भी है। उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सका है। उल्टे अब तो उसकी आमदनी पहले से दुगुनी हो गई है। पढ़ा लिखा भी वह कुछ कम नहीं है। मुझ से तो अधिक ही पढ़ा है। फिर भी न जाने क्या सोच कर [illegible] उसे दुत्कार रही है! अपने हाथ से उस हरामज़ादी का गला रेत दूँगा। वह समझती क्या है? सुनती है रे पौंगा! चल, बाहर निकल।'

'सो तो सब ठीक है भैया, लेकिन तुम्हें भी यह क्या सूझी है? लड़कियों की ज़ोर जबर्दस्ती से शादी तो हमारे जमाने में भी नहीं की जा सकती थी, फिर आज तो नया ज़माना है।' सलोमी ने झिड़की भरे स्वर में कहा

सलोमी तू चुप रह। इस मामले में कुछ मत कह। लड़की सात-जनम कुँवारी रहे तो मुझे मंज़ूर है लेकिन उस शोहदे आवारे लोफर गेरा को जिसका न घर है न दर, मैं कभी अपना जँवाई नहीं बना सकता। कहां वह टुकड़खोर, कहां कुल शील वाला पोरिया? खच्चर और अरबी घोड़े की क्या तुलना? क्या तू हमारा सर्वनाश करना चाहती है?'

'भैया तुम भी कैसी बहकी बहकी बातें करते हो? यह कौन कहता है कि अपनी लड़की बिम्वा को दे दो? लेकिन जब वह किसी पोरिया को चाहती ही नहीं तो तुम करोगे क्या?'

चाहती नहीं है। उसके चाहने न चाहने की पर्वाह ही किसे है? उससे पूछता ही कौन है? मुझे अपनी वंशपरम्परा को चलाने के लिए बापदादों का नाम न डूब जाय इसलिए घरजँवाई के रूप में एक बेटा ही गोद लेना है। तुम ही सोचो, नीच जाति बिम्वा के हाथ में मैं अपना घर-द्वार और चूल्हा चौका कैसे सौंप सकता हूँ। देखें अब किसी बिम्वा का नाम तो ले। सौगन्ध से कहता हूँ कि यदि दिन हुआ तो वह रात और रात हुई तो दिन देखने के लिए ज़िन्दा नहीं बचेगी। अपने हाथ से काट कर फेंक दूँगा। क्यों री शैतान की बच्ची! सुनती है या नहीं? कह रहा हूँ कि खुद आकर इन चीज़ों को उठा।'

लेकिन न तो नैथा आई न उसकी परछाईं ही।

पता नहीं मामला कहां जाकर लगता और गोचा अपनी बेटी का भूत उतारने के लिए कौन सा ढङ्ग अख्तियार करता? लेकिन ठीक उसी समय फाटक खुला और ग्वादो की आवाज़ सुनाई दी

'चल माता, चल! यह आ गया तेरा घर!'

आवाज़ सुनते ही सब का ध्यान उस ओर आकर्षित हो गया। निकोरा फाटक में होकर अन्दर आ रही थी। ग्वादी ने बाहर से ही पंजों के बल खड़े होकर और अपनी गर्दन लम्बाकर आवाज़ दी :

'गोचा हो! सुनना ज़रा!'

रङ्ग-ढङ्ग से अहाते के अन्दर आने की ग्वादी की ज़रा भी इच्छा नहीं मालूम पड़ती थी।

भैंस को देख कर सज़ोमी ने मुक्ति की साँस ली। उसने सोचा कि निकोरा को देखते ही गोचा उसकी सार-सँभाल में लग जायगा और नैया को भूल जायगा।

'और लो, तुम तो कह रहे थे कि उन्होंने तुम्हारी भैंस ही छीन ली। जाओ, जाकर पूछो वह क्या चाहता है?' सज़ोमी ने अपने भाई को धीरे से फाटक की ओर ठेलते हुए कहा।

भैंस को देख कर तसिया के भी जी में जी आया। वह धीरे-धीरे रोती और आंचल से अपने आंसू पोंछती हुई भैंस की ओर बढ़ी।

'निकोरा आ गई! भगवान हम सब की रक्षा करें और सदा ऐसा ही दिन दिखाएँ।'

'कहो जी, क्या कहना है?' फाटक की ओर बढ़ते हुए गोचा ने रूखेपन से कहा।

'गेरा ने मुझसे कहा—जाओ, भैंस को अभी ले जाकर गोचा के घर पहुँचा आओ।' गोचा को अपनी ओर आते देख ग्वादी ने सफ़ाई देना शुरू की : और उन्होंने कहा—गोचा से कह देना की गुस्सा न करे, घबराये नहीं; और यह भी कहा है कि—गोचा के दुश्मनों को कड़ी सज़ा दी जायगी। ऐसी सज़ा कि वे जनमभर न भूलें। गोचा को नाराज़ करने वालों से जवाब तलब किया जायगा। मैंने खुद अपने कानों से सुना है। अब तुम अपनी भैंस सँभालो और मुझे छुट्टी दो। कहीं मैं ग़रीब बीच में मारा न जाऊँ। तुम अपनी कुल्हाड़ी भी वहीं छोड़ आये थे। ज़ोसिमी ने मुझसे कहा कि यह भी लेते जाओ, गोचा को दे देना।'

गोचा ने ध्यानपूर्वक और परम संतोष के साथ ग्वादी का एक एक शब्द सुना। ग्वादी भी कुछ ऐसे संभ्रम और विश्वास के साथ कह रहा था कि उसकी एक एक बात सच मालूम पड़ती थी।

अपनी प्रसन्नता और सन्तोष को किसी तरह छिपाते हुए वह भैंस के पास आया और उसकी गर्दन सहलाने लगा। फिर हाथ फिरा कर यह देखा कि उसे कहीं चोट खरोंट तो नहीं लग गई है। [illegible] ना मय करने के बाद तब कहीं वह सलोमी की ओर मुड़ा 'सलोमी' सुन लिया? क्या कहा है इसने? मुफ्त बैर ठानने वाले संत मंत में नहीं छोड़े जाएँगे! लेकिन बिना कुछ भी कहे और कुछ भी करे मैं भी यह माफ करने वाला नहीं।'

चारा देखते ही भैंस दस दिन के उपासे की तरह उस पर टूट पड़ी।

'भूखी है बेचारी! होना ही चाहिए। दिन भर में लड़ जा खींच रही थी! खा, बेटी, जी भर कर खा!' गोचा ने स्नेहपूर्वक उसकी पीठ थप थपाते हुए कहा।

तसिया भी निकोरा की सार सभाल में जुट गई। उसने भैंस की पूँछ पर के सूखे हुए कीचड़ को साफ किया और उसके थन में हाथ डाला। लेकिन दूसरे ही क्षण अपना हाथ इस तरह खींच लि। मानों अंगारों पर पड़ गया हो और चिल्ला उठी

हाय हाय! उन हत्यारों ने तो इसका सब दूध भी निचोड़ लिया है! बेचारी के थन फटे चिथड़ों की तरह लटक रहे हैं।'

तसिया को हाय-तोबा मचाते देख ग्वादी अहाते के अन्दर चला आया और हाथ कर हँसने लगा! उसके इस अटपटे व्यवहार से वहाँ खड़े सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ।

'बालो, गाय के दूध कहाँ से आता है? घास खाने से या जुताई करने से? अगर भैंस को दिन भर जुए के नीचे चलना पड़े तो वह भैंसे का काम करती है। और तुम चाहे सिर के बल ही क्यों न खड़ी हो जाओ भैंस से दूध की एक बूँद भी कभी न पा सकोगी। बोलो, सच कह रहा हूँ न?

आवाज़ सुनते ही सब का ध्यान उस ओर आकर्षित हो गया।

निकोरा फाटक में होकर अन्दर आ रही थी। ग्यादी ने बाहर से ही पंजों के बल खड़े होकर और अपनी गर्दन लम्बाकर आवाज़ दी:

'गोचा हो! सुनना ज़रा!'

रङ्ग-ढङ्ग से अहाते के अन्दर आने की ग्यादी की ज़रा भी इच्छा नहीं मालूम पड़ती थी।

भैंस को देख कर सज़ोमी ने मुक्ति की साँस ली। उसने सोचा कि निकोरा को देखते ही गोचा उसकी सार-सँभाल में लग जायगा और नैया को भूल जायगा।

'और लो, तुम तो कह रहे थे कि उन्होंने तुम्हारी भैंस ही छीन ली। जाओ, जाकर पूछो वह क्या चाहता है?' सज़ोमी ने अपने भाई को धीरे से फाटक की ओर ठेलते हुए कहा।

भैंस को देख कर तसिया के भी जी में जी आया। वह धीरे-धीरे रोती और आंचल से अपने आंसू पोंछती हुई भैंस की ओर बढ़ी।

'निकोरा आ गई! भगवान हम सब की रक्षा करें और सदा ऐसा ही दिन दिखाएँ।'

'कहो जी, क्या कहना है?' फाटक की ओर बढ़ते हुए गोचा ने रूखेपन से कहा।

'गेरा ने मुझसे कहा— जाओ, भैंस को अभी ले जाकर गोचा के घर पहुँचा आओ।' गोचा को अपनी ओर आते देख ग्यादी ने सफाई देना शुरू की: और उन्होंने कहा-गोचा से कह देना की गुस्सा न करे, घबराये नहीं; और यह भी कहा है कि—गोचा के दुश्मनों को कड़ी सजा दी जायगी। ऐसी सजा कि वे जनमभर न भूलें। गोचा को नाराज़ करने वालों से जवाब तलब किया जायगा। मैंने खुद अपने कानों से सुना है। अब तुम अपनी भैंस सँभालो और मुझे छुट्टी दो। कहीं मैं ग़रीब बीच में मारा न जाऊँ। तुम अपनी कुल्हाड़ी भी वहीं छोड़ आये थे। ज़ोसिमे ने मुझसे कहा कि यह भी लेते जाओ, गोचा को दे देना।'

गोचा ने ध्यानपूर्वक और परम संतोष के साथ ग्वादी का एक एक शब्द सुना। ग्वादी भी कुछ ऐसे सम्भ्रम और विश्वास के साथ कह रहा था कि उसकी एक एक बात सच मालूम पड़ती थी।

अपनी प्रसन्नता और सन्तोष को किसी तरह छिपाते हुए वह भैंस के पास आया और उसकी गर्दन सहलाने लगा। फिर हाथ फिरा कर यह देखा कि उसे कहीं चोट खरोंट तो नहीं लग गई है। इतना सब करने के बाद तब कहीं वह सलोमी की ओर मुड़ा: 'सलोमी, सुन लिया? क्या कहा है इसने? मुफ्त बैर ठानने वाले सेंत मेंत में नहीं छोड़े जाएँगे। लेकिन किसी कुछ भी कहे और कुछ भी करे मैं कभी उन्हें माफ करने वाला नहीं।'

चारा रखते ही भैंस दस दिन के उपासे की तरह उस पर टूट पड़ी।

'भूखी है बेचारी! होना ही चाहिए। दिन भर से लड़ा जा खींच रही थी! खा, बेटी, जी भर कर खा! गोचा ने स्नेहपूर्वक उसकी पीठ थप थपाते हुए कहा।

तसिया भी निशोरा की सार-सम्भाल में जुट गई। उसने भैंस की पूँछ पर के सूखे हुए कीचड़ को साफ किया और उसके थन में हाथ डाला। लेकिन दूसरे ही क्षण अपना हाथ इसतरह खींच लिया मानों अङ्गारों पर पड़ गया हो और चिल्ला उठी:

'हाय हाय! उन हत्यारों ने तो इसका सब दूध भी निचोड़ लिया है। बेचारी के थन फटे चिथड़ों की तरह लटक रहे हैं।'

तसिया को हाय-तोबा मचाते देख ग्वादी अहाते के अन्दर चला आया और हो हो कर हँसने लगा! उसके इस अप्रत्याशित व्यवहार से वहां खड़े सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ।

'बालो, गाय के दूध कहां से आता है? घास खाने से या जुगाली करने से? अगर भैंस को दिन भर जुए के नीचे चलना पड़े तो वह भैंसे का काम करती है। और तुम चाहे सिर के बल ही क्यों न खड़ी हो जाओ भैंस से दूध की एक बूँद भी कभी न पा सकोगी। बोलो, सच कह रहा हूँ न?'

आवाज़ सुनते ही सब का ध्यान उस ओर आकर्षित हो गया।

निकोरा फाटक में होकर अन्दर आ रही थी। ग्वादी ने बाहर से ही पंजों के बल खड़े होकर और अपनी गर्दन लम्बाकर आवाज़ दी:

'गोचा हो! सुनना ज़रा!'

रङ्ग-ढङ्ग से अहाते के अन्दर आने की ग्वादी की ज़रा भी इच्छा नहीं मालूम पड़ती थी।

भैंस को देख कर सज़ोमी ने मुक्ति की साँस ली। उसने सोचा कि निकोरा को देखते ही गोचा उसकी सार-सँभाल में लग जायगा और नैया को भूल जायगा।

'और लो, तुम तो कह रहे थे कि उन्होंने तुम्हारी भैंस ही छीन ली। जाओ, जाकर पूछो वह क्या चाहता है?' सज़ोमी ने अपने भाई को धीरे से फाटक की ओर ठेलते हुए कहा।

भैंस को देख कर तसिया के भी जी में जी आया। वह धीरे-धीरे रोती और आँचल से अपने आँसू पोंछती हुई भैंस की ओर बढ़ी।

'निकोरा आ गई! भगवान हम सब की रक्षा करें और सदा ऐसा ही दिन दिखाएँ।'

'कहो जी, क्या कहना है?' फाटक की ओर बढ़ते हुए गोचा ने रूखेपन से कहा।

'गेरा ने मुझसे कहा—जाओ, भैंस को अभी ले जाकर गोचा के घर पहुँचा आओ।' गोचा को अपनी ओर आते देख ग्वादी ने सफाई देना शुरू की: और उन्होंने कहा—गोचा से कह देना की गुस्सा न करे, घबराये नहीं; और यह भी कहा है कि—गोचा के दुश्मनों को कड़ी सजा दी जायगी। ऐसी सजा कि वे जनमभर न भूलें। गोचा को नाराज़ करने वालों से जवाब तलब किया जायगा। मैंने खुद अपने कानों से सुना है। अब तुम अपनी भैंस सँभालो और मुझे छुट्टी दो। कहीं मैं ग़रीब बीच में मारा न जाऊँ। तुम अपनी कुल्हाड़ी भी वहीं छोड़ आये थे। ज़ोसिमी ने मुझसे कहा कि यह भी लेते जाओ, गोचा को दे देना।'

गोचा ने ध्यानपूर्वक और परम सतोष के साथ ग्वादी का एक एक शब्द सुना। ग्वादी भी कुछ ऐसे सभ्रम और विश्वास के साथ कह रहा था कि उसकी एक एक बात सच मालूम पड़ती थी।

अपनी प्रसन्नता और सन्तोष को किसी तरह छिपाते हुए वह भैंस के पास आया और उसकी गर्दन सहलाने लगा। फिर हाथ फिरा कर यह देखा कि उसे कहीं चाट खँरोट तो नहीं लग गई है। इतना सब करने के बाद तब कहीं वह सलोमी की ओर मुड़ा 'सलोमी' सुन लिया? क्या कहा है इसने? मुझसे बैर ठानने वाले खेत मेंत में नहीं छोड़े आएँगे! लकिन किसी कुछ भी कहे और कुछ भा करे मैं भी कहूँ माफ करने वाला नहीं।'

चारा रखते ही भैंस दस दिन के उपासे की तरह उस पर टूट पड़ी।

'भूखा है बेचारी! होना ही चाहिए। दिन भर से लड़ जा खींच रही थी। खा बेटी, जी भर कर खा।' गोचा ने स्नेहपूर्वक उसकी पीठ थप थपाते हुए कहा।

तलिया भी निवोरा की सार सभाल में जुट गई। उसने भैंस की पूँछ पर के सूखे हुए कीचड़ को साफ किया और उसके थनों में हाथ डाला। लकिन दूसरे ही क्षण अपना हाथ इसतरह खींच लिया मानों अङ्गारों पर पड़ गया हो और चिल्ला उठी

हाय हाय! उन हत्यारों ने तो इसका सब दूध भी निचोड़ लिया है! बेचारी के थन फटे चिथड़ों की तरह लटक रहे हैं।'

तलिया को हाय-तोबा मचाते देख ग्वादी अहाते के अन्दर चला आया और हो हो कर हँसने लगा। उसके इस बेढङ्गे व्यवहार से वहां खड़े सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ।

'चलो गाय के दूध कहां से आता है? घास खाने से या जुगाई करने से? अगर भैंस को दिन भर जुए के नीचे चलना पड़े तो वह भैंसे का काम करती है। और तुम चाहे सिर के बल ही क्यों न खड़ी हो जाओ भैंस से दूध की एक बूँद भी कभी न पा सकोगी। बोलो, सच कह रहा हूँ न?

बात सवा सोलह आने ठीक थी। ग़ज़ादी की यह बात गोचा को पूरी तरह से जँच गई थ। वह अपनी मक़राली मूछों में मुस्करा दिया।

'सच है, तभी तो इस तरह चारे पर टूट पड़ी है! भूखे मर रही है बेचारी! भूखी भैंस दूध कहां से देगी?' उसने अपनी घरवाली से कहा और फिर बोला: 'मैं भी उन सालों को दिखा दूँगा कि गोचा की भैंस को हाथ लगाने का मतलब क्या होता है?'

उसने कोहनी से ठूँसा मार कर भैंस को अहाते के उस कोने की ओर हाँक दिया जहां ताज़ा हरी घास रखी थी। भैंस के साथ चलते-चलते उसने तसिया से कहा!

'जा, उस लौंडिया को बाहर बुला ला। वह भी तो देखे कि उसके कारिंदों पर उसके बाप का कितना रौब है, वह उसकी कितनी इज़्ज़त करते और उससे कितना डरते हैं! जा, जल्दी से बुला ला।'

गोचा को इस तरह बोलते देख सलोमी ने सोचा कि चलो संकट टल गया। अब नैया नैया को आरचिल पोरिया की भेंट उठाने के लिए नहीं बुला रहा है। तसिया ने भी महसूस किया कि गोचा नैया के साथ समझौता करने को तैयार है। लेकिन फिर भी वह नैया को बुलाते हिचकिचा रही थी। यह देख सलोमी ने आंखों से दरवाज़े की ओर इशारा किया: जाओ, बुला भी लाओ; संभव है कि बाप-बेटी में सुलह हो जाय।

सलोमी को अपने पक्ष में पाकर तसिया को ढाढ़स बँधी और वह नैया को बुलाने के लिए घर में आई। नैया बड़े कमरे में नहीं थी। उसके वहां होने की उम्मीद भी तसिया को नहीं थी। पिछले बरामदे की ओर उसका अपना एक छोटा सा अलग कमरा था। वह वहीं होगी। बड़े कमरे से नैया के कमरे में जाने के दरवाज़े की चिटखनी बन्द नहीं थी। तसिया ने अपनी बेटी को आवाज़ दी। उसे कोई जवाब नहीं मिला। जवाब न पाकर तसिया घबड़ा गई। दरवाज़े के पास खड़े होकर वह बड़बड़ाने लगी:

'अब नखरे मत कर! बहुत हुआ। कहना मान! बाप के आगे तेरी

ज़िद नहीं चलेगी, इतना तो तुमी जानती ही है। चल, वह बुला रहे हैं। अब उनका क्रोध भी शान्त हो गया है'

लेकिन नैया तो अपने कमरे में भी नहीं थी! तसिया की कुछ समझ में नहीं आया। कहीं वह घर छोड़ कर चल तो न दी हो? तसिया लौट कर फिर बड़े कमरे में आई। अब कहीं उसने देखा कि बरामदे की ओर का दरवाज़ा खुला पड़ा था। उसकी छाती धक् से रह गई। आशङ्का भय में परिवर्तित हो गई। दौड़ कर पिछले आँगन में आई। वहां भी कोई नहीं था। बुढ़िया ने बाग़ुड़ की ओर देखा और उसके मुँह से एक हलकी सी चीख़ निकल पड़ी। बाग़ुड़ के उस ओर गली में नैया तेज़ी से कदम बढ़ाती अपने घर से दूर बिना पीछे की ओर देखे भागी जा रही थी।

तसिया को लगा कि वह पागल हो जायगी। हाय उस लड़की को यह क्या सूझी? वह दौड़ कर बाग़ुड़ के पास आई। नैया को पुकारने की उसकी हिम्मत न हुई।

अगर कहीं उसके बाप को मालूम हो गया कि लड़की यों घर से भाग गई है तो फिर कुशल नहीं।

क्या करे? उसके पीछे दौड़े? असम्भव! वह कभी उसे पकड़ नहीं पायेगी। इतने में ही तो उसका दम भर आया था और पाँव लड़खड़ाने लगे थे।

'हाय राम क्या करूँ? उनसे जाकर क्या कहूँगी?'

वह सिर के बाल नोचने और छाती पीटने लगी।

लेकिन उधर देर हुई जा रही थी। गोशा बाहर रास्ता देख रहा था। डर था कि कहीं अन्दर न चला आये। वह घबरा उठी। समझ में नहीं आया कि क्या करे और किधर जाय? फिर बिना कुछ सोचे विचारे बड़े कमरे में लौट आई और अपने बरामदे की ओर चल दी।

देर होते देख सलोमी अन्दर चली आ रही थी। तसिया को अकेली लौटते देख उसने चकित होकर पूछा लेकिन मौजी नैया कहां है?

तसिया मुँह से कुछ न कह सकी। कहती भी क्या? कहना कुछ आसान तो था नहीं; लेकिन चुप रहना भी निरापद नहीं था। उसने निराशा से सिर हिला दिया–कह रही थी कि लड़की घर में नहीं है। लेकिन सलोमी ने उसका कुछ दूसरा ही अर्थ लगाया। वह समझी कि लड़की अपनी ज़िद पर अड़ी है और आना नहीं चाहती।

कहीं झगड़ा फिर से खड़ा न हो जाय इस डर से सलोमी भाग कर बाहर गोचा के पास आई और बोली :

'भैया, मैं जो कहती हूँ सो सुनो। अभी उसे उसकी मर्ज़ी पर छोड़ दो। *नासमझ बच्ची है। उसके साथ तुम नासमझ मत बनो।* बुरी तरह डर गई है और ऐसा लगता है कि तुम्हारे सामने आते घबराती है। अभी रहने दो। बाद में, उससे अकेले में बातें कर लेना।'

न्यादी ने सलोमी की इस बात का समर्थन किया।

'हाँ भई, गोचा, ईमान-धरम से कहता हूँ कि तुम्हारी लड़की लाखों में एक है! बड़ी सुशील और बड़ी समझदार। रुतबा भी उसका बहुत बड़ा है। तुम बड़े सुखी हो। तक़दीर वालों को ही ऐसा सुख का दिन देखना नसीब होता है। भगवान करे तुम्हारी बड़ी उमर हो और तुम झट से दोहिते का मुँह देखो। पुराने लोग कहते आये हैं कि अपने बच्चों से पोते-दोहिते ज्यादा अच्छे होते और बड़े-बूढ़ों का ज्यादा खयाल रखते हैं। भगवान वह दिन जल्दी निकट लायें। कोई लड़का टटोल रखा है या नहीं? यदि बुरा न मानो तो एक बात कहूँ। मेरा बर्देगुनिया भी अब चौदह बरस का हुआ। यदि वह नैया का हमउम्र होता तो–हाँ, मैं जानता हूँ कि बिरथा तुम्हें फूटी आँखों नहीं सुहाते और तुम उन्हें हेठा समझते हो फिर भी–दोनों की जोड़ कुछ बुरी नहीं रहती। राधा-कृष्ण की जोड़ी थी। मेरा विश्वास है कि तुम भी बर्देगुनिया को अस्वीकार न करते। मेरा लड़का भी लाखों में एक है। कोई काम ऐसा नहीं, जिसे वह न कर सके। यदि तुम कहो तो वह तुम्हारी लड़की के लिए चिड़िया का दूध भी ले आये। ही-ही-ही...'

सब कोई हँस पड़े। तमिया भी उसकी बात सुनकर मुस्कराने लगी और बोली

'बात बनाना कोई तुमसे सीखे, ग्वादी!' और किसीतरह अपनी टांगों को घसीटती हुई सलोमी के पास आ खड़ी हुई।

'अच्छा जी, आपको भी मज़ाक करने की सूझी है! शकल तो देखूँ ज़रा, इधर तो आओ!' गोवा ने ज़ोर से कहा और ग्वादी को डराने के लिए उसकी ओर जवान आदमी की तरह छलांग भरी। 'बिरवे सा के सब एक से हैं, तीन कौड़ी के, मगर आप हैं कि अपने वर्दगुनिया की तारीफों के पुल बांधते चले जा रहे हैं मानो मैं अपनी लड़की का स्वयंवर ही रचने जा रहा हूँ!'

सलोमी मन ही मन प्रसन्न हुई कि चलो, गैया अपनी हठी बेटी की बात भूल गये।

लेकिन तसिया तो जैसे सूली पर टँगी थी। वह क्या करे? नैया के घर से चले आने की बात अपने पति से कहे या न कहे?

लेकिन वह बुरी तरह घबरा गई थी और किसी निर्णय पर पहुँचना उसके लिए लगभग असम्भव ही हो गया था।

१४

घर के समीप पहुँचकर ग्वादी सुस्ताने के लिए फाटक पर ही ठिठक गया। लड़के अबतक अवश्य मदरसे से लौट आये होंगे! देखना चाहिये कि उसकी अनुपस्थिति में वे क्या करते हैं? वह टोह लेने लगा।

उसे पिछवाड़े के आँगन में से आती हुई वर्दगुनिया की आवाज़ सुनाई दी। वह चिल्ला-चिल्लाकर [illegible] जाने क्या कह रहा था। बहुत प्रयत्न करके भी ग्वादी की कुछ समझ में नहीं आया।

'वह क्यों और किस पर चिल्ला रहा है?' ग्वादी को बड़ा आश्चर्य हुआ

फिर वह दबे पांवों फाटक से आंगन में होता हुआ झोंपड़ी की ओर बढ़ा।

संध्या हो चली थी। मोरकेती गांव पर अन्धकार उतरने लगा था। वातावरण में नमी आगई थी और ठण्डी बयार बहने लगी थी।

कतार से!' बर्दगुनिया ने कड़ककर हुक्म दिया।

ग्वादी खड़ा हो गया और कान लगाकर सुनने लगा।

'कुतुनिया, अपनी जगह पर खड़े हो! जल्दी; नहीं तो एक झापड़ दूंगा। अपना हाथ नीचा करो, चिरमी! दाहिना हाथ! तुम्हारा दाहिना हाथ कौनसा है? इतना भी नहीं मालूम! अब कितुनिया को देखो। जैसा वह करे वैसा तुम भी करो...ऐसे...ऐसे! नहीं; ऐसे नहीं।' वह अपने भाइयों को झिड़कने लगा।

'देखो न, किस ठसके से सिखा रहा है!' ग्वादी ने निश्चिन्त होकर सुख की सांस ली। बर्दगुनिया के नेतृत्व में अपने बच्चों को क़वायद करते और क़दम मिलाकर चलते हुए देखना उसे अच्छा लगता था। अनुशासन का पालन करवाने में बर्दगुनिया बड़ी कड़ाई से पेश आता था और छोटा चिरिमो तक एक सधे हुए सैनिक की तरह अपने कमांडर के आदेशों का पालन कर रहा था।

ग्वादी झोंपड़ी के पास एक नाली में बैठ गया। बच्चों के खेल में विघ्न डाले बिना वह उनके खेल का मज़ा लूटना चाहता था। चारों लड़के आंगन के एक कोने में बड़ी मुस्तैदी के साथ क़वायद कर रहे थे। इस कोने में चीकू के पांच पेड़ खड़े थे। ग्वादी की समझ में नहीं आया कि झोंपड़ी के पास इतनी खुली जगह होते हुए भी बर्दगुनिया अपने भाइयों को उस कोने में पेड़ों के ठीक समीप क्यों ले गया था। लेकिन लड़के बँधे-सधे ढङ्ग से एक साथ क़वायद कर रहे थे और उन्हें देख-देखकर उसकी छाती उमग रही थी।

'होश्-यार!' बर्दगुनिया फिर चिल्लाया: 'दाएँ रुख!'

चारों लड़के आमने-सामने घूम गये।

'जैसे ..थे!' नहीं, ऐसे नहीं!' बर्दगुनिया ने ज़ोरों से डाट बतलाई। उसने अपने हाथ की छड़ी को हवा में फटकारा, फौजी ढङ्ग से चार क़दम पीछे हट आया और तनकर पहले से भी अधिक ज़ोर से चिल्लाया:

'होश्-यार! दाएँ रुख!'

इस बार चारों छोकरे मशीन की तरह एक साथ घूमे।

'बाएँ मोड़.. आगे कदम...चलो! एक दो...एक, दो...ज़रा तन कर! एक, दो...'

लड़के कदम मिलाते हुए पेड़ों के ठीक नीचे आगये।

'हॉल्ट!' जब लड़के घूम फिर कर उसी जगह आगये जहाँ से चलना शुरू किया था तो बर्दगुनिया ने उन्हें खड़े हो जाने का आदेश दिया। फिर छड़ी वाले हाथ को ऊँचा उठाकर उसने पुकारा:

'सावधान रहो!'

'सदा सावधान हैं!' लड़कों की एक आवाज़ नहीं थी। वे आगे-पीछे होगये थे।

'चिरिमी, तुम पिछड़ गये हो। बर्दगुनिया ने क्रोधित होकर कहा!' 'यह बहुत बुरा है।' और वह दुबारा चिल्लाया:

'सावधान रहो!'

'सदा सावधान हैं।'

चिरिमी इसबार भी अपने भाइयों से पिछड़ गया था, लेकिन बर्दगुनिया ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह बारी-बारी से चारों लड़कों की आँखों में आँखें डालकर उन्हें घूरने लगा। आज वह न जाने क्यों और दिनों की अपेक्षा अधिक रूखे और कड़ेपन से पेश आ रहा था। रुसादी को ऐसा लग रहा था मानों वह अपने भाइयों को डरा रहा है। आज की कसरत-कवायद रोज़ का खेल नहीं मालूम पड़ रही थी। लड़के भी

इस बात को ताड़ गये थे और पूरे मनोयोग एवं तत्परता से अपने भाई के आदेशों का पालन कर रहे थे।

वह उन चारों लड़कों के सामने खड़ा होगया और सबसे छोटे को पुकार कर कहा :

'चिरिमी, यहाँ आओ।'

'क्यों?' चिरिमी भूल गया कि वह कवायद कर रहा है और कवायद करते समय बोलने की मनाही है। बात असल में यह हुई कि बर्दगुनिया ने सीधे उसी से कहा और वह घबरा गया। लेकिन दूसरे ही क्षण उसे याद हो आया कि कवायद करते समय बोला नहीं जाता इसलिए एक हाथ से अपना मुँह बन्द करता हुआ वह अपने कमाण्डर की ओर आगे बढ़ा।

'जहाँ हो वहीं खड़े हो जाओ!' बर्दगुनिया ने उसे अधबीच में ही रुकने का आदेश दिया।

चिरिमी पाँव बजाकर एक सैनिक की तरह सीधा खड़ा होगया।

'अच्छा, देखें तुम कितने होशियार हो! एक चीकू तोड़कर तो मुझे दो। किसी भी पेड़ से तोड़ सकते हो। जाओ जल्दी!'

चिरिमी समीप के पेड़ तले जा खड़ा हुआ और अपना नन्हाँ सा चेहरा उठाकर ऊपर की ओर देखने लगा। फलों तक पहुँचना उसके बूते के बाहर था। वे काफी ऊँचे थे। वह मुँह में अंगुली डाले विचारों में खो-सा गया।

'चिरिमी नहीं तोड़ सकता।' उनमें सबसे बड़े गुतुनिया ने अपनी जगह पर खड़े-खड़े कहा। वह फलों की ओर टक लगाये देख रहा था और उसके रंग-ढङ्ग से ऐसा मालूम पड़ता था कि वह इसी घड़ी आदेश का पालन कर सकता है। चिरिमी ने जब यह सुना तो बुरा मान गया। वह सबसे छोटे पेड़ के तले पहुँचा और सबसे नीची टहनी की ओर अपना हाथ उठा दिया, लेकिन वह भी उसकी पहुँच के बाहर थी। फिर भी

उसने हार नहीं मानी और एक एक कर सभी पेड़ों का चक्कर लगाया, लेकिन उसे अपने प्रयत्न में कहीं भी सफलता नहीं मिली।

'अपनी जगह पर लौट जाओ!' बर्दगुनिया ने आदेश दिया।

रोता सिसकता और अपनी कुहनी से आँसू पोंछता चिरिमी कतार में आ खड़ा हुआ।

'कुतुनिया, अब तुम कोशिश करो!' बर्दगुनिया ने चिरमी से बड़े भाई को हुक्म दिया।

कुतुनिया भी पाचों पेड़ों के नीचे घूम आया, वह भी फलों तक नहीं पहुँच सकता था। लेकिन वह चिरिमी की तरह रोया नहीं। बहादुरी से वापिस लौट आया।

'मितुनिया, अब तुम्हारी बारी है!'

पास के दो वृक्षों पर तो उसे सफलता नहीं मिली। वह तीसरे के नीचे पहुँचा और उछलकर एक टहनी पकड़ ली। टहनी को झुकाकर अभी वह फल तोड़ने जा ही रहा था कि बर्दगुनिया ने उसे वैसा करने से रोक दिया।

'ठीक है, तुम तोड़ सकते हो। अच्छा, तुम यहाँ अलग खड़े हो जाओ!'

जब गुतुनिया की बारी आई तो पाया गया कि वह किसी भी पेड़ से आसानी के साथ फल तोड़ सकता था। लेकिन बर्दगुनिया ने उसे फल तोड़ने से मना कर दिया और उसे भी मितुनिया के पास खड़ा कर दिया। फिर उसने हुक्म दिया

'होशियार!'

जब चारों लड़के स्थिर खड़े हो गये तो बर्दगुनिया शिकारी बाज की तरह गुतुनिया और कितुनिया की ओर झपटा। उसने गुतुनिया के गले में बँधा हुआ 'यङ्ग पायोनियर' (बालचर) का रुमाल पकड़ लिया और उसे खींचते हुए धमकी भरे स्वर में पूछा:

'इस रुमाल का मतलब जानते हो कामरेड?'

'हाँ कामरेड कमाण्डर!' गुतुनिया ने तड़ाक-से जवाब दिया क्योंकि अपने मदरसे में वह युवा पायोनियर दल में तत्सम्बन्धी शिक्षा प्राप्त कर चुका था।

'जानते हो न कि पायोनियर को कभी झूठ नहीं बोलना चाहिये।'

'जी!' उसने दृढ़ता से जवाब दिया।

'तो तुम झूठ नहीं बोलोगे! अच्छा, तो अब सच-सच बतलाओ कि पके हुए चीकू किसने तोड़े? तुम्हीं न उन्हें तोड़कर खागये हो?'

सुनकर चारों भाई दङ्ग रह गये। वे मुँह बाये अपने कमाण्डर की ओर देखने लगे। गुतुनिया की तो सिट्टी ही गुम हो गई।

'पकड़ लिया है चोर को!' अपनी योजना की सफलता पर सन्तुष्ट होकर वर्दगुनिया ने सोचा और पहले से भी अधिक गुस्से में भरकर उसने पूछा :

'चीकू तुमने तोड़े थे? मंजूर करो! जल्दी!'

'नहीं! मैंने नहीं तोड़े।' गुतुनिया ने जवाब दिया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वर्दगुनिया को हो क्या गया है!

'झूठ बोलते हो!'

'नहीं।'

'लेकिन मैं कहता हूँ कि तुम झूठ बोल रहे हो!'

'नहीं।'

वर्दगुनिया ने आगबबूला होकर कहा!

'इस रुमाल को उतार डालो। तुम इसे पहिनने के काबिल नहीं हो!'

छड़ी को बगल में दबाकर उसने रुमाल दोनों हाथों से पकड़ लिया और खींचने लगा। लेकिन गुतुनिया के लिए इतना अपमान असहनीय था। 'छोड़ो!' वह अपने फेफड़ों की पूरी शक्ति लगाकर चीखा और सारा ज़ोर लगाकर खींचने लगा। दूसरे ही क्षण रुमाल वर्दगुनिया के हाथ से फिसल गया और मुक्त होते ही गुतुनिया सिर पर पांव रखकर भागा।

'ठहरो !' बर्दगुनिया चिल्लाया लेकिन वहाँ उसकी कौन सुनता था ? गुनुनिया तो यह जा, वह जा और दूसरे ही क्षण आँखों से ओझल हो गया।

अब बर्दगुनिया दूसरे अपराधी की ओर मुड़ा। किनुनिया भागने की तैयारी में ही था। यह देख उसने आगा-पीछा करना ठीक न समझा और झट से उसका कान पकड़ कर पूछा :

'तुमने चीकू को हाथ लगाया था ?'

'नहीं, भगवान की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, नहीं।'

कितनी बार मना कर चुका हूँ कि सौगन्ध मत खाया करो। सच सच बोलो ! तोड़े थे या नहीं ?'

'नहीं तोड़े।' और किनुनिया एक साथ कई सौगन्ध खा गया।

'तो किसने तोड़े ?'

'मुझे नहीं मालूम !'

'मालूम है ! बतलाओ !'

'नहीं मालूम !'

'बता दो, नहीं तो...'

ग्वादी अमीतक नाली में बैठा मजे से बच्चों की कवायद और खेल-तमाशा देख रहा था। जबतक मामला तूल नहीं पकड़ गया वह वहीं बैठा रहा। जब बर्दगुनिया ने अपने भाइयों को फल तोड़ने का आदेश दिया तो उसका उद्देश्य ग्वादी की समझ में नहीं आया। उसने यही सोचा कि वह उन्हें कूदना सिखला रहा है।

लेकिन जब बर्दगुनिया ने सीधा सवाल पूछा तो इस खेल का सारा उद्देश्य उजागर हो गया और तब कहीं ग्वादी की समझ में आया कि झोंपड़ी से दूर, चीकू के पौधों तले कवायद कराने का मतलब क्या था। अपने लड़के की इस चतुराई पर वह तो चकित ही रह गया।

'कितना चतुर है ! अभी से बड़े-बड़ों के कान काटता है। आगे चल-

कर तो न जाने क्या करेगा? इतनी होशियारी उसमें आ कहाँ से गई?' उसने अपने आप से पूछा।

लेकिन जब बर्दगुनिया ने निर्दोष ञितुनिया का एक कान पकड़ लिया और दूसरा भी पकड़ने जा ही रहा था तो ग्वादी ने सोचा कि अब कुछ न कुछ करना ही चाहिये। इस विचार के साथ वह नाली में से उठा और मकान की ओर इस तरह चला मानो कुछ जानता ही न हो और सीधा चला ही आ रहा हो।

'अरे, अरे! यह क्या कर रहे हो बेटा!' उसने बर्दगुनिया से कहा और झट से ञितुनिया को छुड़ाने के लिए आगे बढ़ा: 'कुछ तो सोचना चाहिये। तुम बड़े हो और वह छोटा है। कुछ तो दया दिखानी चाहिये। छोड़ दो उसे!'

'नहीं छोड़ूँगा। यह चोर है! पिताजी, इसने और गुतुनिया ने मिलकर चीकू चुराये हैं। दोनों मिलकर सब पके हुए चीकू डकार गये। मैंने और गियो ने आपस में होड़ बदी थी कि देखें किसके चीकू पहले पकते हैं। अब गियो बाज़ी मार ले जायगा और मुझे हार मानना पड़ेगी। यह सब इन्हीं की कारस्तानी है। मैं हर्गिज़ नहीं छोड़ूँगा। मंजूर भी नहीं कर रहे हैं। सजा मिलेगी तो याद रहेगा और कम से कम आगे तो ऐसा नहीं करेंगे।' बर्दगुनिया ने कटुतापूर्वक अपने पिता से शिकायत की।

'यह तुम मेरे ऊपर छोड़ दो; यदि उन्होंने चुराया भी हो तो अपने पिता से छिपाएँगे नहीं।' ग्वादी की यह बात सुनकर बर्दगुनिया को ञितुनिया का कान छोड़ना पड़ा।

बर्दगुनिया को धीरे से एक ओर हटाकर ग्वादी ने रोते हुए ञितुनिया को अपने समीप खींच लिया और उसके माथे पर हाथ फेरते हुए बोला:

'न रो मेरे लाल! चुप हो जा! बर्दगुनिया तो तुझे यों ही झूठ मूठ के लिए डरा रहा था।'

ञितुनिया ने अपने पिता का पुचकार[illegible] तो भी [illegible] गला फाड़ने लगा।

'दर्द होता है? अच्छा बताओ, कहां दर्द हो रहा है?' खादी ने धीरे से उसके कान को छूते हुए पूछा और फिर 'मन्तर-मन्तर छू, मेरे मितुनिया का दर्द मिट जाना' कहते हुए झुककर उसके कान पर फूँक दिया।

'अब तो नहीं होता न? मिट गया न दर्द। दद्दू ने मन्तर फूँका और दर्द छू मन्तर हुआ। क्यों है न?'

फिर वह कितुनिया के पास नीचे बैठ गया और उसकी आँखों में देखता हुआ बोला:

'देखें बेटा, ज़रा मुझ से आँखें तो मिलाओ। शाबाश! बड़ा बहादुर बेटा है। मरद भी...भी रोया नहीं करते! हां! बस, राजा बेटे ने भी रोना बन्द कर दिया। बड़ा समझदार है मेरा भैया!'

फिर उसने कुसुमिया और चिरिमो को भी अपने पास बुलाया और सभी को अपनी भुजाओं में समेट कर गम्भीर हो गया; और भौंहों में बल डालकर, आंखों को थोड़ा सिकोड़ते हुए धमकी भरे स्वर में बोला:

'पर्दमुनिया तुम सबमें बड़ा है। उसका कहना मानना चाहिये। वह तुम्हें अच्छी अच्छी बातें सिखलाता है। चोरी मत करो! झूठ मत बोलो। ये बुरे काम हैं। तुम ऐसे कुलच्छन कभी मत करना। कभी मेरे पास ऐसी शिकायत नहीं आनी चाहिये कि तुमने चोरी की है या झूठ बोला है। भूल कर भी कभी इस कुराह मत जाना। नहीं तो छोटे से रह जाओगे। कभी बड़े नहीं हो पाओगे। समझे? और यदि बड़े हो भी गये तो नाम के पीछे गाली लग जायगी। सब कोई गाली देंगे और बुरा कहेंगे। परमात्मा बुरे लोगों को कभी प्यार नहीं करता। चोरी करने और झूठ बोलने वाले को रौरव नर्क में सड़ना पड़ता है, भयङ्कर से भयङ्कर कष्ट भोगना पड़ते हैं। अच्छा, अब यह बतला दो कि तुममें से किसने चीकू चुराये है? तुम जो कहोगे मैं उसे सच मानकर विश्वास कर लूंगा। तुम झूठ नहीं बोलोगे। शायद एक-दो फल तोड़ लिये हों या हो सकता है कि एक भी न तोड़ा हो।

'नहीं बाबा, मैंने तो छुआ तक नहीं।' कितुनिया ने इतने निर्दोष भाव से यह बात कही थी कि चर्दमुनिया भी विचलित हो गया मगर फिर भी उसने अपनी बात दुहराई :

'कितुनिया, तुम्हें मंजूर कर लेना चाहिये! आखिर पता तो लग ही जायगा। तुम न कहोगे तो गुतुनिया कह देगा। कोई चोर तो आकर चुरा नहीं ले गया है।'

ग्वादी ने उसकी बात का विरोध करते हुए कहा।

'हां बेटा, इन्हें सच तो बोलना ही चाहिये। लेकिन मान लो कि सच ही इन्होंने फल नहीं तोड़े हैं और फिर भी मंजूर कर लेना क्या झूठ नहीं होगा? तुम ठहरो बेटा बीच-बीच में बोलकर बेचन मत डालो...'

एकबार और बच्चों की ओर मुड़कर उसने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा :

'अच्छा, अपने पेट तो बताओ! पेट देखते ही मुझे पता लग जायगा कि तुमने चीकू खाये हैं या नहीं?'

एकदम सभी बच्चों ने उलटकर गले तक कमीज़ ऊँचे खींच लिये और पेट आगे को कर दिये। वे पेट गले तक भरी शराब की मशकों के समान मालूम पड़ रहे थे। ग्वादी ने हर पेट को धीरे से थपथपाया।

'काश, चीकू तुम्हारे पेट में जाते तो कुछ सार्थक ही हुआ होता। ज़रूर कोई लफङ्गा उन्हें चुरा ले गया है। लेकिन हराम का माल उस कुत्ते की औलाद को कभी नहीं पचेगा।' उसने आवेगपूर्वक कहा और चिरिमी को अपने समीप खींच लिया। फिर उसके फूले हुए पेट के बीचोंबीच नाभि की जगह 'चुच्' की ध्वनि निकालते हुए ज़ोर का एक चुम्बन लिया और बोला :

'हां, मैं जानता हूँ कि तुमने फलों को हाथ भी नहीं लगाया है। इसीलिए तो मेरा दिल दुख रहा है।' ग्वादी ने बड़ी ही विह्वलता से कहा और अपने मुँह को और भी जोर से बच्चे के पेट के साथ सटा दिया। फिर वह ही-ही कर अपनी सदा की हंसी हंस पड़ा, लेकिन देखा लग रहा था मानो [illegible] सिसकियाँ ले रहा हो।

अपने पिता के इस व्यवहार से बच्चे घबरा से गये। क्षितुनिया निगाहें तिरछी कर अपने पिता के चेहरे की ओर देखने लगा। वह पता लगाना चाहता था कि दद्दू को हो क्या गया है?

ग्वादी की आंखों से आंसू बह रहे थे। लड़का क्षण भर के लिए तो किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा खड़ा रह गया। लेकिन दूसरे ही क्षण वह दौड़कर बर्द्धुनिया के पास गया और अंगुली से दिखाता हुआ बोला।

'देखा, दद्दू रो रहे हैं! तुम हमें पीट रहे थे और धमका रहे थे न इसीलिए दद्दू रोने लगे। देखो ज़रा!' क्षितुनिया का चहेरा गुलाल की तरह लाल हो गया था। वह क्रोधोन्मत्त होकर अपने भाई को फटकारने लगा।

१५

उन्हें इतनी सारी चीज़ें कहाँ और कैसे चुराने को मिल गईं? कहीं सड़क पर ही तो नहीं पड़ी थीं कि जो चाहे उठा ले जाये!

लेकिन दुनिया में दौलत की कमी नहीं है! अपार धन भरा पड़ा है!

चीजें साधारण कोटि की नहीं थीं। सब रेशमी और ऊनी बढ़िया, उच्च-कोटि के कपड़े थे। इसतरह की चीज़ें तो स्थानीय सहकारी भण्डार में कभी देखने को भी नहीं मिलती थीं। आरचिल और मैक्सिम के साथ सवेरे होटल में वह जो पथराई आंखों वाला आदमी था निश्चय से वही यह सब सामान लाया होगा। हां, मालूम तो ऐसा ही पड़ता है..

उसकी शक्ल ही पुकार-पुकार कर कह रही थी कि मैं चोर हूँ, मैं चोर हूँ, मुझसे बच कर रहना।

'ग्वादी, वह तुम निरे बछिया के तऊ निकले! अरे मूर्ख शिरोमणी, तूने भी चुराया तो बस अपने ही बगीचे से चौक चुराये...'

ज़रा इस कपड़े की ओर देखो। कोई औरत देखले तो सुध-बुध ही भूल जाय। अँगिया-सी मालूम पड़ती है। है न? पुराने जमाने में ऐसे कपड़े पहिनने का रिवाज नहीं था। घर पर ही कुछ जोड़-जाड़ कर, सी-साकर अँगिया बनाली जाती थी और उसी से काम निकाल लेते थे। इन चीज़ों का चलन तो अभी ही हुआ है; मगर मानना पड़ेगा कि विचार बुरा नहीं है। गधी भी पहिनले तो परी बन जाय। लगता है कि आधा रेशम और आधा ऊन का बना है। सारा कपड़ा एक मुट्ठी में दबालो और छोड़ दो तो फिर फूलकर बराबर! कैसी-कैसी अनोखी चीजें बनने लगी हैं!

त्यादी चटखीले रंगों वाले उस जम्पर को हाथ में उठाये आग के उजाले में उलट-पलट कर देखने लगा। उसकी सलवटें ठीक कर उसने सोचा कि पहिनकर तो देखा जाय; उसके बदन में बैठता है या नहीं? उसने पहिनकर देखा। जम्पर की आस्तीनें कुछ लम्बी थीं। आस्तीनें देखकर उसे एक नया ही विचार सूझा।

वह आग के सामने एक नीची चौकी पर बैठा था और झोला उसके समीप रखा हुआ था। यह वही झोला था जिसे सवेरे वह शहर के बाज़ार से भरकर लाया था। इस समय झोले में से कुछ चीजें बाहर निकालकर हर एक को वह अच्छी तरह उलट-पुलट कर देख रहा था। रात काफी बीत गई थी और गाँव के लोग कभी का ब्यालू कर चुके थे। उसके चूल्हे की आँच भी अब मद्धिम पड़ गई थी। और उजेला केवल कमरे के बीच तक ही पहुँच पाता था। कोनों में और दीवालों के पास निबिड़ अन्धेरा छाया हुआ था। त्यादी लड़कों की ओर इसतरह पीठ किये बैठा था कि उजेला उन पर गिरने न पाये। बच्चे एक लम्बे चौड़े पलङ्ग पर गहरी-मीठी नींद सो रहे थे। प्रकाश की एक भूली भटकी किरण भी उन पर नहीं पड़ने पा रही थी।

वह टक लगाये जम्पर को देखता रहा; उसने उसे उलट पलट कर

देखा। जम्पर उसे पसन्द आगया। किस्मत से वह था भी काफी लम्बा चौड़ा।

अच्छी तरह जी भर कर देख लेने के बाद उसने जम्पर की तह करके उसे एक ओर रख दिया। फिर छाती पर हाथ बांधकर, अङ्गारों की ओर टक लगाये न जाने किन विचारों में लीन हो गया।

वह न जाने क्या सोच और देख रहा था, लेकिन उसने जो भी सोचा हो और जिस किसी का भी ध्यान किया हो उसे इतना आनन्द आ रहा था कि उसके चेहरे पर मुस्कराहट फैलने लगी...

उसने जम्पर उठा लिया और उस हाथ पर डालकर हाथ को इस तरह फैला दिया मानो सामने कोई खड़ा है और वह आदरपूर्वक उसे भेंट दे रहा है। फिर धूर्ततापूर्वक मुस्करा कर उसने अस्फुट स्वर में कहना प्रारम्भ किया

'अपने सिर की सौगन्ध खाकर कहता हूं तुम मेरी रानी हो। मैं तुम्हारी भक्ति करता हूँ, तुम्हारी इज्जत और पूजा करता हूँ। यदि ऐसा न होता तो मैं यह कभी न करता। फालतू की बातें मत सोचो। मेरी इस छोटी सी भेंट को स्वीकार कर लो। देखो, इन्कार मत करो। इन्कार करने पर भी मैं मानूँगा नहीं। अपने मन की करके ही रहूँगा। यों ही मैं बड़ा दुखियारा हूँ। और जली कटी सुनाकर तुम मुझे काफी चोट पहुँचा चुकी हो, जरूरत से ज्यादा जलील कर चुकी हो। अब मेरा दिल अधिक न दुखाओ। तुम्हारे मुँह से दो मीठी बातें सुनकर मैं क्या कुछ नहीं कर सकता? तुम्हारी एक निगाह हो जाय तो मैं पहाड़ काट कर रास्ता बना दूं। लेकिन तुम मुझे हमेशा कुत्ते की तरह झिड़कती रहती हो। तुम्हारे मुँह से कभी दो मीठे शब्द मेरे लिए नहीं निकलते। तुम भी मुझे दूसरों की तरह कामचोर समझती हो, लेकिन क्षण भर के लिए भी तुमने यह क्यों नहीं सोचा कि चीकू की मौसम शुरू होते ही मैं अपने दिन पूरे कर लूँगा। तब एक भी नागा नहीं रहने दूंगा। तीन सौ श्रम-दिन तो

'तीसरी चीज भी मैं तुम्हारे लिए ही पसन्द करूँगा। इसबार आँखें मूँदकर जो चीज़ हाथ में आयेगी उठा लूँगा। फिर उसे बदलूँगा नहीं।'

इसबार अक्षरों की धुँधली रोशनी में एक अजीबोगरीब चीज़ ग्वादी के हाथ में दिखाई दी। उसकी रेशमी बुनावट हाथों में बहती-सी, फिसलती-सी मालूम पड़ी। वह आश्चर्यचकित होकर मुँह बाये देखता ही रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि यह क्या चीज है? जाँघिया? नहीं, जाँघिया तो नहीं है। लँगोट? नहीं लँगोट भी नहीं है, तो आखिर है क्या? शैतान ही जाने कि क्या है?

और वह खिलखिला कर हँस पड़ा।

'अब तुम्हीं बतलाओ कि यह चीज़ क्या है? और आदमी ऐसे वाहियात कपड़े को पेहन करे भी क्या? बिलकुल बेकार कपड़ा है, शैतान की दुम की तरह। ऐसा जाँघिया भी किस काम का जिससे पहिननेवाले की जाँघें तक न ढँकें?' हँसते हुए उसने कहा और 'शैतान की दुम' को अपने हाथों में उलट-पलट कर देखने लगा। फिर उसकी भौंहों में बल पड़ गये और उसने दृढ़तापूर्वक कहा:

'इसे पहिनने का नाम न लेना। यदि तुम मुझसे प्रेम करती हो तो भूल कर भी इस 'शैतान की दुम' की माँग न करना। नहीं तो मैं तुमसे प्यार करना ही छोड़ दूँगा। अभी तुमने ग्वादी का गुस्सा देखा नहीं है! कोई इज्जत आबरू वाली, भले घर की औरत कभी ऐसा कपड़ा पहिन सकती है? भला, तुम्हीं बताओ? शैतान समझे इससे! बेचारी अगतिया मेरी ही चड्डियों से अपना काम निकाल लेती थी। पहिनने पर कुछ बुरी भी नहीं लगती थी। हाँ उसके पास कपड़े का एक छोटा सा जाँघिया भी था, जो उसने अपने बचपन में स्वयं हाथों से सीया था। लेकिन यह तो जाँघिया भी नहीं है! चड्डी से छोटा ही सही लेकिन जाँघिया कुछ तो लम्बा होता है! लेकिन यह तो ज़रा भी लम्बा नहीं है। बस यही तो मुसीबत है! नहीं, मैं इसे लेने की इजाजत कभी नहीं दे सकता। हम घरबार

जुराबें भी उसे पसन्द आईं।

'लो इन्हें भी पहिनकर देखो! तुम्हारे बैठती हैं या नहीं? लम्बी तो काफी हैं, ठेठ जांघों तक पहुँचेंगी; लेकिन ज़रा तङ्ग मालूम पड़ती हैं। तुम्हारी टांगें इनमें शायद ही अँट सकें; क्योंकि तुम्हारे पांव, तुम्हारी कमर और तुम्हारे हाथ मेरे जितने ही बड़े हैं। फिर भी कोशिश कर देखने में क्या हर्ज है? यह फैलती भी हैं। देखो, फैल गईं न? लेकिन पहिनकर इत्मिनान कर लेना अच्छा। तङ्ग और छोटी चीजें खरीद कर पैसा पानी में क्यों फेंका जाय?

और उसने जुराबें जम्पर पर रख दीं। मतलब साफ था कि वह जम्पर के साथ जुराबें भी रखना चाहता है। फिर वह उन दोनों चीज़ों के साथ थैले की दूसरी चीजों का मिलान करने लगा। और उसे लगा कि उसने अभी बहुत थोड़ी चीजें ली हैं। अभी तो थैले में बहुत सी चीजें बाक़ी थीं जब कि उसके हिस्से में केवल दो ही चीज़ें आ पाई थीं।

यदि ग्वादी नीयत का खोटा होता तो वह चुपचाप जम्पर और मौजे रख लेता। झोले में इतनी चीज़ें थीं कि इन दो की कमी किसी के खयाल में भी न आती। लेकिन ऐसा करना वह हराम समझता था। ग्वादी ग़रीब है पर बेईमान नहीं। वह एक चीज़ और पसन्द करेगा और तब पोरिया के साथ सबकी क़ीमत तै कर लेगा। यही सबसे अच्छा तरीक़ा है। दो चीज़ों के लिए क्या ईमान बिगाड़े? जो आदमी तीनसौ और चार-चार सौ श्रम-दिन भरता हो उसके लिए कुछ दमड़ियों की क़ीमत ही क्या है? इसकी क़ीमत तो समन्दर में खसखस के दानों की तरह है। इस सारे सामान को इतनी सावधानी के साथ ढोकर लाने की मज़दूरी भी कुछ कम न होगी। अच्छा खासा पैसा मिलेगा। पहले मज़दूरी तै करके वह बाद में चीज़ों की क़ीमत उसमें मुजरा कर देगा।

और जब आर्थिक हालत इतनी अच्छी है तो वह एक चीज़ और भी क्यों न रख ले?

तीसरी चीज भी मैं तुम्हारे लिए ही पसन्द करूँगा। इसबार आँख मूँदकर जो चीज़ हाथ में आयेगी उठा लूँगा। फिर उसे बदलूँगा नहीं।"

इसबार झाड़ों की धुँधली रोशनी में एक अजीबोगरीब चीज़ खादी के हाथ में दिखाई दी। उसकी रेशमी बुनावट हाथों में बहती सी, फिसलती-सी मालूम पड़ी। वह आश्चर्यचकित होकर मुँह बाये देखता ही रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि यह क्या चीज है? जाँघिया? नहीं, जाँघिया तो नहीं है। लँगोट? नहीं लँगोट भी नहीं है, तो आखिर है क्या? शैतान ही जाने कि क्या है?

और वह खिलखिला कर हँस पड़ा।

'अब तुम्हीं बतलाओ कि यह चीज क्या है? और आदमी ऐसे वाहियात कपड़े को लेकर कर भी क्या? बिलकुल बेकार कपड़ा है, शैतान की दुम की तरह। ऐसा जाँघिया भी किस काम का जिससे पहिननेवाले की जाँघें तक न ढँकें?' हँसते हुए उसने कहा और 'शैतान की उस दुम' को अपने हाथों में उलट-पलट कर देखने लगा। फिर उसकी भौंहों में बल पड़ गये और उसने दृढ़तापूर्वक कहा:

'इस पहिनने का नाम न लेना। यदि तुम मुझसे प्रेम करती हो तो भूल कर भी इस 'शैतान की दुम' की माग न करना। नहीं तो मैं तुमसे प्यार करना ही छोड़ दूँगा। अभी तुमने खादी का गुस्सा देखा नहीं है! कोई इज्जत आबरू वाली, भले घर की औरत कभी ऐसा कपड़ा पहिन सकती है! भला, तुम्हीं बताओ? शैतान समझे इससे! बेचारी अगलिया मेरी ही चड्डियों से अपना काम निकाल लेती थी। पहिनने पर कुछ बुरी भी नहीं लगती थी। हाँ उसके पास कपड़े का एक छोटा सा जाँघिया भी था, जो उसने अपने बचपन में स्वयं हाथों से सीया था। लेकिन यह तो जाँघिया भी नहीं है! चड्डी से छोटा ही सही लेकिन जाँघिया कुछ तो लम्बा होता है! लेकिन यह तो ज़रा भी लम्बा नहीं है। बस यही तो मुसीबत है! नहीं, मैं इसे लेने की इजाजत कभी नहीं दे सकता। हम घरबार

वाले लोग हैं। बाल-बच्चों का खयाल भी तो रखना पड़ता है। तुम्हें इस तरह के कपड़ों में देखकर बच्चे क्या सोचेंगे? अब वे बड़े हुए। ऊँ हूँ, यह तो नहीं ही लिया जा सकता... कोई दूसरी चीज़ देखें। डरो मत, झोले में काफी चीज़ें हैं। यदि तुम चाहो तो मैं कोई दूसरी चीज़ निकाल सकता हूं। बुरा मत मानना और कहीं यह मत सोच बैठना कि मैं पैसों की बचत के लिए ऐसा कर रहा हूं। पैसों का कोई खयाल न,ीं लेकिन चीज़ तो काम की होनी चाहिये...

उसने 'शैतान की दुम' को झोले के अन्दर पटक दिया। वह उसे अपनी निगाहों के सामने भी नहीं रखना चाहता था। फिर उसने झोले को हिलाया और एक हाथ अन्दर डालकर काफी देर तक टटोलता रहा।

'जो क़िस्मत में लिखा है वह आ जाय! जो क़िस्मत में लिखा है वह आ जाय!' वह काफी देर तक बड़बड़ाता रहा और फिर फुर्ती से इस तरह हाथ झोले में से बाहर खींच निकाला मानो काँटे में फँसी मछली को खींच रहा हो। क़िस्मत में लिखे उस माल को वह आंखों के आगे लाकर देखने लगा। हठात् उसके चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई और वह चौकी पर से उछल पड़ा।

उसके हाथ में बच्चों का एक रंगीन ब्लाउज़ था। घनी बुनावट होते हुए भी वह कपड़ा चिड़िया के पैरों की तरह हलका और मुलायम था। उसके कालर से रङ्ग-बिरंगे लटकन लटक रहे थे, जो सुनहरी धागे में पिरोये मोतियों के समान मालूम पड़ते थे।

'श्श्श्श...ठहरो-ठहरो, ज़रा!' शादी ने निश्चयात्मक ढङ्ग से अपना हाथ हिलाते हुए कहा मानो किसी को चुप रहने का आदेश दे रहा हो। 'मुझे दिक़ मत करो! इस समय मेरे पास तुम्हारे लिए समय नहीं है।'

पांवों से चौकी को परे ठेलकर वह बिलकुल आग के समीप बैठ गया और आंखें गड़ा कर उस कपड़े को देखने लगा। उसकी आंखों में एक अनोखी चमक आगई। उसने ब्लाउज़ की घड़ी की और उसे अपनी जेब

के हवाले करने जा ही रहा था कि न जाने क्या सोचकर रुक गया। उसने झोंपड़ी के अन्दर चारों ओर ध्यान से एकबार देखा। वह इत्मिनान कर लेना चाहता था कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है। दूसरे ही क्षण वह तनकर इसतरह खड़ा हो गया मानो दुश्मनों से कारूँ का खजाना बचाने के लिए लड़ रहा हो!

'यह चिरमी के लिए है!' उसने उत्साहपूर्वक कहा और एकबारगी ही जम्पर और मौजे झोले पर फेंक दिये। अब उसने बच्चों की ओर, जहाँ वे सो रहे थे कदम बढ़ाया ही था कि किसी ने दूर से उसे आवाज़ दी :

'ग्वा . दी...!'

वह जहाँ का तहाँ स्थिर खड़ा हो गया और सुनने लगा। मुड़कर देखने का भी उसका साहस नहीं हुआ।

नहीं, कोई नहीं था . कहीं उसे भ्रम तो नहीं हो गया था?

लेकिन आवाज फिर सुनाई दी। उसे लगा कि कोई दरवाज़े पर खड़ा फुसफुसा रहा है

'मालूम पड़ता है कि सो गया है। जोर से दरवाज़ा खटखटाओ!'

बोलने वाले की आवाज़ ग्वादी पहिचान न पाया। उसके रोंगटे खड़े हो गये। रात में इससमय कौन हो सकता है?

तभी उसे एक परिचित स्वर सुनाई दिया और उसके जी में जी आया।

'सो गया है? और भी अच्छा, लेकिन अभी उसने मेरा सामान नहीं पहुँचाया है। ए ग्वादी! ग्वादी के बच्चे!'

आरचिल पोरिया बोल रहा था।

ग्वादी की चेतना फिर लौट आई। उसका मस्तिष्क, जो डर के कारण सुन्न हो गया था फिर तेजी से काम करने लगा। इतनी रात बीते आरचिल के आने का कारण उसकी समझ में आ गया। अब उसे बाहर की क्रोधपूर्ण आवाजों के कारण किसी तरह की घबराहट नहीं हो रही थी। दरवाजा

पीट रहे हैं! पीटने दो दरवाज़ा! चिल्लाने दो सालों को! ग्वादी इनसे निपटना अच्छी तरह जानता है। आरचिल से पेश आना उसे मालूम है।

वह दबे पाँवों झोले के पास लौट आया, फुर्ती से सारा सामान झोले में डाला और डरे हुए उनींदे स्वर में उत्तर दिया:

'कौन है? क्या काम है?'

'अबे कौन है के बच्चे! खोलता है या नहीं। ज़रा खोल तो बताऊँ कि कौन है?' आरचिल ने बाहर से गरम होकर कहा।

'अच्छा तुम हो, भैया! अभी खोलता हूँ। बस एक मिनिट में।' ग्वादी ने जँभाई लेते हुए कहा और तेज़ी से दरवाजे की ओर बढ़ा। लेकिन अधबीच में ही रुक गया। उसने जेब में पड़े बचकाने ब्लाऊज़ को हाथ से सँभाला और गहरे सोच विचार में पड़ गया। उसके मन में अन्तर-द्वन्द हो रहा था: रखूँ या न रखूँ। लेकिन समय ज्यादा नहीं था। शीघ्र ही किसी निर्णय पर पहुँचना था। उसने जेब में से ब्लाऊज़ निकाला, झोले के अन्दर डाला और तब फुर्ती से दरवाज़ा खोल दिया।

'मैंने सोचा कि ज़रा अन्धेरा हो जाय और थोड़ी रात और बीत जाय तो तुम्हारे यहाँ पहुँचा दूँ। लेकिन दिनभर का थका-माँदा था। कमर सीधी करने के विचार से ज़रा लेटा ही था कि आँख लग गई।' उसने बहाना बनाया और अन्धेरे में आँखें फाड़-फाड़कर ग्वादी के साथी की ओर देखने लगा।

'बदगुनिया सो गया है?' आरचिल ने ओठों में फुसफुसाते हुए पूछा। जब ग्वादीने 'हाँ' कहा तो वह उसे धकेलता हुआ बड़ी ही बदतमीज़ी से अन्दर आ गया। उसके साथ उसका विश्वासपात्र नौकर एगड़ी था, जो सारा मिल में ही काम करता था।

'झोला कहाँ है?' आरचिल ने पूछा और शीघ्र ही आँच के पास रखा झोला उसे दिखाई दे गया।

'यह रखा है। मैं तुम्हारे यहाँ पहुँचाने के लिए तैयार हो बैठा था कि आँख लग गई।'

अरविन्द ने आँखें निकालकर ग्वादी को इस तरह देखा मानो कच्चा ही चबा जाएगा। फिर झोले की ओर संकेत कर एण्डी को उसे उठाने का आदेश दिया और बोला

'चलो चलें!'

लेकिन ग्वादी ने उसे झोंपड़ी के दरवाज़े पर रोक लिया और दुम हिलाते कुत्ते की तरह उसकी ओर देखते और घिघियाते हुए बोला

'आप भूल तो नहीं गये? आपने वादा किया था कि...'

ग्वादी ने तिरस्कारपूर्वक मुस्कराते हुए एक अँगुली से मूँछों के छोरों को सहलाया और जेब में से एक कागज़ निकालकर बड़ी ही उपेक्षा से ग्वादी की ओर फेंक दिया।

ग्वादी को समझते देर न लगी कि वह तीन रूबल का नोट है।

नोट ग्वादी के पाँवों में जाकर गिरा लेकिन उसने उसकी ओर देखा तक नहीं। वह तो टक लगाये अरविन्द के हाथ की ओर देख रहा था कि हाथ दुबारा जेब में जाता है या नहीं? अरविन्द ग्वादी के मन की बात ताड़ गया, बोला:

'झोला घर पहुँचाने की बात थी। उठाओ इसे!'

'बहुत कम है!'

'अबे कम के बच्चे! उठाना हो तो उठा, न उठाना हो तो न उठा। मेरी ओर से भाड़ में जा। मैं इससे अधिक देने का नहीं।'

'लेकिन अपने बच्चों के लिए भी तो कुछ इनाम-इकराम देने का वादा किया था। याद है न!'

'ओहो, तू तो बड़ा ही लोभी हो गया है रे!'

'नन्हें नन्हें छोकरे हैं मालिक! मैं नन्हें-नन्हें लड़कों वाली बात कहता हूँ। बिल्कुल चार छः साल के हैं। कोई [illegible] सबसे [illegible] पड़ता है। वही देखो। पक्का पहिनकर देखो उसे दाग और मैं तुम्हारा जस मानूँगा।'

'तुझे कैसे मालूम हुआ कि अन्दर क्या है? तूने झोले में हाथ डाल-कर देखा होगा। हरामज़ादे, तुझे उसमें हाथ डालने का कहा किसने था? क्यों हाथ डाला? अब मुझे सब चीज़ों का मिलान करना पड़ेगा। जो एक भी चीज़ कम पाई गई तो जान से ही मार दूँगा। मादर...भलमन्सी इसी में है कि पैसा उठा ले।'

'मैं नहीं उठाऊँगा।'

'तू उठायेगा और तेरे फ़रिश्ते उठाएँगे।'

इतना कहकर आरचिल ने एण्ड्री को दरवाज़े से बाहर किया और तब आप भी बाहर निकलकर अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर दिया।

रवादी बड़ी देर तक पत्थर की मूरत बना खड़ा रहा। अब भी उसे अपनी निर्निमेष आँखों के आगे आरचिल की जेब दिखलाई पड़ रही थी।

फिर उसने तिरछी निगाहों से नोट की ओर देखा- और ठोकर मार दी।

'इसे भी ले जा! अपने बाप को धूप दे देना। वह नरक में बैठा अपनी औलाद के नाम पर रो रहा होगा! उल्लू मर गये औलाद छोड़ गये...'

गाली देने से उसका जी ज़रा हलका हो गया।

वह आकर अपने बिस्तरे पर बैठ गया और कमीज़ उतारने लगा। तभी उसके मन में यह ख़याल आया कि कहीं उसने ग़लती तो नहीं की है! 'भूल हो सकती है। नोट तीन रूबल से अधिक का तो नहीं है देख क्यों न लें?' इस विचार के आते ही वह प्रसन्न हो गया। उसकी आँखें चमकने लगीं। वह बिस्तर पर से उठकर नोट के पास आया। उसने झुककर नोट हाथों में उठा लिया। नहीं, वह तीन रूबल का ही था; न कम, न ज़्यादा।

उसके मन में आया कि नोट को मसलकर फेंक दे; लेकिन फेंक न सका।

'अब जबकि उठा ही लिया है तो रख ही लूँ। फेंकने से भी क्या लाभ?' और उसे ऐसा लगा मानो किसी ने कसकर एक थप्पड़ उसके मुँह पर दे मारा हो।

फिर उसे अपने झोले का खयाल आया और वह व्यग्रतापूर्वक चिल्ला उठा.

'झोला ! मेरा झोला !'

हाँ झोला, उसका अपना झोला भी चला गया था।

वह पागल हो उठा। नोट को अपनी मुट्ठी में दाबे उस मुट्ठी को हवा में हिलाता हुआ वह चिल्लाने लगा :

'तेरा सत्यानाश हो जाय तेरा, मारचिल पोरिया ! तू मेरा झोला भी ले गया ! ला, मेरा झोला वापिस दे ! कहता हूँ कि मेरा झोला लौटा दे !'

अड़ौसी पड़ौसी को अड़ा काम निकालने के लिए झोला मँगनी दकर ही वह तीन रूबल से ज्यादा कमा सकता था।

'ओ शैतान के नाती...'

उसके बिस्तरे क पास ही एक लम्बी मजबूत लाठी रखी थी। उसने लाठी उठाली और दौड़कर आँगन में आया।

१६

घर से निकलकर नैया ने सीधा जङ्गल का रास्ता लिया। वह गेरा से मिलने क लिए उतावली हो रही थी।

लेकिन समय काफी हो गया था। सूरज डूब रहा था और जङ्गल में काम करने वाली टोलियाँ अपने घरों की ओर लौटने लगी थीं। चायबागान में भी कोई नहीं था। वहाँ से भी सभी चले गये थे। नैया राह में जो भी मिलता उसीसे गेरा के बारे में पूछती, लेकिन कोई उसे गेरा का

पता न चला सका। सभी के मुँह से उसे एक-सा ही उत्तर सुनने को मिला :

'हाँ, वह यहाँ थे तो सही; लेकिन यहाँ से तो उन्हें गये काफ़ी समय हो गया है...'

लेकिन गेरा से मिलना बहुत ज़रूरी था। जैसे बने वैसे गेरा का पता लगाया जाय और उससे रूबरू बातें कर ली जायें! जबतक वह गेरा को सबकुछ सुना नहीं देती और उसकी सलाह नहीं ले लेती उसे चैन नहीं पड़ेगा। लेकिन इस समय इतनी अँधेरे हुए उसे कहाँ ढूँढ़ा जाय? यहाँ पहाड़ियों और कन्दराओं में उसे कहाँ ढूँढ़ती फिरे? फिर क्या करे? उसके घर लौट आने तक इन्तज़ार करे? नहीं, तबतक तो बहुत देर हो जायगी। वह आधी रात से पहले घर लौटने का नहीं।

तो फिर क्या करे? गाँव में लौट जाय और सामूहिक खेत समिति के दफ्तर में जाकर तलाश करे। सम्भव है कि वह वहाँ मिल जाय।

गेरा से मिलकर बात-चीत करने का जो भी नतीजा हो, वह अपने पिता की बात तो कभी मान ही नहीं सकेगी; उसका कहा करना असम्भव है, सर्वथा असम्भव।

'पिताजी ने मेरी शादी भी तै करली है; लगता तो ऐसा ही है।' क्रोध के कारण उसकी छाती फूलने लगी। ऐसा करने की उनकी हिम्मत ही कैसे हुई? क्या मैं गाय बकरी हूँ कि जिसको जी चाहा उठाकर सौंप दिया? मेरी शादी और मुझसे राय तक लेने की ज़रूरत नहीं समझी? बिलकुल समझ में नहीं आने जैसी बात है! वह समझते हैं कि अब भी वही पुराना बाबा आदम का ज़माना चला आ रहा है। लड़की के गले में रस्सी बाँधकर किसी के भी हाथ में थमा दो। उससे कुछ पूछने की ज़रूरत ही क्या है! हुँ ह्!'

आरचिल पोरिया के व्यवहार से उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। उसके माता-पिता की शह पाकर ही आरचिल का हौसला बढ़ा है। नहीं तो कभी उसकी हिम्मत हो न होती। सारी कारस्तानी पिताजी और अम्माँ की ही

है। जरूर इस मामले में उनका हाथ है। और वह यारचिल है भी एक ही शोहदा। सारे गाँव में ढूँढ़ आओ उसके जैसा कमीना कोई और नहीं मिलेगा। औरत देखी कि कुत्ते की तरह दुम हिलाता पीछे लग जाता है। यहां पिता जी का रुख देखकर तो उसे मनमाँगी मुराद मिल गई है। आप दौड़ जाकर भेंट ही ले आये' भेंट का खयाल आते ही उसका दिल घृणा, क्रोध और अपमान से भर गया। उसकी यह हिमाकत कि मुझपर डोरे डाले?

इसीतरह के भावों में डूबती उतराती वह सामूहिक खेत समिति के दफ्तर जा पहुँची। एक नये दुमजिले मकान में समिति का दफ्तर था। समिति के साथ ही नीचे की मंजिल पर एक कमरे में पुस्तकालय भी था। पुस्तकालय की व्यवस्था नैना की एक सहेली एलिको के जिम्मे थी। वह एलिको अनाथ थी। मां-बाप कोई भी नहीं सिर्फ एक भाई था। लेकिन भाई का अपना परिवार ही काफी बड़ा था। कई बाल बच्चे थे और घर इतना छोटा था कि उनमें उन्हीं का निबाह नहीं हो पाता था, फिर एलिको कहां समाती? इसलिए खेत की कार्यकारिणी समिति ने समितिभवन में ही उसके रहने की व्यवस्था कर दी थी। पुस्तकालय के पास वाला एक छोटा-सा कमरा उसे दे दिया गया और वह उसीमें रहने लगी थी। गांव वाले उसकी बड़ी इज्जत करते थे क्योंकि वह चित्र बनाने में बड़ी कुशल और असाधारण रूप से प्रतिभासम्पन्न लड़की थी। मौलिकता का तो मानो वह खजाना ही थी। उसके चित्र और पोस्टर सारे जिले में प्रदर्शित हो चुके थे।

समितिभवन के समीप पहुँचकर नैना ने जब देखा कि एलिको के कमरे में रोशनी जल रही है तो वह झट से उसी ओर को मुड़ गई।

एलिको दीवार पर टँगे हुए एक अधूरे चित्र के आगे खड़ी थी। सनारिया और मोरकनी के सामूहिक खेतों की आपसी समाजवादी होड़ की शर्तें तै करने के लिए शीघ्र ही एक सभा होने वाली थी। दोनों गावों के चुने

प्रतिनिधि मोरकेली में बैठकर प्रतियोगिता के नियम आदि निश्चित करेंगे। इसी सभा के लिए गेरा ने एलिको को यह चित्र बनाने का आदेश दिया था।

नैया की आवाज़ सुनकर एलिको अपनी सहेली से मिलने के लिए बाहर आई।

'मैंने सुना कि तुम्हारा बाप तुम्हें ज़बर्दस्ती घसीट कर घर ले गया और ताले में बन्द कर दिया। लेकिन तुम तो यहाँ खड़ी हो! बताओ, ताला तोड़कर कैसे भाग आई? झगड़े का कारण क्या था? हमारे लड़कों का बस चलता तो तुम्हारे पिता को फाड़ ही खाते। सब के सब उसपर बुरी तरह नाराज़ हो रहे थे। मैं स्वयं तुमसे मिलने के लिए आने का विचार कर ही रही थी। चलो तुम्हीं आगईं मेरा चक्कर बच गया। थोड़ी देर पहले गेरा आये थे। आज रात पार्टी की बैठक रखी गई है। मुझसे कह गये हैं कि तुम्हें बैठक की सूचना देदूँ। बैठक काफी महत्त्वपूर्ण है और तुम्हें उसमें उपस्थित रहना ही चाहिये।'

नैया के लिए यह खबर बड़ी ही महत्वपूर्ण थी। उसने एलिको से इस सम्बन्ध में और भी पूछताछ की।

एलिको बोली: 'गेरा पागल की तरह सारे गाँव में दौड़ रहे थे। सब कामरेडों को स्वयं उन्हीं ने इकट्ठा किया और बैठक की सूचना दी। पार्टी के सङ्गठनकर्त्ता ज्यार्जी को भी उन्होंने बहुत ढूँढ़ा लेकिन उनका कहीं पता नहीं चला। अबतक तो उन्हें जिलाकेन्द्र से लौट आना चाहिये था। काफी वक्त हो गया है...'

'लेकिन यह इतनी दौड़-धूप किसलिए की जा रही है? अर्जेण्टमीटिङ्ग का कारण क्या हो सकता है? तुम्हें कुछ मालूम है? गेरा ने बतलाया था?'

'गेरा ने तो कुछ नहीं कहा। लेकिन मैं युवा कम्युनिस्ट लीग के दफ्तर में गई थी। वहाँ वेमो ने बतलाया कि सनारिया गाँव वाले प्रतियोगता की शर्तें त करने के लिए किसी भी दिन आ सकते हैं और हमें उसके लिए तैयार रहना चाहिये। मेरे ख्याल में तो उसकी तैयारी पर विचार करने

के लिए ही बैठक बुलाई गई है। फिर आज की घटना पर भी तो विचार करना है। ज़ोमिमी इस बात पर जोर दे रहा है कि तुम्हारे पिता को यों ही नहीं छोड़ा जा सकता, उसपर किसी न किसी तरह अंकुश लगाना ही चाहिये।'

नैया थोड़ी देर तक चुप रही और फिर बोली·

'नहीं, मैं तो इस बैठक में शरीक नहीं हूँगी। युवा कम्युनिस्टों के प्रतिनिधि के रूप में बेसो को जाने दो।'

'क्यों शरीक नहीं होगी? भला मैं भी तो कारण सुनूँ?'

'अच्छा नहीं लगेगा, एलिको! मैं स्वयं भी अपने पिता के विरुद्ध हूँ।' वह बैठ गई।

'वह चाहता क्या है? झगड़ा कैसे शुरू हुआ? कुछ बतलाओ तो सही? मैं तो घटना स्थल पर थी नहीं।'

अब क्या बतलाऊँ, एलिको? पिताजी पर न जाने कहाँ का भूत सवार हो गया! यदि उस समय तुम उन्हें देखती तो पता चलता। कितने अफ़सोस की बात है कि तुम उस समय वहाँ नहीं थीं! मैं स्वयं भी देर में पहुँची। झगड़ा खतम हो ही रहा था। मुझे वहाँ देखते ही पिताजी मुझ पर बरसने लगे .. 'चल, घर चल! खबरदार जो फिर कभी यहाँ आई है। टाँग ही तोड़ डालूँगा।'... साथियों ने तुम्हें यह तो बतला ही दिया होगा। मेरे वहाँ पहुँचने से पहले जो कुछ हुआ उसके सम्बन्ध में तो मैं स्वयं भी कुछ नहीं जानती। अभीतक पता ही नहीं चला। किसी से भेंट भी तो नहीं हो पाई। पिताजी को तो तुम जानती ही हो! गुस्सा होने पर वह किसी के बाप की नहीं सुनते। और फिर गेरा ने मुझ से कहा कि जैसे बने वैसे अपने पिता को यहाँ से ले जाओ।' ऐसी हालत में उनको समझा-बुझाकर घर ले जाना कोई आसान काम तो था नहीं? समझ में नहीं आया कि कैसे क्या करूँ! मेरी तो अक्ल ही गुम हो गई ..'

वह क्षणभर के लिए चुप हो गई फिर मुस्कराते हुए एकदम कह उठी :

'और घर पहुँचकर मैंने पाया कि उन्होंने मेरी शादी ठीक कर दी है।'

एलिको आँखें फाड़े अपनी सहेली की ओर देखती रह गई। अचरज भरे स्वर में उसने पूछा:

'क्या कहा? शादी ठीक कर दी?'

'सुनती चलो एलिको! क्या तुम बतला सकती हो कि मेरी शादी किस के साथ ठीक हुई है?'

एलिको नैया और गेरा के प्रेम की बात जानती थी। इसलिए गेरा का नाम ही उसके ध्यान में आया। दूसरे किसी का नाम तो वह सोच भी नहीं सकती थी।

लेकिन नैया ने सिर हिलाकर इन्कार कर दिया।

'मुझसे पहेली मत बुझाओ। तुम्हीं अपने मुँह से बतला दो!' एलिको ने कहा।

तब नैया ने बाप-बेटी के घर पहुँचने पर जो घटना घटी थी वह सारी की सारी विस्तारपूर्वक कह सुनाई।

जब उसने आरचिल पोरिया द्वारा भेजी गई भेंट और उस डिबिया का वर्णन किया तो एलिको चिहुँक पड़ी। उसके ओठों पर की मुस्कराहट गायब हो गई और वह डरी हुई-सी अपनी सहेली की ओर टक लगाये देखती रह गई। लेकिन दूसरे ही क्षण अपनी विह्वलता को नैया से छिपाने के लिए उसने उसका हाथ पकड़ कर जल्दी-जल्दी कहा :

'कहती चलो, नैया, कहती चलो! रुको मत। बड़ा ही मज़ा आ रहा है!'

वह अपनी कुर्सी खिसका कर और-समीप आ गई तथा मन लगाकर सुनने लगी।

लेकिन जब नैया ने यह बतलाया कि उसने किसतरह हाथ का झपट्टा मारकर डिबिया को धरती पर उड़ा दिया तो एलिको अपनी जगह पर उछल

पड़ी। वह सहसा उत्तेजित हो गई और आदमी की तरह टेबल पर मुक्के बजाते हुए चिल्ला पड़ी.

'शाबाश नैया, शाबाश! ये चीजें थीं ही इस काबिल! तुमने अच्छा सबक सिखाया।'

एलिको निखरे हुए रङ्ग की, सुन्दर और स्वस्थ किशोरी थी। उसका शरीर गँठीला, भरा हुआ और सुडौल था। वह बड़ी ही ही चपल और फुर्तीली थी। चुप बैठना तो जानती ही न थी। मशाल की लौ की तरह मालुम पड़ती थी। उसकी सुन्दर, भावपूर्ण आँखों में एक ऐसी चमक थी कि आसमान के तारों के साथ उनकी तुलना करने को जी चाहता था। उसके खुशनुमा, प्रसन्न चेहरे पर एक मधुर मुस्कान फैल गई थी और वह चेहरा और भी अधिक आकर्षक हो गया था।

अपनी सहेली से प्रोत्साहन के दो शब्द पाकर नैया दूने उत्साह के साथ आगे का अंश सुनाने जा ही रही थी कि उसका ध्यान एलिको की ओर गया। उसे यों उत्तेजित पाकर वह विस्मित हो उठी और बोली:

'क्यों री, तुझे हो क्या गया है? इतनी उत्तेजित क्यों हो उठी है? मुझे अपनी बात तो पूरी कर लेने दे।'

लेकिन एलिको ने नैया की कहानी अन्त तक सुनी नहीं। वह अपनी कुर्सी की पीठ पर झुक गई और 'हा हा' कर हँसने लगी। वह ज़ोर ज़ोर से कहकहे लगा रही थी। उसकी हँसी थमती ही नहीं थी। गले की नसें फूल आई थीं और छातियां ज़ोर ज़ोर से उछलने लगी थीं। ऐसा लग रहा था कि किसी भी क्षण उसके ब्लाउज़ के बटन टूट जाएँगे। अपनी सहेली के इस व्यवहार का, एलिको की आकस्मिक हँसी का कोई कारण नैया की समझ में नहीं आया।

'इसे हो क्या गया है?' वह मन ही मन सोचती हुई चुप लगा गई, मुँह से कुछ न बोली।

लेकिन एलिको की हँसी रुकने का नाम न लेती थी। हँसते-हँसते उसके पेट में बल पड़ गये; वह कुर्सी पर से उछल कर खड़ी हो गई और दोनों हाथों से अपना पेट पकड़ लिया।

'ओह, हँसी रुकती ही...हो-हो हो...ठहरो...यो...हो-हो-हो!' उसने हँसी को रोकने और बोलने का प्रयत्न करते हुए कहा, लेकिन उसे सफलता न मिली। किसी तरह एक टूटा-फूटा वाक्य मुँह से निकाल पाई।

काफी हँस लेने के बाद तब कहीं जाकर उसकी हँसी थमी। उसने अपनी कमर सीधी की और उसकी सुन्दर आबदार आँखों से मोती जैसे, बड़े-बड़े आँसू ढलक गये।

'लेकिन तुम्हें हो क्या गया है? यह इतना सारा नाटक क्यों कर डाला?' नैया ने चिढ़े हुए स्वर में पूछा। एलिको को यों हँसते देख वह मन ही मन कुढ़ गई थी।

'नाटक! हाँ नाटक ही है। बड़ा अच्छा शब्द चुना है तुमने!' एलिको ने जवाब दिया। एक हाथ को घुमाते हुए उसने हवा में बड़ा सा गोला बनाया। फिर प्रकृतिस्थ होने के लिए दो-चार गहरी साँसें लीं और तब अपने स्वाभाविक स्वर में बोली:

'अभी मिनट भर में तुम्हारी समझ में आ जायगा।'

फिर वह बिजली की तरह तड़प कर उठी और फुर्ती से कोने में रखी मेज़ के पास जा पहुँची। मेज़ पर किताबों के ऊपर भूरे रङ्ग की कागज़ की एक पेटी रखी थी। उसने झपटकर उस पेटी को उठा लिया और उसी तड़ित् वेग से नैया के पास लौट आई।

पेटी के ढक्कन पर एक औरत की तस्वीर बनी थी। औरत के बाल बिखरे हुए थे। एलिको ने ढक्कन खोला। एक कोने में चाकलेट आदि कुछ थोड़ी सी मिठाई रखी थी। मिठाई निश्चय ही अधिक रही होगी लेकिन अधिकांश खाई जा चुकी थी। दूसरे कोने में मुड़ा हुआ एक कागज़ रखा था।

एलिको ने कागज़ उठा लिया और उसकी घड़ी खोली।

'लेकिन क्या तुम्हारे वाली पेटी में भी ऐसा ही एक कागज़ नहीं निकला?' उसने कागज़ को हिलाते हुए पूछा और एक बार फिर हँस पड़ी। 'होगा तो ज़रूर, लेकिन तुमने ध्यान से देखा ही कब? यह कागज़ कोई ऐसा वैसा मामूली कागज़ का टुकड़ा नहीं है! पढ़ोगी तो आप ही मालूम हो जायगा। लो, पढ़ो!' उसने कागज नैया के हाथ में थमा दिया और बोली:

'क्या बेहूदा तमाशा है, यह भी!'

अब वह हँस नहीं रही थी। पहले की एलिको में और इस एलिको में जमीन आसमान का अन्तर हो गया था। वह एकदम गम्भीर हो गई और निर्निमेष दृष्टि से पत्र पढ़ती हुई नैया के चेहरे के भावों का अध्ययन करने लगी।

उस कागज पर एक तस्वीर बनी थी। चटकीले रङ्ग में गुलाब के फूलों का एक गुच्छा चित्रित किया गया था। चित्र के नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में एलिको का नाम लिखा हुआ था। उसके बाद एक कविता शुरू होती थी।

कविता का हर पद रङ्ग बिरङ्गी चौखटों में लिखा गया था। हर पद के नीचे विभिन्न आकृतियों के और रङ्ग बिरङ्गे हृदय बने थे। हर एक हृदय में उसीके आकार प्रकार का तीर भिदा हुआ था और हर दिल के घाव में से लाल लाल खून बह रहा था।

नैया अपने ओठों से शब्दों की आकृति बनाती हुई धीमे स्वर में कविता पढ़ने लगी

'सोशलिस्ट बनने को हूँ मैं तैयार,
यदि पा जाऊँ तेरा प्यार,
जो तू कहे वही बनूँ, दिलदार!
साक्षी रवि, शशि, तारे, नभ विस्तार:
कहता हूँ कभी न विश्वास घात करूँगा।'

* * *

रखा पिता ने मोरचिल नाम,
पोरिया उसी कुटुम्ब का नाम,
सुन्दर मोरकेती मेरा ग्राम,
सुनलो ऐ सुखद मौ शाम :
सर्व हारा मैं सखा, नित काम करूँगा !

*　　　*　　　*

बँधे प्रणय में नीड़ बसाएँ,
सात सन्तति का कार्यक्रम उठाएँ,
मुश्किल नहीं कुछ पूरा कर जाएँ,
धरती पर लीक नयी चलाएँ
यह श्रम तेरी संगति में निशिवासर खूब करूँगा !

*　　　*　　　*

मुझसे अब न प्रतीक्षा होगी,
कल, हां कल निश्चित उत्तर दोगी,
मेरे पथ में फूल कि काँटे क्या बोम्रोगी ?
हृदय-भेंट यह स्वीकार करोगी ?
ठुकराना मत, नहीं तो हलाहल पान करूँगा !

एलिको गौर से अपनी सहेली को देखती रही। वह इस तुकबन्दी को जबानी सुना सकती थी। जब नैया ने काग़ज़ पर से अपनी आँखें उठाकर उसकी ओर देखा तो वह व्यग्रतापूर्वक बोल उठी :

'है न शोहदा, नम्बर एक का! क्यों ?'

नैया ने काग़ज़ को इस तरह मेज़ पर फेंक दिया जैसे कोई रेंगते हुए गन्दे कीड़े को हाथ पर चढ़ जाने के बाद झटक कर फेंक देता है। उसकी भौंहों में बल पड़ गये; क्रोध के मारे तन-बदन में आग लग गई और उसने आँखें सिकोड़कर एलिको से पूछा :

'लेकिन इसमें हँसने की ऐसी क्या बात थी, एलिज़ो ?'

एलिज़ो एकदम गम्भीर हो गई :

'वह मुझसे कहता है–एक तुम्हीं हो जिसे मैं प्यार करता हूँ। सारी दुनिया में मेरा और कोई नहीं है। तुम मेरे दिल की रानी हो। तुम पर मेरा तन-मन निछावर है। मुझसे शादी कर लो। इस धरती पर मेरा जैसा अभागा और कोई न होगा। अपने दुःख और दुर्भाग्य की बात तुम्हें कैसे बतलाऊँ ? मुझसे मेरा सर्वस्व छीन लिया गया है; आज मैं पथ का भिखारी हूँ। कोई मुझे प्रेम करने वाला नहीं, दो मीठी बातें कहकर मेरे धधकते दिल को शान्त करने वाला नहीं। केवल तुम्हारी ही आशा पर टिका हूँ। तुम मुझे निराश मत करना। आशा है कि तुम मुझे ठुकराओगी नहीं। मेरा प्रेम स्वीकार करोगी और मुझे अपना बना लोगी। जब से मैं यहाँ रहने आई हूँ वह इसी तरह कसमें खा-खा कर मुझ पर अपना प्रेम प्रकट कर रहा है। रोज़ रात में आकर दरवाजा खटखटाता है; मेरे दर पर आकर नाक रगड़ता है। हँस इसलिए रही थी कि मैंने इस नाटक को सही मान लिया था' बतलाओ मुझ-सी मूर्ख लड़की और कौन होगी ? तुम्हारे मुँह से यह सुनकर कि वह तुम्हारे लिए भेंट लाया था मेरे दिल पर छुरियाँ चलने लगीं, मुझे यह सोचकर ईर्ष्या हुई कि नैया को दी जाने वाली भेंट मेरी मिठाई से ज्यादा कीमती होगी। इससे अधिक वाहियात बात और क्या होगी, नैना ? कभी-कभी मैं निराले में बैठकर सोचा करती थी : नैया और मेरा की जोड़ी है तो मैं भी अकेली नहीं हूँ; कोई है जो मुझे भी प्यार करता है। मैं अपनी शादी के सुखद सपनों में लीन हो जाया करती थी। लेकिन आज राज खुल गया कि वह केवल मुझे धोखा देना चाहता था, केवल अपनी वासना की पूर्ति करना चाहता था। लेकिन मैं उसकी एक एक बात को सच मान रही थी। औरतों के सम्बन्ध में 'लम्बी चोटी अक्ल छोटी' वाली बात बिलकुल झूठ तो नहीं है। मैं युवा कम्युनिस्ट होते हुए भी उसके दम दिलासे में आ गई। यदि आज तुमने मुझे न बतला दिया

होता तो मेरा तो सर्वनाश ही हो जाता। वह धूर्त मुझे कहीं का न रखता। अवश्य ही विश्वासघात करता। देखा न, कैसा शोहदा निकला? ऐसी-ऐसी तो वह मुझे अनेकों चिट्ठियाँ लिख चुका है। रोज एक न एक चिट्ठी तो आती ही है। कभी तुकबन्दियाँ, कभी कथा और कभी कथा! रात में चोर की तरह आकर चौखट के नीचे ऐसे-ऐसी कविताएँ खिसका जाता है। मेरी शान में शायरी बघारता है...लेकिन अब आने दो उसे! मुँह में कालिख पोत दूँगी। झाड़ मारकर निकाल दूँगी। मूछों का एक-एक बाल नोच लूँगी। शोहदा, कमीना! लफङ्गा, बेईमान!'

उसके सिर से पांव तक आग लग गई थी। उसने झपट कर मिठाई का वह पैकेट हाथ में उठा लिया और उसे हवा में इस तरह मारने लगी मानो आरचिल पोरिया सामने खड़ा है और वह उसीके मुँह पर मार रही हो। उसके नथुने फूल गये थे और गुलाबी ओठ घृणा से काले पड़कर सिकुड़ गये थे।

'तो वह तुम्हें भी इसी तरह धोखा दे रहा था न? उसने नैया से इस तरह कहा मानो आरचिल की मरम्मत करने के लिए उसे भी आमन्त्रित कर रही हो।

नैया ने अपनी भौंहें चढ़ाकर सिर हिलाते हुए कहा:

'नहीं उसने मुझे तो धोखा नहीं दिया, लेकिन पिताजी को वह ज़रूर धोखा दे रहा था।'

और उसे ऐसा लगा मानो किसीने उसके बदन से लोहे की तप्त शलाका छू दी हो। ज्योंही उसने यह कहा कि पोरिया पिताजी को धोखा दे रहा था कि उसे अपनी कठिनाई का हल मिल गया! मिल गया, सारे रहस्य का भेद मिल गया! जिस हल के लिए वह तब से परेशान थी, जो समस्या घुन की तरह उसकी छाती को कुरेद रही थी उसका हल अनायास ही मिल गया था। उस हल को पाकर वह विस्मित भी हुई और प्रसन्न भी।

'एलिको यह आदमी छँटा बदमाश है! नम्बर एक का शोहदा और

गुण्डा ! और यह बात सिर्फ हमारे मामले में ही लागू नहीं होती है। समझ गई न ? सुना, मैं क्या कह रही हूँ ?' उसने ऊँची आवाज़ में कहा।

'सिर्फ हमारे मामले में ही लागू नहीं होती है से तुम्हारा क्या मतलब है ? साफ साफ खोलकर कहो। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया।' एलिको ने अपनी अनभिज्ञता प्रदर्शित की।

जब मैंने तुमसे यह कहा कि वह मेरे पिताजी को धोखा दे रहा है तो जैसे मेरी आँखें खुल गईं। निश्चय ही उस पोरिया ने पिताजी के कान भर दिये हैं और उन्हें औंधा सीधा न जाने क्या समझा दिया है ! यही कारण है कि इन दिनों वे एक निर्बुद्धि की तरह व्यवहार करने लग हैं। उनका यह व्यवहार उस शोहदे की कुसंगति का ही परिणाम है। मुझे तो इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। सच मानो, आखिल बुरा हो नहीं भयानक आदमी है और यह बात मेरे मन में जम गई है।'

नैया के इस सन्देह ने एलिको भयविह्वल कर दिया।

'नहीं, नैया, यह केवल तुम्हारा भ्रम है। वह इतना बुरा नहीं हो सकता और न इस हद तक जा ही सकता है।' उसने अपनी सहेली को विश्वास दिलाते हुए कहा।

लेकिन नैया ने जैसे एलिको की बात सुनी ही नहीं। मन में सन्देह का बीजारोपण होते ही वह उत्तेजित हो उठी थी। उसने फुर्ती से उस पत्र को मेज़ पर से उठा लिया जिसे थोड़ी देर पहले अत्यन्त घृणा के साथ फेंक चुकी थी। इसबार उसने पहले पूरे पत्र को जल्दी से पढ़ा और फिर हर लकीर और हर शब्द को रुक-रुक कर ध्यान से देखा। अन्त में वह बोली

'एलिको ज़रा इस पत्र को फिर ध्यान से पढ़ो ! इसका एक एक शब्द हमारी खिल्ली उड़ा रहा है। आश्चर्य है कि यह बात तुम्हारे ध्यान में कैसे नहीं आई ? बतलाओ, इस पंक्ति का क्या मतलब है 'जो तू कहे वही बनूँ दिलदार !' यह कहना क्या चाहता है ? और यह 'सात बच्चों वाला

कार्यक्रम' कितना अपमानजनक है ? इसतरह उसने हमारे सभी कामों को–हमारी सारी योजनाओं और कार्यक्रमों की मट्टी उड़ाई है ! सुनो, वह कहता है: धरती पर लीक नयी चलाएँगे......' । अब सारी बात मेरी समझ में आगई है, एलिको ! वह समाज का दुश्मन है। मैं यह तुकबन्दी गेरा को दिखलाऊँगी ।'

उसने कागज़ को मोड़ा और वह उसे अपनी जेब में रखने जा ही रही थी। यह देख एलिको के रोंगटे खड़े हो गये। उसे नैया की यह योजना ज़रा भी अच्छी न लगी ! वह नहीं चाहती थी कि यह मामला दूसरों तक पहुँचे। 'अगर यह बात उजागर हो गई तो सभी मेरे नामपर थू थू करने लगेंगे और जिन्दगी मुसीबत हो जायगी !' वह जितना ही अधिक सोचती थी उसका डर भी उतना ही अधिक बढ़ता जाता था।

उसने डरते डरते अपनी सहेली से पूछा :

'क्या तुम जानती नहीं, नैया, कि यह तो केवल मज़ाक है ? इस ज़रा-सी बात को इतना तूल देना कहाँतक उचित होगा ?'

उसने चाहा कि हाथ बढ़ाकर कागज़ नैया के हाथ में से वापिस ले ले; लेकिन अपनी इस इच्छा को कार्यरूप में परिणत करने का उसका साहस न हुआ।

'तुम भी कैसी बात करती हो एलिको ! ऐसे मामलों में भी कहीं किसी के साथ मज़ाक होता है ? सुना है तुमने कभी ? हमें जानना चाहिये, कामरेड एलिको, कि समाज का दोस्त कौन है और दुश्मन कौन है, और दुश्मनों के साथ हमें किसतरह का व्यवहार करना चाहिये ?' नैया ने तमक-कर जवाब दिया और उस चिट्ठी को अपनी जेब में रख लिया।

'मैं नहीं चाहती नैया, कि मेरी यह बात दूसरों को भी मालूम हो जाय। बात उजागर होते ही बाहरी आदमी तरह-तरह की बातें करने लगेंगे और जीना दूभर कर देंगे।'

उसने मुक्तकंठ से अपने मन का सन्देह प्रकट कर दिया था; लेकिन यह स्वीकारोक्ति भी नैया को विचलित न कर सकी। उसने एलिको के

प्रति जरा भी सहानुभूति न दिखलाई। नैया पर एलिको की इस बात का दूसरा ही असर हुआ उसने सोचा कि इसतरह एलिको आरचिल को बचाने का प्रयत्न कर रही है।

'मेरा कोई बाहरी आदमी नहीं है एलिको! उससे कहने का तुमने यह मतलब कैसे लगा लिया कि 'दूसरों को भी मालूम हो जायगा।' क्या यह कोई गैर है? जरा से मामले को तुम बन की बात तुम कहती हो... लेकिन यह क्यों भूली जा रही हो कि अब यह मामला केवल तुम्हारा व्यक्तिगत मामला नहीं रह गया है। सवाल समाज की सुरक्षा का है। हम सभी को जागरूक रहना चाहिये और निर्ममतापूर्वक अपने शत्रुओं का दमन करना चाहिये।' नैया की वाणी और आंखों की दृष्टि चिल्ला चिल्ला कर कह रही थी कि उसे एलिको का यह व्यवहार ज़रा भी पसन्द नहीं है और वह इसका तिलमात्र भी समर्थन नहीं करती है।

मेरे कहने का मतलब तुम्हारी समझ में नहीं आया। तुमने उसका दूसरा ही अर्थ लगा लिया है. अब तुम्हें कैसे समझऊँ? देखो, बात यह है कि, नहीं, तुम विश्वास मानो कि...'

लेकिन एलिको की हालत पानी में डूब रहे मनुष्य जैसी हो गई थी, जो सांस लेना चाहता है लेकिन ले नहीं पाता। एलिको भी नैया को अपने मन की बात कहना चाहती थी लेकिन कह नहीं पा रही थी। वह ऐसे शब्दों का प्रयोग करना चहती थी जो नैया के मन में उसके प्रति विश्वास पैदा कर सकें, नैया की भ्रान्तियों और सन्देहों को निर्मूल कर सकें, ऐसे शब्द जो वजनदार हों, निश्चयात्मक हों। लेकिन ऐसे शब्द बहुत प्रयत्न करने के बाद भी उसे खोजे नहीं मिल रहे थे। उसकी हालत सांप छछूंदर की-सी हो गई थी। अपने आपको ऐसी विषम स्थिति में पाकर उसकी आंखों में आंसू भर आये और वह अपने दुर्भाग्य पर मन मसोस कर रह गई। उसने फिर एकबार अपनी पूरी शक्ति लगाई, जिसतरह डूबने वाला हाथों से पानी को दबाकर ऊपर आता है, और किसीतरह अपने आप पर काबू पाकर सधा स्वर में कहने लगी :

'तुम विश्वास मानो कि...' उसका आत्मविश्वास लौट आया और वह सिलसिले से कहने लगी : 'मेरा उस ओहदे के साथ राई-रत्ती भर भी सम्बन्ध नहीं है। मुझे उससे कुछ लेना-देना नहीं। जिसतरह हमारे देश और अन्य पूँजीवादी देशों में कोई समानता नहीं है ठीक उसीतरह मुझमें और उसमें भी कोई समानता, कोई लगाव...

यद्यपि उसके कहने का ढङ्ग पिटापिटाया और महज़ किताबी था; लेकिन उन शब्दों में और उसकी वाणी में अन्तर की सचाई और ईमानदारी छलक रही थी, जिसे सुनकर नेया का दिल भी पिघल गया और उसने जल्दी से कहा :

तू भी कैसी बात करती है एलिको ? भला यह भी कुछ कहने की बात है ! क्या मैं इसे नहीं जानती ?'

इतना सब होते हुए भी मारचिन के उस पत्र को सामूहिक खेत समिति के अध्यक्ष को बतलाने के अपने निर्णय पर वह अटल रही। उस निर्णय में किसीतरह का परिवर्तन नहीं हुआ।

१७

व्यालू करने का वक्त हो गया था। तसिया और गोचा अँगीठी के आगे बैठे थे। चूल्हे पर लटकी हुई हाँडी में मक्का का दलिया सीझ रहा था। हाँडी में से एक चाटू (लकड़ी का चम्मच) बाहर निकला हुआ दिखलाई पड़ रहा था। दलिया पककर तैयार हो गया था। बस, अब तो परोसने की ही देर थी।

तसिया एक नीची चौकी पर, कुहनियाँ घुटनों पर टिकाये और माथे को दोनों हाथों के बीच में थामे मुहर्रमी सूरत बनाये बैठी थी। वह निर्निमेष दृष्टि से चूल्हे के अन्दर जलती हुई आग को देख रही थी। गोचा

चूल्हे की दूसरी ओर, ऊँचे पीठ वाली एक पुरानी कुर्सी पर, एक पाँव को दूसरे पाँव पर चढ़ाये बैठा था वह ऊबा हुआ मालूम पड़ता था और दाँत कुरेदने के लिए चाकू से एक लकड़ी को छील-छील कर पैना कर रहा था।

न तो दोनों एक दूसरे की ओर देख रहे थे न आपस में कुछ बोलते ही थे। ऐसा लगता था कि आपस में दोनों झगड़ पड़े हैं और एक दूसरे से रूठे हुए बैठे हैं।

घर में बिल्कुल सन्नाटा था। इतना सन्नाटा कि दलिया के उबलने और खद् खद् करने की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी। सच पूछो तो आज दलिया के उबलने की आवाज़ भी कुछ डरी-डरी-सी निकल रही थी। उसमें वह रोज़ की तेज़ी और जोश नहीं था। 'खद् खद्, घुद् घुद् शूँ: खद्-खद्, घुद् घुद् शूँ' की धीमी-धीमी आवाज़ आ रही थी। यह शूँ शूँ उस खद्-खद् की धीमी आवाज़ में तेज़ सीटी की तरह मालूम पड़ती थी। पेंदे से उठने वाली भाप उबलती हुई दलिया के बीच में होती हुई ऊपर की सतह पर खद् खद् करने वाले बुलबुलों में उछलती-कूदती फूट निकलती थी और सतह पर छोटे-छोटे गड्ढे-से पड़ जाते थे। जब बुलबुला फूटता तो ऐसा लगता था मानो मच्छर भिनभिना रहा हो। दलिया की सतह पर ऐसे कई बुलबुले थे और हर बुलबुला अपने विशेष ढङ्ग और खास अन्दाज़ से सीटी बजाता हुआ गाता था, हरएक का सुर अलग अलग और निराला था। ऐसा मालूम पड़ता था मानो झाड़ी में साज़ बाज़ लिये सङ्गीत के उस्तादों का दङ्गल ही हो रहा हो।

इस शूँ-शूँ को सुनकर तसिया को मशक के बाजे की कर्कश घर-घराहट का ख़याल हो जाता था। मानो दूर पर, कहीं सुदूर पर मशक का बाजा बज रहा हो। बुलबुलों का यह गीत [illegible] समय आश्चर्यजनक ढङ्ग से उसकी मनोदशा के साथ मेल खा रहा था। इस सङ्गीत के स्वर में वह अपनी छाती पर के अपार बोझ और दुश्चिन्ताओं को कम होता हुआ कर रही थी।

उसकी दुश्चिन्ताओं का कोई पार नहीं था। वह उनके नीचे दबी, और कुचली जा रही थी। अभीतक उसने अपने पति को नैया के घर से भाग जाने का हाल नहीं सुनाया था। वह उससे इस सत्य को छिपाये चली आ रही थी। लेकिन अब ऐसा वक्त आ गया था जब कि इस वास्तविकता को गोचा से अधिक देर तक छुपाना सम्भव नहीं था। अब उसे बतलाना ही होगा। देर-सवेर गोचा ब्यालू करने बैठेगा; यदि वह स्वयं न देगी तो गोचा अपने मुँह से मांगकर खाने बैठेगा और उस समय उसे अपनी बेटी की याद आये बगैर नहीं रहेगी और वह हुकुम देगा कि नैया को भी खाने के लिए बुलाओ! उस समय वह क्या जवाब देगी? और यही विचार तसिया को अन्दर ही अन्दर कुरेद कर खाये जा रहा था: जब गोचा कहेगा कि नैया को भी बुलाओ तो हाय, वह उसे क्या जवाब देगी?

अभीतक तो वह सङ्कटपूर्ण घड़ी आई नहीं थी। तसिया कान लगाये दलिया की खद्-बद्-हूँ को सुन रही थी। इससे उसका दुःख थोड़ा हलका हो गया था; और वह आंखें मूँदे, ओठों को कसकर भींचे हुए दलिया के सङ्गीत की ताल पर अपने शरीर को धीरे-धीरे हिला रही थी, मानो मदारी की पूँगी पर नाग फन उठाये डोल रहा हो।

लेकिन प्रतीक्षा करते-करते गोचा ऊब गया था। अब उसने जल्दी मचाना शुरू किया। वह दलिया की एक-सी 'खद्-बद्-हूँ' पर क्रोधित हो उठा। कबतक 'खद्-बद्' करता रहेगा!

'कहीं जलकर नीचे पेंदी में न लग जाय! घोंट दे अब इसे!' उसने चिढ़े हुए स्वर में कहा। वह बुरीतरह खीझ उठा था।

तसिया काँप उठी, मानो अचानक गहरी नींद में से जाग पड़ी हो। उसने घबराकर अपने चारों ओर देखा। उसपर उसका सदा का दैन्य और हताश भाव हावी हो गया। उसने किसीतरह अनिच्छापूर्वक अपना हाथ चूल्हे की ओर बढ़ाया। अँगीठी में से एक जलती हुई लकड़ी खींच ली और उसमें ऊपर लटकी हुई दलिया की भांडी को ज़ोर का हूँसा मारकर

हिला दिया। वह इस समय अपने आपे में नहीं थी और उसे ऐसा लग रहा था मानो यह सारा काम उससे कोई बाहरी शक्ति ज़बर्दस्ती करवा रही हो, क्योंकि अपने अन्दर तो वह काम करने की शक्ति और इच्छा का ज़रा-सा भी अनुभव नहीं कर रही थी। फिर उसने अपने आगे बढ़े हुए हाथों को इसतरह पीछे खींचा मानो वह सीसे की तरह भारी हों और लकड़ी को वापिस चूल्हे में झोंक दिया। लकड़ी झोंकते समय उसने ऐसा दर्शाया कि यदि उसका बस चले तो वह अपने हाथ भी उस जलती हुई आग में झोंक दे।

इतना काम निपटाकर वह फिर निर्जीव सी अपनी चौकी पर बैठ गई। गोचा ध्यानपूर्वक अपनी घरवाली के व्यवहार को देखने लगा। उसके ध्यान में यह बात आ गई थी कि आज की तसिया रोज़ की तसिया नहीं है। दोनों में ज़मीन आसमान का अन्तर था। लेकिन अपनी पत्नी के व्यवहार की इस अस्वाभाविकता का कोई कारण उसकी समझ में नहीं आया। अपने विस्मय को प्रकट करने के लिए उसने अपनी भौंहों को ऊँचा चढ़ा लिया और टक लगाकर तसिया को देखने लगा। वह इस बात का पता लगाना चाहता था कि घरवाली का यह व्यवहार आकस्मिक है या वह जान-बूझकर ऐसा कर रही है।

नहीं, आकस्मिक तो नहीं मालूम पड़ता था उसमें ज़रा भी स्वाभाविकता नहीं थी। अवश्य ही वह जान बूझकर ऐसा कर रही थी। फिर भी उसके चेहरे पर कुछ ऐसी दीनता और घबराहट थी कि गोचा ने कुछ कहना उचित नहीं समझा। वह अपने चुप ही बना रहा।

'शायद थक गई है और सोना चाहती है!' उसने मन ही मन सोचा। परन्तु फिर भी उसने अपनी प्रश्नसूचक दृष्टि उसके चेहरे पर से नहीं हटाई। जब उसे विश्वास हो गया कि कोई खास बात नहीं है, सिर्फ औरतों के चोचले हैं, तब कहीं उसकी उठी हुई भौंहें यथास्थान आईं और वह फिर अपने काम में—लकड़ी को पैना करने में व्यस्त हो गया।



थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद उसने पूछा :

'यह सब तो ठीक है, पर तू खाना क्यों नहीं परोस रही है ? घण्टा-भर हो गया चूल्हे के आगे बैठे-बैठे। और कितना इन्तज़ार करायेगी ? ऐसा लगता है मानो कहीं से मेहमान आने वाले हों और तू चूल्हे पर खाना चढ़ाये उनका रास्ता देख रही हो।'

'मेहमान ? कैसे मेहमान ? ऐसी-ऐसी बातों के सिवा तुम्हें सूझेगा भी क्या ?' उसने रोषपूर्वक उत्तर दिया और बन्दरिया की तरह रूठकर बैठ गई। यह खुली चुनौती थी।

उसे अपनी ओर पीठ मोड़ते देख सोचा के कपाल में बल पड़ गये। वह उसकी ओर गहरे सन्देह के भाव से देखता हुआ सोचने लगा :

'आज इसे हो क्या गया है ? बिलकुल बारूद के ढेर की तरह भरी बैठी है ! झगड़ा करेगी या क्या ?'

लेकिन तसिमा बिलकुल चुपचाप बैठी रही। मुँह से एक शब्द तक न निकाला। मानो पत्थर की मूरत हो।

और तब उसे याद आया कि आज सरेशाम से—तसिया का व्यवहार ऐसा ही अजीबोगरीब है। वह अपने आपे में नहीं मालूम पड़ती। लड़ाई के समय और बाद में भी वह उससे कन्नी काटती रही है। अपनी ओर से कुछ कहने का मौक़ा ही उसने नहीं आने दिया है। लेकिन अब कहीं चलकर उसके खयाल में आया कि तसिया के इस व्यवहार के पीछे कोई बहुत सङ्गीन कारण छिपा हुआ है।

ऐसा मालूम होता है कि यह रूठना और तमकना लड़की की शादी के सवाल को लेकर है। शादी के बारे में घरवाली के कुछ दूसरे ही इरादे मालूम पड़ते हैं ! ऐसा लगता है कि सलोमों की बात उसे भी जँच गई है और मिश्का उसके मन को भा गया है।'

इस विचार के आते ही उसकी स्वाभाविक व्यङ्गपूर्ण, कटु मुस्कान उसके ओठों पर खेल गई और झबराली मूछों के नीचे छिपे हुए ओठ

चिन्तित हो गये। यह सन्देह उसे अन्दर ही अन्दर खाने लगा। अपनी स्वाभाविक क्रूरता के वशीभूत होकर वह तसिया से इस बात का जवाब माँगने जा ही रहा था कि फिर कुछ सोचकर चुप रह गया। मानलो कि उसका सन्देह सच निकला? मानलो कि उसकी अपनी पत्नी भी विरोधियों के साथ जा मिली? तब क्या होगा? घर की यह फूट कुछ हँसी मज़ाक तो होगी नहीं!

उसने अपना सारा गुस्सा निकाला हाथ की लकड़ी पर। चाकू से वह उसे इतने ज़ोर से छीलने लगा कि लकड़ी टूट ही गई। फिर उसने अपनी करवट बदली। पाँवों को ऊपर नीचे किया। पहले एक पाँव को दूसरे पाँव पर और फिर दूसरे पाँव को पहले पाँव पर रखकर आराम से कुर्सी की पीठ के साथ टिककर बैठ गया। मन की भड़ास [illegible] बाहर निकालना तो ज़रूरी था न?

घर में फिर एकबार सन्नाटा छा गया। नहीं, तसिया का यह व्यवहार नैया की शादी को लेकर नहीं हो सकता। हो ही नहीं सकता! सन्देह का भूत उसके मन से विदा हुआ और वह दूसरे [illegible] से विचार करने लगा।

'आखिर तो माँ का दिल है। मुझे नैया पर [illegible], झपटते और नाराज़ होते देख उसका दुःखी होना [illegible] है।' इस विचार के आते ही तसिया के प्रति उसके [illegible] अपार [illegible] हुई और वह दयाभाव से उसकी ओर देखने लगा।

'मगर मेहमानों का इन्तज़ार नहीं [illegible] किया जाय? कबतक भूखा मारोगी, [illegible]। तो यह काम भी निपटे।' उसने [illegible] जा सकता था उतना कोमल और [illegible]।

तसिया उठी। [illegible] चुपचाप [illegible]

उसने अपने माथे का रुमाल ठीक किया; पोशाक को बराबर करते हुए कपड़ों की सिलवटें तोड़ीं और आस्तीनों को कोहनी तक ऊपर चढ़ा लिया। फिर अपने पति की ओर देखे बिना चूल्हे के पास लौट आई। चाटू को भांडी में से बाहर खींच निकाला और उसे भांडी को आग पर थामने वाली जँजीर की एक कड़ी में खोंस दिया। फिर दोनों हाथों में घोंटा थाम दलिया को मथने के लिए तैयार हो गई। आज हमेशा की तरह बर्तन को जन्जीर से नीचे उतार कर दलिया को घोटने, एकरस करने का उसका कोई विचार नहीं था। वह उसे जन्जीर से ही लटकाये रख घोटना चाहती थी। लेकिन उसे अपने इस काम में सफलता नहीं मिली। वह ध्यान चूक गई। घोटा बर्तन से टकराता हुआ सीधा अँगीठी में आ रहा। तसिया इसके लिए तैयार नहीं थी। उसका भी सन्तुलन बिगड़ गया और वह घोंटे के साथ अँगीठी पर गिरते-गिरते बची। यदि घोंटे पर रुक न गई होती तो जल ही मरती।

गोवा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह उछलकर खड़ा हो गया और चिल्लाया: 'आज तुझे हो क्या गया है?'

'मुझे क्या हो गया है? हुआ यह कि मुझसे नहीं बनता। मैं नहीं कर सकती। नहीं कर सकती!' उसने छह महीने के रोगी की तरह क्षीण और निराश स्वर में कहा, और हाथ के घोंटे को अँगीठी के अन्दर दे मारा। फिर कटे हुए पेड़ की तरह चौकी पर पड़ गई और उसी स्वर में बोली: 'मैं नहीं कर सकती; बस, हुआ यह है और कुछ नहीं!'

गोवा को न अपने कानों पर विश्वास हुआ; न अपनी आंखों पर। दिग्मूढ़ की तरह वह सोचने लगा कि मैं यह क्या सुन रहा हूँ और क्या देख रहा हूँ? तसिया के धीरज का बांध टूट गया था और उसकी आंखों से आंसुओं का सोता बड़ी-बड़ी धाराओं के रूप में उसके गालों पर होता हुआ बहने लगा था।

'अरी अभागिन, तो मुँह से कहती क्यों नहीं है? मैं भी तो जानूँ कि

तुझे हो क्या गया है? यदि तबियत खराब हो, थक गई हो या ऐसी ही कोई और बात हो तो बिना कहे कैसे मालूम पड़ेगा? तुझसे नहीं बनता तो रहने दे! छिटिया को बुला ले! वह कर डालेगी।' गोचा ने उसे झिड़कते हुए कहा; लेकिन उसके स्वर में नाराज़ी नहीं स्नेह और चिन्ता का पुट था। वह दहकते हुए अङ्गारों के समीप पड़े घोटे को उठाने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन दूसरे ही क्षण रुक गया। उसे बड़ा असमञ्जस हो रहा था: उठाऊँ या नहीं! अन्त में उसने नहीं उठाना ही ठीक समझा। या तो उसने यह सोचा होगा कि जहन्नुम में जाये घोटा या फिर यह सोचा होगा कि घोटा उठाना उसकी शान के खिलाफ है आदमी चूल्हे चौके के काम के लिए नहीं बने हैं।

फिर उसने बाजू के दरवाज़े की ओर, जिधर नैरा का कमरा था, मुड़कर आवाज़ दी:

'क्यों री सुनती है? कुछ ख़याल भी है? ब्यालू का समय हो गया, चल इधर आ!'

अपनी बात का कोई उत्तर न पाकर वह दरवाजे की ओर लपका और धक्का देकर दोनो पल्ले धड़ाम-से खोल दिये। कमरे के अन्दर एक छोटा-सा लैम्प जल रहा था, लेकिन नैरा का वहां पता नहीं था।

कि हठात् उसने अपने पीछे तसिया का स्वर सुना:

'नहीं वह यहां नहीं है! अच्छा हुआ कि मैंने तुम्हें बतला ही दिया! अब और तुम क्या चाहते हो!' उसका स्वर बिलकुल ही अस्वाभाविक हो उठा था।

यह बिनबादल की गाज जैसे सीधे गोचा के सिर पर गिरी और वह सज्ञाशून्य-सा रह गया। किसीतरह अपने पांवों को घसीटते हुए वह अँगीठी के पास लौट आया। तसिया अपना एक हाथ फैलाये, तोते की तरह गर्दन एक ओर को झुकाये अपने पति की ओर घूर घूर कर देख रही थी। उसकी वह दृष्टि निर्ममतापूर्वक उसे पुकार पुकारकर कह रही थी:

'अब भोगो अपनी करनी का फल! यही नतीजा होता है अपने हाथों अपने ही पांव पर कुल्हाड़ा मारने का। तुम इस सत्य को दुनिया वालों की आंखों से छिपाकर रख नहीं सकते। सारा गांव जान जायगा। तुम कहीं मुंह दिखाने काबिल भी नहीं रहे। जैसा बोओगे, वैसा ही तो काटोगे!...'

'लड़की गई कहां है?' उसने गरज कर पूछा।

लेकिन इसबार वह डरी नहीं, अविचलित स्वर में बोली:

'तो क्या करती, बैठी रहती? बैठी-बैठी चुपचाप तुम्हारी मार खा लेती? तुम तो उससमय बड़े बाहादुर बन गये थे! वह चली गई है। वह यहां नहीं है। राम जाने कहां गई है? मेरी तो घिग्घी बँध गई थी, पांव कांपने लगे थे, तुमसे कहने की हिम्मत नहीं हो रही थी, मारे डर के मरी जा रही थी, तुमसे डर लग रहा था, उसके लिए आशङ्का हो रही थी... मैं क्या जानूं वह कहां गई है, कुछ मुझसे कहकर तो गई नहीं है? तब से बैठी उसका रास्ता देख रही हूं। ज़रा-सा खटका होते ही चौंक उठती हूं: वह आई, अभी दरवाज़ा खुलेगा और वह सदा की तरह घर के अन्दर चली आयेगी। रह-रहकर फाटक की ओर देखती हूं, रह रहकर बाग़ की ओर देखती हूं, जहांतक निगाह जाती है गली में और सड़क पर देखती हूं, लेकिन उसका कहीं पता नहीं। काले कोसों तक पता नहीं। यही कारण था कि मैंने भोजन नहीं परोसा। लेकिन उसका रास्ता देखने से कोई लाभ नहीं, अब वह शायद ही आये, हमें शायद ही उसका मुंह देखना नसीब हो...यदि चौधरी आड़े न आजाता तो मैं आग में गिर जाती। गिर जाती तो अच्छा ही होता। क्यों न गिर गई? जल-भुनकर मर जाती तो इस कष्ट्रास से तो मुक्ति मिलती। रोज-रोज की चिंता किल-किल से तो मेरी छुट्टी हो जाती।'

वह अपना सिर धुनती हुई रुआंसे और शिकायत भरे स्वर में कह रही थी।

'वहां गई कहां है?' गोचा ने ज़ोर देकर पूछा।

लेकिन उसने जैसे सुना ही नहीं, वह अपनी ही धुन में कहती चली गई :

'मैंने सोचा कि अभी तो यह अपनी बहिन की मौजूदगी के कारण शरमा गये हैं, मारने की हिम्मत नहीं हो रही है। लेकिन घर में जब हम मां बेटी अकेली रह जाएँगी तो ज़रूर मारेंगे। जवान लड़की क्या करती? चुप बैठकर मार खा लेती? भागकर अपनी जान न बचाती तो क्या करती? वह कुछ जञ्जीरों से जकड़ी हुई तो थी नहीं।'

और तसिया एकदम मुर्गी की तरह अकड़कर खड़ी हो गई। अपना सीना तानकर और हाथ से धमकाते और गोचा के स्वर की हूबहू नकल उतारते हुए उसने तीखे स्वर में कहा

'ए छोकड़ी! बाहर आती है या नहीं? जल्दी आ, नहीं तो मार ही डालूँगा, काटकर फेंक दूँगा समझती क्या है?

फिर अपने दोनों हाथों को कमर पर रख वह गोचा की ओर मुड़ी और उसपर बरस पड़ी :

'आये थे बड़े बाणासुर बनकर! अब रोओ माथे पर हाथ धरकर। तुम्हीं न चिल्लाये थे उसपर? तुम्हीं ने उसका गला रेतने की धमकी दी थी न? मैंने तो नहीं। क्या गाव वालों ने सुना ही न होगा? आवाज भी तो बड़ी धीमी थी तुम्हारी! सारे गांव को सिरपर उठा लिया था। क्या ग्रादी अनायास ही आ गया था? वह जरूर तुम्हारी गरजना सुनकर आया था। शुरू से आख़ीर तक दुबका सुनता रहा होगा। उसे लोगों के गृहकलह में बड़ा मजा आता है। अब सारे गांव में एक की दस लगाता फिरेगा। हाथ भर की तो लम्बी जबान है उसकी! इसी शरम के मारे तो छोरी घर से भाग गई। हाय मेरे राम! क्या करूँ? मुझे तो कुछ सूझ ही नहीं पड़ता। मन में तरह-तरह की अशुभ बातें उठ रही हैं! कहीं कुएँ-बावड़ी में तो नहीं जा गिरी? गले में फांसी लगाकर तो नहीं टँग

गई ? औरत पर पड़ने वाली शरम की मार को भला तुम क्या जानो ? या इससे भी कुछ बुरा उसने कर डाला हो ! सदा के लिए हमारे मुँह में कालिख पोतकर किसी के साथ निकल गई हो, या यहीं हमारी छाती पर मूँग दलने के लिये किसी के घर में बैठ गई हो ! पता नहीं उसने क्या किया ? कुछ भी असम्भव नहीं। अब वह हमारे घर लौटकर कभी नहीं आयेगी। कुछ दूध पीती बच्ची तो थी नहीं; अपने खुद मुख्तार थी...'

गोचा को अपनी लड़की के भागने की बात सुनकर इतना आश्चर्य नहीं हुआ था जितना कि तसिया के इस उग्ररूप को देखकर हुआ। एक ही घर में एक ही छत के नीचे दोनों पति-पत्नी बरसों से साथ रहते आये थे। पति को डांटना तो क्या उसकेसामने पलटकर जवाब देना भी तसिया ने नहीं सीखा था। वह उम्र भर एक विनम्र और आज्ञाकारिणी पत्नी के रूप में, पति के फर्मा-बरदार गुलाम के रूप में ही रहती आई थी; इसलिए आज उसका यह विकराल चण्डीरूप एक सर्वथा नयी, अनहोनी और समझ में न आसकने वाली बात थी...

वह विस्मय-विमुग्ध-सा उसकी ओर देखता रहा। तसिया की हर झिड़की और कटु-उक्ति पर वह मन ही मन कह उठता था : 'आज इसे हो क्या गया है ? और यह कह क्या रही है ?'

तसिया के यह शब्द सुनकर कि 'वह किसी के साथ भाग गई है या यहीं किसी के घर में बैठ गई है' उसे ऐसा लगा मानो किसी ने ज़ोर से बल्लम उसकी छाती में दे मारा हो। वह तिलमिला उठा।

इस औरत के दिमाग़ में इसतरह का विचार ही क्यों आया ? नैया के किसी के घर में बैठ जाने की बात इसे सूझी तो सूझी ही क्यों कर ? मन में ऐसी बात उपजने का कोई न कोई कारण तो होना ही चाहिये !

नैया के बारे में वह दूसरी बातें भी तो सोच सकती थी। क्या वह यह नहीं सोच सकती थी कि नैया किसी बैठक में शरीक होने गई है और देर में लौटेगी ? यह कोई नयी बात नहीं है। ऐसा तो अकसर, लगभग

हमेशा ही होता रहता है और वह पहर रात बिताकर ही घर लौटती है। ऐसी। सहज सम्भव बात तो समझ में आ सकती है लेकिन यह किसी के साथ भागने और किसी के घर में बैठ जाने की बात कहाँ से उसके दिमाग में आगई ?

'अवश्य ही कोई ऐसी बात है, जिसे यह मुझसे छिपा रही है। जानते हुए भी मुझे नहीं बतलाना चाहती, या हो सकता है कि बतलाने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही हो। चाहे जो हो, नैया के बारे में ऐसी ही कोई बात यह जानती जरूर है। यदि जानती न होती तो काहे को यों आँसू ढारती और यों बावली-सी हो जाती ?' गोचा ने मन ही मन सोचा।

उसके मन में सन्देह जड़ जमाकर बैठ गया।

मन ही मन उसने आज दिनभर की घटनाओं की पुनरावृत्ति की ओर उसका सन्देह पक्का होता गया। नैया के हर कदम से, हर काम से, उसके चलने बोलने और हिलने-डुलने तक से इस बात का पूर्वाभास मिलता था।

वह एक एक कर नैया के आज के सभी कामों को, जो इच्छत उसने अपने बाप के विरुद्ध किये थे, अँगुलियों पर गिनने लगा, सामूहिक खेती के सदस्यों के साथ वाले झगड़े में नैया ने भिगा का पक्ष लिया था और उससे पास खड़ी थी, जब उसने घर चलने के लिये कहा तो नया ने इन्कार कर दिया, पिता के पास तक न आई, आर्चिल पोरिया की लायी हुई भेंट को अपने माता पिता के सिर पर दे मारा, बार-बार बुलाने और डराने धमकाने पर भी वह बाहर न निकली और आदेश दिये जाने पर भी उसने जमीन पर पड़ी हुई भेंट को नहीं उठाया...

'उसकी हिम्मत और हठ तो देखो ..!' बाहर आकर भेंट उठा ले जाने का हुक्म दिये जाने पर भी उसे अनसुनी करने का नैया ने जो अक्षम्य अपराध किया था उसकी बात सोचकर गोचा कड़ुवाहट से भर गया।

उसे उसी समय नैया के झोंटे पकड़कर उसकी अक्ल ठिकाने

देना चाहिये थी; लेकिन उसने तो ऐसा व्यवहार किया मानो किसी ने मन्तर ही फूँक दिया हो। सबकुछ घोलकर पी गया और एकतरह से उसे माफ भी कर दिया था लेकिन वहां तो कुछ और ही गुल खिल रहे थे। वह तो पहले से ही सबकुछ तै करके आई होगी!

इसमें सारा दोष उस शेखचिल्ली के बच्चे स्वादी का है। न वह उस समय भैंस लेकर आता न गोवा का ध्यान बंटता। उसे नैया का दिमाग़ ठीक करने का वक्त ही नहीं मिला। लातों के देव कभी बातों से माने हैं? जब नैया ने यह देखा कि पिताजी बकझक कर चुप हो गये हैं, उसे अपने किये की कोई सज़ा नहीं मिली है, तो वह और भी शेर होगई और हाथ से निकल गई। और अब देखो, उसने कैसी मुसीबत में जान फँसा दी है?

ज़रूर वह बिरवा के ही घर गई हो! इसमें असम्भव कुछ नहीं है। यह है उसके उपकारों का बदला! उस कृतघ्न छोंडिया ने न अपने बाप का खयाल किया न परिवार के नाम का। कुल में कलङ्क का टीका लगा ही दिया...

उसे अब इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं रह गया था। यह आशङ्का तो उसके मन में भी शुरू से ही विद्यमान थी परन्तु वह उसे मुँह पर लाते डरता था। लेकिन जब तसिया ने मुँह खोलकर मन का सन्देह प्रकट कर दिया तो गोवा का सन्देह भी विश्वास में परिवर्तित हो गया। मन में सन्देह होते हुए भी वह जो उसे स्वीकार नहीं कर रहा था सो सिर्फ इसलिए कि उसे अब भी अपनी लड़की की आज्ञाकारिता में विश्वास था। उसने अपने मन के किसी कोने में यह आशा पाल रखी थी कि नैया अपने बाप की बात टालने का साहस न कर सकेगी...

लेकिन अब उसका यह आत्मविश्वास डिग गया था।

'मानलो कि सच ही वह किसी के घर में जा बैठी हो! तब, हाय तब मैं क्या करूँगा?'

उसने इस बात के हर पहलू पर बड़ी बारीकी से विचार किया और अन्त में इस निर्णय पर पहुँचा कि उसके लिए सिर्फ एक ही रास्ता खुला है और वह यह कि अपने दुर्भाग्य के आगे सिर नँवाकर बैठ रहे।

जैसे उसपर गाज ही गिर पड़ी हो! क्या? वह, गोवा तकदीर के आगे सिर नँवाकर बैठ रहे? मिट्टी के माधो की तरह रसोईघर में खड़ा उचित अनुचित की व्याख्या करता रहे? उसे हो क्या गया है? वह सोच क्या रहा है? क्यों नहीं वह सारे गाँव को सिर पर उठा लेता? क्यों नहीं वह अपनी दुराचारी लौंडिया को ढूंढ़ निकालता? और क्यों नहीं जहां हो वहां से वह उसके झोंटे पकड़कर अपने घर घसीट लाता? यह भी क्या वाहियात मजाक है कि वह गोवा कुछ करने के बजाय औरत की तरह घर में बैठा सन्देहों से अपनी छाती छील रहा है?

उसने अपने आपको एक ओर को झटका दिया, कन्धे सीधे किये खूँटी पर लटका हुआ लबादा कन्धे पर डाला और अन्धड़ की तरह दरवाजे की ओर लपका।

यह देख तसिया आकुल व्याकुल हो गई।

जिसतरह पकड़ने वाले को अपनी ओर आते देख मुर्गी पर फड़फड़ा कर उड़ती है ठीक उसीतरह तसिया अपनी चौकी पर से उछली और चिल्ला पड़ी

'तुम कहां जा रहे हो?'

लेकिन गोवा अपने पीछे दरवाजों को धड़ाम से बन्द करता हुआ तोप के गोले की तरह कमरे के बाहर निकल गया था।

तसिया ने अनुभव किया कि अपने पति को यों घर से अकेला जाने देना अनुचित होगा। उसे भी उसके साथ जाना चाहिये। वह चूल्हे के चारों ओर बावली-सी घूमने और जो कुछ हाथ में आ गया उसी को जल्दी-जल्दी समेटने लगी। लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी विचारशक्ति लौट

आई; उसने चूल्हे में जलती हुई आग की ओर देखा और तब सोचा कि घर से निकलने के पहले उसे क्या-क्या करना होगा। वह झट से काम में भिड़ गई। उसने चूल्हे में जलती हुई लकड़ियों को बाहर खींचा, उनपर पानी डालकर आग बुझाई, अँगीठी को ठण्डा किया, लोटे को मलमारी पर रखा और दलिया की भांडी को ऊपर के आँकड़े में टांग दिया। फिर एक निगाह कमरे में डालकर इत्मिनान कर लिया कि किसी चीज़ को नुकसान पहुँचने का अन्देशा तो नहीं है और घर आग से सुरक्षित तो है। इतना सब करने के बाद ही उसने चौकी पर रखे हुए अपने दुपट्टे को उठाया और उसे सिर पर डालती हुई जल्दी-जल्दी अपने पति के पीछे भागी।

जब वह घर से बाहर निकली तो आसमान में तारे चमकने लगे थे और अँधियारे पाख के बावजूद, तारों की टिमटिमाती रोशनी के कारण, रात उतनी अँधेरी नहीं थी।

फाटक के बाहर आकर पहले उसने बाईं ओर देखा और तब दाहिनी ओर। इस बीच गोचा सड़क पर पहुँच गया था और तूफानमेल की गति से क़दम बढ़ाये चला जा रहा था। तसिया की छाती बैठ गई। गोचा को पकड़ पाना उसके लिए सात जनम में भी सम्भव नहीं था। फिर भी जी कड़ा करके उसके पीछे चलने लगी। वह आँखें फाड़े, निर्निमेष दृष्टि से गोचा कि ओर देखती चली जा रही थी। डर था कि वह कहीं अँधेरे में इधर-उधर न हो जाए। यदि वह आँखों से ओझल हो गया तो क्या होगा!

उधर गोचा चक्कर बचाने के विचार से सड़क छोड़कर मोड़ से सीधा आगे बढ़ गया और पहाड़ी पर जाने वाली पगडण्डी पर चलने लगा। यह पगडण्डी पहाड़ी के पीछे एक गली में जाकर मिलती थी और इसी गली में गांव के कई विधवा परिवारों के घर थे।

तसिया भय और आशङ्का से काँप उठी। निश्चय ही गोचा गेला के घर जाकर झगड़ा करेगा और सारे गांव में सतान्द्रिया कुटुम्ब का नाम बदनाम हो जायेगा। हाय राम, वह क्या करे!

ए। यहीं से आवाज़ देकर उसे रोके? लेकिन डर के कारण उसका गला सूख गया था, और वह आवाज़ न दे सकी। उसे जल्दी करना चाहिए। अपने शरीर की पूरी शक्ति लगाकर वह दौड़ने लगी।

पहाड़ी पीछे छूट गई थी और अभी भी वह पगडण्डी पर ही थी लेकिन उधर गोचा तेज़ी से गली के अन्दर चला जा रहा था।

तभी हठात् उसे यह ख्याल आया कि समीप ही एक अँधेरी गली में उसकी ननद सलोमी का मकान है। सम्भव है कि गोचा वहीं जा रहा हो; उसका सारा डर और आशङ्का निर्मूल ही हो।

लेकिन गोचा ने उधे अँधेरी गली में मुड़ने का नाम न लिया। अब तो झगड़े के शान्तिपूर्वक निपट जाने की उसकी रही-सही आशा भी टूट गई और वह लोकलाज का सारा भय छोड़कर चिल्लाने लगी:

'तुम कहाँ भागे जा रहे हो कहाँ भागे जा रहे हो? सम्भवतः नैना अपनी बुआ के घर हो, हाँ, वहीं होनी चाहिये, नहीं तो और कहाँ जायेगी?'

गोचा को यकायक अपने कानों पर विश्वास न हुआ। तसिया तो नहीं पुकार रही है? लेकिन तसिया यहाँ कहाँ? निश्चय करने के लिए उसने पीछे की ओर मुड़कर देखा। हाँ, तसिया ही थी और उसके पीछे दौड़ी चली आ रही थी। उसके तन बदन में आग लग गई। लेकिन तसिया ने उसे बोलने या कुछ सोचने का मौका ही नहीं दिया।

'बतलाओ, तुम कहाँ जा रहे हो? ज़रा रुको तो सही और थोड़ा सोचा भी करो! यह क्या कि जिधर नाक उठी उधर ही दौड़ पड़े! मेरी सुनो, वह सलोमी बहिन के यहाँ गई है, मुमकिन है कि रात वहीं रह जाय। सुनते हो कि नहीं?'

'कुछ समझ में नहीं आता है कि इस औरत को हो क्या गया है! कहीं पागल तो नहीं हो गई है? पहले तो रो-रो कर जान दिये दे रही थी कि लड़की न जाने कहाँ चली गई है, और अब मेरे पीछे पगडंड

भागती हुई शोर मचा रही है कि सलोमी बहिन के यहां है! आखिर यह सब क्या गोलमाल है? गोचा ने मन ही मन कहा।

लेकिन तसिया की बात सुनकर उसके भी जी में जी आया और छाती पर से एक बोझ सा हट गया। सच है, शक आदमी को अन्धा बना देता है। इतनी सादी-सी बात कि नैया अपनी बुआ के यहां गई होगी, उसके ध्यान में क्यों नहीं आई? सलोमी के घर की एक खिड़की में उजेला दिखाई दे रहा था। एकदम उसे विश्वास हो गया कि नैया वहीं अपनी बुआ के पास ही होनी चाहिये। और जब तसिया उसके समीप पहुँच गई तो उसने उससे कहा:

'और तू कहां दौड़ी आ रही है? सलोमी के यहां चली जा और लड़की को बुला ला।

तसिया ने अपने पति की आज्ञा को सिर-माथे चढ़ाया और अँधेरी गली की ओर मुड़ गई।

कोई दो-चार मिनट बाद गोचा ने सलोमी की आवाज़ सुनी। वह उसीकी ओर हाय-तोबा मचाती और न जाने क्या चिल्लाती हुई भागी चली आ रही थी। तसिया उसके पीछे थी। लेकिन उन दोनों के साथ नैया नहीं थी।

'अरे भैया, क्या हो गया? नैया बिटिया कहां है?' सलोमी ने दूर से ही इस तरह पुकार कर कहा मानो नैया मर ही गई हो!

समीप आकर वह शिकारी कुत्ते की तरह गोचा पर टूट पड़ी और लगी उसे जली-कटी सुनाने। वह अपने हाथों को भी ज़ोर-ज़ोर से हिलाती जाती थी:

'लो, और जवान बेटी को मारने की धमकी देना! सारे गांव के आगे सिर नीचा हो गया न? पुत गई कालिख! कट गया नाक! भाग गई न वह घर से? कितनी सुशील लड़की है बेचारी! साक्षात् सरस्वती का अवतार है। लेकिन तुम किसीकी सुनोगे थोड़े ही! तुम्हें तो उसकी जान लेना थी।

कर गुजरे न अपने घाली ? सारी मर्दानगी उस धिया पर ही तो उतारना थी। 'भैया मानो, भैया समझो' कह-कह कर मेरी जबान घिस गई लेकिन भैया काहे को सुनने लगे। क्या आँखें निकाल निकालकर गरज रहे थे ! अब रोओ छाती पीट पीटकर। अपने हाथों ही पाँव पर पत्थर पटका है तुमने। तुम्हारे ही कारण बेचारी छोरी को घर छोड़कर भागना पड़ा।"

वह इसतरह झपट-झपट कर कह रही थी मानो गोचा का मुँह ही नोच लेगी।

और गोचा अपराधी की तरह चुप खड़ा सुनता रहा। उसके चेहरे पर व्याकुलता और कातरता का एक ऐसा भाव छा गया मानो सारा अपराध उसीने किया हो। सलोमी से यह बात छिपी न रह सकी। उसे कातर होते देख उसका हौसला और भी बढ़ गया और वह दूने जोश के साथ तमक तमक कर, हाथ हिला हिला कर उसे कोसने लगी। अब उसे गोचा का ज़रा सा भी डर नहीं रह गया था इसलिए वह उन सब बातों को जिन्हें वह डर के कारण कह नहीं पाई थी, निर्ममतापूर्वक कहने लगी

'तुम अपने आपको बड़े समझदार समझते हो भैया लेकिन देखती हूँ कि तुम में तीन कौड़ी की भी अक्ल नहीं है। और तो और तुम अपनी सगी बेटी के साथ भी सुलह शान्ति से नहीं रह सके। नाहक आसमान सिर पर उठा लिया। आखिर तुम चाहते क्या हो ? क्यों उस बेचारी के पीछे पड़े हो ? क्यों उसे दिक करते हो ? सारा गाँव उसकी तारीफ करता है, बच्चे बच्चे की जबान पर नैया का नाम है; लोगों का बस चले तो वे उसे सिरपर उठाकर नाचें। लेकिन एक तुम हो उसके बाप, जो उसे सात तालों में बन्द रखना चाहते हो, उसे अपने मित्रों और कामरेडों से अलग करना चाहते हो, चाहते हो कि वह घर-घुसन बनकर बैठी रहे। अब वे जमाने नहीं रहे भैया ! जमाना बदले भी पूरा एक जुग हो गया लेकिन तुम अभी भी वैसे ही घामड़पन्थी बने हुए हो। मैं तो कहूँगी कि नैया यदि मेरा को पसन्द न भी करता हो तब भी आखिर उसके काबिल नहीं। वह उसके

नख की भी होड़ नहीं कर सकता। लेकिन आज के जमाने में भी यह सीधी सी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती। अगर मैं कल यह सुनूँ कि नैया ने अपने आपको गेरा की पत्नी घोषित कर दिया है और दोनो ने अपनी शादी की रजिस्ट्री करवा ली है तब भी मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। यह नया जमाना है, नया। आजकल कोई ऐसी बातों के लिए सिर-दर्द नहीं मोल लेता! न कोई ऐसी बातों के लिए लड़की के बाप की स्वीकृति ही मांगता है—यह सारी पुरानी लिस्टम-पिस्टम अब खतम हो, गई है।'

सलोमी का 'लेक्चर' पूरा हो गया।

तसिया तो पसीने पसीने हो उठी।

'ननदजी, यह तुम क्या कह रही हो!' उसने सिसकते हुए स्वर में कहा।

गोचा ने एक लम्बी, गहरी और बोझिल सांस ली। सलोमी के सतर्क कानों से यह भी छिपा न रहा।

उसे लगा कि झोंक ही झोंक में वह जरूरत से कुछ ज्यादा ही कह गई है!

अपनी भूल का परिमार्जन करने के विचार से वह अपेक्षाकृत स्निग्ध स्वर में कहने लगी:

'नहीं, मैं यह नहीं कहती कि सबकुछ हाथ से निकल ही गया, और कुछ बचा ही नहीं। मेरा यह मतलब तो हर्गिज़ नहीं। तुमने हमसे यह अर्थ कैसे लगा लिया भौजी? मैं तो सिर्फ यह कह रही थी कि इन दिनो आमतौर पर ऐसी घटनाएं घटा करती हैं; लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी रानी बिटिया ऐसा कभी नहीं करेगी। वह बड़ी समझदार है और अपना आगा-पीछा देखकर चलती है। सच, उसकी समझदारी में तो मुझे कोई सन्देह ही नहीं है। लेकिन मुझा डर तो मुझे तुम लोगों का लग रहा था। मैंने तुम दोनो औरत-मरद को बीचबजार सड़क पर भागते हुए

देखा तो मेरे हाथ पाँव पेट में धसा गये, दिल धुक धुक हो गया। सोचने लगी, हाय राम मैया और गोजो पर ऐसी कौनसी विपत आ पड़ी! ज़रा उसे ढूँढ़ा तो होता? बस, नाक की सीध में दौड़ चले। रास्ते में एलिको के यहाँ पूछा था? सम्भव है, वहीं रुक गई हो!"

गोचा और तसिया दोनो चुप। किसीने उसे जवाब नहीं दिया।

हे भगवान्, तुम चुप क्यों हो? दोनो इसतरह मुँह सीये क्या खड़े हो? कुछ सुना हो तो कहते क्यों नहीं? मेरी तो समझ में नहीं आता मैया कि तुम्हारी यह घिग्घी क्यों बँध गई है? चलो, मेरे साथ चलो, यदि मैया एलिको के यहाँ न मिले तो मेरा सिर काट कर फेंक देना। चलो, गोजी, तुम भी, वहाँ खड़ी क्या हो?

यह गोचा का पल्ला पकड़कर उसे अपने पीछे घसीटती हुई ले चली।

गली से निकलकर वे सड़क पर आये और सामूहिक खेत समिति के भवन की ओर चल पड़े। काफ़ी देर तक कोई कुछ न बोला। तीनों चुपचाप चलते रहे। सलोमी ही फिर से बोली

पता नहीं उस पोरिया ने तुम पर ऐसा क्या जादू मन्तर कर दिया है? आज के इस नये ज़माने में तुम्हारा यह शरीफ़ज़ादा, जैसा कि मैं कह चुकी हूँ गरा के नख की होड़ भी नहीं कर सकता। आजकल तो गेरा सरीखे जवानों की पूछ है। इनकी तसवीरें अखबारों में छपती हैं। लेकिन तुम्हारे मन ऐसों की कोई कीमत ही नहीं! आपको तो बस पोरिया चाहिये। ऊँची जात का पोरिया! हुँह! वह न हमारा मित्र न हमारा मित्र। उससे हमारी पटरी भला कैसे बैठ सकती है? उसका सामाजिक दर्जा और चाल चलन भी हमसे मेल नहीं खाता। और क्या तुमने उसके बारे में गाँव में उड़ने वाली अफवाहें नहीं सुनी हैं? कहो तो बतऊँ। ढेरों हैं, यहाँतक गिनऊँ? कोई कुछ कहता है कोई कुछ। बिना आग के तो धुआँ उठता नहीं। ज़रूर सचाई होनी ही चाहिये। सुना तुमने भी होगा पर तुम क्यों ध्यान देने लगे? तुम्हें तो वह भा गया है न? जानते

हो ऐसे आदमियों का अन्त क्या होता है? जेल में आकर मरेंगे या फिर फाँसी चढ़ेंगे। और साथ में तुम्हें भी ले डूबेगा। संगति का असर तो होता ही है। शराब वह पीयेगा और माथा तुम्हारा दुखेगा। भैया, वह काला नाग है। उसके काटे का दारू नहीं। उससे बचकर ही रहना। तुम्हारे ही भले के लिए कहती हूँ।

१८

बैठक ऊपर की मंजिल पर, एलिको के कमरे के ठीक ऊपर हो रही थी। पार्टी का सङ्गठन कर्ता ज्योर्जी शहर से देर में लौटा था। पहले उसने अपने साथियों को पार्टी संगठनकर्ताओं के जिला सम्मेलन की कारवाई की विस्तृत रिपोर्ट सुनाई; यह सम्मेलन पूरे दो दिन तक चलता रहा था। रिपोर्ट के बाद उस पर बहस-मुबाहसा और चर्चा हुई। उसके बाद ही दूसरे विषय लिये जा सके। इसतरह बैठक काफी समय तक चलती रही।

बैठक में हिस्सा लेने वाले साथी कभी-कभी इतने ज़ोर से बोलने लगते थे कि उनकी आवाज़ एलिको के कमरे में भी साफ़-साफ़ सुनाई दे जाती थी। नेया को इस बात का बड़ा अफ़सोस हुआ कि वह ज्यार्जी की पूरी रिपोर्ट न सुन सकी, यद्यपि उसने वहीं बैठे-बैठे काफी सुन लिया था और केवल थोड़ा-सा अंश ही गड़बड़ा गया था।

अब वे मनारिया वालों के स्वागत में आयोजित की जाने वाली सभा को सङ्गठित करने के प्रश्न पर चर्चा कर रहे थे। दोनों गाँवों की समाजवादी प्रतियोगिता की शर्तें ते करने का दिन सिर पर चढ़ा चला आ रहा था, और ओरकेती वालों ने अभीतक अपनी ओर से पेश की जाने वाली शर्तें ही नहीं ते की थीं। इस विषय पर गेरा काफी देर तक बोला।

नेया इस सम्बन्ध में गेरा की सारी योजना से अच्छी तरह परिचित

थी, क्योंकि योजना बनाने में उसने भी गेरा का हाथ बँटाया था। लेकिन इस समय उसकी सबसे अधिक दिलचस्पी 'अजेण्डा' के तीसरे विषय से थी—गोवेरे उसके पिता का व्यवहार और उसपर साथियों की राय।

गोचा वाला सवाल पेश होते ही बैठक में काफी गरमा-गरमी आगई। बैठक में हिस्सा लेने वाले सभी साथी उत्तेजित हो उठे और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगे। पक्ष विपक्ष में गरमा गरम भाषण दिये जाने लगे। टोली के नायक ज़ोसिमी का स्वर सबसे तेज़ और साफ सुनाई पड़ रहा था। उसे खेतों और जङ्गलों में जोर जोर से बोलना पड़ता था, इसलिए जोर से बोलना उसकी आदत में शुमार हो गया था, और वह इसका इतना अभ्यस्त हो गया था कि चहारदीवारी के बीच बन्द और छोटे कमरों में प्रयत्न करके भी धीरे से नहीं बोल पाता था। फिर इस समय तो वह बहुत ही उत्तेजित दशा में था। वह अकेले गोचा पर ही नाराज़ नहीं था, उसने गोचा के साथ ही साथ गेरा को भी लपेटा। उसके ख़याल में 'अध्यक्ष महोदय' ने उस धड़कड़िये और झगड़ालू सतान्द्रिया के प्रति जितना कड़ा रुख बरतना चाहिये था नहीं बरता था। उसके साथ ज़रूरत से ज्यादा नरमी बरती गई थी।

अपनी बात समाप्त करते हुए जोसिमी ने चिल्लाकर कहा

'यहाँ जङ्गल में लड़ते और तने ठेलते ठेलते हमारी कमर दोहरी हो जाती है लेकिन गोचा अपनी शक्ल तक नहीं दिखाता और न आने का कोई कारण ही वह बतलाता है। जबतक ऐसा उदाहरण सामने है मैं अपनी टोली के सदस्यों को कह ही क्या सकता हूँ? किस मुँह से उन्हें कहूँ कि वे उत्पादन बढ़ायें? या तो गोचा कल से हमारे साथ हमारी तरह काम शुरू करे या फिर उसे ऐसी सज़ा दी जाय कि वह हमेशा दूसरों के सामने उदाहरण के रूप में पेश किया जा सके।'

कुछ लोगों ने जोसिमी की बात का समर्थन किया। लेकिन गेरा और

ज़्यादा उनसे सहमत नहीं थे। गेरा ने सुबह वाले सारे झगड़े के लिए ज़ोसिम और उसकी टोली के सदस्यों को ज़िम्मेवार ठहराया। उसकी राय में ज़ोसिम ने भैंस को जोतकर भयङ्कर भूल की थी- इतनी भयङ्कर कि गेरा को ज़ोसिमी के अन्दर 'वामपन्थी झुकाव' का अन्देशा हो रहा था।

नैया की समझ में नहीं आ रहा था कि गेरा इस जरा कुछ-सी बात को भला इतना तूल क्यों दे रहा है? क्यों वह इतने तत्परता और जोश के साथ उसके पिता का पक्ष ले रहा है? दिन की तरह उजागर है कि ग़लती गोचा की ही थी। इसलिए जब गेरा ने उसके पिता का पक्ष लेकर ज़ोसिमी के आचरण की आलोचना की तो बात नैया की समझ में नहीं आई। उसने सोचा कि कहीं मेरे कारण ही तो गेरा पिताजी का पक्ष नहीं ले रहा है, संभव है कि मेरे प्रेम के कारण ऐसा कर रहा हो। लेकिन दूसरे ही क्षण उसे ख़याल आया कि नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता। गेरा और व्यक्तिगत भावनाएँ दोनों कभी साथ साथ नहीं चल सकते। इसतरह का ख़याल मन में पैदा होना ही असंगत है।

वह एक कोहनी के नीचे तकिया लगाये उसके सहारे एलिको के बिस्तरे पर लेटी हुई थी। ऊपर की मंज़िल पर जोश-ख़रोश के साथ जो बहस-मुबाहसा हो रहा था वह उसका एक शब्द भी खोना नहीं चाहती थी इसलिए उसने अपने सिर के बाल पीछे की ओर कर लिये थे और अँगुलियों से कान की पपड़ियों को थोड़ा आगे की ओर मोड़ लिया था।

एलिको मेज़ के आगे बैठी थी। उसके सामने एक कापी पड़ी थी, जिसमें कई सारे स्केच बने हुए थे। वह अपने हाथ की अँगुलियों में एक पेन्सिल लिये उसे यन्त्रवत् नचा रही थी; लेकिन उसका ध्यान भी बहस-मुबाहसे के ओर ही लगा था। नैया की भाँति वह भी कान लगाये सुन रही थी।

ऊपर वालों के आवाज़ वहाँ कमरे में एकदम साफ़-साफ़ नहीं, कुछ घुटे घुटे-सी, दबे-दबे-से सुनाई पड़ते थी। उन आवाज़ों को सुनते-सुनते

एलिको जब थक गई तो उसने धीमे स्वर में नैया से पूछा 'सवेरे क्या हुआ था? मुझे तो कुछ बतला! उन लोगों की बातों पर से मेरे तो कुछ समझ में ही नहीं आता।'

उसने ऊपर वालों की ओर इशारा किया।

नैया ने जवाब नहीं दिया। वह उसी तरह लेटी छत की ओर टक लगाये सुनती रही और सुनती ही रही

किसी ने तुम्हारे बाप की भैंस को खड़ा खींचने के लिए जोर दिया। बस, इतना ही था और कुछ? और यही इतना भयंकर अपराध हो गया?' एलिको ने फिर पूछा।

जब उसे अपनी इस बात का भी जवाब नहीं मिला तो वह हाथ की पेन्सिल से कापी पर रेखाएँ खींचने लगी। उसकी सधी हुई चपल अँगुलियाँ बड़े ही मनोयोग से किसी का चित्र खींचने में लग गई। और बात की बात में कापी के हाशिये पर एक भैंस का सिर दिखलाई दिया, जिसके सींग पीछे की ओर मुड़े हुए थे।

एलिको ने अपना बनाया रेखाचित्र गौर से देखा। हां वह निकोरा भैंस का ही मुँह था। अपने प्रयत्न की सफलता के कारण वह प्रसन्न और उत्साहित हो उठी—ठीक एक छोटे बच्चे की तरह। तब उसने भैंस के सिर में सफेद चादर के बदले एक प्रश्नसूचक चिह्न बनाया और फिर वह नैया की ओर मुड़कर बोली:

'बुरा तो नहीं है। क्यों नैया क्या ख्याल है?'

'दिक् न! चुप रहो एलिको! बीच-बीच में बोलकर विघ्न मत डालो। मेरा बोल रहे हैं...मुझे सुनने दो!' नैया ने जल्दी जवाब दिया और बोलने से इन्कार करने के लिए अपना हाथ भी हिला दिया।

चुप रहने के सिवा एलिको के सामने और चारा भी क्या था? वह फिर अपने रेखाङ्कन में लग गई। थोड़ी ही देर में धड़ और पाँव भी बन गये और भैंस ने कागज पर मूर्तरूप धारण कर लिया।

'सुनो, एलिको ज्यार्जी को आदेश दिया गया है कि वह जाकर मेरे पिताजी से मिलें और उनसे इस सम्बन्ध में तथा काम के बारे में अन्तिम चर्चा कर लें। साथियों का ऐसा कहना है कि पिताजी को ज्यार्जी के ऊपर भरोसा है; और सम्भव है कि वह उनकी बात मान लें... ऐसा लगता है कि उन्होंने ज़ोसिमी को हिदायत देने और लानत मलामत करने का भी फैसला किया है। यह अन्तिम बात नैया ने कोई दो-एक मिनट बाद कही और फिर छत में आँखें गड़ाकर सुनने लगी।

लेकिन इसबार एलिको चुप न रह सकी, और न उसने नैया की बात पर ही कोई विचार किया।

'अब अगर किसी दुश्मन ने भैंस का इसतरह उपयोग किया होता तो सारा मामला कुछ दूसरा ही रूप धारण कर लेता।' उसने अपने आपसे कहा और फिर चित्र पर पेन्सिल फिराने लग गई। इसबार उसने भैंस की गर्दन पर एक जुआ बनाया और जुए से रस्सियाँ बांधकर उन्हें भैंस की गर्दन में लटका दिया लेकिन हठात् उसकी पेन्सिल की नोक टूट गई। उसके सुन्दर चेहरे पर एक मीठी मुस्कराहट फैल गई और आँखों में तारे चमकने लगे। चुपचाप हँसते हुए उसने अपनी सहेली से पूछा:

'क्यों नैया निकोरा का भैंस होना तो कहीं मेरा की नाराज़ी का कारण नहीं है? यदि वह भैंस न होकर भैंसा होती तो संभवतः मेरा नाराज़ न होते। एक भैंस को जुए में जोतने का उन लोगों ने साहस (या दुस्साहस) ही कैसे किया? क्यों है न यही बात? आख़िर तो निकोरा मादा है, हम महिलाओं की ही जाति कि...'

'कैसी मूर्खतापूर्ण बातें कर रही हो तुम भी!' नैया ने अप्रसन्न होकर कहा 'श्‌ श्‌! सुनो, ज्यार्जी ने क्या कहा? सबकी खूब ख़बर ली। पिताजी को कुछक कहने के लिए वह साथियों पर खूब-खूब बिगड़े। ज्यार्जी का कहना है भी ठीक। हमारे साथियों को इस हदतक नहीं जाना चाहिए था। वे तो एकदम उचित अनुचित का ख़याल ही खो बैठे।'

'अरे, तुम मेरी बात तो सुनो! एक बड़ी मजेदार बात सूझी है। दूर से बताने पर यह कोई जान ही नहीं सकता कि कौन भैंस है और कौन भैंसा है। नर मादा के रूप-रङ्ग डील डौल में असाधारण रूप से समानता पाई जाती है। यही एक ऐसा जानवर है जिसमें नर मादा एक से होते हैं। तुम चाहे भैंस के कन्धे पर जूआ रख दो चाहे भैंसे के कन्धे पर, जूआ रखने पर तो कभी पता ही नहीं चल सकता कि कौन नर है और कौन मादा। इसका नाम है कुदरत! लेकिन हम मनुष्यों में ऐसे मूर्ख भी अनेक हैं जो औरत को सिर्फ मादा होने के कारण कमज़ोर समझते हैं और न जाने कहां की ऊल-जलूल बातें करने लग जाते हैं। ज़रा मेरी ओर ध्यान से देखो क्या मैं कमज़ोर हूँ? क्या मैं उस बदतमीज़ युवक की अक्ल ठिकाने नहीं ला सकती हूं?'

लेकिन नैया ने एलिको की अन्तिम बात नहीं सुनी। उसका ध्यान फिर ऊपर की ओर चला गया था। अब ऊपर से कुर्सियों के घसीटे जाने और खिसकाये जाने की आवाज़ आ रही थी और लकड़ी के फर्श पर भारी भरकम जूते बजने लगे थे। वह भी एकदम बिस्तरे पर से उठ आई।

'बैठक बर्खास्त हो रही है। वे जाने की तैयारियाँ कर रहे हैं। मुझे गैरा से मिलना है, बहुत जरूरी काम है।' अपने सिर के बालों को हाथों की मुट्ठी से बराबर करते हुए उसने कहा और दरवाज़े की ओर आगे बढ़ी। उसीने दरवाज़ा खोला और बाहर जा ही रही थी कि एलिको ने पूछा

'लेकिन तुम तो रात मेरे साथ बिताने वाली थी न? जा रही हो क्या?'

और एलिको अपनी जगह पर से उठकर दरवाजे पर आई।

जल्दी जल्दी में नैया के लम्बे कोट की एक जेब दरवाजे की मुठिया में उलझ गई और उसे क्षणभर के लिए रुकना पड़ा।

'मैं अपनी बुआ के यहां भी जा सकती हूँ...लेकिन तुम सो न जाना, वहां का दरवाजा बन्द मिला तो यहीं आना पड़ेगा।' उसने उत्तर दिया

और अपने कोट को दरवाज़े की मुठिया में झुलाती हुई बाहर की ओर दौड़ी गई।

इस जल्दबाजी में नैया की जेब में से एक मुड़ा हुआ कागज़ फ़र्श पर आ गिरा और उसे ध्यान ही न रहा। एलिको ने आगे बढ़कर उस कागज़ को उठा लिया। वह नैया को पुकारने जा ही रही थी; लेकिन फिर उसने यह सोचा कि कुशल इसीमें है कि गेरा के हाथ आरचिल पोरिया की कविता न पड़ने दी जाय।

'मेरा सौभाग्य ही है कि कागज़ नैया की जेब में से गिर पड़ा। क्या करूँ? उसे लौटा दूं या रख लूँ?' कागज़ की ओर देखती हुई वह किंकर्तव्यविमूढ़ सी खड़ी रह गई। उसके चेहरे पर कभी एक भाव दिखाई पड़ता था कभी दूसरा। कभी वह प्रसन्न हो उठती थी तो कभी भयविह्वल; कभी उसका चेहरा लाल हो जाता था तो कभी पीला।

'कागज़ उसीने गिराया है। वह यही समझेगी कि कहीं खो गया है।' यह बात उसने इतने ज़ोर से कही कि उसकी प्रतिध्वनि सारे कमरे में गूँज गई।

निश्चय ही वह प्रसन्न हो उठी थी और उस प्रसन्नता ने भय को निर्मूल कर दिया था।

'यह उसके खयाल में कैसे आयेगा कि कागज़ मेरे ही कमरे में गिरा है! वह कहीं भी गिरा सकती है। मेरे कमरे में ही क्यों? जङ्गल में भी हो सकता है, सड़क पर भी हो सकता है। मैं सच कहती हूँ, ईमान से कहती हूँ मुझे कुछ नहीं मालूम; मैं कुछ जानती ही नहीं।'

उसने कागज़ को अँगुलियों में पकड़ लिया। वह उसे फाड़ने जा ही रही थी। उसने ज़ोर से दाँत भींचे...लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी प्रसन्नता गायब हो गई और उसने अपना निर्णय बदल दिया :

'नहीं, यह कविता कभी काम आ सकती है साथियों द्वारा इसका उपयोग किया जा सकता है बशर्ते कि कविता का अर्थ वही हो जो नैया ने बतलाया...'

वह आश्वस्त होगई और उसने चिट्ठी को रख लेने का निश्चय किया। नहीं, वह उसे नहीं फाड़ेगी, कहीं छिपाकर रख देगी, सबकी निगाहों से दूर ताकि किसी को उसके अस्तित्व तक का पता न चले।

'जब कभी इसकी जरूरत पड़ेगी, बिलकुल जरूरत पड़ जायेगी और लाभ होता होगा, तब...तभी मैं इसे बतलाऊँगी'. .

उसके मन के सारे सङ्कल्प-विकल्प शान्त हो गये थे। उसने कागज़ को मोड़कर अन्दर की जेब में रख लिया और अपने काम में लग गई।

बैठक में हिस्सा लेने वाले साथी सीढ़ियों से उतरकर नीचे बरामदे में आ रहे थे। यदि जरा सी भी देर हो जाती तो नैया को वे लोग देख लेते। नैया स्वयं उनसे टकराते-टकराते बची। वह तीर की तरह दौड़ती हुई बरामदे से नीचे आंगन में कूदी। फिर दबे पांवों, दीवाल का सहारा लेती हुई मकान के कोने की ओर बढ़ी। कोने की ओट में पहुँच जाने पर ही उसके जी में जी आया। अब किसी से छिपने की ज़रूरत नहीं थी। देखे जाने का सङ्कट टल गया था। उसने आंगन पार किया और बागड़ में थोड़ा सा रास्ता बनाकर बाहर निकल आई। बाहर एक छोटा सा चरागाह था। चरागाह की मेड़ पर, ठीक जङ्गल से लगी हुई एक पगडण्डी जाती थी। यह पगडण्डी नैया की परिचित थी। समिति-भवन से निकलकर गेरा हमेशा इसी पगडण्डी पर होकर घर जाया करता था। नैया भी उसके साथ कई बार इस पगडण्डी पर आई गई थी। सोच विचार में अधिक समय गँवाना वृथा समझ नैया ने सीधे पगडण्डी की ओर रुख किया। वह दौड़ने लगी। पेड़ के तनों के पास, पगडण्डी पर पहुंच जाने के बाद ही उसने दम लिया। बीच में सांस लेने के लिए भी न रुकी।

ऊपर आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे; उनका धीमा प्रकाश धरती पर उतर आया था। और अन्धेरी रात में भी हलका-सा चांदना हो गया था। नैया डरी कि कहीं किसीने उसे देख तो नहीं लिया है। इत्मिनान करने के लिए वह अन्धेरे में आंखें फाड़-फाड़ कर देखने लगी। लेकिन

उसे वहीं कोई दिखलाई नहीं पड़ा। रात के अन्धेरे में सिर्फ उभरे-उभरे से पेड़ दिखाई दे रहे थे। शेष सब ओर शान्ति थी। न आदम, न आदमजात। वह आश्वस्त हुई। फिर उसने सोचा कि कोई देख पाये या न देख पाये अपने को सावधानी रखना ही चाहिये। यह सोचकर वह एक बड़े-से पेड़ की ओट लेकर खड़ी हो गई और गेरा की प्रतीक्षा करने लगी।

काफी समय बीत जाने पर भी गेरा नहीं आया। उसने दूर से आती हुई साथियों की आवाज़ सुनी; वे एक-दूसरे से विदा ले रहे थे।

उसकी छाती धड़कने लगी। रात का वक्त था, चारों ओर बयाबान जङ्गल था और वह सर्वथा अकेली थी। उसे डर तो नहीं लग रहा था लेकिन कुछ बहुत अच्छा भी नहीं मालूम पड़ रहा था।

वह थोड़ी देर तक और प्रतीक्षा करती रही।

चारों ओर सन्नाटा था। ऐसा मालूम पड़ रहा था मानो कहीं ऊपर से बहता हुआ गहरा सन्नाटा धरती पर उतर आया हो। अनचाहे ही वह सन्नाटे के स्वर को सुनने लगी। उसे लगा कि सन्नाटा जैसे सांय-सांय कर रहा हो। यह सन्नाटा बड़ा अजीब मालूम पड़ रहा था। उसकी सारी चेतना कानों में आ सिमटी और वह तने हुए मृदङ्ग की तरह खिंच गई। अब उसे उस सन्नाटे में से सांय-सांय के सिवा दूसरे स्वर भी उठते हुए सुनाई देने लगे: सारा जङ्गल जैसे कनफुसकियों और मर् मर् सर् सर् की ध्वनियों से भर गया था। यह मर्-मर् ध्वनि बड़ी ही रहस्यमय मालूम पड़ रही थी। लेकिन आश्चर्य तो यह था कि इन अनगिनत आवाज़ों के बावजूद भी जङ्गल का सन्नाटा भङ्ग नहीं होने पाया था। बल्कि इन आवाज़ों के साथ तो वहाँ की निस्तब्धता और भी घनी और गहरी होगई थी। ये आवाज़ें कौन कर रहा है? क्या यह टिमटिमाते तारों की गुनगुन है, या धरती माता का श्वास-प्रश्वास है, या हवा अल्हड़तापूर्वक वृक्ष की टहनियों और झाड़ियों के बीच लुका छिपी खेलती हुई पत्तियों और पवन को हिला रही है...। नहीं तो, इन आवाज़ों का भला, दूसरा कारण क्या हो सकता है!

और मेरा अभीतक नहीं आया था।

नैया को ऐसा लगा मानो जङ्गल में उसके पीछे जो मर्मर ध्वनि उठ रही थी वह तेज़ हो गई हो। वह कान लगाकर सुनने लगी। थोड़ी देर बाद उसके मस्तिष्क ने ही नहीं शरीर के एक एक अणु ने ऐसा महसूस किया कि कोई उसकी पीठ की ओर बढ़ा चला आ रहा है।

अब वह सचमुच डर गई थी। सङ्कट का सामना करने के लिए उसने जङ्गल की ओर मुँह किया और खड़ा होकर देखने लगी: कोई है भी या केवल उसके मन का भ्रम है?

वहाँ कोई नहीं था। लेकिन उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। डर की अपनी आँखें होती हैं और डरे हुए आदमी को हवा में भी भूत दिखने लगते हैं। यही हाल इससमय नैया का भी था। उसे विश्वास हो गया कि जङ्गल में कोई है ज़रूर। अब वह क्या करे? दौड़कर चरागाह में चली जाय? नहीं, उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी! डर रही थी कि पीठ दिखाते ही वह अदृश्य प्राणी कहीं उसपर झपट न पड़े। यदि झपट पड़ा तो वह क्या करेगी?

वह पेड़ के तने से सट गई और दोनो हाथ फैलाकर धड़ को कसकर पकड़ लिया। अब उसे कोई डर नहीं था। उसका जी ज़रा हलका हुआ।

लेकिन कोई क्षणभर बाद ही उसे किसी के पाँव के नीचे टहनियों के दबकर टूटने और सूखे पत्तों के कुचले जाने और खड़खड़ाने की आवाज़ सुनाई दी। और उसने एक विशालकाय जन्तु को अन्धेरे में से उभर कर ऊपर आते हुए देखा...

उसके मुँह से एक हल्की-सी चीख निकल पड़ी...

पहले तो उसे ऐसा लगा मानो वह जन्तु ठीक उसके समीप प्रकट हुआ हो, लेकिन थोड़ा गौर करने पर उसने पाया कि वह पास नहीं, दूर है। चलो जान बची।



लेकिन यह देखकर कि वह जन्तु लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ उसीकी ओर बढ़ा चला आरहा है वह पसीने में नहा उठी। परन्तु दूसरे ही क्षण उसने यह पाया कि वह जन्तु उसकी ओर नहीं बल्कि उससे सर्वथा विपरीत दिशा में जङ्गल के किनारे-किनारे पगडण्डी पर चला जा रहा है तो उसके जी में जी आया और वह बेहोश होते-होते बच गई।

अन्धेरे के बावजूद उसने यह भी देख लिया कि उस जन्तु की पीठ पर एक बड़ी-सी कुबड़ है और वह इतनी बड़ी है कि पेड़ की टहनियों में उलझती है। लेकिन उसका भयविह्वल मस्तिष्क एक बात का निश्चय नहीं कर पाया, और वह यह कि उस जन्तु के दो पाँव हैं या चार? दो पाँव तो उसे बिलकुल ही साफ़-साफ़ दिखलाई पड़ रहे थे लेकिन उनके पीछे दो पाँव और भी हिलते हुए-से मालूम पड़ते थे। पहले तो वे पिछले दो पाँव अगले पाँवों से काफ़ी दूरी पर दिखाई दिये फिर न जाने कैसे अगले पाँवों के साथ आ मिले। यह व्यापार कुछ नैया की समझ में नहीं आया। उस जन्तु की हलचल कैटरपिलर (इल्ली से मिलता-जुलता एक कीड़ा) के समान थी जो चलने में पहले बदन को फैला देता है और फिर सिकोड़ लेता है।

नैया ने अपनी आँखें मूँद लीं। यदि यह केवल उसके मन की कल्पना है तो आँखें मूँदते ही सारा भ्रमजाल कट जायगा। जब उसने आँखें खोलीं तो वह दैत्याकार जन्तु गायब हो चुका था। उसका वहाँ से नाम-निशान तक मिट गया था।

वह निश्चिन्त हुई और उसने सुख की साँस ली।

'अब अच्छा मौका है; मुड़कर जङ्गल से भाग चलूँ।' उसने सोचा।

लेकिन नहीं, अभी सङ्कट टला नहीं था। जङ्गल में फिर ज़ोरों की हलचल शुरू हुई; सूखी टहनियों के टूटने और आवाज़ करते हुए किसीके चलने का आभास मिला। दूसरे ही क्षण दरख्तों के बीच में एक दूसरा जन्तु खड़ा दिखलाई पड़ा, जो पहले से भी अधिक भयावना था। उसका रङ्ग

बिलकुल काला स्याह था और अन्धेरे में उसकी आकृति साफ साफ नजर नहीं आ पाती थी। अङ्गारों की तरह चमकती हुई उसकी पीली आखें और लाठी की तरह निकली हुई दुम दिखलाई पड़ रही थीं। वह जोरों से नाक बजाता, सांस लेता और अपनी लाठीनुमा दुम को पेड़ों के तनों पर फटकारता हुआ मौत की तरह बढ़ा चला आरहा था।

और हठात् उस जन्तु ने आदमी के स्वर में गरजना शुरू कर दिया।

'मेरा झोला वापिस कर दो! वापिस कर दो, मेरा झोला वापिस कर दो!'

यह आकृति मनुष्य की तो नहीं है? ना नहीं हो सकती कदापि नहीं हो सकती। लेकिन यदि उसके कान उसे धोखा नहीं दे रहे हैं और उसने गलत नहीं सुना है तो यह स्वर खादी बिग्रा का मालूम पड़ता है। वह भयानक जन्तु खादी बिग्रा की आवाज में दहाड़ रहा था। इस मामले में मैया गलती नहीं कर सकते। भ्रम की तिलमात्र भी गुँजाइश नहीं थी। निश्चय ही वह आवाज खादी बिग्रा की ही थी।

लेकिन नहीं, यह विचार ही कितना मूर्खतापूर्ण है? कहीं उसका दिमाग तो नहीं फिर गया है?

थोड़ी देर में तो वह भयानक जन्तु चलता हुआ ठीक उसके पास आ जायगा।

वह क्या करे? भागे! भागकर जान बचाये, यही ठीक होगा। इसके सिवा बचने का और कोई रास्ता नहीं था।

वह मुड़ी और सिरपर पाँव रखकर भागी। अपने धड़ को कमर से आगे की ओर झुकाये वह हवा की तरह उड़ चली। उसने अपनी दोनों मुट्ठियाँ कसकर छाती पर रख ली थीं। आँखों को मूँदे और साँस को रोके हुए वह दौड़ रही थी। ऐसा लगता था मानो उसके पाँवों में पर लग गये हों और वह हवा में भरर उड़ी जा रही हो। उसमें स्वयंस्थ प्रवृत्ति

शक्ति आगई थी। यह विचार कि वह मौत के मुँह से बच गई है और कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है, उसमें दुगुनी शक्ति भर रहा था।

चरागाह पीछे रह गया था लेकिन वह दौड़ी ही चली गई। रुकने का नाम न लिया। सामने ही सामूहिक खेत समिति के भवन का फाटक था। अब वह उसके निकट पहुँच रही थी। असल में उसने देखा नहीं, लेकिन अपनी इन्द्रियों से अनुभव किया कि वह फाटक के समीप पहुँच गई है। उसने क्षणभर के लिए अपनी आँखें खोलीं। यदि पलभर की भी देर हो जाती तो वह बागड़ से टकरा गई होती। उस बागड़ को देखकर उसे कितनी प्रसन्नता हुई! बागड़ के खम्भे दुश्मन पर हमला कर उसकी रक्षा करने के लिए तैयार सैनिकों की तरह कतार बांधे खड़े थे। अब वह सुरक्षित थी। सङ्कट पीछे, बहुत पीछे छूट गया था

उसे खयाल ही नहीं रहा और वह दौड़ती हुई फाटक से आगे निकल गई। जब खयाल आया तो मुड़कर पीछे देखा। फाटक वह था, वहां वह लौटी; लेकिन फाटक के बीच में कोई हाथ फैलाये मानो उसे पकड़ने के लिए तैयार खड़ा था।

वह कांप उठी और ठिठक कर खड़ी रह गई।

'नैया, तुम कहां गई थीं ?'

गेरा तो नहीं है !

लेकिन गेरा यहां कहां ? जिसतरह जङ्गल में उसे स्नादी की आवाज़ सुनने का भ्रम हो गया था उसीतरह का भ्रम तो कहीं यह नहीं था ?

वह वहां से भागकर दूर जाना चाहती ही थी कि गेरा ने लपक कर उसका हाथ मज़बूती से पकड़ लिया और फिर पूछा :

'इतनी अबेर तुम कहां गई थीं ?'

उसने अपने आपको गेरा की पकड़ में से छुड़ाने का प्रयत्न किया। यह देख गेरा ने उसे अपने दोनों हाथों में उठाकर इसतरह छाती से लगा लिया जैसे कोई छोटे बच्चे को उठा लेता है।

'नैया, तुम्हें हो क्या गया है ? किसी ने डरा तो नहीं दिया है ?'

वह झुककर उसकी आंखों में देखने लगा। नैया की छाती ज़ोरों से धड़क रही थी। अभी भी उसकी आंखें फटी हुई थीं और वह उन फटी हुई आंखों से ही उसकी ओर टक लगाये देख रही थी। अभीतक उसे विश्वास नहीं हो पाया था कि वह गेरा ही है।

उसकी यह दशा देख गेरा का हृदय करुणा से ओत प्रोत हो गया और उसने स्नेहपूर्वक कहा :

'नैया, मेरी ओर देखो, अच्छी तरह देखो; मैं हूं। हां, इसीतरह देखो... देखती रहो, नैया !'

'गेरा !' अन्त में नैया के मुँह से आवाज़ निकली। उसका दिल खुशी से भर आया। उसने अपनी दोनों बाहें उसके गले में डाल दीं और नन्हीं बालिका की तरह उसकी छाती में दुबक गई।

उसे शान्त होते देर न लगी। उसका सारा भय दूर हो गया। उस छाती का आश्रय पाकर वह सबकुछ भूल गई; जङ्गल का वह डर और गेरा के प्रति अपनी नाराज़ी कुछ भी उसे याद न रहा। वह यह भी भूल गई कि दिनभर से वह उचित अवसर की तलाश में है ताकि गेरा से दो-दो बातें की जा सकें।

उसने आहिस्ते से उसे नीचे उतार कर डर का कारण पूछा :

'तुम्हें इतना किसने डरा दिया कि मुझे भी पहिचान न पाई ?'

जङ्गल में उसने जो कुछ देखा और अनुभव किया था वह सब गेरा को कह सुनाया।

'मैं इतना डर गई थी कि कुछ सुध ही न रही और कल्पना कर बैठी कि ग्वादी चिल्ला रहा है। तुमसे क्या कहूँ, एक जन्तु की आवाज़ ग्वादी की आवाज़ से हूबहू मिलती थी। वह गला फाड़-फाड़कर दहाड़ रहा था: 'मेरा झोला लौटा दो, मेरा झोला लौटा दो !' तुम आसानी से समझ सकते हो कि मैं कितना डर गई हूंगी। मेरी तो घिग्घी ही बँध गई थी।...

समझ में नहीं आता कि मेरे मन में ऐसी कल्पना क्यों उदित हुई? भोले के लिए चिल्लाते हुए ग्वादी की कल्पना करने का कोई संगत कारण मेरी समझ में नहीं आता। बड़ी अजीब बात मालूम पड़ती है।'

इसमें असंगत क्या है? कौन जाने, ग्वादी ही रहा हो! क्या तुम निश्चयपूर्वक कह सकती हो कि वह ग्वादी नहीं था!' मेरा ने मज़ाक में कहा।

'मज़ाक छोड़ो! ग्वादी हो ही कैसे सकता है? असम्भव!'

'अच्छा तो मेरी बात सुनो। इस घटना का वर्णन भूलकर भी किसीके आगे मत करना, नहीं तो सब तुम्हारी हँसी करेंगे और कहेंगे कि अच्छी डरपोक लड़की है! मुझे भी कहना पड़ता है कि तुम कैसी युवा कम्युनिस्ट हो?' मेरा ने ताना मारा।

'लेकिन तुम कहाँ रह गये थे? बैठक तो कभी की बर्खास्त हो गई।'

'मैं ज्यार्जी के साथ घर चला गया था। हम तुम्हारे पिता के बारे में बातें कर रहे थे...फिर हमें ग्वादी के मसले पर भी काफी चर्चा करनी थी। इन चर्चाओं के बाद मैं चायबाग़ान होता हुआ इधर आया।'

चायबाग़ान का नाम सुनते ही नैया का विरोधभाव जाग उठा।

'चायबाग़ान का नाम सुनकर मुझे याद हो आया कि मैं सवेरे से तुम्हारे साथ लड़ाई करने का उचित अवसर ढूँढ रही हूँ। क्या आप मेहरबानी कर यह बतलाएँगे कि आपने उससमय मुझे इतना अपमानित क्यों किया था? सारा गांव खड़ा था और आपने मुझे इसतरह हुक्म सुना दिया मानो मैं दूध-पीती बच्ची हूँ: नैया, चली जाओ अपने पिता के साथ। मुझ पर तो जैसे घड़ों पानी पड़ गया। लेकिन तुम्हें उससे क्या? अब बतलाओ, मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया था? मैं आप से जवाब तलब कर रही हूँ।'

मेरा सुबह वाली घटनाओं को याद कर अपनी हँसी न रोक सका। वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। नैया और भी जल उठी और उसने बड़ा पूरे पर पहुँचने और वहाँ पिता के साथ झगड़ा होने की कहानी भी कह सुनाई।

'मुझे बराबर आत्मसमर्पण करते देखा तो पिताजी शेर हो गये। हिटलरी फर्मान सुना दिया कि उनकी इजाजत के बिना घर में मैं पाँव बाहर नहीं निकाल सकना। निगाह पर नौकर छोड़ देने की व्यवस्था सुनाई गई। आखिर पोरिया के साथ तेरी शादी करें जालमी और लापरवाह, जो कभी अपने कामरेडों में मिली है। उसके साथ देखा है तो कत्ल कर फेंक दूँगा।' ये हैं उनके हुक्मनामे। आगा जनाब के दिमाग शरीफ में कि मुझ पर बेखबर मगर किस मुसीबत में जान फँसा दी। अब पिताजी मुझे तालों में बन्द रखना चाहते हैं।

यह तुम क्या कह रही हो?'

नरा के विस्मय का पार न रहा। पहले तो क्रोध के मारे उसका चेहरा तमतमा उठा लेकिन बाद में उसे सारी बातें असम्भव और अविश्वसनीय लगीं।

'सच? मज़ाक तो नहीं कर रही हो?' उसने परिहास के स्वर में इस तरह पूछा मानो नैया और वह सवाल जवाब का खेल खेल रहे हों (या पहेली बुझौवल कर रहे हों।) अपनी बात को हँसी में उड़ाये जाते देख नैया के तन बदन में आग लग गई। उसने तमक कर कहा

यहाँ जान पर बीत रही है तुम्हें मज़ाक की सूझी है! उस पोरिया को कच्चा पोचा मत समझना। वह एक ही छटा बदमाश है। आश्चर्य है कि उसकी हरामज़दगी अभी तक तुम्हारी निगाहों में नहीं आ पाई। उसने मेरे पिताजी को ही उलटी सीधी पट्टी नहीं पढ़ाई है वह तुम सबकी नाक में नकेल बाँधकर नचा रहा है! और तुम्हें कुछ पता ही नहीं। ये मनगढ़न्त बातें नहीं हैं। मेरे पास इसके ठोस प्रमाण मौजूद हैं। ठहरो बतलाती हूँ

उसने अपने कोट की जेब में हाथ डाला लेकिन मल्लिका के नाम लिखा आरचिल का पत्र वहाँ नहीं था। उसने एक एक कर अपनी सब जेबों की तलाशी ले डाली। उधर नरा की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। जब वह अपने आपको रोक न सका तो पूछा

'तुम ढूंढ क्या रही हो ?'

वह कुछ न बोली और झुककर दूब में अपने हाथों से कुछ टटोलने लगी। यह नयी मुसीबत कहां से आ खड़ी हुई ?

अपनी खोज जारी रखते हुए उसने कहा :

'जब तुमने मुझे अपनी बाहों में उठाया तो वह जेब में से गिर पड़ा होगा।'

लेकिन आ'रचिल पोरिया की वह उत्कृष्ट कृति कपूर की तरह हवा में अदृश्य होगई थी। उसने नेया से दियासलाई मांगी।

'पहले यह बतलाओ कि क्या ढूंढ़ रही हो, तब दूंगा।'

क्रोध से कांपते हुए स्वर में उसने जल्दी-जल्दी एलिको के प्रति आरचिल पोरिया के नीचतापूर्ण व्यवहार की, उसकी कविता और भेंट की गन्दी कहानी कह सुनाई।

युवा कम्युनिस्ट लड़कियों की ओर आँख उठाकर देखने की हिम्मत ही उस पतित कुलक की कैसे हुई ?' उसकी आँखों में शोले भड़क उठे थे।

'लेकिन नेया, लड़कियों पर डोरे डालने से तो हम उसे रोक नहीं सकते हैं ?'

'लेकिन वह उसे धोखा क्यों दे रहा है ?'

'किस आधार पर सोचती हो कि वह धोखा दे रहा है ? सम्भव है कि वह एलिको को नहीं तुम्हें ही धोखा दे रहा हो !'

'दोनो एक ही बातें हैं। कोई फर्क नहीं पड़ता। काश, तुम उस कविता को पढ़ पाते ! उसका भावार्थ बिलकुल साफ है। उसमें उसने हमारी खिल्ली उड़ाई है !...बिलकुल गन्दगी भरी पड़ी है...पता नहीं कागज़ कहाँ चला गया ? कहीं खो तो नहीं दिया ? खो गया तो मैं एलिको को क्या जवाब दूंगी !'

छोड़ो नेया, इन बातों को ! ऐसी तुकबन्दियों का महत्त्व ही क्या है ! हमारे सामने दूसरे कई महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं। तुम्हारे पिता के बारे में ही बातें करें। यह मामला उतना आसान नहीं है...

'लेकिन ज्यार्जी ने और तुमने तो पिताजी का पक्ष लिया ?'

'पक्ष इसलिए तो लिया नहीं था कि वह तुम्हारा पिता है। लेकिन तुम्हें यह किसने बतलाया कि हमने उसका पक्ष लिया था ?'

'लेकिन तुम्हारे कथनानुसार तो ज़ोसिमी इस सब के लिए जिम्मेवार है...'

'यह बिलकुल दूसरी बात है, नैया! जब मैंने सुबह की सारी घटना ज्यार्जी को सुनाई तो, जानती हो उन्होंने क्या कहा ? बोले, गोचा के पीछे किसी विरोधी का हाथ काम कर रहा है। हमें उस हाथ को तोड़ना है। सोचो, हमारे लिए यह कितने शर्म और डूब मरने की बात है कि गोचा के पीछे विरोधी का हाथ काम करता रहे और हम उसे देख भी न पायें। ज्यार्जी ने कहा, कि गोचा जैसे आदमियों के साथ बड़ी समझबूझ का व्यवहार करना चाहिये। पूरी सावधानी रखनी चाहिये अधिक नरमी के साथ, सख्ती से नहीं अधिक नरमी से पेश आना चाहिये। दो एक तख्तों के लिए गोचा से झगड़ा मोल लेना कहांतक उचित है ? मकान पूरा करने के लिए अब उसे चाहिये ही कितने ? उसको समझाकर अपने साथ ले आना बड़ा आसान है, सिर्फ हमें अपनी ओर से थोड़ी सी रियायत करना होगी, यह है ज्यार्जी का कहना और स्वय मेरा अपना भी यही विचार है। इस मामले में हम दोनो पूरीतरह एकमत हैं। मैंने ज़ोसिमी को बैठक में जो इतना आड़े हाथों लिया तो उसका भी एक कारण है। मैंने वैसा जानबूझकर किया ताकि तुम्हारे पिता पर असर डाला जा सके। ज्यार्जी ने तुम बाप बेटी में समझौता करने का जिम्मा लिया है। आशा तो है कि मामला निबट जायगा। लेकिन इतना सब करने पर भी यदि गोचा ने कहना न माना तो फिर समझ लेंगे कि वह हमारा आदमी नहीं है। तुम भी उससे इस सम्बन्ध में चर्चा करना।'

'चर्चा क्या करूँ, अपना सिर ? वह तो कुछ सुनते ही नहीं। इन दिनों

उनका स्वभाव ही न जाने कैसा हो गया है! हमेशा मरकने बैल की तरह लड़ने को उधार खाये बैठे रहते हैं। आजकल उन्हें हर चीज़ में नुक्स ही नुक्स नज़र आने लगे हैं। पहले तो मैं कुछ कहती थी तो ध्यान से मेरी बात सुनकर मान लेते थे; लेकिन अब तो सुनने को ही तैयार नहीं। बर्चा क्या करूँ और किससे करूँ? मुझे तो ऐसा लगता है कि यह सारी कारस्तानी उस मारचिल की ही है; उसी का हाथ मालूम पड़ता है। तुम मेरी बात गाँठ बाँधलो. आज नहीं तो कल मंजूर करना ही पड़ेगा कि हाँ, नैया ने ठीक कहा था...'

'मैं कहाँ अस्वीकार कर रहा हूँ, नैया? हम सभी जानते हैं कि मारचिल हम में से नहीं है, वह ग़ैर है। कुछ हदतक ग़लती मेरी भी है; मेरे ही कारण यह अबतक सारा मिल में बना हुआ है; लेकिन क्या करूँ? दूसरा कोई आदमी नहीं है, जो उसकी जगह ले सके।' साथ-साथ चलते हुए गेरा ने कहा। फिर थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद वह खिन्न स्वर में बोला :

'तुम बिलकुल ठीक कह रही हो, नैया, बिलकुल ठीक। तुम्हारा सन्देह सर्वथा निराधार नहीं है; वह उचित ही है।...हमें दूसरे सूत्रों से भी ऐसा संकेत मिला है कि पोरिया अन्दर ही अन्दर तोड़फोड़ करने में लगा है।'

थोड़ी देर तक चुपचाप चलते रहने के बाद गेरा गोबा के घर की ओर मुड़ा; यह देख नैया ने अपनी चाल धीमी कर दी।

'गेरा, मैं घर नहीं जाऊँगी।' वह फिर उत्तेजित हो उठी थी।

वह असमंजस में पड़ गया और उसकी ओर देखने लगा।

'क्या मतलब है?'

नैया मुँह से कुछ न बोली. उसने केवल अपने कन्धे इतने धीरे से उचकाये कि गेरा देख न सका।

'मैं नहीं जानती! तुम भी अजीब आदमक़ हो!'

अपनी चाल धीमी कर गेरा उसके साथ हो लिया। वह उसे कोई बड़ी ही महत्त्वपूर्ण बात कहना चाहता था, दुनिया में उससे अधिक महत्त्वपूर्ण दूसरी कोई बात नहीं थी बात उसकी जबान तक आगई थी लेकिन ओठों से बाहर नहीं निकल रही थी। वह उस गोपनीय सत्य को ज़ोर से न कह सकेगा! नैया को अपने समीप पाकर वह थोड़ा घबरा सा गया था।

लेकिन घबराने से काम नहीं चलेगा। उसे हिम्मत करना ही चाहिये। उसने किसीतरह अपना दिल कड़ा किया, फिर नैया की ओर थोड़ा सा झुकते हुए कम्पित स्वर में बोला

'नैया, तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ, बोलो सुनोगी?'

नैया की समस्त चेतना कानों में सिमट आई

क्या कहना चाहते हो गेरा?'

वह फिर चुप हो गया। उसे शब्द ढूँढे नहीं मिल रहे थे। अन्त में बड़े ही अनगढ़ ढङ्ग से उसने कहा

'सुनो, मेरे यहाँ क्यों नहीं चली आती हो मेरी हो जाओ हमेशा के लिए समझ गई न मेरा मतलब?'

और उसने उसे अपनी भुजाओं में आवेष्टित कर लिया। दोनों कुछ न बोले।

जब थोड़ा और आगे चले तो नैया ने दृढ़तापूर्वक कहा

'नहीं गेरा, ऐसा नहीं हो सकता। यह असम्भव है।'

'असम्भव क्यों है?'

'क्यों का कारण तो तुम भी '

'आखिर मैं भी तो सुनूँ '

'दूसरी सब बातें तो जाने दो लेकिन तुम्हारी अम्मां क्या कहेंगी?'

'मेरी मां तो तुम्हारी तारीफ करते नहीं थकती। दिनभर तुम्हारे नाम की ही माला जपा करती है। तुम कल्पना भी नहीं कर सकोगी नैया! हर समय मेरे पीछे पड़ी रहती है जल्दी क्यों नहीं कर लेता, अरे, अब-

तक मैं बैठी हूँ अपना घर बसाले, मैं भी तो बहू का मुँह देखलूँ। बड़ी सुशील है मेरी नैया बहू...'

नैया खिलखिला कर हँस पड़ी।

'गेरा तुम बड़े भाग्यशाली हो! बड़ी अच्छी माँ है तुम्हारी।'

वे लगभग पूरा चरागाह पार कर आये थे।

'अभी तो मैं अपनी बुआ के यहाँ जाऊँगी...लेकिन यदि पिताजी न माने और उन्होंने फिर आरचिल वाला प्रसङ्ग उठाया तो...'

आँखों की राह दोनों की दृष्टि एक दूसरे के अन्तर में जा बैठी और वे फिर मौन हो गये। और उन आँखों की मौनभाषा ने जो कथनीय था वह सब कह सुनाया।

१६

सलोमी, गोचा और तसिया का काफला एलिको की प्रकाशित खिड़की के समीप जा पहुँचा। सलोमी सबके आगे थी।

'एलिको के कमरे में रोशनी जल रही है। नैया के सिवा इतनी रात बीते उसके यहाँ और कोई हो ही नहीं सकता। तसिया जल्दी करो!' सलोमी ने कहा।

दोनों औरतों ने चाल तेज़ की। गोचा पीछे रह गया।

सलोमी दरवाज़े के पास पहुँच ही रही थी कि उसे अपने भाई की आवाज़ सुनाई दी:

'सलोमी, ठहरना ज़रा! सुनो, मुझे तुमसे कुछ कहना है।'

सलोमी ने मुड़कर देखा तो पाया कि गोचा कुछ दूरी पर ठिठका हुआ खड़ा है। अपने भाई के वहीं रुक जाने पर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ:

'अरे, तुम वहीं क्यों रुक गये? चलो, जल्दी करो! आओ!' और वह रुककर अपने भाई के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

मेरी वहां कोई ज़रूरत नहीं है। तुम्हीं काफी हो। मेरे बिना भी तुम उसे अच्छीतरह समझा सकती हो। मुझे तो सिर्फ इतना ही कहना है कि ..तुम उसे अपने ढङ्ग से समझाना तुम खुद समझदार हो और जानती ही हो, ज़रा उसे अच्छी तरह डाटना। कहना इतनी रात बीते दूसरों के घर क्या कर रही है? चल आगे हो, घर चल। लेकिन मेरे वहां होने के सम्बन्ध में उसे एक शब्द भी न कहना।'

तसिया ने यह सुना तो मारे खुशी के उछल पड़ी, जैसे उसका पुनर्जन्म ही हो गया हो! ऐसा मालूम पड़ रहा था कि गोचा शान्तिपूर्वक समझौता करने के लिए तैयार है। उसका स्वर भी बहुत ही कोमल और मीठा हो गया था। तसिया ने उचित अवसर आया जान अपनी समझदारी की घोषणा करने का निश्चय किया.

'यह सब कहने की ज़रूरत ही नहीं। मैं तो उससे सिर्फ इतना कहूँगी कि तेरे घर से भाग आने के सम्बन्ध में उन्हें कुछ मालूम ही नहीं है। वह तो यही समझे बैठे हैं कि तू घर के अन्दर ही है' यही कहना ठीक होगा।'

फिर उसने अपने पति की भुजा को थपथपाया मानो कह रही हो: 'हमें अपनी लड़की मिल गई। भगवान की बड़ी कृपा हुई। अब तुम निश्चिन्त रहो, सारी फिक चिन्ता छोड़ो।'

गोचा रह से थोड़ी दूर एक वृक्ष के तने से टिककर खड़ा हो गया।

सलोमी और तसिया सीढ़ियां चढ़कर बरामदे में पहुँचीं। न जाने क्या सोचकर वे दबे पांवों चल रही थीं। एलिको के दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने दस्तक दी।

इतनी रात बीते अपने दरवाज़े पर उन दो महिलाओं को देखकर एलिको विस्मयविमूढ़ रह गई। उसे उनका स्वागत करने और

बुलाने की भी सुध नहीं रह गई। इसलिए सलोमी और तमिया बिना बुलाये ही कमरे के अन्दर चली गई। दरवाज़े का पल्ला पकड़कर खड़ी हुई एलिको को वहीं छोड़कर वे अन्दर आगई और चारों ओर खोजपूर्ण दृष्टि से देखने लगीं। नैया वहां नहीं थी। कहीं वह उन्हें देखकर छिप तो नहीं गई है?

'लेकिन नैया कहां है? एलिको, कहां गई वह? यहां क्यों नहीं है?' सलोमी ने चिन्ता भरे स्वर में पूछा।

अब कहीं उनके आने का कारण एलिको की समझ में आया। वह बड़े असमंजस में पड़ गई: बताये या न बताये? गेरा वाली बात बतलाकर वह अपनी सहेली के लिए नयी कठिनाइयां खड़ी करना नहीं चाहती थी। फिर उन्हें क्या जवाब दे?

उसने हकलाते हुए कहा:

'कौन नैया? लेकिन आप लोगों ने मुझे किस बुरीतरह डरा दिया! अभीतक छाती धड़क रही है। नैया? हां, वह अभी थोड़ी देर पहले तक तो यहीं थी। इतना तो मुझे अच्छीतरह मालूम है कि उसे किसी बैठक में जाना था, लेकिन फिर उसने अपना विचार बदल दिया। कोई ऐसा कारण था जिसकी वजह से वह बैठक में जाना नहीं चाहती थी। वह बहुत थकी हुई थी और उसका माथा भी दुख रहा था।'

लेकिन एलिको बहाने बनाने और झूठ बोलने में इतनी पटु नहीं थी। वह बाहर भीतर एक थी। इसलिए उसकी ये मनगढ़न्त बातें एकदम समाप्त होगई और अनचाहे ही उसके मुँह से निकल पड़ा:

'लेकिन बैठक के बाद वह गेरा से बात करना चाहती थी...'

'श्-श्! चुप रहो!' गेरा का नाम सुनते ही सलोमी उछल पड़ी और उसने लपक कर अपनी हथेली से एलिको का मुँह बन्दकर दिया। फिर दौड़कर किवाड़े उढ़का दिये ताकि अन्दर की बात बाहर गोचा तक पहुँच न सके। थोड़ा शान्त हो जाने के बाद वह फिर एलिको से खोद-खोदकर पूछने लगी:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible] को यह [illegible] नहीं [illegible] है। [illegible]"

"हँ हँ, सुन लिया [illegible]" [illegible] कहा है कि इन्हें यहाँ [illegible] क्या देगी? [illegible] नहीं?" और घबराहट के [illegible] हुए [illegible] से कहा।

[illegible] को यों [illegible] देख [illegible] उसे [illegible] लगी।

"उठो, उठो, [illegible]! क्या [illegible] है [illegible] दो! यह भी कहीं [illegible] का वक्त है? कोई न कोई [illegible] ही निकलेंगे। अभी ऐसा बिगड़ ही क्या गया है कि [illegible] पड़ जाय। आखिर हमारे कामों पर यह [illegible] ऐसे समय में भी इससे काम नहीं लिया तो [illegible] व्यर्थ ही ढोती रहीं। भैया से कह देंगी कि [illegible] ... चलो, हुई छुट्टी। यह कौन ऐसी बड़ी बात है, [illegible] दर बैठ गई? भैया से कह देंगी कि [illegible] देर हो गई, अन्धेरे में [illegible]

कहेंगी कि जब हम कमरे के अन्दर पहुँचीं तो वह घोड़े बेचकर सो रही थी...हमने उसे जगाना ठीक न समझा। दिनभर की थकी-मांदी है बेचारी! सोई रहने दो। इसलिए हमने उसे जगाया नहीं। सवेरे उठकर आप ही घर चली आयेगी। हमने एलिको से कह दिया है। कह देना कि तेरी बुआ आई थी। चिन्ता करने जैसी कोई बात नहीं है। चलो, भैया, घर चलें। सुना भौजी, भैया से यों कह देंगे! सोचें तो रास्ता निकल ही आता है। मेरे खयाल में तो यही सबसे अच्छा रहेगा। सवा सोलह आने की बात है। झूठ तो बोलना पड़ेगा लेकिन हमेशा सच से काम नहीं चलता। कभी-कभी झूठ से भी काम निकालना ही पड़ता है। हां, झूठ बोलने से जो कभी किसी का बुरा होता हो तो रामदुहाई; तब कभी झूठ न बोले... अब जरा अपने इस मुँह को सीधा कर लो; क्या फटे जूते जैसा बना रखा है? तुम्हारे चेहरे से ऐसा मालूम पड़ना चाहिये कि नैया मिल गई है और तुम प्रसन्न हो। मैं भी प्रसन्न दिखने की कोशिश करूँगी। हमारी इस चाल का भैया के सात फरिश्तों को भी पता नहीं लगना चाहिये। घबराओ मत! नैया कुछ सुई तो है नहीं कि खो जाये और मिले नहीं। पाताल में से भी उसे ढूँढ़कर ले आऊँगी। अगर वह घर आजाय तो फिर उसे कहीं जाने मत देना। कम से कम रातभर तो रोके ही रखना। और जो मेरे यहां आगई—और जैसा कि उसने कहा है, आयेगी जरूर—तो मैं उससे समझ लूँगी। अब जरा ये आँसू-वाँसू पोंछ डालो और हिम्मत से उठ खड़ी हो! दुःख पड़ने पर छाती मजबूत रखना चाहिये! यही तो आदमी की खरी कसौटी का वक्त है। अब लो, जरा हँसती बोलती नजर आओ। अगर भैया को किसीतरह भनक पड़ गई कि नैया यहां नहीं है तो समझ लो फिर मुझसी बुरी कोई न होगी...'

सलोमी की व्युत्पन्न मति काम कर गई। उसने गलत नहीं सोचा था। गोचा ने सुनते ही विश्वास कर लिया। जब उसने यह सुना कि नैया अपनी सहेली के यहां आराम से, गाढ़ी नींद में सो रही है तो उसकी समस्त

दुश्चिन्ताओं का अन्त होगया। सलोमी ने नैया के मिलने और एलिरो के कमरे में उसके सोने का ऐसा हूबहू वर्णन किया था कि गोचा को उसके सच होने में ज़रा भी सन्देह नहीं रहा। उसे अपनी बहिन की कल्पना-शक्ति का कायल होना ही पड़ा।

'भगवान तुम्हें इतना ही सुख दें बहिन जितना कि आज तुमने मुझे नैया के मिल जाने की खबर सुनाकर दिया है।' उसने अपने अन्तःकरण से सलोमी की मङ्गल कामना करते हुए कहा।

धीरे धीरे बातें करते हुए वे घर की ओर लौट चले।

सलोमी को उसके घर पहुँचाने के बाद जब सड़क पर तसिया और गोचा अकेले रह गये तो तसिया का मन फिर व्याकुल हो उठा और आशङ्काओं से भर आया। कहीं गोचा ने अपनी बेटी के सम्बन्ध में कुछ और पूछ-ताछ शुरू कर दी तो, वह क्या करेगी? उसे क्या जवाब देगी? सलोमी की तरह बात बनाना और झूठ बोलना उसे आता ही नहीं था। इस फन में वह कच्ची थी। वह तो पहली ही मुठभेड़ में पस्त होजाती। उसने निश्चय किया कि वह तेज़ी से चलती हुई अपने पति से आगे निकल जाय और उसके पहले ही घर जा पहुँचे। इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं था।

पहले तो गोचा के मन में आया कि वह भी कदम बढ़ाये और अपनी पत्नी से आ मिले तथा उसके साथ बातें करता चले। लेकिन सलोमी के दमदिलासे ने उसके मन में जिन कोमल भावनाओं को जाग्रत कर दिया था वे एक एक कर विदा होरही थीं, और उसका मन फिर से सन्देह की धूप छाँह में लुका छिपी खेलने लग गया था। उसका दिल खट्टा होगया। वह खाली हाथ घर लौट रहा था! जवान लड़की को रात में अकेली एलिको के घर छोड़ना कहाँतक उचित था? उसके इस आचरण को क्या कहा जाये? उसने सारी परिस्थिति पर एकबार फिर सभी पहलुओं से विचार किया और

इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि सलोमी की बातों में कोई तथ्य नहीं, बल्कि उनसे तो नैया के आचरण के सम्बन्ध में उसका सन्देह और भी गहरा ही होता था। सब से अधिक सन्देहास्पद और वाहियात बात नैया के सोने के सम्बन्ध में थी। सलोमी ने उसकी मीठी और गाढ़ी नींद का ऐसा मनोरम चित्र खींचा था कि वह स्वयं उससे प्रभावित होगया था; लेकिन अब विचार करने पर मनगढ़न्त और झूठ मालूम पड़ रही थी।

ज़रा ध्यान से और ठण्डे दिल से सोचो तो ढोल की पोल साफ दिखाई पड़ जाती है। हाँ, यह सारा मामला ही काफी रहस्यपूर्ण और उलझनों से भरा हुआ है। एक कमरे में दो सहेलियां हैं उनमें से एक गाढ़ी नींद में सो रही है और दूसरी जाग रही है! आखिर इसका क्या मतलब होता है? यदि नैया सो रही थी तो एंजिको क्यों नहीं सो रही थी? वह क्या कर रही थी? कैसी अनोखी बात है, न कभी देखी, न कभी सुनी! जरूर सलोमी को भ्रम हुआ है। जैसा उसने कहा वैसा हो ही नहीं सकता। नैया सो नहीं रही होगी, यह बहाना किये पड़ी होगी ताकि उसकी माँ उसे घर चलने के लिए मजबूर न कर सके। यही बात ज्यादा सही मालूम पड़ती है।

अगर वह थक गई थी तो इतनी दूर चलकर दूसरों के घर क्यों गई? और यदि दूसरों के घर जासकती थी तो अपने घर लौटकर क्यों नहीं आसकती थी? और यदि अपने घर नहीं आसकती थी तो अपनी बुआ के घर तो जा ही सकती थी; वह तो कुछ अधिक दूर नहीं, केवल चार क़दम के फासले पर ही है। सामूहिक खेत समिति के भवन में, जो एक सार्वजनिक जगह है और जहाँ हरसमय सैकड़ों आदमियों का आना-जाना लगा ही रहता है, जाकर सोने का क्या कारण होसकता है? और सब जगह छोड़कर नैया ने वहाँ जाकर सोने का निश्चय क्यों किया? फिर गई भी तो चोर की तरह चुपचाप, किसी से एक शब्द तक न कहा! मुँह पर तो सब उसे 'कामरेड-कामरेड' कहते हैं लेकिन उनके मन में क्या है तो कैसे पता

चले? कोई पेट में घुसकर देखने से तो रहा।' मगर वह एनिक्रो की बची अपने परिवार वालों के साथ रहती और नैश रात विताने के लिए उसके यहां चली जाती तो कोई बात नहीं थी। लेकिन उसके तो कोई है नहीं, न आगे नाथ न पीछे पगहा! कौन देखने वाला है कि वह राह-कुराह किधर जाती है? जवान लड़की यहां जङ्गल में अकेली पड़ी रहती है! सन्देह न हो तो क्या हो? और इसका भला क्या मतलब होता है, कि पास-पड़ोस में आदमी तो ठीक गली का कुत्ता तक नहीं और उसकी खिड़की में उजेला होरहा है? और उजेला भी कैसा कि मीलभर के फासले से देख लो! सड़क पर कहीं से देखो खिड़की का उजेला दिख जायगा। आखिर आधीरात तक खिड़की में उजेला रखने का मतलब क्या होता है? उजेला देखकर किसी की उत्सुकता बढ़े और वह पता लगाने चला आये कि चलो, देखें मामला क्या है, तब क्या हो? मान लो कि वह विस्त्रा ही वहां चला आये! कोई रात ऐसी नहीं जाती जब वह कमबख्त घूम फिरकर मुआयना न करता हो। मानिक बना सारी रात घूम घूम कर देखता फिरता है!

गोचा की विचारधारा भयानकरूप धारण करती जारही थी। वह चलते चलते सड़क पर खड़ा होगया।

दूर से फाटक खुलने की आवाज़ सुनाई दी। तसिया घर पहुँच गई थी और फाटक खोलकर आँगन में प्रवेश कर रही थी। गोचा ने एक कदम आगे बढ़ाया।

'ठहरना ज़रा!' वह अपनी पत्नी को पुकारने जा ही रहा था तसिया से जा मिले और अपने मन का सन्देह उसे कह सुनाये—लेकिन दूसरे ही क्षण उसका सन्देह पत्थर की लकीर बन गया, पक्के विश्वास में परिणत होगया; और शब्द उसके गले में अटक कर रह गये।

'खिड़की का वह उजेला निश्चय ही गेरा के लिए है। पहले से दोनों ने इसतरह का इशारा तै कर लिया होगा। ''उजेला देखते ही समझ जाना

कि मैं यहां हूँ, तुम चले आना!" और वह नींद कुछ नहीं, हमारी आंखों में धूल झोंकने की एक चाल भर है।'

अपनी पत्नी के पास जाकर उसे अपने मन का सन्देह वह सुनाने की बात वह सर्वथा भूल ही गया। आगे बढ़े हुए कदम को पीछे खींच लिया, तेज़ी से मुड़ा और जिस ओर से आया था उसी ओर को चल पड़ा।

गोचा यह अच्छीतरह जानता था कि तसिया गावदी है और उसे धोखा देना बिलकुल सरल है; और यह सोचकर-उसका सन्देह और भी पक्का होगया। लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आया कि सलोमी कैसे धोखा खा गई! वह तो बड़ी चतुर है! उड़ती चिड़िया भांपती है। फिर उसकी आंखें कैसे धोखा खागई? नैया का ढोंग उसकी समझ में भी क्यों नहीं आया? कहीं सलोमी भी तो इस षड्यन्त्र में सम्मिलित नहीं है? लेकिन गोचा का मन इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हुआ।

'तसिया का विश्वास दिलाने के लिए सलोमी ने सबकुछ जानते हुए भी झूठ-मूठ के लिए विश्वास कर लिया होगा।'

वह फिर समिति भवन के सामने पहुँच गया। एलिको की खिड़की का उजेला अब भी उसीतरह दूर-दूर से दिखलाई पड़ रहा था। उसने बिलकुल ठीक ही सोचा था। वह अन्धकार में टटोलता हुआ खिड़की की ओर बढ़ा और उसके नीचे आकर खड़ा होगया। उसने आंखें फाड़-फाड़ कर अपने चारों ओर बड़े ध्यान से देखा। पास ही एक छोटा-सा झुरमुट था। वह जगह इससे भी अधिक अँधेरी और निरापद थी। वह झुरमुट के अन्दर छिपकर खड़ा होगया। जिसतरह सन्त्री दुश्मन पर झपटने के लिए तैयार खड़ा रहता है उसीतरह वह रात के अन्धेरे में घूरता हुआ सतर्क खड़ा था। उसका विश्वास दृढ़ होगया कि उसने गुत्थी सुलझा ली है, और अपने जाल को अच्छीतरह फैला दिया है। चारे के लोभ में पंछी देर-अबेर उड़ता हुआ आयेगा और जाल में फँस जायेगा: मेरा बिच्चा उसके फन्दे में फँसे बग़ैर रह ही नहीं सकता।

उसे अधिक देरतक प्रतीक्षा नहीं करना पड़ी। कोई दबे पावों बागड़ के पास आया। अहाते में एक ज़ोर का धमाका सुनाई दिया, दुश्मन बागड़ फांदकर अन्दर आया था। शिकार भी इसीतरह मौत के मुँह में कूदता है।

फिर चारों ओर निस्तब्धता छा गई। वह आंखें फाड़ फाड़ कर अन्धेरे में देखने लगा, लेकिन उसे कुछ दिखलाई नहीं दिया। दूसरे ही क्षण सीटी बजने की आवाज़ सुनाई दी। कोई मुँह से सीटी बजा रहा था। दो तीन बार सीटी बजाने के बाद किसी की छाया उसके बिलकुल निकट से, उसे छूती हुई सी निकल गई और चोर की तरह खिड़की के उजाले की ओर बढ़ने लगी।

यह छाया किसी दूसरे की नहीं, गरा बिवा की है—इस बात का गोचा को रत्तीभर भी सन्देह नहीं था।

अभी वह छाया मकान के समीप पहुँचने भी नहीं पाई थी कि खिड़की खुलने की आवाज़ सुनाई दी और अपना सिर निकालकर एलिको बाहर झांकी।

'कौन है?' उसने बहुत ही धीमे स्वर में पूछा।

'मैं हूं, क्या तुम मेरी प्रतीक्षा नहीं कर रही थी? दरवाज़ा खोलो, एलिको!'

यह स्वर सुनकर गोचा की जो हालत हुई उसके मन में जो भाव उठे वे वर्णनातीत हैं। निश्चय विमुग्धता? नहीं उसे जैसे काठ मार गया हो। उस आवाज़ को सुनकर वह सकते की-सी हालत में खड़ा रह गया।

'ज़रा ठहरिये जनाबआली अभी खोलकर बाहर आती हूँ।' एलिको ने जल्दी से जवाब दिया। उसका स्वर कठोर था। दूसरे ही क्षण वह खिड़की में से गायब होगई।

छाया फिसलती हुई सीढ़ियों के निकट पहुँची और उनपर चढ़ने लगी। क्षणभर बाद वह छाया खिड़की की राह बाहर आने वाली प्रकाशकिरणों में से होकर गुजरी। थोड़ा देर पहले गोचा के कान ने उसके मस्तिष्क को

जो अजीबोगरीब सन्देश पहुँचाया था अब उसकी आँखें उसका समर्थन कर रही थीं।

हाँ, वह आरचिन्न पोरिया था; आरचिन्न पोरिया ही; और कोई नहीं, शुद्ध आरचिन्न पोरिया; नख से शिखतक आरचिन्न पोरिया!

एलिको बाहर बरामदे में निकल आई और सीढ़ियाँ चढ़ते हुए आरचिन्न को वहीं सीढ़ियों पर ही रोक दिया।

'जी, तो क्या इरादे हैं आपके? दोनों हाथों से अप लड्डू खाना चाहते हैं? एक साथ दो-दो के पीछे पड़े हैं? मुझे और नैया को भी साथ ही समेटना चाहते हैं क्यों?' उसने धमकीभरे स्वर में पूछा।

'कौनसी नैया?' आरचिल ने दूसरी सीढ़ी चढ़ते हुए अनजान बनकर पूछा। अब उसका सिर एलिको के सीने की सीध में आगया था।

'खबरदार जो क़दम आगे बढ़ाया!' उसने डपट दिया और काग़ज़ का एक छोटा सा बक्सा उसके मुँह के सामने करती हुई बोली: 'यह तूने किसको दिया था? मुझे या नैया को? बोल!'

और उसने पूरी ताक़त से कसकर वह पेटी आरचिल के मुँह पर दे मारी। लेकिन आरचिल सिर झुकाकर वार बचा गया और पेटी नीचे सीढ़ियों पर जा गिरी।

'सुनो, एलेको, मैं तुम्हें बतलाता हूँ। तुम्हें ग़लतफ़हमी होगई है।' उसने आगे बढ़कर एलिको का हाथ पकड़ लिया।

एलिको ने झटके से हाथ छुड़ा लिया और 'ग़लत फ़हमी के बच्चे' कहकर और घुमाकर वह तमाचा रसीद किया कि आरचिल को छठी का दूध ही याद आगया होगा। तमाचा इतने ज़ोर से पड़ा था कि उसकी आवाज़ झुरमुट में खड़े गोचा के कानों में भी गूँज गई और अनायास ही उसके हाथ अपने कानों पर जापहुँचे, मानो तमाचा आरचिल को नहीं उसीको लगा हो।

'जा उस गोरा से आशनाई कर! झूठी सच्ची बातें यह कहकर उसीके कान भरता रह! खबरदार हमारी ओर आँख उगाकर देखा है तो आँखें निकाल ली जाएँगी। ठहर तो सही तेरे पाप का घड़ा भर गया है। जल्दी ही तुझे उसका फल भोगना पड़ेगा। उससमय यह सारी आशनाई निकल जायगी।'

वह कुत्ते की तरह दुम दबाकर उलटे पाँवों भाग चले जारहे आरचिल को फटकार रही थी। जब वह चला गया तो एलिको भी अपने कमरे में लौट आई। लेकिन गोचा अब भी दोनों कानों पर हाथ धरे पत्थर की मूरत बना वहीं झुरमुट में खड़ा था।

*　　　　*　　　　*

जब वह घर पहुँचा तो फाटक पर ही उस उसकी बहिन सलोमी मिली। उसे वहाँ देख गोचा तो आश्चर्यचकित ही रह गया।

'तुम कहाँ चले गये थे?' सलोमी ने मुँफलाहट भरे स्वर में अपने भाई से पूछा। 'हम यहाँ चिन्ता कर रही थीं और मैं तुम्हें ढूँढने के लिए आने ही वाली थी। पहले बेटों को ढूँढ अब बाप को ढूँढते फिरो! मैं नैया को ले आई हूँ और उसे भौजी के हवाले कर दिया है! जब हम लोग एलिको के यहाँ से लौट आये तो ऐसा मालूम पड़ता है कि वह भाग गई। एलिको ने उसे हमारे वहाँ जाने की बात बतलाई होगी और कहा होगा कि घर वाले रास्ता देख रहे हैं। बेचारी डरी कि कहीं परेशानी में न पड़ जायँ, इसलिए मेरे घर दौड़ी आई! अन्दर जाकर देखो तो सही बेचारी किसतरह घबरा उठी है! अब उससे लड़ना मत भैया! उसने ऐसा कोई काम नहीं किया है जिससे तुम्हें नीचा देखना पड़े। और तुमसे मुझे दो एक बातें और कहना हैं। अच्छीतरह कान खोलकर सुन लो गाँव वालों से झगड़ा कर तुम्हारा निबाह नहीं है भैया, सो अच्छीतरह समझ लो। कुशल इसी में है कि सामूहिक खेत समिति से सुलह कर लो और मन में से सारी विरोधभावना को निकाल फेंको। दूसरों की तरह

काम में हाथ बँटाओ, नहीं तो समझ लो कि वे तुम्हें छोड़ने वाले नहीं हैं। दुश्मन करार दे दिये जाओगे। फिर कहीं के न रहोगे। गुस्से ही गुस्से में तुमने क्या कर डाला, कुछ खबर भी है? लेकिन जो होगया सो होगया। अब आगे समझदारी से काम लो। जब जागे तभी सवेरा! गुस्से में जो बात मुँह से निकल गई, निकल गई; अब उसे ज्यादा तूल मत दो! भूल जाओ सब पुरानी बातें। नहीं तो नतीजा बहुत बुरा होगा! जिद करोगे तो आप तो चौपट होगे ही सारे घरभर को चौपट कर दोगे। हम भी न बचेंगे। तुम दिनभर अपने नये मकान में उलझे रहते हो, जैसे दुनिया में दूसरे काम हैं ही नहीं। बोलो, बुरा लगने जैसी बात है या नहीं? अब यदि वे कहते हैं तो झूठ क्या है? तुम्हीं न्याय करो: हमारे गाँव के कई सामुद्रिक किसानों के पास अच्छी झोंपड़ियाँ तक नहीं और तुम एक छोड़ दो-दो मकानों के पीछे हाथ धोकर पड़े हो, चाहे दुनिया जाये भाड़ में। यह कहाँ का न्याय है? अरे भैया, नया घर बनाना ही है तो बना लेना; लेकिन उसके लिए ऐसी जल्दी क्या पड़ी है? पानी तो नहीं बरस रहा है। जब वक्त आयेगा तो कोई तुम्हें इन्कार करने वाला नहीं; तुम्हारा जो हक़ है वह तुम्हें भी मिलेगा। वक्तसमय जो चीज़ माँगोगे दी जायगी। तब मजे से घर बना लेना। और तुम्हें चाहिये ही क्या? घर बनाने का ऐसा कोई मुहूर्त्त तो चूका नहीं जारहा है!

गोचा पिटे हुए लड़के की तरह सिर झुकाये सुनता रहा। ऐसा लगता था मानो वह कान से ही नहीं अपनी शरीर के रोएँ-रोएँ से सुन रहा हो। सुनने में इतना तल्लीन होगया था कि मूर्ति की तरह चुपचाप खड़ा था। न हिलता था, न डुलता था। आँखों में एक अजीब-सी चमक आगई थी और अपनी झबराली भौंहों के नीचे से वह सलोमी के चेहरे की ओर टक लगाये देख रहा था।

उसका ऐसा आचरण सलोमी के लिए सर्वथा नया था। वह घबरा गई। चुप्पी और स्थिरता तथा गोचा परस्पर विरोधी बातें थीं।

'तुम अपने आपे में नहीं मालूम पड़ते हो भैया! मुंह सीये क्या खड़े हो! कुछ बोलो तो सही...तुम्हें हो क्या गया है?'

वह चुप खड़ा रहा।

'तुम कहां चले गये थे? क्या मुझे इतना भी नहीं बतलाओगे?'

फिर भी कोई जवाब नहीं।

'जाओ, घर में जाकर सो जाओ। मालूम पड़ता है कि तुम थक गये हो। तुम्हें आराम करना चाहिये। नैया के लिए तुम्हें सिरदर्द मोल लेने की ज़रूरत नहीं है भैया। वह तुम्हारी मदद के बिना ही अपना जीवन सुखी बना लेगी। बेकार की बातों के लिए चिन्ता मत करो। अफसोस करने की ज़रूरत नहीं है। याद है, पिताजी भी मेरी शादी अपने मनपसन्द लड़के के साथ करना चाहते थे। मैं जिस चाहती थी उसके साथ मेरी शादी करने को राज़ी नहीं होते थे। पर आखिर में क्या हुआ? मैं अपने मन का ही करके रही न?.. भैया जिन्दगी छोटी-छोटी बातों को लेकर परेशान होने के लिए नहीं है, हमारे आगे बड़े-बड़े काम पड़े हैं और उन्हें पूरा करने में हमें अपनी ओर से हाथ बँटाना है, समझे!'

गोचा ने अपने एक पांव का बोझा दूसरे पांव पर किया, फिर कपड़ों के अन्दर से हाथ बाहर निकालकर अपनी बहिन के कन्धे पर रख दिया। उसका हाथ आन्तरिक उद्वेग के परिणामस्वरूप कांप रहा था। यह देख सलोमी चिन्तित हो उठी।

'तुम्हारी तबियत तो खराब नहीं है भैया? हाथ कांप रहा है, जैसे जूड़ी चढ़ आई हो! चलो, घर में चलें।'

वह उसके अंग का छोर पकड़कर अन्दर अहाते की ओर ले ही जा रही थी कि गोचा ने उसे रोक दिया और विपरीत दिशा की ओर बढ़ते हुए बोला:

'चलो, बहिन, तुम्हें तुम्हारे घरतक पहुँचा आऊँ...मुझे जूड़ी वूड़ी कुछ नहीं...पर तुम चुप मत रहो सलोमी, बोलती चलो। कुछ भी बोलो पर चुप मत रहो। सच झूठ जो तुम्हारे जी में आये कहती जाओ। मैं सुनना चाहता हूँ। मुझे तुम्हारा बोलना अच्छा लग रहा है...मैं क्या बोलूँ? मेरे पास तो इस एक बात के सिवा कहने के लिए कुछ है ही नहीं कि तुम सच कहती हो। शायद दोष मेरा ही है।' उसने भर्राये हुए स्वर में धीरे से कहा और सलोमी के कन्धे पर हाथ रखकर उसे उसके घर की ओर ले चला।

* * *

आरचिल पोरिया गोचा के घर के सामने होकर आरा मिल जारहा था। अभी सवेरा नहीं हुआ था। सूरज के उगने में अभी काफी देर थी। गोचा अपने पुराने मकान के सायबान में लकड़ी के एक छोटे से टुकड़े पर बैठा कुल्हाड़ा घिसकर धार कर रहा था। उसने अपने दोनों घुटनों के बीच लकड़ी की चौखट में जड़ा हुआ एक 'घिसोड़ा' (वह पत्थर जिसपर घिसकर औजारों की धार बनाई जाती है, सिल्ली) मजबूती से थाम रखा था। उसके सामने पानी का एक बर्तन रखा था।

आरचिल गोचा से मिलना तो चाहता था; लेकिन यह प्रकट नहीं करना चाहता था कि वह जानबूझकर मिलने आया है। अपनी मुलाकात को वह आकस्मिक रूप देना चाहता था। इससमय आमतौर पर गोचा या तो बगीचे में कुछ करता हुआ या फिर अपने अधूरे मकान में ठोका-पीटी करता हुआ पाया जाता था। इसलिए आरचिल ने सायबान की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा कि वहां कौन है और क्या कर रहा है। पहले तो वह गोचा के मकान के सामने होकर आगे निकल गया; लेकिन थोड़ी दूर जाने के बाद लौट पड़ा। फाटक के सामने आकर उसने एकबार पुराने मकान की ओर और दूसरी बार नये मकान की ओर दृष्टि डाली।

ठीक इसीसमय गोचा ने घिपोड़े पर पानी डालने के लिए बर्तन की ओर हाथ बढ़ाया और अपनी दृष्टि पत्थर स हटाकर ऊपर की ओर देखा। उसने आरचिल को देखा दोनों की निगाहें चार हुई और आरचिल खड़ा होगया।

पिछली रात की घटनाओं के बाद और अपनी आखों से सबकुछ देख लेने पर गोचा आरचिल से भाषण करना तो दरकिनार उसकी शक्ल तक देखना नहीं चाहता था।

उसने मट बर्तन को यथास्थान रख दिया और आखों को सिल की ओर लगाये बड़े मनोयोगपूर्वक अपने काम में लग गया। उसने ऐसा प्रकट किया मानो आरचिल तो ठीक यहां आरचिल की हवा ही न हो। लेकिन साथ ही वह अपनी झबराली भौहों के नीचे से चोरी चोरी आरचिल की ओर देखता भी जाता था। मान लो कि यह कम्बख्त आगन में चला आये तो वह क्या करेगा? यदि गोचा से यह सवाल पूछा जाता तो वह भी इसका उत्तर नहीं दे सकता था। क्योंकि आरचिल के प्रति रात वाली घटना के बाद उसके हृदय में अपार घृणा उत्पन्न होगई थी और यह बतलाना मुश्किल था कि उसे अपने आंगन में पाकर वह क्या करता?

आरचिल ने सोचा कि गोचा ने मुझे देख तो लिया है लेकिन जान बूझकर अनजान बन रहा है। इसका कोई कारण उसकी समझ में नहीं आया। थोड़ी देरतक सोचने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा कि नहीं, ऐसा नहीं होसकता। सम्भव है कि उसने मुझे देखा ही न हो। गोचा मुझे देखकर मुँह फिरा ले यह बिलकुल असम्भव है।

वह मुस्कराया और धीरे से सीटी बजाने लगा। ठीक इसीतरह की सीटी बजाकर पिछली रात उसने एलिको को बुलाया था।

नम्बर एक का, छँटा हुआ शोहदा है बेशरम का हौसला तो देखो, मटी बजा रहा है! गोचा ने मुँह बिगाड़कर मन ही मन इसतरह कहा मानो कड़वा नीम पी रहा हो। इस खयाल से कि किसी ने सीटी बजाई

है वह अपने दिमाग़ से झाड़-पोंछ कर निकाल फेंकना चाहता था, इसलिए एकदम ऊँचे स्वर में पुकार उठा :

'नैया की माँ, अरी ओ नैया की माँ! सुनती हो, ज़रा पानी दे जाना!'

फाटक की ओर बिना देखे ही वह उठ खड़ा हुआ और कुल्हाड़ा अपने हाथ में थामे हुए बरामदे में चला आया।

'कहीं यह बहरा तो नहीं होगया है!' आरचिल ने विस्मित होकर सोचा और जोर से आवाज़ दी :

'गोचा!'

अब तो सुने बिना कोई चारा नहीं था। गोचा ने सुन लिया लेकिन वैसा ही गूँगा और बहरा बना रहा। उसने मुड़कर देखा तक नहीं और अपने मजबूत कन्धों को झुलाता-हिलाता मकान के अन्दर चला गया।

अब तो कोई सन्देह ही नहीं रह गया था : गोचा किसी बात को लेकर अवश्य उससे नाराज़ होगया है और इसीलिए मिलना-बोलना नहीं चाहता है।

आरचिल दुखी मान गया।

'गोचा की नाराज़ी पट्टियों को लेकर ही होनी चाहिये। वह कहते-कहते तङ्ग आगया है और मैं अभीतक देने का प्रबन्ध नहीं कर पाया हूँ। बस, यही कारण होना चाहिये।' आरचिल ने सोच विचारकर गोचा के इस व्यवहार का सङ्गत कारण ढूँढ निकाला और यों अपने मन का समाधान कर लिया। इस समाधान के कारण उसके मन से अपमान का भाव तो जाता रहा लेकिन अब वहां एक दूसरी ही चिन्ता आ बैठी थी।

यह गोचा महा अड़ियलटट्टू है! इसके भेजे में अक़ल तो है ही नहीं, भुस भरा है! जिस बात पर अड़ जायगा फिर उससे टलने का नाम न लेगा! मुँह से भला-बुरा कुछ न कहेगा लेकिन आरचिल के समस्त उपकारों को ठोकर मार देगा। आगा पीछा कुछ न देखेगा। बस, किसी बात की धुन सवार होनी चाहिये। और इसनमय गोचा का हाथ से निकल जाना

ठीक ऐसा ही होगा जैसा कि भूखे के सामने से भरी थाली का खिंच जाना। आज जबकि सारा मामला करीब करीब निपटने को ही है गोचा का रूठ जाना हँसी मजाक नहीं! केवल नैया ही नहीं उसे अपने सर्वस्व से भी हाथ धोना पड़ेगा नया मकान खेत और गाड़ी और वे सब न्यामतें, जिन्हें भविष्य में प्राप्त करने के लिए उसने गोचा पर दांत गड़ा रखे हैं—सबकुछ हाथ से निकल जायगा।

अब उसे एक मिनिट की भी देर नहीं करना चाहिये।

पहले भी वह एक नहीं अनेकबार इसतरह की विषम परिस्थितियों को सही सलामत पार कर चुका था। उसे अपनी बुद्धि और चतुराई पर पूरा भरोसा था और उसका विश्वास था कि इसबार भी वह चुटकी बजाते कठिनाई का हल ढूँढ़ निकालेगा।

गोचा को राजी करने के लिए पुड़िये कैसे प्राप्त किये जायँ और हारती हुई बाजी को किसतरह जीता जाय, यह सोचता हुआ वह धीरे धीरे आरा मिल की ओर जाने लगा।

आरा मिल के समीप पहुँचकर वह उछल पड़ा! उसका दिमाग बड़ी दूर की कौड़ी लाया था। खुशी से सराबोर होकर उसने कहा

'वाह मेरे शेर अब क्या कहने हैं? मार लिया साले मूँजी को। आबाद रहे हमारा खादी! जबतक वह जिन्दा है फिक्र की कोई बात नहीं। पुड़िये क्या वह सारा कारखाना ढोकर ले जा सकता है। अब एक मकान क्या गोचा चाहे तो सात मकान खड़े कर सकता है'

वह तेजी से घर की ओर लौटा। खादी के यहां जाने से पहले उसे प्रसन्न करने के लिए कुछ भेंट पूजा ले जाना जरूरी थी।

*　　　　*　　　　*

आरचिल पारिया अभी पहला मोड़तक पहुँच भी नहीं पाया था कि गोचा के घर के सामनेवाली सड़क पर पार्टी का सङ्गठनकर्ता ज्यार्जी आता

दिखलाई पड़ा। वह एक छोटा फौजी कोट पहने हुए था, उसने अपने सिरपर फेंटा बांध रखा था और कन्धे पर लम्बे दस्ते की एक कुल्हाड़ी बन्दूक की तरह लिये हुए था।

ज्यार्जी पूरे आत्मविश्वास के साथ दृढ़तापूर्वक कदम धरता हुआ चला आरहा था। उसके रङ्ग-ढङ्ग से ऐसा मालूम पड़ता था मानो कोई सूरमा दुश्मन के क़िले पर हमला करने के लिए बढ़ा चला आरहा है और उसे फतह करके ही रहेगा। किसी भी सयोग में अपने पांव पीछे नहीं हटायेगा।

एक सधे हुए सैनिक की ही तरह वह आंखें सिकोड़े हुए गोचा के मकान की ओर निर्निमेष दृष्टि से देख रहा था, मानो निशाना साध रहा हो।

२०

ग्वादी ने जब आरचिल को अपने आंगन में खड़ा देखा तो वह संज्ञा-शून्य-सा देखता ही रह गया। इतने सवेरे उसे अपने आंगन में देखने की तो उसने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी।

इससमय ग्वादी घर पर अकेला था। बच्चे स्कूल चले गये थे। वह स्वयं भी जङ्गल में काम पर जाने की तैयारी कर रहा था। ठीक उसी-समय आरचिल आ धमका। उसका आगमन इतना अप्रत्याशित था कि ग्वादी चकित-सा, विस्मित-सा देखता ही रह गया।

यदि उसे भूत या प्रेत दिखलाई दे जाता तो भी वह इतना चकित न होता जितना कि इससमय आरचिल को देखकर हुआ था। आरचिल, हां जीता जागता आरचिल ही उसके आंगन में खड़ा था।

पिछली रात ग्वादी बड़ी बेचैनी के साथ बिस्तरे पर पड़ा जागता रहा। उसे नींद नहीं आरही थी। उसे आरचिल से बदला लेने का कोई सन्तोष-जनक ढङ्ग खोजे नहीं मिल रहा था। एक के बाद एक वह कई तरह की

दण्ड व्यवस्थाओं का आविष्कार करता रहा। हर नयी दण्ड व्यवस्था अपनी पिछली दण्ड-व्यवस्था से कहीं अधिक भयानक और कष्टदायी होती थी। उसने एक दो नहीं पूरे दसबार पोरिया को जानली और हरवार उसे तड़प तड़पा कर मारा और तब कहीं जाकर उसका क्रोध शान्त हुआ। और जब उसका क्रोध शान्त हो गया, वह अपना प्रतिशोध ले चुका तभी उसे नींद आई, उससे पहले नहीं।

सबसे पहले उसने आरचिल के गले में फन्दा डालकर उसे फाँसी लटकाया। यह काम उसने बड़ी ही चतुराई और सफाई से किया। आरचिल पोरिया अच्छा खासा पहलवान पट्ठा था। शक्ति से उसे पराजित करना ग्वाद्री के बल-बूते के बाहर था इसलिए उसने दाव पेंच से काम लिया।

'मैक्सिम ने तुम्हारे लिए कुछ और सामान भेजा है। मैंने उसे जङ्गल में एक पेड़ पर छिपाकर रख दिया है। मेरे साथ चलकर तुम अपना सामान ले आओ।' आरचिल को चकमा देने के लिए यह बात काफी थी।

तीर सीधा निशाने पर जाकर लगा। सुनते ही आरचिल की आँखों में चमक आ गई और वह सीधा ग्वाद्री के साथ हो लिया, क्षणभर की भी देर न की। ग्वाद्री उसे जङ्गल में उस पेड़ के नीचे ले गया जहाँ दिन में भोजन पर लेटकर उसने आरचिल के चोरी के माल की हिफाजत की थी। वहाँ पहुँचकर वह बन्दर की तरह फुर्ती से पेड़ पर चढ़ गया। अपनी कमर में उसने फन्देवाली एक रस्सी आरचिल की निगाह बचाकर लपेट ली थी। पेड़ पर चढ़कर वह एक मजबूत डाली पर बैठ गया और कमर से रस्सी निकाली। आरचिल मुँह उठाये ऊपर देख रहा था। ग्वाद्री ने पलक झँपाते ऊपर से फन्दा आरचिल के गले में डाल दिया और दोनों हाथों से रस्सी को खींचने लगा। वह इसतरह खींचने लगा मानो कुएँ के अन्दर से भरा हुआ घड़ा खींच रहा हो। फन्दे में कसे आरचिल को वह

ऊपर और भी ऊपर खींचता ही चला गया। आरचिल के मुँह से चीख भी न निकलने पाई और वह अधर में झूलने लगा। उसका दम घुटने लगा। वह अपने हाथ हिलाने और पाँव पछाड़ने लगा। उसका सिर एक ओर को लटक गया। फन्दा कस गया था और उसके प्राणपखेरु उड़ चुके थे। ग्वादी ने रस्सी का अपनेवाला सिरा कसकर एक टहनी के साथ बाँध दिया और प्रसन्न मन से अपने दुश्मन के लटकते हुए शव को देखने लगा। उस फाँसी पानेवाले की जबान बाहर निकल आई थी और मुँह के एक कोने से झाग गिरने लगे थे। यह देख ग्वादी की खुशी का ठिकाना न रहा। उसे अपने चीकू याद हो आये, जिन्हें आरचिल और उसके साथियों ने लुटेरों की तरह छीन लाया था। चीकू की याद आते ही वह 'हसन बेगुरी' का गीत गाने लगा। इससमय उसके स्वर में विषाद नहीं आन्तरिक उल्लास भरा था।

'गाओ, मेरे लाड़ले, तुम भी गाओ, मेरे स्वर में स्वर मिलाओ तभी तुम्हें छोड़ूंगा!' उसने पुकार कर कहा और खिलखिला पड़ा। लेकिन चोरियां तो अब अनन्त संगीत के लोक में ही जा पहुँचा था। वह क्या गाता?

ग्वादी अपनी इस कल्पना में इतना तल्लीन होगया कि यह उसके लिए कोरी कल्पना नहीं रही बल्कि एक वास्तविकता बन गई। और यही वजह थी कि वह हसन बेगुरी का गीत अपने विचारों में ही नहीं वास्तविकता में भी गा रहा था। लेकिन दूसरे ही क्षण वह एकदम चुप होगया। आवाज़ सुनकर बच्चों की नींद खुल जाने का अन्देशा जो था।

आरचिल को उसने बाक़ायदा फांसी पर लटका दिया था लेकिन फिर भी उसकी आत्मा को सन्तोष नहीं हुआ। उसे लग रहा था, कि अभी दुश्मन का पूरीतरह नाश नहीं हुआ है।

उसने निश्चय किया कि दुबारा आरचिल की जान लेनी चाहिये।

इसबार वह आरचिल को तेज़ी से बहने वाली एक बड़ी और गहरी

नदी के किनारे ले गया। भुलावा देने के लिए वही पुराना आजमाया हुआ नुस्खा था।

'तुम्हारे दोस्तों ने शहर से तुम्हारे लिए कुछ सामान भेजा है और मुझ से कहा है कि ये चीज़ें तुम्हें ऐसी जगह ले जाकर दूँ, जहां कोई देख न सके।...'

वे नदी के किनारे-किनारे चले आ रहे थे। ग्वादी अवसर और स्थान की ताक में था। एक ऊँचे कूह पर पहुँचते ही उसने पोरिया को ज़ोर से धक्का दिया। आरचिल लोट-पोट होता हुआ सीधा नदी की धारा में जा गिरा।

'चीज़ें नदी की पेंदी में छिपाकर रखी है, डुबकी लगाकर निकाल लाओ।' उसने पुकार कर कहा।

लेकिन आरचिल भी अच्छा तैराक था। वह सधे हुए बाजुओं से पानी काटने लगा। वह ग्वादी की ओर इस तरह देखने लगा मानो कच्चा ही चबा जायगा। यदि किनारे से आ लगा तो खैर नहीं। ग्वादी उसे कभी पानी से बाहर नहीं निकलने देगा।

'तुम खाली हाथ ऊपर क्यों आये? अपना माल निकाल लाओ!' ग्वादी भी आग बबूला हो गया। उसने एक बड़ी सी शिला उठाई और आरचिल के सिर पर दे मारी और चिल्लाया :

'अबे सूअर के बच्चे, गोता लगाकर चीज़ें निकालता है या नहीं?'

पोरिया का माथा कच्चे कद्दू की तरह फट गया। अन्दर से भेजा बाहर निकल आया। दूसरे ही क्षण आरचिल पानी में डूब गया और सतह पर दिमाग के गूदे की एक लम्बी पतली सी रेखा के सिवा कुछ न रह गया। और थोड़ी ही देर में लहरें उस रेखा को भी बहाले गईं, अब वहां कुछ न था।

इस बार ग्वादी का क्रोध थोड़ा शान्त हुआ। उसने अपना दुश्मन का सिर कुचल दिया था। उसने मुक्ति की सांस ली और करवट बदल कर लेट

रहा। लेकिन थोड़ी ही देर बाद वह फिर सोच-विचार में पड़ गया और उसका दिल आशङ्का से भर गया :

'कौन जाने दिमाग़ का ज़रा-सा हिस्सा खोपड़े के किसी कोने में उलझा रह गया हो और वह पानी में से बाहर निकल आये ? खतरा मोल लेना अच्छा नहीं। आग की एक चिनगारी सारे जङ्गल को जलादेने के लिए काफी होती है। नहीं, जहांतक अपने हाथों से उसके टुकड़े-टुकड़े कर ठिकाने न लगादूँ मुझे चैन नहीं पड़ेगा।'

सब से पहले छुरी पर धार करना जरूरी था। उसने अँगुली से छू कर इत्मिनान कर लिया कि धार अच्छी बन गई है। फिर हाथ में छुरी लेकर वह दुश्मन की टोह में खड़ा होगया। आमना-सामना होते ही छुरी उसकी छाती के पार कर देगा! उसे ज़्यादा देरतक प्रतीक्षा न करना पड़ी। शिकार खुद ही चला आया। मारचिन उसके दरवाज़े पर खड़ा था। ज़रूर किसी मतलब से आया है! जिस तरह चीता हाथी पर झपटता है ग्वादी अपने दुश्मन पर झपट पड़ा और उसे धकेलता हुआ झोंपड़ी के अन्दर ले आया। पोरिशा की तो घिग्घी ही बँध गई थी।

अपने दुश्मन की घबराहट से ग्वादी ने ज़रूर पूरा-पूरा लाभ उठाया। एक लात्ती मारकर उसे जमीन पर इस तरह गिरा दिया मानो बकरा हो। फिर छाती पर चढ़कर सब से पहले गला रेता और खींचकर 'सचाक्'-से वह हाथ मारा की छुरी कलेजे के ठेठ आर-पार निकल गई। किसीतरह का सन्देह न रह जाय इसलिए ग्वादी ने मारचिन की छाती में सीधे-टेढ़े कई वार किये। खून का फव्वारा छूटने लगा। गले और छाती से खून की नदियाँ बह चलीं। ग्वादी का चेहरा, उसके हाथ और कपड़े खून से सन गये...दुश्मन का काम तमाम होगया था। मारचिन बकरे की मौत मारा गया था इसमें अब सन्देह की ज़रा भी गुंजाइश नहीं थी।

मारचिन कभी उठ न सकेगा; उसका गला रेता जाचुका था; उसकी

छाती में छुरी के घाव थे, उसके बदन से खून की अन्तिम बूँद तक निकल आई थी।)

फिर भी ग्यादी को सन्तोष नहीं हुआ। उसने उसके छोटे छोटे टुकड़े काटकर थैले में भर लिये। यह वही थैला था जिसमें वह 'मार्चिल' के चोरी का माल भरकर शहर से लाया था। थैला सारा भर गया। बड़ी मुश्किल से उसने थैले का मुँह बाँधा। थैले को पीठ पर उठाकर वह घने जंगल में जा पहुँचा। थैला काफी भारी था। वजन के कारण उसकी कमर दोहरी हुई जा रही थी। 'मर कर भी मेरी पीठ पर सवार है कम्बख्त! इतना बोझा तो उसके चोरी के माल में भी नहीं था। परन्तु उसने हिम्मत न हारी। थैले को उठाये जङ्गल में पहुँच ही गया।

रात अन्धेरी थी। और जङ्गल में तो इतना अन्धेरा था कि हाथ को हाथ तक नहीं दिखाई दे रहा था। उसने बोरा जमीन पर दे मारा और भेड़ियों को आवाज दे-दे कर बुलाने लगा। 'भेड़ियो मामो! भूखे भेड़ियो, मामो' चारों ओर से भूखे भेड़िये दौड़ आये। अन्धेरी रात में उनकी लाल लाल क्रूर आँखें अङ्गारों की तरह चमक रही थीं। माँस की गन्ध पाते ही वे दाँत निकालकर गुर्राने लगे।

वह बियाबान जङ्गल में रात के समय अकेला भूखे भेड़ियों से घिरा हुआ खड़ा था और भेड़िये उससे कह रहे थे

'मामो, अपने थैले का मांस हमें खिलाओ। तुम उसे ढोकर कहाँ लिये जा रहे हो?'

उसने हरएक भेड़िये के आगे मांस का एक एक टुकड़ा फेंक दिया। यह भी एक चमत्कार ही समझना चाहिये कि थैले में जितने टुकड़े थे भेड़िये भी उतने ही थे, न एक कम, न एक ज्यादा।

छुट्टी हुई! धरती पर से एक पापी कम हुआ!

भेड़िये अपने मजबूत और नुकीले दाँतों से नीच हड्डियों को चबाने लगे। हड्डियाँ चबाने की आवाज सारे जङ्गल में गूँज गई! भेड़िये पूछ

चटोरे तो थे नहीं। उन्हें तो पेट भरने से मतलब था। मांस, हड्डे, चमड़ी, अँतड़ी सबकुछ उनके लिए एक से थे! आरचिल को यों भेड़ियों की जठराग्नि में प्रवेश करते देख ग्वादी को परमसन्तोष और आनन्द का अनुभव हुआ। वह मंत्र-मुग्ध-सा भेड़ियों के मुँह चलाने की आवाज़ सुनता रहा। अपने जीवन में उसने इतनी अच्छी ध्वनि इससे पहले कभी नहीं सुनी थी। जब भेड़िये सबकुछ खा गये तो उन्होंने फिर ग्वादी को घेर लिया: लाओ, लाओ! और लाओ! वह उन्हें और भी बड़ी खुशी से खिलाता लेकिन अब थैले में कुछ नहीं था। वह खाली होगया था।

स्वयं ग्वादी ने भी यह कभी नहीं सोचा था कि वह इसतरह का पुरुषार्थ कर सकता है। इतनी शक्ति उसमें कहाँ से आ गई थी? सारी बातें उसने कितनी चतुरता से सोच निकाली थीं और सारा काम कितनी फुर्ती और सफाई से सम्पन्न किया था। और उसका क्रोध और उसके हृदय की वह कठोरता! आरचिल कोई कुम्हड़ बतिया नहीं था, आदमी था, और आदमी भी ऐसा जो पांच को मार कर मरे। लेकिन ग्वादी ने उसे भूस भरे थैले की तरह उठाया और दे मारा।

या फिर ग्वादी बकरे की तरह तो नहीं था, जो अपनी प्रच्छन्न शक्ति से स्वयं ही अनजान रहता है? बकरा भी कुछ कम चालाक नहीं होता। कोई बात उसके दिमाग़ में जमना चाहिये, फिर उसकी चालाकी देखते ही बनती है। तब उसे कोई रोक नहीं सकता। ग्वादी के भी यही हाल थे। आरचिल पोरिया जैसे पहलवान की जब तक मन भर न जाय, अनगिनत उपायों के द्वारा रात भर हत्या करते रहने की अपार शक्ति उसमें विद्यमान थी।

अब आरचिल पोरिया का नाम ही मिट गया था; ग्वादी ने अपने आप को उससे सदा के लिए मुक्त कर लिया था।

आरचिल का खतरा हो चुका था।

वह आराम से सो गया। एक बार भी उसे आरचिल का खयाल नहीं

आया। अपने मन पर लगी आरचिन पोरिया की कालिख को उसने खुरच-कर इसतरह साफ़कर डाला था कि सपने में भी उसे आरचिल दिखाई न दिया।

दूसरे दिन सवेरे वह बर्दगुनिया से भी पहले उठ बैठा। उसे पूरी नींद लेने का अवसर नहीं मिला था लेकिन फिर भी उसका शरीर चिड़िया की तरह हलका और फुर्तीला हो रहा था। आंख खुलते ही वह बिस्तरे पर से उठ खड़ा हुआ। उसने अपने अन्दर एक नई शक्ति और उत्साह का अनुभव किया। उसके मस्तिष्क में एक नई तरह की ताज़गी थी और उसके मन में नई तरह के असाधारण विचार और योजनाएँ मूर्तरूप ले रही थी।

उसने जल्दी से कपड़े पहिने और घर गिरस्ती के छोटे मोटे कामों में इसतरह लग गया मानो उमर भर यही करता रहा हो।

उसने बकरी को दूहा, चूल्हा जलाया और मक्का की रोटियां सेक डालीं।

बच्चे जागे तो अपने पिताकी ओर आंखें फाड़े मुँह बाये देखते ही रह गये। कोहनी तक आस्तीनें चढ़ाये घर में दौड़-दौड़ कर काम करनेवाला यह व्यक्ति उनका पिता ही है या कोई और?

उस दिन बर्दगुनिया के लिए कोई काम नहीं बचा था। ग्वादी दूध निथारने के लिए पत्तियाँ भी तोड़ लाया था।

लेकिन बच्चों को सबसे अधिक आश्चर्य तो अपने पिता की चुप्पी पर हुआ। ग्वादी इसतरह चुप था मानो उसके मुंह में बताशे भरे हों। वह चुपचाप, झुकाये, अत्यन्त मनोयोगपूर्वक घर के कामों में लगा था, सिर उठा कर देखने तक की फुर्सत उसे नहीं थी। हमेशा की तरह आज न तो वह बर्दगुनिया से बोला, न चिरिमी से विनोद किया और न स्नेहपूर्वक उसके माथे पर ही हाथ फेरा। नाराज़ तो वह मालूम नहीं पड़ रहा था, रङ्ग-ढङ्ग से तो यही पता लगता था कि दद्दू आज बड़े प्रसन्न हैं। बहुत प्रयत्न

करने पर भी ग्वादी के आज के अस्वाभाविक आचरण का कारण बच्चों को ढूँढ़े न मिला।

बदेंगुनिया, जो उन सब में होशियार था और दुनियादारी को थोड़ा बहुत समझने लगा था, अपने पिता के इस व्यवहार में मन ही मन आशङ्कित हो उठा और सशङ्कदृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। उसे डर था कि दद्दा ने जिसतरह कल बकरी के बच्चे के साथ जबर्दस्ती की कहीं वैसी ही कोई बात आज भी तो करने न जा रहा हो।

लेकिन बदेंगुनियों की यह आशङ्का निर्मूल साबित हुई। ग्वादी के मन में इसतरह की कोई बात हो नहीं थी।

लेकिन चिरिमी ने एक सवाल पूछकर अपने पिता के सारे परिश्रम पर लगभग पानी ही फेर दिया था।

ग्वादी ने बच्चों के हाथ मुँह धुलाकर उन्हें एक लम्बी मेज़ के आगे अनुक्रम से बैठा दिया। फिर हर बच्चे के सामने गरम दूध की एक तश्तरी रख दी। उस तश्तरी में मक्का की रोटी के टुकड़े भी चूर दिये गये थे। तश्तरी सामने देख कर चिरमी चौंक पड़ा और आँखें नचाता हुआ अपने दाएँ-बाएँ इसतरह देखने लगा मानो किसी को खोज रहा हो।

'लेकिन मरियम मौसी कहाँ है?' उसने अपने पिता की ओर देखा और डरते-डरते पूछा। उसे विश्वास ही नहीं होरहा था कि सवेरे-सवेरे दूध रोटी खिलाने वाला व्यक्ति मरियम मौसी नहीं उसका पिता ग्वादी ही है। वह तो यही समझ रहा था कि मरियम मौसी ने ही दूध-रोटी का कटोरा सामने रख दिया है।

चिरिमी की बात सुनकर उसके भाइयों को भी लगा कि दद्दा सचमुच मरियम मौसी की ही तरह घर का काम कर रहे हैं। सुबह-कभी-जभी फुर्सत मिलते ही मरियम मौसी ग्वादी के यहाँ दौड़ी चली आती थी और सब विन-घरनी के घर की साफ-सफाई कर इसीतरह बच्चों के लिए गरम नाश्ता तैयार कर देती थी। सब भाइयों में चिरिमी ही उसका सब से

अधिक लाडला था और वह उसका विशेष ख्याल रखती थी। कभी कभी वह उसे किंडर गार्टेन भी पहुँचा आती थी। इसलिए चिरिमी ने सवेरे उठते ही जब आज सामने कटोरी में गरमागरम दूध, रोटी देखी तो सहज ही सोचा कि आज भी यह प्रबन्ध मरियम मौसी ने ही बनाया है।

चिरिमी के कथन की सरलता को नन्दी ने भी महसूस किया। सचमुच वह घर के काम में मरियम की ही अनुसरण कर रहा था।

वह लज्जित हो उठा।

'धरती में से तो माई निकली ही नहीं है पर बच्चे शैतान की कैसी बातें करने लगा है।' बच्चे की बात का उसे जरा भी बुरा नहीं लगा था। हाँ मन उसका भर गया था और उस मन को मिटाने के लिए उसने रोटी का एक टुकड़ा बचे हुए दूध में भिगो कर कुत्ते को दिखाया जो हमेशा की तरह चिरिमी के पाँवों में पड़ा था और कोने की ओर फेंक दिया।

बच्चों ने जल्दी जल्दी कलेवा समाप्त किया। फिर अपने दफ्तर पाटी आदि लेकर मदरसे की राह ली।

नन्दी ने भी फुर्ती से बाकी के कामों को निपटाया। बचा हुआ रोटी को चूरकर कलछी वाली दाल में मिलाया ऊपर से मिर्च डाली और चम्मच से घोल घालकर खाने बैठ गया। भाडी के किनारे पर जो दाल सूखकर जम गई थी उसे भी उसने चम्मच से खरोंचकर काम में ले लिया। खा पीकर वह तृप्त हो गया। फिर उसने भाडी में पानी भरा दाल अन्दर डाली और चूल्हे की आंच धीमीकर भाडी को ऊपर चढ़ा दिया। अब सारा काम निपट गया था। उसने अपना कुल्हाड़ा उठाया और बाहर सायबान में आकर दरवाजा बन्द करने लगा। कुण्डी लगाकर वह अहाते से बाहर निकलने के लिए फाटक की ओर मुड़ा तो देखता क्या है कि बागड के उस पार आरचिन पोरिया खड़ा है।

हे मेरे राम ! मैं यह क्या देख रहा हूँ ! आरचिन भूत बन कर तो मेरे सामने नहीं खड़ा है ? हठात् उसके मुँह से निकल पड़ा। उसका

मन यह मानने के लिए कतई तैयार नहीं हुआ कि रात में आरचिल की उसने जो हत्या की थी वह केवल उसके मन की कल्पना थी, वास्तविकता से उसका लेश मात्र भी सम्बन्ध नहीं और यह जो सामने खड़ा है वह भूत नहीं, स्वयं जीता-जागता आरचिल ही है।

आरचिल ने प्रसन्न स्वर में पुकारा:

'ग्वादी मैं तुम्हीं से मिलने के लिए चला आ रहा हूँ।...राम-राम, कामरेड!' वह बड़े ही इत्मिनान के साथ आँगन में आया और हद्दर्जे की लापरवाही दिखलाता हुआ ग्वादी की ओर बढ़ा। ग्वादी का झोला वह अपनी बगल में दबाये हुए था और मधुर-मधुर मुस्कराता जाता था।

ग्वादी अपनी झोंपड़ी के आगे, सायबान के नीचे चुप खड़ा था, उसने अपनी काँपती हुई अँगुलियों से कुल्हाड़े का दस्ता पकड़ रखा था। वह न हिला, न डुला, न कुछ बोला; पत्थर की मूरत की तरह स्थिर खड़ा रहा।

'राम-राम, ग्वादी, राम-राम! मेरे आने की तो तुम्हें उम्मीद न होगी।' अपने स्वर में मिश्री घोलकर पोरिया ने कहा। वह बिलकुल ग्वादी के समीप चला आया और उसकी आँखों में देखने लगा।

ग्वादी कुछ न बोला।

तुम गूँगे तो नहीं हो गये हो? राम-राम कहते भी नहीं बनता?'

अब वे दोनों एक दूसरे के ठीक आमने-सामने खड़े थे। आरचिल को लगा कि जैसे ग्वादी अपने आपे में नहीं है। उसका चेहरा रुई की तरह सफेद हो रहा था। आरचिल को भी कुछ न सूझा कि आगे क्या बोले! वह भी चुप हो गया।

इसी तरह काफी समय बीत गया। दोनों की हालत कुत्ते-बिल्ली जैसी हो रही थी।

'आओ!' अन्त में ग्वादी ने एक संक्षिप्त-सा स्वागत वाक्य कहा। उसके अन्तर में भावनाओं का तुमुल संघर्ष हो रहा था लेकिन अन्त में घर आया दुश्मन भी पाहुना की परम्परागत भावना की विजय हुई। वह

'भाभो !' के साथ 'राम-राम भाई !' कहने जा ही रहा था कि ओठ कट कर चुप होगया।

मारचिल ने मुस्कराकर एकदम इतने उत्साहपूर्वक हाथ आगे बढ़ा दिया कि ग्वादी को भी मन मारकर अपना हाथ आगे करना ही पड़ा। उसने कुल्हाड़ा छोड़ दिया और पोरिया से हाथ मिलाया।

'ग्वादी, मैं तुम्हें धन्यवाद देने आया हूँ। सारा सामान तुमने सही-सलामत पहुँचाया सब चीज़ें बराबर थीं, एक भी चीज़ इधर उधर नहीं होने पायी।' वह इसतरह कह रहा था मानो कोई खुशखबर सुनाने आया हो। 'लेकिन तुम्हारे चेहरे पर हवाइयां क्यों उड़ रही हैं? क्या हुआ? बच्चे तो सब कुशलपूर्वक हैं न? किसी को कुछ हो तो नहीं गया?'

उसका चेहरा खिले हुए गुलाब की तरह सुर्ख होरहा था। आँखों से स्नेह और सौहार्द की किरणें फूटी पड़ रही थीं और मुँह में तो जैसे चाशनी ही घुल रही थी—कितना मीठा बन गया था!

वे पेड़ के समीप खड़े बातें कर रहे थे।

ग्वादी दो डग पीछे हट गया मानो कहना चाह रहा हो "रहने दो, रहने दो! इस सबकी कोई ज़रूरत नहीं!" लेकिन उसकी ज़बान ने साथ नहीं दिया। ग्वादी के जीवन में यह पहला ही अवसर था जब उसकी वाणी विचारों का साथ नहीं दे रही थी।

वह पेड़ के तने का सहारा लेकर खड़ा हो गया और उनींदे की तरह ज़ोर ज़ोर से आँखें मिचकाता हुआ मारचिल की ओर देखने लगा।

'मैं तुम्हारे लिये साथ में कुछ लाया भी हूँ मैंने वादा किया था और उस वादे को पूरा कर रहा हूँ। मैंने कहा नहीं था कि मारचिल की बात दर्शनी हुण्डी की तरह है।'

उसने झोले के अन्दर से कागज़ में लिपटा हुआ एक पुलिन्दा निकाला।

कागज़ एक ओर से फट गया था। ग्वादी ने देखते ही पहिचान लिया कि अन्दर वही लटकनों वाला ब्लाउज़ है जो उसके मन भा गया था और जिसे उसने चिरिमी के लिए छाँटकर अलग रख दिया था। इससमय दिन के उजाले में उसका रङ्ग पीला मालूम पड़ रहा था।

'मैं कोई दैवी चमत्कार तो नहीं देख रहा हूँ?' बिजली की तरह यह विचार उसके मस्तिष्क में कौंध गया और वह डरकर दो कदम और पीछे हट गया।

'यह मैं तुम्हें देने के लिए लाया हूँ। रख लो इसे। और यह रहा तुम्हारा झोला! हाँ, एक बात याद आई...कल शाम में हम जब तुम्हारे यहाँ से लौटे और जङ्गल में होकर घर चले आ रहे थे तो एवड़ी ने मुझे बतलाया कि कोई पीछे की ओर 'मेरा झोला लौटा दो, मेरा झोला लौटा दो' कहता चिल्लाता चला आ रहा है। उसने कहा कि आवाज़ तो ग्वादी की मालूम पड़ती है। और मुझे भी ऐसा ही लगा कि वह आवाज़ तुम्हारी ही थी। अब मान लो कि कोई सुन लेता और पता लगाने का धमकता तो वैसी हालत में तुम क्या करते!...और अभी भी, मैं आया तो तुम बड़ी ही बेरुखी से पेश आये! ऐसा लगता है कि कल तुम नाराज़ हो गये थे। लेकिन तुम तो समझदार आदमी हो ग्वादी, ज़रा सोचो तो सही कि जबतक मैं सब चीजों का मिलान नहीं कर लूँ, उनमें से एक भी चीज़ उठाकर किसी को कैसे दे सकता हूँ!-यह तो तुम जानते ही हो कि वह मेरा अकेले का माल नहीं है, दूसरों का भी उसमें साझा है। एक चीज़ भी इधर-उधर हुई कि वे मेरी गर्दन पर सवार हुए! इतनी-सी बात थी, जिसमें तुम नाराज़ हो गये। अच्छा, अब इसे रख लो, तुम्हारा बच्चा पहनेगा और हमारी सैर मनायेगा...

ग्वादी असमञ्जस में पड़ गया : ले, न ले! उसे हिचकिचाते देख मारचिन ने पुलिन्दा उसके हाथों में रख दिया। ग्वादी के हाथों की मुट्ठियाँ बँध गई थीं। मारचिन ने मुट्ठियाँ खोलकर ब्लाउज़ उसके हाथों में थमा दिया।

'एक मित्र की छोटी सी भेंट समझकर ले लो, मगर किसी से यह मत कहना कि मैंने दिया है ...'

ग्वादी को किसी ने जैसे मूठ मार दी हो। वह कुछ न बोला। उसकी आंखों को किसी बात का पता नहीं चल रहा था। वे एक पागल की आंखों की तरह दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ घूम रही थीं।

आश्चित ग्वादी के इस विचित्र व्यवहार से घबरा सा गया। उसे अपने पाँवतल की धरती खिसकती नजर आई। उसने सोचा था कि हक्काबक्का होते ही ग्वादी उछल पड़ेगा और उसकी इस एक चाल के सामने वह हमेशा के लिए उसे अपना खरीदा हुआ गुलाम बना सकेगा। लेकिन उसकी सारी बाजी उलटी पड़ रही थी। उसने एकबार फिर ग्वादी की आंखों में देखा और इसतरह अपना कागज मीड़ा मानो हठ से कोई भूली बात याद आई हो। उसने कहा

'अरे ! शायद तुम्हें अभीतक यह मालूम नहीं हो पाया कि कल रात बड़ी गलतफहमी हो गई थी। उस गलतफहमी में ग्वादी! मैं तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय कर बैठा। अब तुम जो चाहो सजा दो तुम्हारा गुनाहगार सिर मैं तैयार हूँ। अच्छा सुनो तुम्हारे यहां से अपने घर पहुँचने पर मैं कपड़े उतारे और सोने की तैयारी कर रहा था कि खयाल आया लाओ, पैसों का हिसाब तो लगा लूं। कितने खर्च हुए और कितने बचे ! मेरी आदत तो तुम्हें मालूम है ही।

मैंने पैसे गिने और धक्-सा रह गया। आजतक मैं अपने को सोलन्ध खाकर कहता हूँ ग्वादी, मेरे दिलपर जो बीती सो मैं ही जानता हूँ। तुम्हें देने के लिए मैंने दस रूबल का एक बिलकुल नया नोट अलग से निकालकर बाजू की इस जेब में रख लिया था। देखो अब भी उसी जेब में पड़ा है ...'

उसने अपने कोट की जेब में से दस रूबल का एक बिलकुल नया नोट निकाला और उसे हवा में हिलाते हुए आगे बोला —

'ऐसा लगता है कि मैं तुम्हें तीन रूबल का नोट दे गया--मैंने बिना देखे ही दे दिया था। यह भूल ध्यान में आते ही मैंने अपना माथा ठोक लिया, लेकिन अब पछताये होत का जब चिरियाँ चुग गईं खेत? सोचा अभी चलकर भूल सुधारना चाहिये; लेकिन रात काफी बीत गई थी और मैं सोने के लिए कपड़े उतार चुका था। तुमने मुझे गालियाँ तो बहुत दी होंगी ग्वादी? तुम बहुत बुरे आदमी हो, दावे से कहता हूँ कि तुम बहुत ही बुरे हो। अरे भई, उसीसमय मुँह खोलकर कह देते : 'यह तुम क्या दे रहे हो!' सारा झगड़ा वहीं खत्म हो जाता। मुझे इतनी कल्पना तो न पड़ता? गलती तुम्हारी ही है। मुझे याद है कि तुमने कुछ फुसफुसाहट जरूर की थी लेकिन मैंने यह सोचा कि तुम दस रूबल को कम बता रहे हो और इसलिए मैं नाराज हो गया! लेकिन यह भी कोई अच्छी बात नहीं है, ग्वादी, बिलकुल अच्छी बात नहीं है। व्यवहार में हमेशा चोखा रहना चाहिये, बेलाग होना चाहिये और एक दूसरे पर विश्वास करना चाहिये। लो, इसे रख लो, यह तुम्हारा ही है...'

वह दस रूबल का नोट भी ग्वादी के दूसरे हाथ में पहुँचा दिया गया। नोट सच ही बिलकुल नया था, उसपर एक भी शिकन नहीं पड़ने पाई थी; उसकी आवाज ग्वादी को मधुर सङ्गीत की तरह लग रही थी।

अब कहीं ग्वादी की चेतना लौटी। वह बारी बारी से अपने हाथों की ओर देखने लगा : पहले क्लावश को और फिर नोट को।

'यह तो बहुत ज्यादा है, आरचिल!' पहलीबार उसके शब्द सुनाई दिये और अनचाहे ही उसके मुँह से एक पतली-सी खिल-खिल की ध्वनि भी गूँजती हुई निकल गई।

पोरिया की सतर्क दृष्टि से कुछ भी छिपा न रहा और यह सब देखकर उसे इतनी खुशी हुई जितनी कि एक हारे हुए खिलाड़ी को बाजी जीतने पर होती है। पुराना ग्वादी फिर लौट आया था। उसके भावशून्य, निर्जीव-से चेहरे पर चमक आगई थी। लेकिन दूसरे ही क्षण वह चुप हो

गया। उसकी हँसी अधबीच में ही रुक गई। यह देख आरचिल पुनः चिन्तित हो उठा। ग्वादी के इस पुराने रूप को वह कभी गुम न होने देगा।

'कम या ज्यादा जो है रख लो! यह वक्त गिनने का नहीं है।' उसने स्नेहपूर्वक ग्वादी की पीठ थपथपाते हुए कहा: आज तो सब धन राष्ट्र का धन है, सारी पूँजी सम्मिलित पूँजी है। कौन कह सकता है कि कुना मेरा है और क्या तुम्हारा है, जो है सबका है मेरे भाई, हम समाजवाद के युग में जी रहे हैं, सबकी समानता का जमाना है।'

आरचिल चुप हो गया और एक भेदभरी दृष्टि से ग्वादी के मुँह की ओर देखने लगा। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद वह एकदम हो हो कर हँसने लगा। हँसने का कोई संगत कारण नहीं था, लेकिन वह फिर भी हँस रहा था। उस हँसी को सुनकर ग्वादी आपादमस्तक काँप उठा। उसकी समझ में नहीं आया कि आरचिल की यह हँसी निर्दोष है या इसके पीछे कोई धमकी छिपी है।

आरचिल ने जिसतरह हँसना शुरू किया था उसीतरह हठात् वह चुप भी हो गया। फिर निष्प्रयोजन ही वह ग्वादी के पाव के समय पड़े हुए कुल्हाड़े को ध्यान से देखने लगा, मानो जीवन में पहलेपहल कुल्हाड़ा देख रहा हो। थोड़ी देर तक देखते रहने के बाद उसने झुककर कुल्हाड़ा उठा लिया। फिर कुल्हाड़े के लम्बे दस्ते का सहारा लिये हुए वह ग्वादी की ओर पीठ करके खड़ा होगया और झोंपड़ी से बागड़ तक फैले हुए आँगन की लम्बाई का अन्दाज करने लगा।

'तुम्हें अपना नया मकान यहाँ पेड़ के सामने बनाना चाहिये।' उसने बड़े-बूढ़े की तरह सलाह देते हुए कहा। 'जगह तो तुमने भी यहाँ चुनी है। और मैं कहूँगा कि तुम्हारा चुनाव बुरा नहीं है, काफी समझ-बूझ कर ही तुमने चुनाव किया है। लेकिन मेरा भी एक आग्रह है। इन्कार मत कर देना ग्वादी। इतने कठोर मत हो जाना। मेरा आग्रह है कि मकान बनाने के लिए यहीं इस पेड़ को मत काट डालना। यदि मेरे लिए तुम्हारे

मन में ज़रा-सी भी इज्जत हो, थोड़ा-सा भी ख़याल हो तो इस बात को ठुकरा मत देना। यह एक तरह से तुम्हारी मृतपत्नी बेचारी भगतिया का स्मृतिचिन्ह है। नया घर बन जाने के बाद भी उसके स्मारक के रूप में खड़ा रहेगा। उसे यह पेड़ बहुत प्यारा था। वह अक्सर इस पेड़ के नीचे बैठा करती थी। जब कभी इधर से गुज़रा मैंने सदा उसे इसी पेड़ के नीचे एक छोटी-सी चौकी पर बैठे घर गिरस्ती का कोई न कोई काम करते पाया। मकान को ज़रा और आगे बढ़ा ले जाओ, ठेठ बाग़ तक। वैसी सूरत में तुम्हें पेड़ काटना नहीं पड़ेगा। अगर मुझे अपना दोस्त समझते हो तो हर्गिज़ मत काटना। मकान की खूबसूरती भी बढ़ जायेगी और छाया भी रहेगी। तुम्हें दोनों तरह से लाभ होगा। सुना है कि नये मकान काफी ऊँचे बनाये जाएँगे। यह तो और भी अच्छा है। तुम घर के अन्दर से ही सड़क देख सकोगे। छज्जे पर निकल आओ और मज़े से सारी दुनिया का दृश्य देखा करो। तब तो ग्वादी तुम पुराने ज़माने के बादशाहों की तरह झरोखे में मसनद लगा कर बैठा करोगे और हम दुनिया वालों के मुजरे लेता करोगे। भई, खूब जगह चुनी है तुमने। कायल हो गये उस्ताद तुम्हारी सूझ-बूझ के। नये मकान के लिए यह जगह मुझे भी खूब पसन्द आई... अगर मकान के लिए जगह कम पड़े तो बाग़ के बाहर की थोड़ी-सी ज़मीन भी घेर सकते हो। कौन पूछता है आजकल! ज़मीन का मालिक तो कोई रहा नहीं, सभी मालिक हैं...।

यह सुनकर ग्वादी के सामने खड़ा हो गया और प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा; मानो पूछ रहा हो, बोलो; अब तुम्हारे क्या इरादे हैं? ग्वादी ध्यान देकर उसकी बात सुन रहा था। उसे इतने मनोयोगपूर्वक और प्रसन्नता से अपनी बातें सुनते देख आरचिल को बड़ी खुशी हुई। ग्वादी का चेहरा आन्तरिक आनन्द के कारण खिल-सा गया था और उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में बालसुलभ उत्साह और औत्सुक्य प्रतिबिम्बित हो रहा था। इस समय उसकी दृष्टि बाग़ के बाहर वाली ज़मीन

पर लगी हुई थी मानो वह मन ही मन इस बात का हिसाब लगा रहा हो कि उसे कितनी जमीन घेरना चाहिये।

आरचिन को यह आशा नहीं थी कि उसकी बात का श्वादी पर इतना गहन प्रभाव पड़ेगा। उसे मन्त्रमुग्ध देख उसने उसे और भी चढ़ाने का निश्चय किया।

'वहां से तुम जब-चाहो तब उस विधवा के आंगन में भी पहुँच सकते हो, सिर्फ एक छलांग की तो बात है।' उसने आँखें मारते हुए श्लेषपूर्वक कहा। इसबार उसकी हँसी में भी कोई बनावटीपन नहीं था। उसने कुल्हाड़े के दस्ते से श्वादी की पसलियों में एक हलका-सा हूँसा मार कर उसे गुदगुदा दिया और आगे बोला

'बड़े छिपे रुस्तम हो जी तुम! इस बात से तुम इन्कार नहीं कर सकते। बोलो, कर सकते हो? मुझे सबकुछ मालूम है। यहां तो सारा का मजमूँ भाँप जाते हैं लिफाफा देखकर! जानते हैं उस्ताद तुम्हें! ऐसे मौके तुम हाथ से निकलने थोड़े ही देते हो। बस मछली दिखना चाहिये! जाल फेंककर फँसाना कोई तुमसे सीखे। अगतिया के साथ भी यही किस्सा हुआ था। ब्याह कर घर लाये तो उसके पेट में बच्चा भी था! पता नहीं तुम्हें ऐसी कौनसी कला मालूम है कि देखते ही औरतें निछावर हो जाती हैं? और तुम हो भी ऐसे लम्पट कि शादी के बाद की सुहागरात पहले ही मना लेते हो। ही ही ही...'

आत्मप्रशंसा सुनकर और विशेषरूप से औरतों को प्रभावित करने की अपनी शक्ति का बखान सुनकर कौन ऐसा आदमी है जो गर्व से फूल नहीं उठता? श्वादी भी फूलकर कुप्पा हो गया। उसकी बाँछें खिल गईं। उसने आरचिन की बात का विरोध नहीं किया। मुस्कराकर स्वीकार कर लिया, क्योंकि जो कुछ कहा जा रहा था वह उसके पौरुष की सर्वथा उचित प्रशस्ति थी।

लेकिन 'यह तो बदनामी कि दस गुलाम में भारियम पर डोरे डालने

की बात भला तुम्हें क्या सूझी ? कहाँ वह और कहाँ तुम ? चोरो तो चार और पढ़ाओ तो पाँच ! साथ खड़ा करदें तो तुम उसके बेटे मालूम पड़ो । तुम्हारे जैसे दर्जन दो दर्जन खिला तो वह अब भी जन सकती है। पूरी 'शाफ़ शक्कर' है । तुम्हारा उससे क्या मुक़ाबला ? किस बूते पर उससे जी जुड़ा रहे हो ? औरतों को फँसाने के मामले में मैं भी कुछ कम नहीं हूँ । जिस पर दाँत गड़ा दिये उसे फिर दबोच ही लेता हूँ । बन्दा भी इस फन में तुम से उन्नीस नहीं; लेकिन मरियम के सामने देखते ही डर लगता है । पास जाने की हिम्मत ही नहीं होती ।'

वह ग्यादी की ओर झुक गया और आँखें मारते हुए बड़े ही रहस्य-मय ढङ्ग में धीरे से बोला :

'यह तो बतलाओ उस्ताद कि ग्याली फेरे ही कर रहे हो या पंछी ने अड्डे पर उतरना भी शुरू कर दिया है ? पुट्ठे पर हाथ भी रखने देती है कि दूर से ही सींग बता देती है ?'

कहते कहते आरचिल की लार टपकने लगी थी । उसने बड़े ही बेहूदे ढङ्ग से चटखारा लिया । ग्यादी की आँखों से यह बात छिपी न रह सकी ।

'नहीं, मरियम के बारे में इसतरह की बातें मत करो । मैं हर्गिज़ नहीं सुन सकता ।' बात तो उसने बड़े ही विनम्र शब्दों में कही थी लेकिन उसका सारा रङ्ग ढङ्ग और चेहरे का भाव प्रकट कर रहा था कि वह मरियम के सम्बन्ध में इसतरह की गन्दी और बेहूदी बात सुनने के लिए बिलकुल तैयार नहीं है ।

ग्यादी को अनिच्छा देख आरचिल ने भी झट से विषय बदल दिया । इस सवाल में उसकी कोई खास दिलचस्पी तो थी नहीं । वह तो केवल ग्यादी को खुश करना चाहता था । उसने बदले हुए स्वर में कहा :

'मैं तो मज़ाक कर रहा था, ग्यादी ! मज़ाक करना तो कुछ जुर्म नहीं है । आदमी औरतों को लेकर मज़ाक करते ही हैं...'

और फिर एक कामकाजी आदमी के ढङ्ग से पुनः मकान वाला प्रपञ्च छेड़ दिया :

'हां तो स्वादी मैं तुम से कह रहा था कि मकान बनाने के मामले में हम लोग काफी प्रगति कर रहे हैं। चारों ओर नये मकान बनाने की खटर पटर मची हुई है। यह तो तुमने भी सुन ही लिया होगा कि इस मामले में सनारिया वालों ने हम से होड़ बदी है। अब देखना है कि कौन जीतता है! कौन ज्यादा मकान बनाता है। कल रविवार है और जहांतक मैं सोचता हूँ कल ही सनारिया के प्रतिनिधि प्रतियोगिता की शर्तें निश्चित करने के लिए आने वाले हैं। वे बड़े कट्टर लोग हैं। निश्चय ही कड़ी शर्तें रखेंगे। इस प्रतियोगिता की बात सारी दुनिया को मालूम हो जायगी। वे लोग तैयारियाँ भी कितने दिनों से कर रहे हैं।'

'क्या सोचते हो? वे हमें हरा सकते हैं।' जिसतरह साँप मदारी की पूँगी के स्वर पर अपनी बांबी में से खिंचा चला आता है उसीप्रकार स्वादी मनचाहे ही आरचिन की बातों की ओर आकृष्ट होता चला जा रहा था।

'देखना चाहिये...'

'देखना क्या है! दावे से कहता हूँ कि हम सनारिया वालों को पछाड़ मारेंगे। क्या खाकर वे हम से होड़ करने चले हैं? उनसे आज कोई नयी होड़ तो है नहीं.'

स्वादी को अपनी बातों में यों दिलचस्पी लेते देख आरचिन की खुशी का ठिकाना न रहा। वह इसी का तो प्रतीक्षा कर रहा था। निश्चय ही स्वादी के मन में से रात वाली विरोधभावना का अन्त होगया था। आरचिन ने सोचा, अब कैसा है, अब तो मैदान मार लिया है! वह अधिक उत्साह से बोला :

'उन्हें हराने के लिए मेरा अपनी ओर से कुछ भी उठा न रखेगा।



काम लेते लेते वह तुम्हारी कचूमर ही निकाल देगा। और इस सब का पारितोषक मिलेगा उसे! अपनी छाती पर 'श्रमवीर' का तमगा लगाये वह मुर्गे की तरह अकड़ता फिरेगा। उसने तो सड़क पर भी दाँत गड़ रखे थे। सोचता था सड़क बनाकर एक तमगा हासिल कर लेगा लेकिन वह काम तो जिला के सिपुर्द कर दिया गया और हजरत ताकते ही रह गये। जो हो, लेकिन ग्वादी तुम अपना घर बड़े अच्छे मौके पर बनाने जा रहे हो। कुछ ही महीनों में तुम्हारा घर बनकर तैयार हो जायगा और मेरा ख्याल है कि मौसम बदलने से पहले तो तुम उसमें रहने भी लगोगे।'

'भैया की बातें! मुझे घर लेकर करना ही क्या है? आधी उमर तो यों ही बीत गई है। पर हाँ, लड़के आराम से रहेंगे। उनकी बात सोचकर मैं भी खुश हूँ।' उसने आह भरकर कहा।

'अरे ग्वादी, कैसी बातें करते हो! अभी तुम्हारी उमर ही क्या है? साठे पर तो आदमी पठा होता है। अच्छे घर में किसे आराम नहीं मिलता? नये घर में तुम भी सुख-चैन से रहोगे। भगवान करें तुम्हारी बड़ी उमर हो! पर ग्वादी एक बात है! जब मुझे आदेश दिया गया कि इस सूची के अनुसार अमुक तारीख तक मिल में इतना सामान तैयार हो ही जाना चाहिये तो उसे देखकर मैं तो दङ्ग ही रह गया। भला, सोचो तो कि उस सूची में तुम्हारा नाम तक नहीं था।...मैं तो सीधा पहुँचा समिति के दफ़्तर और जाकर उनसे बोला: यह सब क्या गोलमाल है? इस सूची में हमारे ग्वादी बिगवा का नाम क्यों नहीं है? तुम्हारा नाम न होने का कारण यह था कि तुम 'शाकवर्कर' नहीं हो! कितनी वाहियात बात है! फिर मैंने तो उनको वह लड़ाया है कि याद रहेगा जनमभर।' आरचिल निडरतापूर्वक सफेद झूठ कहे जा रहा था।

'सो क्या मैं नहीं जानता भैया? अपने इस ग्वादी के साथ तुम कभी अन्याय नहीं होने दोगे। हमेशा मेरा पक्ष लेते रहे हो। भगवान करे तुम

सुखी हो, तुम्हारी आयुष बढ़े!' भादो ने असमान की ओर आँखें उठाते हुए कहा।

'मेरे पिताजी मिल खड़ी कर गये तो आज काम आरही है। सब के लिए बड़ी भारी मदद होगई है। बताओ, आज यदि यह मिल न होती तो तुम क्या करते? कितने मकान बना लेते? तुम्हारा अपना क्या खयाल है? झूठ तो नहीं कह रहा हूँ?'

'तुम भैया झूठ बोलोगे? तुम्हारी भारा मिल लाखों में एक है। मिल के द्वारा हमारी मदद करने के लिए भगवान तुम्हारी उमर दराज करें; इससे अधिक और क्या कहूँ?'

'रानारिया वालों ने भी एक भारा मिल खड़ी की है। लेकिन उसमें कुछ दम नहीं है। पहले की मशीनरी और माल होता ही कुछ और था। मेरे वाली खालिस जर्मनमेक है। और आज के ये वही ठीकरे, तीसरे दिन की टूट फूट, हुँह' लेकिन कहने से क्या फायदा, इतना तो तुम भी जानते ही हो!...लेकिन एक बात बतलाओ भादो, सच-सच कहना, ऐसी बढ़िया जर्मन-मेक मशीनरी लाकर मेरे बाप ने या मैंने कोई अपराध तो किया नहीं! नहीं किया न? ठीक! तो फिर इस सेवा के लिए उन्हें मेरी इज्जत और प्रशंसा करना चाहिये या नहीं? बोलो? अपने ईमान धरम से बोलना!'

'तो भैया, कौन तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता?' ओरकेती गाँव में जो रुतबा, जो इज्जत तुम्हारी है, उतनी मेरी जान में तो किसी और की है नहीं।'

'सो तो ठीक है भादो,' भरचिल ने शिकायत करते हुए कहा : लेकिन मुझे दुःख तो एक दूसरी बात का ही है। मेरी कदर तुमने जानी है, मैं भी अपनी कीमत पहिचानता हूं। तुम्हारे जैसे कुछ आठ दस लोग और हैं जो मेरी कदर करते हैं। सच बात कहने के लिए तुम्हें लाख-लाख धन्यवाद। लेकिन भादो, ऐसा तो यह है कि वे लोग मेरी क़दर करना

नहीं जानते। उन्होंने मेरे हाथ-पांव इसतरह बंध दिये हैं कि क्या बत-लाऊँ ? मिल मेरी मेरे बाप की, लेकिन मालिक वे बने बैठे हैं। मैं अपनी मिल में से अपने काम के लिए दो पटिये भी नहीं ले सकता। अरे, लेना तो दूर छू तक नहीं सकता ! इतना कड़ा बन्दोबस्त है और मुझपर इतनी कड़ी निगाह रखी जाती है कि मन चाहता है, सिर टकरा दूँ। आजकल तो वे इतनी सख्ती करने लगे हैं कि मैं खरीद कर भी पटिये नहीं पा सकता ! उन्होंने मेरे बाप की सारी रियासत छीन ली और उसे सामूहिक खेत बना डाला, कृषिकेन्द्र खोल दिये लेकिन मैं मुँह से कुछ न बोला, शिकायत न की, उफ़ तक न किया। तुम से तो कुछ छिपा नहीं है...'

'उन पुरानी बातों को क्यों याद दिलाते हो भैया ?' श्वादी ने इतने सहानुभूतिपूर्वक कहा कि अपने उस स्वर को सुनकर वह स्वयं ही चौंक पड़ा। दूसरे ही क्षण उसने कागज़ को अपने अन्दर की जेब के हवाले किया और दस रूबल के नोट को भी जेब के अन्दर डाल दिया। वह डरा कि आरचिल मेरे आगे अपने दुर्भाग्य का रोना रोकर कहीं नोट वापिस न मांग ले। दोनों चीज़ें उसने इतनी सफाई और फुर्ती से गायब कीं कि आरचिल देखता ही रह गया। कब हाथ उठे, कब चीज़ें गायब हुईं कुछ उसकी समझ में ही नहीं आया।

लेकिन अब आरचिल निश्चिन्त हो गया था। नोट को जेब के हवाले करते समय श्वादी की आँखों में ठीक वही भाव था, जो हड्डी का टुकड़ा पाकर भूखे कुत्ते की आँखों में होता है। अपने हाथ में इतना रुपया देखकर उसकी आत्मा प्रसन्न हो उठी थी और रुपए देने वाले का उपकार मान रही थी। आरचिल ने सोचा कि श्वादी को अपनी मुट्ठी में करने का ठीक यही समय है। लोहा तप गया है, सधी चोट मारकर उसे मन के मुताबिक गढ़ा जा सकता है।

'लेकिन मैं भी तो आखिर आदमी हूँ;' यह अपने साथ किये गये

अन्याय की रामकथा कहता गया : 'मैं तुम सब लोगों के लिए काम करता हूँ। अपना सारा अनुभव और ज्ञान तुम्हें सिखाता हूँ, उसमें तुम्हें लाभ पहुँचाता हूँ। अपनी शक्तिभर कड़ा परिश्रम करता हूँ। तुम सब इसे मानते और स्वीकार करते हुए भी मेरा अपमान क्यों करते हो? यह पारस्परिक अविश्वास कैसा? अगर मुझे कामरेड कहते हो तो कामरेड की तरह व्यवहार करना चाहिये, फिर अन्तर कैसा? और स्वादी, मैं इन सारी बातों को कभी जबान पर भी न लाता यदि मैंने अपने सगे कानों से यह नहीं सुना होता कि तुम्हारा नामरा'श अब मुझे मिल से ही निकाल बाहर करने का विचार कर रहा है। और जानते हो, मेरी जगह किसे बैठाया जायेगा? कर सकते हो कुछ कल्पना? सुनोगे तो हँसते हँसते पेट में बल पड़ जायेंगे! मुझे हटाकर मेरी जगह वेसो को नियुक्त किया जायगा। वह कल का लौंडा वेसो, जो बड़ा युवाकम्युनिस्ट बना फिरता है, लेकिन जिसे अभी धोती बाँधने तक की तमीज नहीं, सालभर तो हुआ नहीं मेरे हाथ के नीचे काम करते हुए और आप पूरे आविसफाज्लि बन गये हैं। समझता है कि मिल का सारा काम उसे आ गया। गुरु तो गुड़ ही रह गये और चेला शक्कर बन गये हैं। अब यही लौंडा मेरी जगह मिल का मैनेजर बनाया जाएगा...'

सुनते ही स्वादी फूट फूट कर हँसने लगा। उसने अपनी आँखें पटकारीं और कहकहों पर कहकहे लगाने लगा। यों देखो तो इस बात में हँसने की कोई वजह नहीं थी। लेकिन स्वादी अरकिडा को सन्तुष्ट करना चाहता था इसलिए जबर्दस्ती कहकहे लगाता रहा।

'सच, बात तो हँसने की ही है—हो-हो-हो...और यह कल का लौंडा, यह मीडिया पहलवान...हो-हो हा...उस गरम कमुई का लड़का यह वेसो हो-हो-हो.. क्या खाकर तुम्हारा मुकाबला करेगा?' कहकहों की ध्वनि के बीच उसने किसी तरह कहा और अधाधाध्वनि में उछलने लगा। फिर उसने,

सोचा कि ऐसी बुरी खबर सुनकर उसे थोड़ा नाराज़ी और गुस्से का ढोंग भी कर दिखाना चाहिये।

'लेकिन यह सब झूठ मालूम पड़ता है। ऐसी बात का विश्वास नहीं कर लेना चाहिये। किस की हिम्मत है, जो तुम्हें निकाले! हम कभी ऐसा नहीं होने देंगे। इसतरह की हिमाकत कभी बर्दाश्त नहीं की जायेगी। आखिर हम हैं किस दिन के लिए? क्या हमारे कांधों पर सिर नहीं है? क्या हम सब जानवर ही हैं? देखें वे तुम्हें हाथ तो लगायें! हम हर्गिज़ ऐसा नहीं होने देंगे।'

'हां, ग्वादी, जानता हूँ कि तुम भरोसे के आदमी हो। तुम्हारी गोद में सिर देकर मैं सो भी जाऊँ तो भी किसी बात का डर नहीं। लेकिन जानते हो हो कि दबाने पर तो चींटी भी काट खाती है, फिर मैं तो आदमी हूँ। यदि मुझे ज्यादा परेशान किया गया तो आश्चर्य नहीं कि मैं भी बिगड़ खड़ा हूँ...भेड़ भी सींग तानकर खड़ी हो जाती है...यहां अपना क्या है? उठाई बन्दूक और जङ्गलों का रास्ता लिया! मारेंगे और मरेंगे! जीवन का मोह ही किसे है? अपमान की जिन्दगी से तो मौत लाख-गुनी अच्छी। और जङ्गलों की हमारे देश में कमी नहीं है। लेकिन जाने से पहले सबकुछ जला-जलू कर खाक में मिला दूँगा। न मिल रहेगी, न मिल [illegible] नाम! दबाने पर मारचिल कालानाग है। और योंही नहीं चला जाऊँगा; अपने साथ बहुयों की जान भी लेता जाऊँगा। इतना समझ लो, ग्वादी, कि यदि मुझे जङ्गलों की शरण लेना पड़ी तो इस सारा मिल को नेस्तनाबूद ही कर दूँगा। फिर देखूँगा, तुम कैसे मकान बनाते हो! मुझे तुम्हारे लिए अफसोस है लेकिन मैं मजबूर हूँ; आखिर क्या कर सकता हूँ।'

रामदुहाई भैया, कहीं तुम्हें ऐसा न करना पड़े! अभी थोड़ी देर पहले तुमने मेरा का नाम लिया था और उसे मेरा नामराशि बतलाया था। सो मेरी बात भी कान खोलकर सुन लो। पुराने ज़माने में जब कभी

विजों का नाम [illegible]
न था। [illegible]
थे तो वे हम थे। [illegible]
इतना कह देना है कि [illegible]
खड़ा था वह [illegible]
नहर। विजा हमेशा [illegible]
किया है, अच्छा किया, [illegible]
खिलाफ नहीं [illegible]

यह स्वाती [illegible]
उसमें और इसमें कोई [illegible]
था। बच्चों ने [illegible]
नये दिन को, [illegible]
समय स्वाती ने [illegible]
कि जिस नदी [illegible]
थी इस समय [illegible]
वे सब पुरानी [illegible]
भगीरथ प्रयत्न किया [illegible]
आगमन ने [illegible]

[illegible]
यही तो वह [illegible]
वह इतने [illegible]

२१

'खैर, मेरी बात तो छोड़ो, मुझे अपना भविष्य मालूम है। मैं उनके घर का आदमी नहीं हूँ, उनके लेखे पराया हूँ और वे अब भी मुझपर विश्वास नहीं करते। देर-सबेर मेरा खात्मा होना ही है; लेकिन हमारे गोचा ने उनका क्या बिगाड़ा? वे तो उसके साथ भी सौतेले बेटे जैसा व्यवहार करने लगे हैं! उसे भी अपने खिलाफ कर लिया है! मेरी समझ में तो कुछ आता नहीं। तुम्हीं कुछ बताओ!'

'खुद मेरी अकल भी काम नहीं करती। समझ में नहीं आता कि यह सब क्या हो रहा है?' ग्रादी ने इसतरह कहा मानो वह भी 'इस' प्रसङ्ग को चर्चा के लिए लेने वाला था। लेकिन पारिया ने उसकी बात काटते हुए कहा:

'गोचा का खयाल आता है तो मन अत्यन्त दुखी हो जाता है। मेरे दुख की कल्पना भी तुम नहीं कर सकोगे। बिलकुल अनदेखी और अनसुनी बात है। एक आदमी मर-पचकर अपना घर बना रहा था; घर लगभग तैयार होने आया था कि उसे नादिरशाही फ़रमान सुना दिया गया: बस, अब मकान बनाना बन्द करो; तुम्हें इमारती सामान नहीं दिया जायगा। इसमें 'ओनिस' जैसे दुष्टों की बन पड़ती है लेकिन गोचा जैसों का तो मरण हो जाता है न! यह भला कहाँ का न्याय है? और गोचा के तो एक कम्युनिस्ट लड़का भी है। और लड़की भी क्या है...लेकिन...'

ग्रादी ने तिरछी निगाहों से मारचिल की ओर देखा और साथ ही आँखें सिकोड़ कर इसतरह भी देखा मानो उसे बड़ी दूर से देख रहा हो, फिर बोला:

'लड़की? अरे लड़की नहीं, हीरा कहो, हीरा! ऐसा हीरा तो तुम दीया लेकर ढूँढ़ आओ तब भी पाँच-पचास कोसतक नहीं मिलेगा...'

उसने जानबूझ कर बात अधूरी ही छोड़ दी। वह आरचिन को यह जतलाना चाहता था कि उसका ख्याल करके ही उसने अधिक नहीं कहा है, नहीं तो कहना तो वह और भी चाहता था। वह दो कदम पीछे हट गया और त्रिभङ्गी छटा में खड़ा होकर बोला

'तुम्हारी निगाहें भी क्या हैं, खूब परखती हैं माल को! कोई चीज इन निगाहों से छिपने नहीं पाती! तुम सब समझते हो मैं भला तुम्हें क्या समझाऊँगा, फिर भी कहने को जी चाहता है कि ..

'कहो, स्वादी कहो! तुम्हारी बातों से मुझे बड़ा सन्तोष मिलता है। तुम मेरी मदद नहीं कर सकते तो कम से कम हँस बोल कर ही मेरा जी जुड़ा दो!'

'जरूर, यह भी भला कोई कहने की बात है? और इस मामले में तो मैंने सबकुछ पहले से ही सोच विचार कर पक्का कर लिया है। मैं यही कहने जा रहा था कि विधाता ने गोचा सलन्दिरा की उस लड़की को खासतौर पर तुम्हारे लिए ही गढ़ा है। तुम कितना ही 'ना नू' करो लेकिन मैं तो उसकी शादी तुम्हारे साथ करके ही रहूँगा। तुम्हें पसन्द हो या न हो मैं तुम्हारी शादी कर ही दूँगा। अभी इन मामलों में तुम बच्चे हो। तुम्हें अनुभव ही क्या? दावे से कहता हूँ कि उससे अच्छी लड़की तुम्हें मिल नहीं सकती। तुम्हारे पिताजी परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे, मरते वक्त तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में थमाकर कह गये थे, स्वादी इनकी देखभाल करना और इनका घर बसा देना।'

उसने आँखों में उलहना भर कर आरचिन की ओर देखा। फिर थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद आगे बोला :

तभी तो मुझे आश्चर्य हो रहा था कि तुमने अभी तक अपना घर क्यों नहीं बसाया? अब कारण समझ में आया कि वह नादान छोरी, चमड़ा गोरी तुम्हारे मन में बसी हुई है।

'शादी इतने निष्ठुर न बनो! मुझपर थोड़ी सी दया तो दिखाओ! पहले ही मेरा सर्वस्व लुट चुका है, मैं पथ का भिखारी बना दिया गया हूँ और अब तुम मेरी शादी सलान्दिया लड़की के साथ करने पर उतारू होगये हो। यह कहते तुम्हें शर्म नहीं आती? लड़कियों का कुछ ऐसा अकाल तो देश में है नहीं कि सलान्दिया लड़की के साथ शादी कर मैं कुल में कलङ्क का टीका लगाऊँ?' आरचिल ने नाराजी का ढोंग करते हुए कहा। उसे यह आशा तो सपने में भी नहीं थी कि शादी इसतरह का प्रस्ताव कर बैठेगा।

'अरे भैया, कलङ्क किस में नहीं होता? चांद में कलङ्क है और सूरज में भी कलङ्क है। कलङ्क तो कुल की शोभा है। तुम्हें जात से क्या मतलब? शादी जात से करोगे या लड़की से? लड़की में तो कोई नुख्स है नहीं। सलान्दिया कुछ इतने बुरे या हेठे भी नहीं। और हों तो रहें! हमें तो लड़की से मतलब है! तुम्हारे घर में क़दम रखते ही रानी बन जायेगी। किसी को याद भी न रहेगा कि वह सलान्दिया है! तुम्हारे घर में आते ही पोरिया बन जायेगी। औरत की भला क्या जात? आदमी की जात सो औरत की जात! आगा-पीछा मत करो! आंख मूंदकर कर ही डालो। शुभ कामों में देर करना अच्छा नहीं। और कुछ नहीं तो अपने पिताजी की आत्मा की शान्ति के लिए ही कर डालो...'

कहते कहते शादी एकदम उत्तेजित हो उठा। उसकी आंखों में एक अनोखी चमक आगई और गाल लाल हो गये। उसने आरचिल की ओर आंख मारी, तथा पंजों के बल ऊँचा होकर अपना मुँह उसके कान के समीप ले गया और धीरे से बोला:

'तुम अपने नफे की बात समझते हो और अपने पिताजी की तरह दूरदर्शी भी हो इसलिए तुमसे कह रहा हूं। सुनो, गोचा के और कोई लड़का-बच्चा तो है नहीं। जो है वो यह लड़की है। इसलिए उसके दोनों मकान—नया और पुराना और उसकी सारी सम्पत्ति लड़की को ही यानी

लड़की के घरवाले को ही मिलेगा। यानी चोचा की सब चीज़ों पर तुम्हारा अधिकार हो सकता है। बोलो, है कि नहीं?'

फिर ज़ोर से हँसकर वह हँसने लगा। और उसकी हँसी रुकने का नाम न लेती थी।

'और एक बार शादी हुई कि तुम्हारी पाँचों घी में। फिर तुम्हें छू ही कौन सकता है? किसकी हिम्मत है जो तुम्हारी चीज़ों को हाथ लगाये? क्योंकि तब तो हाथ लगाने वाला प्राणी तुम्हारी बगल में होगा, तुम्हारे ही घर में, एक ही चहारदिवारी के भीतर तुम होगे और वह होगी। आई समझ में?'

वह बिना रुके हँसता ही चला गया। उसकी हँसी का स्वर पतला और तीखा होता गया, और अन्त में उसका दम ही घुटने लगा और हँसते-हँसते गला बैठ गया। निश्चय ही कोई मनोरंजक विचार उसके मस्तिष्क में लट्टू की तरह घूम रहा था। उसने अपना पेट दोनों हाथों से पकड़ लिया, और थोड़ा झुककर चक्की के पाट की तरह मारचिन के सामने गोल-गोल घूमने लगा।

मारचिन चकित था कि ग्यादी इसतरह हँस क्यों रहा है? लेकिन ग्यादी की हँसी इतनी निष्कपट और उन्मुक्त थी कि वह खुद भी उसके साथ हँसने लगा। यह देख ग्यादी और भी अधिक उत्साह में आ गया।

'मुझे तुम्हारी शादी में हलाल किये जाने वाले बैल का चमड़ा नहीं चाहिये, यद्यपि प्रथा तो यही है कि वह मुझे ही दिया जाय और हमारा सामाजिक नियम भी यही कहता है कि आज से वह मेरा हुआ। मैं लूँ या न लूँ उसपर मेरा अधिकार हो ही गया। लेकिन मैं उसे लेने से इन्कार करता हूँ और तुमसे कह रहा हूँ कि अपना यह हक मैंने छोड़ा। लेकिन तुम्हारी शादी में मेरा कुछ हक रहना भी तो उचित नहीं, कुछ न कुछ तो मिलना ही चाहिये। तुम्हें इतनी दौलत मिल रही है तो मैं खाली हाथ कैसे रह सकता हूँ? तुम अवश्य ही कुछ न कुछ दोगे! लेकिन मैं

अपनी मनपसन्द चीज़ लूँगा। बोलो, इन्कार तो नहीं करोगे? मुझे कोई बहुत बड़ी चीज़ नहीं चाहिये; छोटी सी माँग है। वादा करो...'

मारे उत्तेजना के ग्रादी के हाथ काँपने लगे थे। मारचिल को उसकी यह आतुरता देख बड़ा मज़ा आ रहा था। वह बोला:

'लेकिन उस चीज़ का नाम तो लो! मुँह से तो कुछ बतलाओ! तुम तो पहेली बुझा रहे हो। हिचकिचाहट की क्या ज़रूरत है? तुम और मैं अजनबी तो नहीं; एक दूसरे को अच्छी तरह पहिचानते हैं जब तुम्हें मेरा इतना खयाल है तो दुनिया में भला ऐसी कौनसी चीज़ है जिससे तुम्हें इन्कार करूँ।'

मारचिल ने ग्रादी की ओर बड़ी ही निष्कपटता और स्नेह से देखा मानो कह रहा हो कि डरो मत, जो मन में आये माँग लो, मैं नाहीं नहीं करूँगा; लो, माँगने से पहले ही दिये देता हूँ।

उस दृष्टि को देखकर ग्रादी के मन से सारा डर और संशय मिट गया। मारचिल को पूरी तरह अपने विश्वास में लेने के लिए उसने अपनी तर्जनी अँगुली उसकी छाती में गड़ाई और बोला:

'बड़े कामों का मुनाफा भी बड़ा होना चाहिये।'

फिर एक गहरी साँस लेकर कहने लगा:

जैसे ही सारा मामला तै हो जाय ... यदि दुनियामें, कुछ भी सत्य और न्याय है......तो मुझे...मुझे और मेरे लड़कों को चांदनी भैंस (निकोरा) मिलना चाहिये!'

अपनी बात समाप्त होने के साथ ही उसने मारचिल के मुँह पर हाथ रख दिया और मारचिल अपना आश्चर्य भी प्रकट न कर सका।

अब ज़रा इन्कार मत करो! ... मैं तुम्हारे मुँह से 'नाहीं' नहीं सुनना चाहता हूँ; मज़ाक में भी नहीं...'ना' कहकर मेरा दिल मत तोड़ो... मेरे दुधमुँहे बच्चे बे मौत मर जाएँगे...'

कर दूँगा। बस, अब तो हुए राज़ी? अपने ग्वादों के लिए यहाँ किसी बात की नाही तो है नहीं। जाओ दी!'

अपने हाथों को पीठ के पीछे बाँधे आरचिल बड़ी शान से—नवाबी ठसके से खड़ा हो गया और अनुग्रहपूर्वक ग्वादी की ओर देखने लगा। फिर मुस्कराते हुए उसने एकदम ऐसा सवाल पूछा कि बेचारा ग्वादी उलझन में पड़ गया :

'अच्छा, ग्वादी, तुमने माँगा और मैंने दिया, यह सब तो ठीक है; लेकिन मान लो कि इस बीच भैंस का असली मालिक गोचा उसे बेच दे तो तुम क्या कर लोगे?'

'असम्भव! गोचा सोने के मोल भी अपनी भैंस को नहीं बेचेगा। चाहे दुनिया उलट जाय, सूरज पूरब में अस्त होने लगे लेकिन यह नहीं हो सकता।'

'लेकिन मान लो कि वह बेच ही दे तब हम क्या कर लेंगे?'

'नहीं होगा, हो नहीं सकता। गोचा खुद बिक जायगा पर भैंस को नहीं बेचेगा!'

'यहीं तो तुम ग़लती कर रहे हो, मेरे भाई! गोचा के विचार कुछ और ही हैं।

वह कल शाम मुझ से मिलने आया था और अपनी मुसीबत का रोना रो रहा था। उसने कहा कि यदि इमारती सामान का कोई इन्तज़ाम नहीं किया गया तो उसे कहीं दूसरी जगह से किसी भी क़ीमत पर गोंद लेना पड़ेगा। 'यदि तुमने कोई रास्ता नहीं निकाला तो मैं भैंस बेच दूँगा। आख़िर मैं मकान को यों ही बिना छत के तो छोड़ने से रहा!'

ग्वादी की हालत उस बच्चे जैसी हो गई जिसके हाथ में पहले तो उसकी मनपसन्द मिठाई दे दी जाय और बाद में तमाचा मारकर छीन ली जाय और जो इतना घबरा जाय कि रो भी न सके!

'गोचा ने कहा कि मैंने पाँच पंचों में मुर्गों पर ताव देकर कहा है

कि अपना घर पूरा करके रहूँगा। अब जो अपनी बात न रहूँ तो जग-हँसाई होगी और जोनिसी तो ताना मारने से कभी चूकेगा नहीं। और सच ही है, बात तो मर्दों की ही लगा करती है। मर मर जायगा पर अपना कौल नहीं टलने दूंगा।

मेरे तो मानने में भी नहीं आता कि तुम उनकी मदद कर ही नहीं सकते यदि तुम कोशिश करो'

ग्वादी का तो नूर ही उतर गया था और उसकी आँखों में आंसू भर आये थे। आरचित ने उसे यह कैसी सत्यानाशी खबर सुना दी। तो क्या सच ही उस आसो धर्मों वाली वह दुधारू चादली अब नहीं मिल सकेगी? यह तो उसे अपने समझ ही चुका था

'मैं कोशिश करने में तो कुछ भी उठा न रखूंगा ग्वादी लेकिन केवल मेरी कोशिश से कुछ बनता जाता नहीं है। यह बात मैं तुमसे छिपाऊँगा नहीं। मुझसे जितनी मदद बन पड़ी मैंने की। लेकिन अब तो हालत ही बदल गई है, पहले जैसी बात रही नहीं लेकिन इन बातों का रोना कहाँ तक रोया जाय, रोते रहने से लाभ ही क्या? तुम्हें सीधे अपने मन की बात ही बता दूँ। जब मैं तुमसे मिलने के लिए घर से निकला तभी से यह बात मुझे सूझ रही है। और तुम भी इस पर विचार करो। मैंने जो तरकीब सोची है उससे तुम दोनों का फायदा हो सकता है और यदि तरकीब कामयाब होगई तो मैंने सचमुच तुम्हारे आँगन में बँध जायगी। रास्तेभर मैं सोचता आया कि यह तरकीब ग्वादी को बतलाना चाहिये। यदि तरकीब चल निकली तो वाह वाह, न चली, तो गोचा और उसका घर जाय भाड़ में हमारी बला से! लेकिन कुछ भी कहो गोचा ऐसा आदमी नहीं है कि उसे यों ही भरोसे छोड़ दिया जाय। तुम्हारे परिवार पर भी उसने कई एहसान किये हैं। किसी की वजह से किसी का काम बिगड़ता हो तो उसे बिगड़ने देना बुरी बात है। सारे गाँव में गोचा जैसा भलामानुस मिलना दुर्लभ है, तुम्हारे दुःख में

हिस्सा बँटायेगा और अपना सुख तुमसे बाँट लेगा। सच्चा आदमी इसी को कहते हैं। ऐसे आदमी दुर्लभ हैं। और जब ऐसा आदमी मुसीबत में हो तो हमें भी उसकी अपनी शक्तिभर मदद करना चाहिये। दुःख में भी काम नहीं आये तो पड़ोसी धर्म क्या निभाया? सुख में तो कई संग खड़े हो जाते हैं लेकिन सच्चा संग वही है जो दुःख में भी साथ नहीं छोड़ता।'

'मैं क्या और कैसे मदद कर सकता हूँ? स्वयं फटेहाल हो रहा हूँ। नहीं तो अपना सर्वस्व देकर भी गोचा की मदद करता। अभी कल ही मैंने उससे कहा कि यदि तुम्हें एक भी पटिया दे सकता तो मेरे जी को शान्ति मिलती। तुम्हें यों एक-एक पटिये के लिए मुहताज होते देख मेरा जी दुख पाता है।'

'यदि सच में तुम्हारा जी दुख पाता है तो उसकी मदद करो। एक तुम्हीं हो जो उसकी मदद कर सकते हो...यदि तुमने मदद की तो वह भैंस नहीं बेचेगा और यदि तुमने मदद नहीं की तो बेच देगा। और यह तो मैं तुमसे कह ही चुका हूँ कि यदि उसने भैंस नहीं बेची तो अन्त में वह तुम्हारी होगी।'

ग्वादी कान लगा कर सुनने लगा। कहीं पोरिया उससे हँसी तो नहीं कर रहा है? नहीं वह हँसी नहीं कर रहा था। आरचिल बिलकुल गम्भीरतापूर्वक शुद्ध व्यावसायिक ढङ्ग से यह बात कह रहा था।

'अब जरा ध्यान से सुनो। जब समिति ने मुझे माल का निकास करने के लिए चुना और आदेश दिया और कहा कि फलां-फलां आदमी को इतना माल देना है तो मुझे सबसे पहले तुम्हारा ही ख्याल आया। स्वाभाविक भी था। और मैंने एण्ट्री से वह भी दिया कि देखो, यह ग्वादी बिचा के हिस्से का माल है; दूसरों का माल चढ़ाने से पहले तुम उसका माल चढ़ाना। मान लो कि उन्होंने तुम्हें चालीस तख्ते दिये हैं तो मैं बीस तख्ते और यानी कुल साठ तख्ते चढ़ाने का आदेश दूँगा।...

ग्वादी सबसे बड़ी कठिनाई तो तख्तों को मिल से बाहर लाने की है। कण्ट्रोलर हर आर्डर को चेक करता और नोट कर लेता है कि माल किसको भेजा जा रहा है। अब यदि माल ग्वादी का है तो रास्ता साफ है। और जब एग्री मिल से सठ तख्ते लेकर तुम्हारे यहाँ आये तो मुँह से कुछ न कहना, दस्तखत करके तख्ते ले लेना। लेकिन यह याद रखना कि उनमें तुम्हारे हिस्से के केवल चालीस और शेष बीस गोबा के होंगे। बस इतना ही। यदि हम दो-चार बार इस तरह कर सकें तो गोबा का काम बन जायगा। उसे चाहियें ही कितने ? और तब तुम दोनों अपने अपने मकान बना सकोगे। आया समझ में ?'

ग्वादी अपने विचारों में डूबा चुप लगाये ठीक उसी तरह आँखें मिचका रहा था, जिस तरह कि बातचीत के प्रारम्भ में उसने मिचकाईं थीं, और आरचिल ने उसके हाथों में जबर्दस्ती कनाउक्त रखने का प्रयत्न किया था।

'नहीं, भैया, मेरे तो कुछ भी समझ में नहीं आया !' ग्वादी ने इस-तरह भोला और मूर्ख बनकर रहा कि उस समय उसके चेहरे को देखकर कोई भी उससे इस मूर्खतापूर्ण उत्तर से अधिक की अपेक्षा कर ही नहीं सकता था।

पोरिया का चेहरा लटक गया।

इतनी सादी-सी बात भी उसकी समझ में नहीं आ रही है ! इसमें भला ऐसा है ही क्या जो समझ में न आये ? आरचिल की भली बुरी हर योजना को एक ही इशारे में समझ जानेवाला ग्वादी इतना साफ साफ बतला देने पर भी क्यों नहीं समझ पा रहा है ? ऐसा हो ही कैसे सकता है ?

आरचिल की आधी प्रसन्नता उसी समय गायब होगई और उसने खिझे हुए स्वर में कहा :

'तुम्हारी समझ में क्या नहीं आ रहा है, ग्वादी ? बिलकुल साफ तो

कह रहा हूँ कि तीन में से दो तुम्हारे एक गोया का, यानी हर तीन तरबों में से एक गोया का और शेष दो तुम्हारे। यह कौन इतने मुश्किल बात है, जो तुम्हारी समझ में न आये। हिसाब लगा देखो, समझ में आता है या नहीं?'

ग्वादी भी एक ही धूर्त था। उसने भी ऐसा ढोंग किया मानो गणित का कोई बड़ा ही पेचीदा सवाल हल कर रहा हो। उसने अपने दाहिने हाथ की सभी अँगुलियाँ फैला दीं, फिर दो अँगुलियाँ मोड़ लीं और बाकी बची तीन अँगुलियों को ठीक अपनी आँखों के सामने [redacted] जाकर इसतरह घूरने लगा मानों आज जिन्दगी में पहलीबार उन्हें देख रहा हो। मारचित ने उसे इस हिसाब लगाने के काम में सक्रिय सहयोग देते हुए कहा :

'हाँ, ग्वादी, ठीक है, बिलकुल ठीक है।...ये तुम्हारी तीन अँगुलियाँ हैं। या, एक अँगुली मोड़ लो, इस तरह मोड़ लो जी...' उसने ग्वादी की एक अँगुली को अपने हाथ से मोड़ते हुए कहा : 'अब इसतरह सोचो कि इस तीसरी अँगुली को तुमने अपने हिसाब में से निकाल दिया है, घटा दिया है। बतलाओ तुम्हारे पास कितनी अँगुलियाँ बचीं?'

'दो, यह कौन मुश्किल है?'

'शाबाश! बस यही तो मैं भी कह रहा था। इस में इतना सोचने विचारने और परेशान होने की जरूरत ही क्या है? इतना तो तुम्हारा सबसे छोटा लड़का चिरिमी भी जानता होगा!'

ग्वादी ने एकदम तीसरे अँगुली फैला दी, वही अँगुली, जिसे आरचित ने अपने हाथ से मोड़ दिया था, फिर अपने बाएँ हाथ से एक-एक कर उन अँगुलियों को सहलाया और गहरे सोच-विचार में डूबे हुए आदमी की तरह मारचित के सामने देखा मानो कह रहा हो कि- यह तीसरी अँगुली ही तो सारे झगड़े की जड़ है, यही तो हमें परेशान कर रही है।

'अरे, इसे मोड़ दो, यह तुम्हारी नहीं है।'

'लेकिन मैं दस्तखत कैसे करूंगा?'

'क्यों, दस्तखत करने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है? तुम्हें तो अपना हिस्सा मिलता ही है उसमें तो कभी वेशी कुछ होना नहीं है। क्या आदमी है? निरह करन में बड़े बड़े बैरिस्टरों के भी कान काटता है! ठीक एक कमिश्नर की तरह कर रहा है! दस्तखत करने में तुम्हारा कुछ बिगड़ता नहीं है। अरे भाई तुमसे किसी दस्तावेज या इकरारनामे पर तो दस्तखत करने के लिए कहा नहीं जा रहा है!'

सो तो मैं भी जानता हूँ। लेकिन तुम जानो कि मैं ऐसा कोई विद्वान तो हूँ नहीं। मान लो कल में कोई दग फरेब ही हुआ तो मैं गरीब मुफ्त में मारा जाऊंगा। मुझे इसीका डर सता रहा है। और कोई बात नहीं है।'

दगा-फरेब? आरचिन आगबबूला हो उठा अपने आपे से ही बाहर हो गया।

'क्या कहा दगा फरेब? जानता है तू किससे बातचीत कर रहा है? 'मुझे इसी का डर सता रहा है!' 'मान लो कि कोई दगा फरेब ही हुआ! उसने ग्वादी की नकल उतारते हुए कहा तूने मुझे समझा क्या है? यह कीमती इनाबजा और दस रूबल का नया नोट—उन्हें तू क्या कहता है? यह भी दगा है? तू तो यह भी भूल गया कि तेरे सामने कौन खड़ा है? जब से कैंची की तरह जबान चला रहा है और मुँह लटकाय जा रहा है कि इसमें मुझे क्या फायदा होगा इसमें मुझे क्या मिलने वाला है? यह है मेरे उपकारों का बदला? हूँ? शरम आनी चाहिए।' आरचिन ने दहाड़ गरज कर कहा मानो वह बिलकुल आगबबूला हो गया हो। उसने मूछों को ऐंठ दिया, गर्दन को मटका कर ग्वादी की ओर घूरा, अपने पिस्तौल को हाथ में उठाता और ग्वादी के सामने बेचैनी से चहलकदमी करता हुआ बोला तेरा तो दिमाग सातवें आसमान तक जा लगा है।'

ग्वादी ने ज्यों पारिंग को यों नाराज होते देखा तो मारे डर से अपनी तीसरी अंगुली को मोड़ लिया।

'लेकिन मैं इन्कार तो नहीं कर रहा हूँ। बोलो किया?' उसने डर-कर दो क़दम पीछे हटते हुए कहा।

'और इन्कार करना कहते किसे हैं? तुम दस्तखत नहीं करोगे; लेकिन दस्तखत किये बिना कोई तुम्हारा बाप लगता है जो माल दे देगा? अब दो, तुम दूध पीते बच्चे तो हो नहीं कि इसतरह नादान बन जाओ। या तुम यह समझते हो कि मैं दूध पीता बच्चा हूँ? पहले तुम्हें एक चीज़ दी, फिर दूसरी चीज़ दी और अन्त में तुमने मुझसे एक भैंस भी कबूलवाली, और मैंने बेवक़ूफ़ी में आकर कबूल भी दी। लेकिन क्या तुम यह समझते हो कि तुम्हें भैंस यों ही संत-मेंत में मिल जाएगी! जब तुम अपनी अँगुली भी नहीं उठाना चाहते तो मुझे क्या पागल कुत्ते ने काटा है कि तुम्हें चांदली भैंस दे दूँ! मैंने तुम्हें सबकुछ देने का ठेका तो ले नहीं रखा है! तुमने मुझे क्या कोई गावदी समझ रखा है?'

जब आरचिल ने भैंस का दुबारा उल्लेख किया तो ग्वादी ने पहले की अपेक्षा अधिक निश्चयात्मक स्वर में कहा:

'मैंने कह तो दिया कि मुझे इन्कार नहीं है...'

लेकिन आरचिल भी एक ही काइयाँ था। उसने ग्वादी को दबते देखा तो और भी शेर हो गया और उसे और दबाने की गरज से बोला:

'इन्कार नहीं है, सो तो सुन लिया। लेकिन दस्तखत के मामले में ज़रा भी रू-रियायत नहीं है! दस्तखत पहले करना पड़ेंगे, माल बाद में मिलेगा। तुमने समझ क्या रखा है? मैं तुमसे कोरे काग़ज़ पर तो दस्तखत करने के लिए कह नहीं रहा हूँ। फिर सोचो तो पट्टिये उधार देना तो कोई इतनी बड़ी बात है नहीं! सवाल भैंस को बचाने का है। चाहते हो न कि वह भैंस न बेचे। और खासकर ऐसी सूरत में जब कि वह भैंस तुम्हें...'

लेकिन उसने बड़ी सफ़ाई से विषय बदल दिया। वह इससमय भैंस

के सवाल को लटकाये रखना चाहता था। ग्यादी को इस बारे में अपना अन्तिम और निश्चयात्मक रुख बतलाना नहीं चाहता था। इसलिए बोला।

'मैं कह ही चुका हूँ कि ऐसा करने में तुम्हारा अपना नुकसान नहीं है। तुम्हारे घर बनाने के काम में किसी तरह की बाधा उपस्थित नहीं होगी। इससे अधिक तुम्हें क्या चाहिये?

ग्यादी ने अपना हाथ मारचिल के चेहरे के सामने कर दिया। पहले तीन अँगुलियाँ हिलाईं फिर एक अँगुली मोड़कर दो अँगुलियाँ हिलाते हुए निश्चयात्मक स्वर में कहा

'लो, भाई, अपनी आँखों से देख लो और कान खोलकर सुन लो कि मैं क्या कह रहा हूँ। मुझे मंजूर है, मंजूर है हजारबार मंजूर है। लेकिन याद रखना काम बन जाने पर कहीं तुम अपना वादा न भूल जाना..'

२२

जब सनारिया गाँव वालों ने यह सुना कि ओरकेती वाले नये मकान बनाने का काम शुरू करने जा रहे हैं तो उनमें खलबली सी मच गई। शुरू में तो वे इस बात को लेकर अन्दर ही अन्दर, आपस में बहुत सुगबुगाहट करते रहे, मगर अपनी उत्तेजना का उन्होंने दूसरों को पता न लगने दिया। वे कहते -

'ओरकेती वाले इस मामले में हमसे आगे निकलना चाहते हैं। हमें भी कोई ऐसी तरकीब सोचना चाहिये कि वे आगे न निकलने पायें।'

अन्त में वे अपने पड़ौसी गाँव वालों को उलहना देने जा पहुँचे

'यों चोर की तरह चुपके चुपके क्या योजना बनाते हो? हमारे यहाँ भी तुम्हारी ही तरह जङ्गल और आरा मशीन है। और हमें भी मकानों

की ज़रूरत है। आओ, हमसे होड़ बदो। है हिम्मत? आज का जमाना समाजवादी होड़ का जमाना है। इस नयी प्रथा को भूले क्यों जा रहे हो? अकेले-अकेले योजना बनाने के दिन अब लद गये हैं। यदि तुम नहीं तो हमीं, तुम चाहो या न चाहो, प्रतियोगिता के लिए चुनौती देते हैं। 'फिर देखते हैं कौन आगे निकलता है।'

कहना नहीं होगा कि ओरकेती वालों ने प्रतियोगिता की चुनौती स्वीकार कर ली।

पास-पास बसे इन दोनो गांवों और ग्रामवासियों के आपसी सम्बन्धों का बड़ा पुराना इतिहास था। इनकी आपसी लाग डांट बाबा आदम के ज़माने से चली आ रही थी। जिस जोश और उत्साह के साथ सनारिया वालों ने ओरकेतियों को प्रतियोगिता के लिए ललकारा था उसे ठीक से समझने के लिए इन दोनों गांवों के आपसी सम्बन्धों का इतिहास जान लेना बड़ा ज़रूरी है। उस इतिहास को जाने बिना सनारिया वालों के जोश और उत्साह को समझा नहीं जा सकता। यों दोनों गांव वालों के आपसी सम्बन्ध बड़े ही मधुर और मैत्रीपूर्ण थे; फिर भी दोनों में गजब की होड़ चलती ही रहती थी; एक दूसरे से आगे निकलने और सामने वाले को हराने का कोई मौक़ा छोड़ा नहीं जाता था।

पुराने जमाने में इसतरह की होड़ को लेकर अक्सर झगड़े हो जाया करती थीं। झगड़े और मारपीट मामूली बातें थीं। कभी-कभी तो मामला काफ़ी उग्ररूप धारण कर लेता था और गुप्त लड़ाइयां भी छिड़ जाया करती थीं।

लेकिन जब नया जमाना, सोवियत का जमाना आया तो अगली ईर्ष्या द्वेष का कोई कारण ही नहीं रह गया। पुरानी नींव ही बदल गई थी। था। नई अच्छाई और हार्दिक प्रतिद्वन्द्विता स्वस्थ समाजवादी प्रतियोगिता में परिवर्तित हो गई थी। दोनों में समाजवादी होड़ होने लगी थी। कभी

इस गाव के सामूहिक खेत की विजय होती थी और कभी उस गाँव के सामूहिक खेत की। इन प्रतियोगिताओं और रक्तहीन विजयों के अनेकों अवसर आते ही रहते थे। और दोनों सामूहिक खेत अपना नाम नार्जिया के सोवियत समाजवादी जनतन्त्र मे सम्मान प्राप्त करने वालों की सूची में दर्ज करवा चुके थे।

*   *   *

रविवार का दिन भी आ गया। ओरकेती सामूहिक खेत के किसान सनारिया सामूहिक खेत के प्रतिनिधियों का स्वागत करने की तैयारियों में मुँह अँधेरे से ही जुट गये थे। रविवार का दिन ही दोनों सामूहिक खेतों की समाजवादी प्रतियोगिता की शर्तें निश्चित करने के लिए तै किया गया था। सभा की तैयारियाँ बड़ी सजधज के साथ की जा रही थीं। हर आदमी उत्सव के रङ्ग में रँगा उत्साहपूर्वक प्रतिनिधियों के आने और सभा शुरू होने के मङ्गल अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था।

सनारिया वालों की इस सभा के बावजूद ओरकेतियों का तो आज यों भी छुट्टी का ही दिन था। सप्ताह में एक दिन रविवार को वे छुट्टी मनाते थे। उस दिन सारा कामकाज बन्द रहता और लोगबाग खेलकूद एवं हँसी खुशी में अपना समय बिताते थे। कोई घूमने फिरने जाते, कोई नाच गान का आयोजन करते और कोई फुटबाल दड़ा आदि खेल खेलते थे। रात में या तो युवा कम्युनिस्ट गाँव के चौराहे पर नाटक करते थे या फिर सिनेमा दिखलाया जाता था।

दुपहर के बाद ओरकेती गाँव के एक भी घर में कोई आदमी नहीं बचा। सारा गाँव खाली हो गया। बूढ़े, जवान बच्चे, औरत, मर्द सभी समितिभवन पहुँच गये। यहीं सनारिया वालों की सभा रखी गई थी।

सभाभवन पर सामूहिक खेत के किसान और अपनी खेती अपने व्यक्तिगत ढङ्ग पर करने वाले किसान, बूढ़े बच्चे सभी एकत्रित हो रहे थे।

ग्वादी और उसके पाँचों बेटे भी उत्सव में सम्मिलित होने के लिए तैयार थे।

वर्दगुनिया तो सवेरे से ही पहुँच गया था। नैया और एनिको ने उसे मदद के लिए बुला भेजा था। छोटी उम्र के बालक समितिभवन को तोरण-बन्दनवारों से सजा रहे थे। बड़े भैया को जाते देखा तो छोटे भी ज़िद करने लगे और वे भी वर्दगुनिया के पीछे पीछे वहां पहुँच गये।

लेकिन ग्वादी का मन आज सवेरे से ही कुछ घुमा-घुमा सा था।

पिछली रात उसने तै किया था कि चिरिमी को आरचिल वाला ब्लाउज़ पहना कर सभा में भेजेगा। ब्लाउज़ के सम्बन्ध में अभीतक उसने अपने किसी भी बेटे को नहीं बतलाया था। एकदम ब्लाउज़ सामने लाकर वह उन्हें आश्चर्यचकित कर देना चाहता था।

लेकिन सवेरा होने पर वह अपने उक्त निर्णय को कार्यान्वित न कर सका। न उसने वह ब्लाउज़ ही किसीको बतलाया। पहला डर तो यह था कि अकेले चिरिमी को नया ब्लाउज़ पहनते देख बाकी बच्चे आसमान सिर पर उठा लेते और उन्हें समझाना असंभव हो जाता। अपने बच्चों के साथ यह पक्षपात स्वयं ग्वादी के पितृहृदय को स्वीकार नहीं था। इसके सिवा एक दूसरी बात ऐसी भी थी, जिसने उसे इस सारे मामले पर गम्भीरतापूर्वक सोचने के लिए विवश कर दिया था। इतना महँगा और बढ़िया ब्लाउज़ देखकर वर्दगुनिया क्या सोचेगा? वह अपने पिता की ओर अविश्वासपूर्वक देखता हुआ अवश्य पूछेगा : 'पिताजी, आप यह ब्लाउज़ कहां से लाये हैं?'

मानलो कि उसने अपने बेटे की शङ्काओं का समाधान कर उसे किसी-तरह विश्वास दिला भी दिया; लेकिन मरियम को क्या जवाब देगा? मरियम के आगे झूठ बोलना इतना आसान नहीं था। वह उसे यह कहकर नहीं उड़ा सकता था कि 'बाजार से खरीदा है'। यह झूठ कभी उसके

आगे चल नहीं सकती थी। ज्वादी ने आज तो क्या अपनी सारी जिन्दगी में इस तरह की एक भी चीज बाजार से नहीं खरीदी थी।

उसने इस समस्या पर सभी पहलुओं से काफी देर तक विचार किया और अन्त में इस निर्णय पर पहुँचा कि आरचिल वाला ब्लाउज उसकी जैसी हैसियत वालों के बूते के बाहर की चीज है, और कौन जाने वह उसे किसी मुसीबत में ही फँसा दे! लोग यही समझेंगे कि ज्वादी कहीं से चुरा लाया है और तब सम्भव है कि वह चोरी के जुर्म में गिरफ्तार कर जेल हो भेज दिया जाय...

यह स्थिति उसके लिए कुछ कम दुःखदायी नहीं थी। ब्लाउज का वह कोई उपयोग नहीं कर सकता था, अब वह बेकार पड़ा सड़ता रहेगा! और इसी सत्यनाशी ब्लाउज को प्राप्त करने के लिए उसे कितना जलील होना पड़ा था, कितनी कड़ी आत्मवेदना सहना पड़ी थी, किस हद तक नीचे झुकना पड़ा था!

और तो और उसकी अँगुलियाँ तक आरचिल का आदेश मानने से इनकार कर रही थीं। ऐसा लगता था मानो उन्हें आगे आने वाली इस अपमानजनक स्थिति का पहले से ज्ञान हो और वे उसमें पड़ने से बचना चाहती हों। फिर उसे अँगुलियों के द्वारा पट्टियों के बँटवारे की भी बात याद आई और यह भी याद आया कि ब्लाउज लेते समय ही नहीं पट्टियों के बँटवारे के समय भी अँगुलियों ने आरचिल की मदद करने से किस तरह इनकार कर दिया था। यह सोचकर उसका हृदय भय विकम्पित हो उठा कि ब्लाउज की तरह पट्टियों का मामला भी अवश्य ही उसका अनिष्ट कर सकता है।

इन सब दुश्चिन्ताओं के कारण वह इतना व्यथित हो गया कि सभा में जाने की अपेक्षा उसने घर पर ही पड़े रहना ठीक समझा। लेकिन

फिर उसे खयाल आया कि वह सनारिया गाँवों के खिलाफ लड़ी जाने वाली हर लड़ाई में और हर प्रतियोगिता में आजदिन तक आगे बढ़कर हिस्सा लेता रहा है। तब घर बैठे आई गङ्गा को वह छोड़ ही कैसे सकता था? अपने पुराने विरोधियों के साथ चोंचें लड़ाने और उन्हें चारों खाने चित् करने की दुर्दमनीय आकांक्षा की वह अवहेलना नहीं कर सकता था।

लेकिन आज के उत्सव के अनुरूप तो ठीक, उसके बदन पर तो ढङ्ग के कपड़े भी नहीं थे। वह जानता था कि सनारिया का प्रत्येक प्रतिनिधि दूल्हे की पोशाक में आयेगा—ज़रचोबी के अँगरखे या अचकनें पहिने, कमर में तलवार खोंसे अपनी लम्बी दाढ़ियाँ फहराते मेवाड़ी सरदारों की सजधज से वे लोग आएँगे। पुराने ज़माने में भी वे, चाहे घर में भूनी भाँग न हो, इसी ठाट बाट से आया करते थे। दिखावा उनको बहुत पसन्द था।

और ओरकती में ऐसा कौन आदमी है, जो इस मामले में उनका मुक़ाबला कर सके!

सौगन्ध खाने के लिए एक गोवा सलान्दिया था जो शायद उनकी जोड़ का निकल आये। और तो सारे गाँव में दूसरा कोई था नहीं।

बागले पर रखी पुरानी सन्दूक में उनके पास भी कुछ कपड़े थे तो ज़रूर। ग्वादी ने वे कपड़े अपनी शादी के समय सिलवाये थे। लेकिन उसे तो एक ज़माना बीत गया। अब वे कपड़े उसके बदन पर शायद ही बैठें। बरसों से उसने सन्दूक ही नहीं खोला था। कपड़ों को न धूप दिखलाई गई थी, न हवा ही बतलाई गई थी। हो सकता है कि उन्हें कीड़े ही खा गये हों।

सन्दूक में उसके दादा के ज़माने की एक पुरानी तलवार भी सुरक्षित रखी थी। कमर में बँधी तलवार वाली अपने बाप की आकृति अब भी उसे अच्छी तरह याद थी। लेकिन ग्वादी के पुराने, चिथड़े-चिथड़े हो रहे कोट पर वह तलवार कितनी भद्दी जँचेगी! फिर ग्वादी को तलवार बाँधना भी तो नहीं आता। उसने अपनी जिन्दगी में कभी तलवार ही नहीं बाँधी थी!

[illegible] ... [illegible] । यह [illegible] ... [illegible] ।

[illegible] ... [illegible] था । [illegible] ... [illegible] । [illegible] ... [illegible] ।

[illegible] के लिए यह [illegible] ... [illegible] करते हुए [illegible] ।

[illegible] और [illegible] ... [illegible] था । इसलिए [illegible] यह नहीं [illegible] ... [illegible] ।

लेकिन देखो कोई [illegible] उससे [illegible] ... [illegible] इस मामले में वह किसी से [illegible] ... [illegible] रहेगा । देखना तो यह [illegible] ... [illegible] है, और [illegible] में [illegible] ... [illegible] है ।

[illegible] वह घर से निकल और [illegible] ... [illegible] ।

[illegible] को लेकर उसका मन [illegible] जो [illegible] ... [illegible] उसने इस बीच शुरू किया था । [illegible] ... [illegible] बड़ा हुआ था । [illegible] ... [illegible] । [illegible] में उसका [illegible] ...

थीं। जब से आरचिल ने पटियों के सम्बन्ध में अपना प्रस्ताव रखा था तभी से उन अँगुलियों की स्थिरता भङ्ग हो गई थी।

'कितना बेहूदा प्रस्ताव है! लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे?' बिजली की तरह यह विचार उसके मस्तिष्क में कौंध गया।

उसने अपनी अँगुलियों की ओर देखा। एक अँगुली, जिसके बारे में आरचिल ने कहा था कि 'यह तुम्हारी नहीं है' दूसरी अँगुलियों से असहयोग किये दूर खड़ी थी, उनके पास आती ही नहीं थी। उसने बहुत कोशिश की लेकिन वह अँगुली बराबर छिटकती ही रही। आमतौर पर ग्वादी ने आरचिल की बात पर कभी भरोसा नहीं किया था। वह उसे झूठा और लबाड़िया समझता था। उसकी किसी बात को उसने कानी कौड़ी के बराबर भी महत्त्व नहीं दिया था। लेकिन इस समय तो उसके मन में और भी ज्यादा सन्देह पैदा हो गये थे। वह आरचिल की इस बात में भी सन्देह करने लग गया था कि दो और एक मिलाने पर तीन हो जाते हैं। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था। वह सोच रहा था कि तीन को इसतरह बाँटना कि दो और एक हो जाय—कहाँ तक उचित और सम्भव है? दो और दो चार तो सभी ने सुना था, लेकिन दो और एक तीन, यह कौन-सी बला है?

अँगुलियों से उसके विचार भैंस पर जा पहुँचे।

अपने दिमाग़ में वह उन तमाम शब्दों को दुहरा गया जिनके द्वारा उसने आरचिल को अपने जाल में लपेटकर वादा करवा लिया था कि गोचा की सम्पत्ति का स्वामी होते ही वह उसे भैंस दे देगा।

बूढ़ा ग्वादी भी कितना चतुर निकला! चुटकी बजाते सब बातें सोच गया। उसके दिमाग़ में भी क्या-क्या मनसूबे भरे पड़े हैं! हाथ डाला और निकाल लिया।

लेकिन ब्लाउज़ के मामले में वह भी गच्चा खा ही गया। वह कुछ

मामूली सिपाही तो था नहीं और उसे बनाना इतना आसान भी नहीं था, फिर भी वह मात हो ही गया। और इस बात का उसे कुछ कम अफ़सोस नहीं था। उसकी बुद्धि बड़ी पैनी थी और हर मामले की तह तक पहुँच जाया करती थी। इसलिए उसके मन में इतना कलह हो रहा था।

धक्का उसने मुख्यतः लालच और अज्ञान के कारण ही खाया था। उसने इतना सुन्दर रूप-रङ्ग कभी देखा भी नहीं था, हाथ में आना तो दूर रहा। उसे पाने का अवसर आते ही वह एकदम लालायित हो उठा। उसने अपनी बुद्धि का उपयोग तक नहीं किया। बिना विचारे रख लिया। यदि सोचता तो लेता ही काहे को! आज उसने अपनी बुद्धि का उपयोग किया था और बिलकुल सही नतीजे पर पहुँचा था कि रूप-रङ्ग खतरे की घण्टी है, उपयोग करना तो ठीक किसी को बतलाना भी खतरे से खाली नहीं है।

उसे कल का सारा वार्तालाप याद हो आया। अपनी चतुराई पर वह आप ही प्रसन्न हो उठा और अपनी पीठ ठोकने लगा। आत्मप्रशंसा ने उसके मन से निराशा के बादल उड़ा दिये और फिर वह अपने रङ्ग में आ गया।

'लेकिन यह तो बतलाओ कि तुमने नैया आरम्बिल को कैसे सौंप दी?' उसने अपने आप से पूछा। 'याद है कल किसतरह तुमने यह काम कर दिखलाया था?'

वह चलते चलते खड़ा हो गया। और चारों तरफ देखने लगा कि आस-पास कोई है तो नहीं। फिर उसने अपने पेट को अन्दर खींचा और थोड़ा-सा झुककर हँसने के लिए तैयार हो गया।

और वह इतना हँसा, इतना हँसा कि उसकी आँखों में आँसू आ गये।

अरे वाह रे मेरे शेर! तूने तो मँगनी की हुई लड़की की भी मँगनी

कर दी!' वह हँसी के कारण कांप रहा था और उसके मुँह से आवाज़ नहीं निकल रही थी।

लेकिन पोरिया बुत बना सुनता क्यों रहा? उसके चेहरे पर आनन्द की भूली-भटकी किरण भी क्यों न दिखलाई पड़ी? नैना और गोपा के नये मकान को हथियाने की उसे कोई उम्मीद नहीं है क्या?

ज़रूर कुछ गड़बड़झाला है। उस कुत्ते की औलाद ने ज़रूर कोई भद्दी चाल सोच रखी है, नहीं तो वह एकदम इतनी आसानी से उस प्रस्ताव पर यों फिसल न पड़ता।

लेकिन बेटा, शादी भी कुछ कम पाप नहीं है, वह भी मामले की तह तक पहुँच ही जायगा!

'अच्छा! मंजूर है। जैसा तुम कहो। तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर!' और बदले में उस हरामज़ादे ने अंश देना भी मंजूर कर लिया। सोचा-विचारा तक नहीं। ज़रूर कोई गहरा राज़ होना चाहिये।

शादी भी इतना गधा नहीं है कि धोखे चारे को सच्चा मान बैठे। लेकिन फिर भी एक आदमी को कायल कर देना, उसके मुँह से वादा निकलवा लेना कोई मामूली बात नहीं है! वादे का भी कुछ मतलब होता है, कोई ताकत होती है।

आदमी के शब्द मछली पकड़ने की डोरी के समान हैं। हरबार डोरी फेंकने पर मछली काँटे में नहीं फँसती। लेकिन तुम डोरी फेंकते ही रहते हो, जबतक कि मछली फँस न जाय। डोरी फेंकने की बात को लेकर शादी चिन्तित नहीं होगा। डोरी तो फेंकते ही रहना चाहिये। यदि बाक़ायदा फँस गया और उसने अपना वादा पूरा किया तो वाह-वाह: यदि नहीं किया तो शादी का कुछ बिगड़ता नहीं, वह अपने किसीतरह से घाटे में नहीं।

ज़कात के मामले में भी तो ठीक ऐसा ही हुआ था। क़ादिर के मन में तो ज़कात देने का कोई विचार था नहीं। मानने पर भी उसने

इन्कार कर दिया था और साफ है कि वह देना नहीं चाहता था। इसीतरह दस रूबल का नोट देने की भी उसकी नीयत नहीं थी। लेकिन अन्त में क्या हुआ! ग्वादी ने ब्लाउज़ और नोट दोनों ही उससे झटक लिये न?

सोचा के मामला निपटते ही मारचिल ज़रूर मैया के पीछे पड़ेगा और उससे शादी करके रहेगा! जहां शादी हुई कि ग्वादी सिर पर सवार हो जायेगा :

'लामो मैंस! तुमने वादा जो किया था!'

ग्वादी निरा शेखचिल्ली नहीं है, वह भी कुछ सोच समझ कर ही बातें करता है। यदि लाभ की गुंजाइश न होती तो उसे क्या पड़ी थी जो ऐसी बातों में माथा मारता? इस मामले में भी देर-सबेर मुट्ठी गरम होने की पूरी पूरी संभावना है।

सिर्फ़ सोचा के पहियों वाला मामला आड़े आ रहा है।

उसे फिर से हिसाब लगाना चाहिये। अँगुलियों पर हिसाब लगाये...दो और एक...

वह सोचता रहा और सोचता ही रहा, यहां तक कि सोचते सोचते उसका सिर ही दर्द करने लग गया।

वह इस बात का निश्चय कर लेना चाहता था कि आधी छोड़कर पूरी के पीछे जाने में कहीं उसे अधी से भी तो हाथ न धोना पड़ेगा! मैंस के भरोसे हाथ में आया हुआ मकान भी न निकल जाय।

- हे भगवान! कहीं ऐसा न हो कि मैं खाली हाथ रह जाऊँ!'

लेकिन तारीफ़ तो तब है कि साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे! ग्वादी मैंस भी ले लेगा और मकान बना लेगा। देखना तो सही!

इसीतरह सोचता-विचारता वह समिति भवन के समीप पहुंच गया। सारे भवन पर इतने लाल झण्डे लगाये गये थे कि दूर से देखने पर

लगता था जैसे आग ही लग गई हो। फाटक पर लोगों की भीड़ लग रही थी।

'कहीं मुझे देर तो नहीं हो गई है? ऐसा लगता है कि वे आ गये हैं।' और उसने अपने क़दम तेज़ किये।

लेकिन भीड़ सनारियावालों की नहीं ओरकेतियों की ही थी। फाटक के दोनों ओर निसेनियाँ खड़ी कर प्रवेशद्वार बनाया गया था और इस समय उस पर एक पोस्टर टाँगा जा रहा था। निसेनियों के सिरों और गातियों (बीच में लगी सीढ़ं) पर लोगबाग खड़े थे। शोरगुल के बीच हाथोंहाथ कैनवास का एक लिपटा हुआ पोस्टर सिरे की ओर ऊपर चढ़ाया जा रहा था। हल्ला करने में सबसे ऊँचा स्वर एरिहो का था।

पोस्टर जब ऊपर चढ़ गया तो उन्होंने उसे खोल डाला।

सूरज की किरणें पड़ते ही रङ्ग धूप में चमकने और लोगों की आँखों में चकाचौंध भरने लगे।

दूर से पोस्टर का चित्र समझ में नहीं आता था, इसलिए ग्वादी मन ही मन अनुमान लगाता हुआ फाटक के समीप आया।

लोगबाग कैनवास को तानकर कीलों से उसे खम्भों में जड़ रहे थे।

ग्वादी की निगाह बर्दगुनिया की ओर गई जो सबसे ऊपर के गातिये पर खड़ा था। कहीं वह गिर न पड़े? 'अरे! अरे!' चिल्लाता हुआ ग्वादी तेज़ी से भागकर निसेनी के पास आया।

इस बीच बर्दगुनिया प्रवेशद्वार के ठीक ऊपर सुरक्षित जगह पर पहुँच गया था। ग्वादी के जी में जी आया और अब वह निश्चिन्त होकर पोस्टर को देखने लगा। अच्छा तो यह चित्र था!

यह तो बिलकुल मुँह बोलता सनारियाई मालूम पड़ता है। हूबहू वही नाक-नक्शा है! कहीं कोई अन्तर नहीं। बनाने वाले ने कमाल कर दिया!

घरकी औरत भी देखे तो चकरा जाय। वही डाढ़ी, वही अँगरखा और तलवार सी लटक रही है। वहा मँजा हुआ हाथ मालूम पड़ता है। लेकिन यह शक्ल तो कुछ पहिचानी सी मालूम पड़ती है। कौन हो सकता है? देखो, अभी याद आता है।' और वह एक एक कर प्रत्येक सनारिदाई की प्रकृतिका उस चित्रके साथ मिलान करनेमें दत्तचित्त हो गया।

ठीक उसीसमय फाटक पर गेरा दिखाई दिया। ग्वादीकी आवाज सुनकर वह मुड़, धूपसे बचनेके लिए आँखों पर हाथसे छाया की और ग्वादीकी ओर देखकर आवाज दी

'अरे ग्वादी, सुनना' मैं तुम्हींको तलाश रहा था। मुझे तुमसे काम है।'

गेराके चेहरेसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसे कोई बहुत जरूरी काम हो।

'देखो कामरेड ग्वादी! हम लोगोंकी बेइज्जती..' ग्वादीकी ओर आते हुए उसने कहा। अपनी बात पूरी किये बिना ही उसने ग्वादीसे अभिवादन किया और अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

ग्वादीसे हाथ मिलाते समय गेराके चेहरे पर गहरे आश्चर्यका भाव व्याप्त होगया। उसने अचरज भरे नयनोंसे ग्वादीके मुँहकी ओर देखते हुए खूब जोरोंसे झकझोरते हुए हाथ मिलाया। फिर उसके चेहरे परका आश्चर्यका भाव मुस्कराहटमें परिवर्तित होगया। ग्वादीके हाथको झकझोरते हुए वह हँसने लगा।

'अरे, नैया, जरा यहां तो आना! तुम्हें एक बड़ी ही मजेकी चीज बतलाता हूं।' उसने फाटककी ओर मुड़कर नैयको आवाज दी।

ग्वादीके काटो तो खून नहीं। चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।'

'हाय, यह कैसी मुसीबत आई? कहीं यह मुझे गिरफ्तार करने तो नहीं आरहा है?'

सुनते ही नै। दौड़ी आई। गेराने श्मादीकी हथेली उलटकर उसे बतलाते हुए कहा :

'देखो, इस श्मादीका मिजाज तो देखो! अभीसे हजरतके पाँव आसमानमें पड़ने लगे हैं। तीन अँगुलियोंसे आप हाथ मिला रहे हैं!'

'मैंने तो सोचा था कि कोई महत्त्वपूर्ण बात होगी।' नैयने निराशापूर्वक कहा। उसे गेराकी यह मजाक ज़रा भी नहीं सुहाई थी।

'लेकिन इससे जवाब तलब किया जायगा कि आप इसका अपमान क्यों किया? क्या सोचकर तीन अँगुलियोंसे हाथ मिलाया?' गेराने उसे परेशान करनेके लिए झूठ मूठ ही ऐसा भाव दर्शाया मानो वह अपमानित और क्रोधित हो गया हो।

'ऐसा लगता है कि किसीने उसे हमारी योजना बतला दी है। वह जान गया है कि हम उसे सनाटियाशालोंके साथ एक ही...' नैदा कह रही थी लेकिन गेराने उसकी बात काटते हुए कहा :

'हिश्! उसे इस हिमाकतका जवाब देना ही होगा। मैं अभी हाल उससे जवाब तलब करता हूँ।' वह श्मादीका हाथ पकड़कर उसे एक ओरको ले चला। और श्मादी इसतरह चला जारहा था जैसे बलिदानका बकरा बलिस्थल पर ले जाया जारहा हो या फाँसीका मुजरिम टिकटी पर चढ़ने चला जारहा हो। लेकिन साथ ही वह तिरछी निगाहोंसे अपने दाहिने हाथकी ओर भी देखता जाता था।

अँगूठा और अनामिका हथेलीमें गाँठ बाँधे पड़े थे; परन्तु तर्जनीसहित बाकीकी तीन अँगुलियाँ—शोरियाके रहस्यमय गणितके षड्यन्त्रमें भाग लेनेवाली तीनों अपराधी अँगुलियाँ ठूँठ की तरह खड़ी थीं, मानों लकड़ीकी बनी हों।

'शैतान समझे उनको!' और उसने नैनाकी पकड़में से अपना हाथ छुड़ानेका बहुतेरा प्रयत्न किया परन्तु उसे सफलता नहीं मिली।

'नैना, अब पूछो ग्यादीसे कि वह पहर रात बीते जङ्गलमें 'मेरा झोला दो, मेरा झोला दो' कहता क्यों चिल्लाता फिर रहा था? क्या बात थी? और तुमने तो उस आवाज़को सुनकर भूतात्मा समझ लिया था न!'

नेता फब्तियोंसे ग्यादीकी ओर बढ़ता भी जाता था और कहता भी जाता था।

ग्यादीके लिए यह मर्मान्तक वार था। उसका चेहरा पीला पड़ गया, कण्ठ सूखने लगा, आँखोंमें अँधेरा छा गया और उसे लगा कि वह दूसरे ही क्षण बेहोश होकर गिर पड़ेगा।

'छोड़ दो नेता, ऐसी भी क्या मज़ाक? क्यों नाहक उसे परेशान कर रहे हो? देखो तो वह किस तरह काँपने लगा है!' नैनाने कहा।

अब कहीं नेताने ग्यादीके मुँहकी ओर देखा और उसे अपने मज़ाककी भयङ्करता महसूस हुई। ग्यादीके काँपते हुए हाथको धीरेसे छोड़ते हुए उसने कहा

'अरे हो, तुम्हें हो क्या गया है? तुम तो अपने आपमें नहीं मालूम पड़ते हो! मेरे सामने तुम ही खड़े हो या कोई और है?'

'और कोई नहीं, मैं तो मैं ही!' उसने अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक कहा, मानो सामने खड़ा व्यक्ति नेता नहीं कोई अजनबी हो और उससे बढ़ीकड़ी जिरह कर रहा हो।

'तुम इतना डर क्यों गये!' ग्यादीकी घबराहट और डरको मिटानेके लिए नेताने मुस्कराते हुए कहा। लेकिन उसकी प्रश्नसूचक पैनीदृष्टि अब भी ग्यादीके मुँह पर लगी थी और वह सोच रहा था

'लेकिन मेरी मज़ाकसे यह एकदम इतना घबरा क्यों गया है? नयाकी रात वाली बातमें कोई रहस्य तो नहीं छिपा है?'

परन्तु दूसरे ही क्षण उसने इसतरह कहा जैसे कुछ हुआ ही न हो :

'लेकिन सच ही, मुझे तुमसे बड़ा ज़रूरी काम है। ज़रा मेरे साथ तो चलो, कामरेड ग्यादी! एक ओर चलकर बातें की जायें...

वे दोनो आदमी और नैया प्रवेशद्वारके समीप आये जहां लोगथ,ग उस बड़े पोस्टरको बांध रहे थे। ग्यादी चुपचाप काम करते हुए लोगोंकी ओर देखने लगा।

फाटकपर गेराको रुकना पड़ा। एलिसो किसी बातको लेकर असन्तुष्ट होगई थी और निसेनियों पर खड़े कामरेडोंके साथ उलझ रही थी। यह देख गेरा उससे बातें करने और उसे समझाने लगा। नैया भी बातचीतमें सम्मिलित होगई। ग्यादीको मुंहमांगी मुराद मिली। जब उसने यह देखा कि नैया और गेरा मेरा अस्तित्व ही भूल गये हैं तो उसने धीरे धीरे वहां से खिसकना शुरू किया और झटसे लोगोंके भुण्डमें मिल गया। फिर लोगोंकी पीठके पीछे छिपता हुआ ठेठ बागड़के पास पहुँच गया। वह मुड़-मुड़कर देखता जाता था कि कहीं गेरा पीछा तो नहीं कर रहा है। जब उसे विश्वास होगया कि कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है, और उससमय किसीको ग्यादीकी पड़ी नहीं थी, तो वह सिरपर पांव रखकर, बगटुट भागने लगा।

२३

सनारिमासाके काफी धूम-धड़ाकेके साथ आये थे। और ओदेसियोंने भी उतने ही धूम-धड़ाकेके साथ उनका स्वागत किया था।

सनारिमासाके अपनी निजी मोटरकारमें सवार होकर आये थे। तीन टनकी वह शानीदार कारमें ही रक्त-रोपन हुआ था और धूपमें उसका इस्पाती

रङ्ग चमक रहा था। सारी मोटरलारी मण्डों, पताकाओं और पोस्टरोंसे सजाई गई थी। लारीके चारों ओर लाल कपड़ों पर रुपहले अक्षरोंमें नारे लिखकर टांगे गये थे। उनमें नीचेवाला नारा विशेषरूप से दर्शकोंका ध्यान खींचता था .

समाजवादी प्रतियोगिताके भण्डे तले आगे बढ़ो!

सनारियासे इतने अधिक प्रतिनिधि आये थे कि मोटरमें तिल रखनेकी भी जगह नहीं थी। वह खचाखच भरी हुई थी। सारा रास्ता उन्हें खड़े-खड़े पार करना पड़ा था।

सनारियाई प्रतिनिधियोंका ध्यान सबसे पहले प्रवेशद्वार पर बने रङ्ग बिरङ्गे पोस्टरकी ओर गया, और वे देखते ही रह गये। ओरकतीके कलाकारकी तूलिकाने रङ्ग और रेखाओंका ऐसा सौष्ठवपूर्ण सामञ्जस्य किया था कि सनारियावालोंकी नयी दुलहिन-सी सजी सजाई मोटर उसके आगे फीकी पड़ गई थी, लेकिन जब उन्होंने यह देखा कि पोस्टर पर एक सनारियाईका सुन्दर चित्र भी बना हुआ है तो वे प्रसन्न होगये।

एलिकोने दोनो गावोंके सामूहिक किसानोंकी इस मैत्रीपूर्ण सभाके अनुरूप, सम्मिलनके प्रतीकके रूपमें ही अपना चित्र बनाया था। चित्रमें एक व्यक्ति सनारियावालोंका प्रतीक था। सनारिया गावकी समस्त विशेषताएँ और व्यक्तित्व उसमें परिलक्षित होरहे थे, और देखते ही सनारियाई प्रतिनिधि-मण्डलने उसे अपने प्रतीकके रूपमें पहिचानकर कलाकारकी सफलताको स्वीकार भी कर लिया था। वह एक सनारियाईकी तरह लम्बा कद, भरा हुआ डील डौल, छाती तक लटकती घनी दाढ़ी, (कारचोबेका अँगरखा) गौरवशाली मुद्रा और कमरमें तलवार। उसके सामने औसत कदका और सादी पोशाकमें एक ओरकेती निवासी विनम्रतापूर्वक खड़ा था। मुस्कराते हुए वह अपने मेहमानका स्वागत कर रहा था और उसे, जैसा कि चित्रके नीचे लिखा हुआ था, यात्राकी निर्विघ्न समाप्तिके लिए बधाई दे रहा था।

मेहमानोंको चित्रित करनेमें मेजबानोंने रङ्गका बहुलतासे उपयोग किया था और तसवीर देखते ही ऐसा लगता था कि सारा रङ्ग मेहमानको चित्रित करनेमें ही खर्च कर दिया गया है। मेजबानोंने अपने लिए तो रङ्गमें सादगी और मितव्ययिताकी ओर ही अधिक ध्यान दिया था।

आतिथ्य-भावना और शिष्टाचारको खयालमें रखकर ही ऐसा नहीं किया गया था, वरन् अपने अतिथियोंको पूर्ण आत्मसन्तोष प्रदान करनेके साथ ही साथ कलाकारने कुछ निश्चित तथ्योंको भी ध्यान में रखा और चित्रमें उनका समावेश किया था।

सभी जानते थे कि सनारियावासी भड़कीली पोशाक पहिनने और हथियार बाँधनेके बड़े शौकीन हैं। सिवा घरके मामूली पोशाकमें शायद ही कभी किसीने उन्हें देखा हो। कोई भी स्वाभिमानी सनारियाई सार्वजनिक समारोहों में मखमल और तलवारसे कममें कभी उपस्थित होता ही नहीं था।

इसके सिवा वे अपनी लम्बी दाढ़ियोंके लिए भी मशहूर थे। अभी हाल तक उनकी लम्बी दाढ़ियोंके विषयमें कई मनोरञ्जक किस्से और लतीफ़े प्रचलित थे। इधर कुछ वर्षोंसे कारचोबीके अँगरखे और तलवारका रिवाज सनारियावासियोंमें अवश्य कुछ कम हो चला था और नौजवान तो पुराने रीतिरिवाजोंकी पूरीतरहसे अवहेलना भी करने लगे थे। फिर भी चित्रमें अपनी विशेषता और व्यक्तित्वको सफलतापूर्वक अङ्कित होते देख सनारियाई प्रतिनिधिमण्डल प्रसन्न ही हुआ था।

चित्रपटलका अधिकांश भाग एक दूसरेका अभिवादन करते हुए इन दो सामूहिक किसानोंसे घिरा हुआ था फिर भी एलिसोने बाक़ी बची हुई जगह और पृष्ठभूमिमें बड़ी सफलतासे दोनो सामूहिक खेतोंकी आर्थिक सफलताओंको भी प्रदर्शित कर दिया था। एक कोनेमें नीबू और चीनूकी हरी कतारें दूर तक फैली चली गई थीं। दूसरे कोनेमें चायके पौधोंके झुरमुट खड़े थे। तस्वीरके दोनों ओर कारखानेकी ऊँची चिमनियाँ आसमान तक चली गई

थीं। चमकते हुए नीले आसमानमें कपासकी रूईके समान सफेद [illegible] धुएँके रूपमें यहाँ वहाँ फैला दिये थे। चित्र की सारी खाली जगहका बड़े ही कलात्मक ढङ्गसे उपयोग कर लिया गया था। सनारियाईके पावके पास एक सड़क बनाई गई थी जिसपर मालसे लदी मोटरलारियाँ दौड़ी चली जा रही थीं। मोरकेतियोंके सिरके आसपास अधूरे मकानोंके छायाचित्र पृष्ठभूमिमें से झाँक रहे थे।

प्रवेशद्वारमें सनारियावासियों की मोटरलारीने धीरे धीरे प्रवेश किया। ड्राइवर अपने मुसाफिरोंको पोस्टरका चित्र अच्छीतरह देखने और उसपर लिखा लेख पढ़ लेनेका पूरा अवसर देना चाहता था।

लारीके अन्दर आते ही नारों और तालियोंकी गड़गड़ाहटसे आसमान फट पड़ा। जनताकी एक लहर सी अतिथियोंका स्वागत करनेके लिए आगे बढ़ी।

'आइये! आइये!' 'मुबारक हो! मुबारक हो!' की आवाजें चारों ओरसे आने लगीं, एवं 'समाजवादी प्रतियोगिता जिन्दाबाद! सोवियत सोशलिस्ट समाजव्यवस्था जिन्दाबाद!' के गगनभेदी नारे गूँजने लगे।

स्वागतका यह ठाट बाट इतनी भव्यता और उत्साह सनारियाई प्रतिनिधियोंकी कल्पनासे परेकी वस्तु निकली।

दरख्तों परसे भी नारे और हर्षध्वनियाँ सुनाई दे रही थीं। मोरकेती गाँवके सभी किशोर किशोरियाँ और नन्हे बच्चे बन्दरोंकी तरह टहनियों पर बैठे, छोटी-छोटी पताकाएँ लहराते हुए अतिथियोंका स्वागत कर रहे थे।

मोटरलारी रुक गई। सनारियाके सामूहिक खेतके अध्यक्षने, जिसे मोरकेतीमें लगभग सभी जानते पहिचानते थे बोलनेके लिए अपने हाथको ऊँचा उठाया। इसतरहका राजसी स्वागत और ठाट बाट देखकर वह हर्षसे रोमांचित हो गया था। ठीक उसीसमय बागड़के ऊपर, आँगनके बीचोंबीच ग्वादी बिग्वाका सिर दिखलाई पड़ा। उसने आँगन में चारों ओर मर्मभेदी दृष्टि



डाली, जिसतरह कोई बटमार न देख रहा हो, फिर फुर्तीसे, ठीक एक बट-मारकी तरह धागड़ फांदकर जमीन पर आरहा।

लोगोंका ध्यान सनारियाई अध्यक्षकी ओर लगा हुआ था। आवाज़ सुनकर भी किसीने लारीकी ओरसे अपनी दृष्टि नहीं हटाई। आँगनमें होनेवाली आवाज़की ओर किसीको कोई दिलचस्पी ही नहीं थी।

श्वादीको किसीने नहीं देखा।

दबे पाँव रखता बिल्लीकी तरह सतर्कतासे चलता, श्वादी आँगनसे होता हुआ लोगोंकी कतारोंके ठेठ पीछे निकल आया। वह अत्यन्त उत्तेजित होगया था और उसका दम फूल रहा था।

गेराके हाथसे निकलकर भागनेके बाद श्वादीने मन ही मन ऐसी कल्पना की थी कि वह पक्का बटमार है; उसने अपना घर-द्वार, गाँव-बस्ती सबकुछ सदाके लिए छोड़ दिया है और जङ्गलमें शरण ले ली है; उसे लोगोंके सामने नहीं पड़ना चाहिये और जान-पहिचानवालोंसे आमना-सामना बचाना चाहिये। इसतरहकी मनोदशामें उसने पूरा एक घण्टा बिता दिया था। लेकिन अन्तमें सभाकी कारवाई देखनेका लोभ वह संवरण न कर सका और उसने निश्चय किया कि चोरी-चोरी ही सही, जलसा तो देखना ही चाहिये।

साधारण स्थिति होती तो कहना न होगा कि श्वादी पहली कतारमें सबसे आगे जाकर बैठता और सनारियावालों के साथ बातचीत करनेका एक भी अवसर हाथसे न जाने देता। लेकिन इससमय उसे गेराका डर लग रहा था। कहीं वह उसे देख न ले।

वह अपने सामने खड़े लोगों के पीछे छिप गया और एक वृक्षके तनेका सहारा लेकर खड़ा होगया।

कोई उसे देख नहीं रहा था। सभीका ध्यान सनारियावाली मोटरकी ओर था। वह ज़रा आश्वस्त हुआ और निर्भयतापूर्वक सामनेवाली कतारोंकी ओर देखने लगा।

लारीके बिलकुल निकट, उससे लगा हुआ ही गोचा खड़ा था। डील-डौल और रोबदाबमें सनाग्रियाव तोंसे कम नहीं था; बिलकुल उनके जैसा ही मालूम पड़ता था—लम्बा कद, भरा हुआ बदन और छाती तक पहुँचती दाढ़ी। अपने गाँववालोंमें वह सभीसे लम्बा था। उसे वहाँ खड़ा देख ग्रादो ईर्ष्यासे जल मरा।

'देखो, बेटा कहाँ जा घुसा है! मान न मान, खालाबीवी सलाम! जोसिमीसे समझौता कर लेने और कल जङ्गल में दिनभर उसके साथ साथ काम करते रहनेके कारण ही तो कहीं उसका इतना हौसला नहीं बढ़ गया है? तो बेटा, फिर शेखी क्यों बघारी थी उस दिन कि मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिये! लो, थूककर चाटना पड़ा न? धरी रह गई न सारी शेखी!

और क्या वह यह भूल गया है कि उसने चोरी चोरी अपना दूत मेरे पास नाक रगड़नेके लिए भेजा था कि हुजूर, अपने पट्टियों में से थोड़े से इस मुहताजको भी दे देना! धन्दा तो पहले ही भाँप गया था कि पोरियाको भेजनेवाला गोचाका बच्चा खुद ही है! और अब स्थिति ऐसी है तो जनाब-आली, आप और आपका वह पोरिया जहाँ चाहें वहाँ खड़े नहीं रह सकते हैं, आपकी जगह यहाँ, सब लोगों के पीछे मेरे पास है वहाँ लारीके पास नहीं! क्या, सुना? तुम्हारी वजहसे मुझे घर बार छोड़कर भागना पड़ा और यहाँ सबसे पीछे चोरकी तरह छिपकर खड़ा होना पड़ा और तुम साहूकार बने आगे घुसे जारहे हो, एं?'

ग्रादो इसतरह सोच रहा था। आत्मचिन्तका खयाल आते ही उसने उत्सुकतापूर्वक एक निगाह भीड़ पर डाली: पोरिया भी तो कहीं मेहमानोंकी बगलमें नहीं जा खड़ा हुआ है?

लेकिन पोरिया उसे भीड़में कहीं दिखाई न दिया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

'इसका क्या मतलब है? इसताहके उत्सव-समारोहोंमें तो आरचिल सबसे आगे रहता है; आजतक कभी गैरहाजिर नहीं रहा।' उसका हृदय शङ्का-कुशङ्काओंसे भर आया और उसने सोचा कि कहीं वह कमबख्त गिरफ्तार तो नहीं होगया हो?'

समारियावाले अध्यक्षने बोलना शुरू कर दिया था, इसलिए दत्तूका ध्यान बँट गया।

वक्ताने समारिया सामूहिक खेतकी समस्त सफलताओंका उल्लेख करते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि ये सब सफलताएँ ओरकेती सामूहिक खेतके साथ की गई समाजवादी प्रतियोगिताओंका ही परिणाम हैं।

'साथियो, आपका सामूहिक खेत और आप सब लोग हमारे अग्रणी हैं, और आपके नेतृत्वमें आगे बढ़नेके लिए, आपसे सीखने और प्रेरित होनेके लिए हम सदैव प्रस्तुत हैं।'

वक्ताने अपनी ओरसे अग्रणी पद ओरकेतीके सामूहिक खेतकी प्रबन्धकारिणी समितिको प्रदान कर दिया था।

दत्तू बड़े ही मनोयोगपूर्वक समारियाई अध्यक्षका भाषण सुनता रहा। उस भाषण ने उसे सोचने-विचारनेका काफी मसाला दिया; और मनजाने-मनचाहे ही वह अपने छिपनेकी जगहसे बाहर निकल आया। ठीक उसीसमय उसने अपने सिरके ऊपर चिरिमीकी आवाज़ सुनी :

'दत्तू! देखो, मैं कहाँ बैठा हूँ!'

आवाज़ सुनकर वह दङ्ग रह गया और घबराकर नीचे बैठ गया। फिर खड़े होकर उसने ऊपरकी ओर देखा।

चिरमी पेड़की एक डाली पर, जहाँ अंगूरकी बेल लिपटी हुई थी बड़े आरामसे बैठा था। वह नीचे अपने पिताकी ओर देख रहा था। उसके कमरबन्दमें लकड़ीका एक खाँडा खोंसा हुआ था और हाथमें एक छोटी-सी मगरी थी।

फिर वहाँसे मुड़कर किसी अधिक निरापद स्थानकी खोजमें चल दिया, जहाँसे वह गेराको दिखाई न पड़े।

उधर इस बीच सनारियावाले मध्यस्थका अभिनन्दनात्मक भाषण समाप्त होगया था। सनारियाई प्रतिनिधि लारीमें से उतर रहे थे और अपने पड़ौसियों से भेंट मुलाक़ात करने लगे थे—कोई हाथ मिलाता था तो कोई गले मिलता था।

'इधरसे आइये, साथियो, इधरसे !' गोचा सलान्दियाकी बुलन्द आवाज़ सुनाई पड़ी।

'देखो सालेको, बिलकुल दुल्हिनका बाप बना हुआ है !' ग्रादेने जल-भुनकर कहा।

गोचा प्रतिनिधियोंके लिए लोगोंकी भीड़में से रास्ता बना रहा था। सनारियावालोंकी तरह वह भी काले रङ्गकी अचकन पहने था और उसकी कमर में भी तलवार खोंसी हुई थी।

'हमारा गोचा भी रोबदाबमें कुछ कम नहीं है ! सनारियावाले तो उसके आगे पानी भरते हैं !' उपस्थित जनसमूहने टीका टिप्पणी की।

इससमय गोचाका व्यवहार इतना शालीनतापूर्ण और गरिमामय था और उसने अपने गाँवके सम्मानकी इसतरह रक्षा की थी कि ओरकेतीके किसानोंने उसके सब पुराने झगड़े झमेलों और टंटे बखेड़ोंको माफ ही नहीं कर दिया था, बल्कि भुला भी दिया था।

लेकिन क्रोध और झुँझलाहट ग्रादेके छाती कुरेदने लगे : 'हाय, मैं वहाँ क्यों नहीं हूँ !' वह लौह चुम्बककी तरह सनारियावालों की ओर खिंचा चला जारहा था। नये लोगोंके साथ दो-दो बातें करनेकी एक बलवती आकांक्षा, दुर्दमनीय आकांक्षा उसमें हिलोरें ले रही थी। लेकिन वह विवश था। वह कुछ कर नहीं सकता था।

मोरक्केती गाँवके गण्यमान्य व्यक्ति रास्ता दिखलाते हुए सनारियाई प्रतिनिधियोंको बरामदेमें ले आये।

सभाकी कारवाई शुरू हुई। पहले दोनों सामूहिक खेतोंके प्रतिनिधियोंने प्रतियोगिताकी शर्तों और उद्देश्योंके सम्बन्धमें भाषण दिये। उसके बाद कमीशनके चुनावका कार्य प्रारम्भ हुआ।

सनारियावालोंने अपने उम्मीदवारोंके नाम पेश किये। उनमेंसे कई लोगोंको ग्वादी जानता ही नहीं वरन् परिचित भी था। यह प्रस्ताव हर्षध्वनि और तालियोंकी गड़गड़ाहटसे स्वीकार किया गया।

'मेरी समझमें नहीं आता कि ये नाम क्यों पुकारे जारहे हैं? आखिर क्या मतलब है?' ग्वादी मन ही मन अचरज कर रहा था।

अब उसकी उत्सुकता बाँध तोड़ने लगी और उसने धक्का मुक्की करते हुए आगे बढ़ना प्रारम्भ किया। थोड़ी ही देरमें उसकी समझमें आगया कि सनारियावाले कमीशन के लिए अपने उम्मीदवारोंके नाम पेश कर रहे हैं। प्रतियोगिताके नियमोंका ठीकसे पालन होरहा है या नहीं मकान बनानेका काम ठीकसे चल रहा है या नहीं—आदि बातोंकी देखभाल करनेके लिए यह कमीशन चुना जारहा था। प्रतियोगिताके परिणामोंका अन्तिम लेखा-जोखा तैयार करनेका काम भी इन्हीं चुने हुए प्रतिनिधियोंके जिम्मे रहेगा।

'इस कामके लिए आदमी तो इन्होंने एक से एक आला चुना है!' ग्वादीने अपनी राय प्रकट की। जितने नाम पेश किये गये थे उनमें कई तो ग्वादीके घनिष्ठ मित्रोंमें से थे।

अब वहां उपस्थित सारा जनसमूह आगेकी ओर ठेलता हुआ जोर-जोरसे तालियां बजा रहा था।

'कामरेड गेरा! कामरेड गेरा!'

गेराका नाम सुनते ही ग्वादीके तनबदनमें आग लग गई।

मारे उसका चेहरा काला पड़ गया और वह अपने ओठ चबाने लगा। यही आदमी है, जो डरा-डराकर उसके प्राण लिये ले रहा है, यही आदमी है जिसने उसे इतने अपमानजनक ढङ्गसे छिपनेके लिए विवश कर रखा है!

और वह फिर दुबक गया।

गेरा बरामदेमें आखड़ा हुआ और ओरवेली सामूहिक खेतकी ओरसे, कमीशनके उम्मीदवारोंका, जिन्हें कि लोगोंने अपनी ओरसे नियुक्त किया था, नाम पुकारने लगा। पहला नाम ज़ोसिमी का था। नाम सुनते ही लोगबाग तालियाँ बजाने और हर्षध्वनि करने लगे। गेराने दूसरा नाम मरियम का पुकारा। इसबार तालियोंकी गड़गड़ाहट पहलेसे भी अधिक ज़ोर की हुई।

श्वादी भी खुशीके कारण उछल पड़ा। मरियमके चुने जाने पर उसे इतनी अधिक प्रसन्नता हुई कि वह अपना सारा डर ही भूल गया और आगे बढ़नेके लिए एकबार फिर धक्का-मुक्की करने लगा। उसने सारसकी तरह अपनी गरदन आगेकी ओर तान दी और अँगूठोंके बल खड़ा होगया। लोगबाग सम्मानपूर्वक ज़ोसिमी और मरियमको ऊपर जानेके लिए रास्ता दे रहे थे।

'आइये, आइये! तशरीफ लाइये!' बरामदेमें बैठे हुए लोग पुकार रहे थे। श्वादीने जब मरियमको बरामदेकी सीढ़ियाँ चढ़ते हुए देखा तो गर्वसे उसकी छाती फूल गई, माथा ऊँचा होगया और चेहरे पर नयी रौनक आगई।

'औरतोंमें असल पद्मिनी कहो तो यह है! किस शानसे चल रही...'

और उसे ऐसा लगा मानो उसके सिर पर वज्र ही टूटकर गिर पड़ा हो। झटसे दोनो हाथ अपने माथे पर रख लिये। क्योंकि बरामदेसे किसीने उसीका नाम लेकर ज़ोरसे पुकारा था:

'श्वादी बिगा!'

और सारी सभा ही प्रतिध्वनि करती ज़ोरसे पुकार उठी:

'श्वादी बिगा!'

ग्वादीने अपनी आँखें मूँदलीं।

यह सब क्या हो रहा है? वह क्या सुन रहा है? धरती पर कोई दूसरा ग्वादी मिश्रा तो नहीं उतर आया है?

चारों ओरसे लगातार एक ही आवाज सुनाई दे रही थी :

'ग्वादी मिश्रा! कहाँ है ग्वादी मिश्रा? कहाँ गया वह ग्वादी!'

ग्वादीने घबराकर अपने चारों ओर देखा। लौट चले, जल्दीसे पीछेकी ओर लौट चले, अपनी पहलेवाली सुरक्षित जगह पहुँच जाय, जहाँ वह सभा आरम्भ होने के समय छिपा खड़ा था। लेकिन वह जगह तो पीछे, बहुत पीछे छूट गई थी।

तो अब क्या करे? कहाँ जाकर अपनी जान बचाये? अब तो सिर्फ एक ही आशा बाकी थी। जनसमूहमें कहीं दुबककर बैठ जाय। उसने चोरकी तरह सिर नीचा कर लिया और इसतरह अपने आपमें सिमट सिकुड़कर खड़ा होगया जैसे कछुआ अपने अंगोंको समेट लेता है।

तभी उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि अपने आसपासके जिन लोगोंसे उसने रक्षा की, अपने आपको छिपा लेनेकी आशा की थी वे काई की तरह फट रहे हैं और वह अकेला खड़ा है।

उसने सिर उठाया।

लोगबाग उसीके लिए सिमटकर रास्ता बना रहे थे ताकि उसे बरामदे तक पहुँचनेमें किसीतरहकी कठिनाई न हो। एक छोटी-सी पगडण्डी बन गई थी। लोगबाग दीवालकी तरह पगडण्डीके दोनों ओर खड़े उसकी ओर देख रहे थे, उसे देखकर मुस्करा रहे थे और उत्साहपूर्वक तालियाँ बजा रहे थे।

बीच खेतमें खड़े बूढ़ेकी तरह वह बरामदेके ठीक सामने खड़ा था; और समारोहवालों तथा उसके अपने गाँववालोंकी तीखी निगाहें उसके आर-पार छिदी जारही थीं।

उसने महसूस किया कि भागनेके सब रास्ते रुक गये हैं। भागकर जान बचाना अब सम्भव नहीं रह गया है।

'ऊपर आओ, ग्वादी! हमें तुम्हारी ज़रूरत है!' बरामदेमें से लोगोंने उसे फिर पुकारा।

आसपास खड़े साथियोंने उसके असमञ्जसका ग़लत अर्थ लगाया और उसे हिम्मत बँधानेके लिए, उसका हौसला बढ़ानेके लिए चिल्लाने लगे :

'बढ़े चलो ग्वादी! तुम चुने गये हो! अरे, तुम्हें हो क्या गया है? बढ़े चलो, क़दम बढ़ाओ! तुम इतना डर क्यों रहे हो?'

वह, और चुना गया है? असम्भव! ऐसा हो ही कैसे सकता है? इतना सम्मान अर्जित करनेके लिए उसने किया ही क्या है? अपने सामूहिक खेतके श्रेष्ठतम सदस्योंके साथ, घुटना अड़ाकर वह बैठ ही कैसे सकता है? नहीं, यह हो ही नहीं सकता!

उसकी आकुलता बढ़ती ही आती थी। अपने आप पर काबू पानेके लिए वह क्या करे?

उसने अपना सिर ऊँचा उठाया, अविश्वासके भावसे चारों ओर देखा और तब बरामदेकी ओर ताकने लगा, जहाँ सामूहिक खेतके सदस्य उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

हाँ, एक दैवी चमत्कार की तरह असम्भव सम्भव होगया था। उन्होंने उसीको चुना था। वह सपना नहीं देख रहा था। उसने ग़लत नहीं सुना था। कमीशनके लिए उसीका चुनाव किया गया था। उसके लिए तालियाँ बजाई जारही थीं। उसीके सम्मानमें शाबाशीके शब्द कहे जारहे थे।

वह जल्दीमें अपने कोटको ठीक करने लगा। पहला काम उसने यही किया। जहाँ उसने सवेरे टाँके मारे थे वहींसे कोट, फिर उधड़ गया था और चिथड़े नीचे लटक रहे थे। उसकी समझमें नहीं आया कि कोट

उधर काफी देर हुई जारही थी और अब वह खलने भी लगी थी। इसलिए नैशा बरामदेसे नीचे दौड़ी आई और ग्वादीके समीप आकर बोली:

'ग्वादी, तुम्हें हो क्या गया है? जल्दी चलो! तुम चुने गये हो... चलो, अपनी जगहपर चलकर बैठो!'

'मेरी वहां ज़रूरत नहीं है रानी बिटिया, ज़रूरत नहीं है।' ग्वादीने तालियां बजाते और सिसकते हुए स्वरमें उत्तर दिया।

हठात् बर्दगुनिया किसानोंके बीचमें से कूदकर आगे आया और अपने पिताके पास दौड़ आकर शान्तिपूर्वक बोला:

'पिताजी, आप यह क्या कर रहे हैं? देखिये, कितनी देर होगई है! सभा का काम आपके लिए रुका पड़ा है!'

अपने बेटेको देखकर ग्वादीने उसे दोनों हाथोंसे कसकर पकड़ लिया।

'बेटा, तुम चले जाओ! मेरी जगह, न हो तो, तुम्हीं चले जाओ, बेटा!' उसने अनुनय विनयपूर्वक बर्दगुनियासे कहा। ग्वादीकी आंखोंमें आंसू छलक आये थे। उसने पूरी शक्ति लगाकर अपने आपको रोक रखा था; डर रहा था कि कहीं फूट फूटकर रो न उठे। अपने पिताके इस व्यवहारसे लड़का चकित रह गया और घबराकर जिधरसे आया था उधर, उलटे पांवों लौटकर भीड़में अदृश्य होगया।

नैशाने उसका हाथ थाम लिया और उसके विरोधोंकी ओर ध्यान दिये बिना ही उसे बरामदेकी ओर खींचकर ले चली। वह अस्पष्ट स्वरसे इसतरह बड़बड़ा रहा था मानो विलाप कर रहा हो:

'तो उन्होंने मेरी क़द्र की? मैं तो तीन कौड़ीका भी आदमी नहीं हूं, फिर भी उन्होंने मेरी क़द्र की? लेकिन मुझे इतना सम्मान देनेका कारण क्या है? क्या कारण होसकता है?'

अब उसने स्वयं ही नैशाका हाथ मज़बूतीसे पकड़ लिया था और उसके साथ ही साथ क़दमसे क़दम मिलाता चला जारहा था।

जब वे बरामदेकी ओर बढ़े तो लोग-बाग और भी अधिक उत्साहमें आकर तालियाँ बजाने और हर्ष-ध्वनि करने लगे। ग्वाडी बराबर दाएँ-बाएँ मुड़ता अपना सिर झुकाता सबको अभिवादन करता हुआ चलने लगा।

'मेरी इतनी योग्यता नहीं है, भाइयो... ..मेरी वहाँ जरूरत नहीं है बिरादरो!' वह दयाके स्वरमें कहता जाता था।

थोड़ा और आगे चलने पर उसे ओनिसीका चेहरा दिखलाई दिया। ओनिसी न तो हर्ष-ध्वनि कर रहा था, न तालियाँ ही बजा रहा था। ग्वाडीको समझते देर न लगी कि ओनिसीको ईर्ष्या होरही है। उसे ओनिसीकी आँखोंमें ईर्ष्याकी छाया भी दिखलाई पड़ी; उसकी टेढ़ी नाक विचित्र ढङ्गसे बाहर निकल आई थी और धुआँस रङ्गकी झबराली दाढ़ीके बाल काँप रहे थे।

'जल्दी करो जी, कदम बढ़ाओ! तुमने हमारा काफी समय खराब कर दिया है!' ओनिसीने अपने बुलन्द स्वरमें कहा।

ग्वाडीने अपनी चाल धीमी कर दी।

'मेरी जगह तुम आते, ओनिसी, तो अधिक अच्छा होता। तुम्हारा वहाँ होना शोभा भी देता। देखो न, तुम्हारे तो दाढ़ी भी है!' बड़े ही विचित्र ढङ्गसे हँसते हुए ग्वाडीने कहा और आगे बढ़ गया।

पास खड़े लोगोंने ग्वाडीकी यह बात सुनी और तुरन्त ही सबकी आँखें एकदम ओनिसीकी ओर मुड़ गईं। आखिर ओनिसीकी दाढ़ीमें ऐसे कौनसे सुर्खाबके पर लगे थे?

और ओनिसीकी दाढ़ी देखते ही सब कहकहे लगाने लगे। उसकी छोटीसी दाढ़ी शानसे सनाग्रिवालोंकी लम्बी दाढ़ियोंसे प्रतियोगिता कर रही थी।

दालानमें काले रंगकी अचकन पहने, कमरमें तलवार लटकाये एक सनारिवाई ग्वाडीका स्वागत करनेके लिए आगे आया और बोला.

'आइये, कामरेड ग्वादी, आइये! तशरीफ लाइये! आपको यहांतक ले आना हमने जितना आसान समझा था, उतना आसान नहीं साबित हुआ! आने ही पोर्चमें आप इसतरह घबरा क्यों गये हैं? मेरे ख्यालमें तो घबरानेका ऐसा कोई कारण है नहीं! मेहरबानी कर ऊपर तशरीफ लाइये!' और उसने अपना हाथ ग्वादीकी ओर बढ़ा दिया।

ग्वादी यह समझ न पाया कि सनारियाईने हाथ मिलानेके लिए आगे बढ़ाया है या उसे ऊपर चढ़नेमें मदद देनेके लिए! यह तो सभीको दीख रहा था कि ग्वादीके पांव लड़खड़ा रहे हैं, घुटने आपसमें टकरा रहे हैं और उसके चलनेमें आत्मविश्वासका नितान्त अभाव है।

सनारियाईके हाथ बढ़ानेका जो भी आशय रहा हो, ग्वादीने अपना हाथ तभी बढ़ाया जब उसे इस बातका पूरा विश्वास होगया कि उसके दाहिने हाथकी अनामिका और अँगूठा भी दूसरी अँगुलियोंके साथ जा मिले हैं और पूरा पंजा फैल गया है।

२४

सभा समाप्त होनेके बाद घर लौटते समय ग्वादीने रास्तेमें मन ही मन निश्चय किया कि वह घर पहुँचकर सबसे पहले ताखे पर रखी हुई उस पुरानी सन्दूकको नीचे उतारेगा। उसे खोलकर अन्दरके सब कपड़े बाहर निकालेगा और देखेगा कि उनमें से कोई पहिनने लायक रहे भी हैं या नहीं।

एक बात तो निर्विवाद थी। आगेसे वह गुदड़शाहकी तरह फटे पुराने चिथड़ोंमें नहीं रह सकता था; अब उसतरहके कपड़े उसके सम्मान और प्रतिष्ठाके अनुरूप नहीं थे! कमीशनके लिए निर्वाचित कर उसका बड़ा सम्मान किया गया था। चुनाव किसी मामूली कामके लिए नहीं, दोनों सामूहिक खेतोंकी गृहनिर्माण योजनाके निरीक्षणके लिए किया गया था। बड़ा ही महत्वपूर्ण काम उसके जिम्मे सौंपा गया था, इसलिए उसे अपने सम्मानकी रक्षा करना

होगी, अपने पद गौरव और प्रतिष्ठाके उपयुक्त रहन सहन बनाना होगा। इसतरह से रहना होगा कि किसीके सामने कभी लज्जित न होना पड़े।

यदि औरकहीसे बाहर जानेका कोई अवसर न भी आये तब भी उसके सम्मानित पदको देखते हुए अपने ही ग्रामवासियों के बीच, उसका यह जगह जगहसे फटा हुआ कोट, मुड़ी-मुड़ाई मञ्जेकी सिर पर रखने जैसी टोपी और पैबन्द लगी पतलून बिलकुल ही अन उपयुक्त होगी।

और मानलो कि कभी सनारिया जानेका काम पड़ गया, वहाँसे बुलौवा ही आगया तो क्या इस हुलियसे, इन चीथड़ोंमें जायगा ?

बुलौवा आना असम्भव तो है नहीं। चुना ही इसलिए हुआ है। यदि एकबार भी वहाँ जानेका काम न पड़े उसे जानेके लिए न कहा जाय तो भला, वह चुना ही क्यों जाता? यह सोचना कि उसे वहाँ जानेके लिए कहा ही न जायगा ऐसी विचित्र और अनहोनी-सी बात है जो समझमें नहीं आसकती।

और किसीके कहने न कहनेकी ज़रूरत भी क्या है? उसे स्वयं ही वहां जाना चाहिये। यह तो उसका कर्तव्य है, उसे सौंपे गये दायित्वोंमें से एक है।

और मानलो कि बुलौवा आ ही गया! उन्होंने बुला भेजा कि आओ, हम जिसतरह काम कर रहे हैं, उसका निरीक्षण कर जाओ!'.. तब?

सारे सनारिया गाँवमें हलचल मच जायगी!

वहाँ जानेवाला आदमी कोई मामूली राहगीर तो होगा नहीं। वह तो बड़ा ही महत्वपूर्ण और उत्तरदायी व्यक्ति होगा। वह वहाँ जाकर उनके कामकी जाँच पड़ताल करेगा।

वे अपनी लिखित शिकायतें तैयार करेंगे, जो-जो ज़रूरतें होंगी उसकी सूची बनाएँगे, और वह सब उसीके सामने रखा जायगा।

और जब वह इस हुलियेमें वहाँ पहुँचेगा तो वे देखकर क्या कहेंगे? यही न कि,

'यह कलन्दर मिशां कौन है ? किस कबाड़खानेसे चला आरहा है ! इसके तो अपने ही बदन पर साबुत कपड़े नहीं ! घूरेपरसे चिथड़े उठा लाया है ! यह भला हमारी क्या सहायता करेगा ?'

वे उसे देख-देखकर हँसेंगे और ग़रीब खब्दीको इतना शर्मिन्दा कर देंगे कि वह कभी आँख उठाकर भी उनकी ओर नहीं देख सकेगा। उनके सामने शिकायतें और माँगें रखना तो ठीक वे उसे अपने पास भी नहीं फटकने देंगे ! फिर चाहे वह बादशाह सोलोमनकी तरह समझदार और जानकार ही क्यों न हो। और जब समीप ही न आने देंगे तो वह निरीक्षण क्या खाक करेगा ?

अपने गाँवमें भी उसकी यही गति होगी। केवल मज़ाक ही नहीं उड़ाया जायगा यदि उसने किसी बातका विरोध किया या अपनी बातपर ज्यादा ज़ोर देकर अड़ा तो कोई मनचला पीछेसे लत्ती भी जमादे ! क्या करो ? फटे चिन्दवालों पर तो कुत्ते भी भौंकते हैं और उनके पीछे पड़ जाते हैं।

यदि सोलोमन बादशाह न होता, यदि उसके बदन पर मखमल और किमख्वाबके कपड़े न होते, यदि उन कपड़ों पर मानिक-मोती टँके हुए न होते, यदि उसके हाथमें पानीदार तलवार न होती तो कौन कहता कि सोलोमन समझदार है ! यदि उसके बदन पर साबुत कपड़े भी न होते तो उसकी विद्वत्तापूर्ण बातोंको सुनने और दूरदर्शितापूर्ण निर्णयोंको माननेके लिए कौन तैयार होता ? यदि वह फटे चिन्दे पहिनकर निकलता तो कोई उसकी ओर झाँकता भी नहीं।

और सारी दुनियाकी समझदारीका अकेले कुछ सोलोमनने ही तो ठेका नहीं ले लिया था। उसके जमानेमें भी और उसके बाद भी उससे कई गुना बड़े-बड़े विद्वान होगये। लेकिन वे बेचारे ग़रीबोंके घरमें पैदा हुए, उनके तनपर साबुत कपड़ा भी नहीं था इसलिए उन्हें कोई जानता भी नहीं। लोगोंको उनके नाम तक याद नहीं रहे।

आज ही की घटनाओंने इस बातकी सचाई और सचोटताको सही साबित कर दिखाया था।

सार्वजनिक सभाके बाद चुने हुए जनप्रतिनिधियोंकी एक औपचारिक बैठक समितिभवनके एक कमरेमें हुई थी। रवादी भी उस बैठकमें जन-प्रतिनिधिकी हैसियतसे आमंत्रित किया गया था। गोधूलि बेला होगई थी। कमरेमें बिजली बत्तीका प्रकाश जगमगा रहा था। जब रवादी बाहरके अन्धेरेसे कमरेके अन्दर बिजलीकी तेज रोशनीमें आया तो दोनों दलोंके प्रतिनिधि आँखें फाड़े उसे देखते ही रह गये। वह हंसोंमें कौएके समान मालूम पड़ रहा था। अपने चिथड़ोंके कारण बेशक 'कौमा मिडारन' बना हुआ था। लोगोंकी निगाहें उसपर इसतरह पड़ रही थीं मानों पुकार पुकार कर कह रही हों :

हम लोगोंके बीच यह फटेहाल मदारी कहाँसे आ टपका!'

बिजलीकी उस तेज रोशनीमें अपने कपड़ोंकी जर्जरता वश रवादी स्वयं भी स्तम्भित रह गया था। उजालेमें सब पैबन्द, छेदे और फटकर लटके हुए लत्ते साफ दीख रहे थे। बैठकमें हिस्सा लेनेवाले लोगबाग उससे इसतरह परे हट गये थे माना वह कोई गन्दा कुत्ता हो। उनके इस व्यव-हारके लिए वह उन्हें कुछ कह भी न सका। कहता किस मुँहसे? वह तो आप ही शरमसे गड़ा जारहा था और चाहता था कि धरती फट जाय तो उसमें समाकर लाज बचाय। यदि उसका बस चलता तो वह स्वयं भी दूसरोंकी तरह अपने आपसे परे हट जाता।

खैर, इतना ही होता तो गनीमत थी, वह बहाना कर जाता कि उसने कुछ देखा समझा ही नहीं, लेकिन मरियम ने तो निर्ममतापूर्वक उसके रीसते हुए घावको ही कुरेद दिया था। वह उसके समीप आकर कानमें बोली :

'रवादी, तुम पीछे ही रहना। आगे मत आना। तुम्हारे बदन पर साबुत कपड़े भी नहीं हैं। दुनिया ही आदमियों जैसा नहीं मालूम पड़ रहा है!'

यह बात उसने इसतरह आँखें निकालकर कही थी कि जैसे किसीने ग्वादीके बदनसे गरम लोहा ही छू दिया हो। उसे अपना चिथड़े-चिथड़े होरहा कोट थेगलोंवाला पायजामा और कालुम रखनेकी जेबों की जगह के थेगले मवकुछ जलते हुएसे मालूम पड़ने लगे। मरियमकी उन कजरारी आँखोंने जैसे अँगारा ही छू दिया हो।

मरियम, तुमने ठीक ही कहा था। मेरे पास तुम्हारी बातका कोई जवाब नहीं था।

और इसीलिए ग्वादीने विरोध नहीं किया। जबतक बैठक चलती रही वह सबकी निगाहें बचाये चुपचाप एक कोनेमें बैठा रहा, और मुँहसे एक शब्दतक न बोला। यह भी एक तरहसे अच्छा ही हुआ कि शीघ्र ही गरमागरम बहस छिड़ गई और कमीशनके सदस्य उसके अस्तित्वको ही भूल गये!

लेकिन यह समझमें नहीं आरहा था कि उन्होंने उसे इतना आदर-मान क्यों दिया था? इतने उत्साहसे उसका चुनावकर उसके प्रति अपना विश्वास क्यों प्रकट किया था? इतने योग्य पुरुषों के साथ उस न कुछ-से आदमीके नामको जोड़कर क्यों गौरवान्वित किया गया था? वह इन्कार करता ही रह गया; लेकिन किसीने उसकी बात न सुनी, न मानी। उसका नाम पुकारे जाते ही सबके सब तालियाँ बजाने और हर्षध्वनि करने लगे थे।

उसने ऐसा कौनसा अच्छा काम किया था? देश और समाजकी क्या सेवाएँ की थीं जिनके उपलक्षमें यह पुरस्कार दिया जा रहा था?

गेरा कहीं पागल तो नहीं होगया था? उसको यह क्या सूझी कि झटसे उसका नाम प्रस्तावित कर बैठा? क्या कारण होसकता है? क्या गेरा उससे परिचित नहीं है? क्या वह उसके काम और व्यवहारके बारेमें जानता नहीं है? उससे तो कुछ भी छिपा नहीं है! फिर भी...

'ग्वादी मित्र!' गेराने उसका नाम लेकर पुकारा था।

ऐसा मालूम पड़ा था मानों बिजली कड़की हो।

दूसरोंके नाम उसने इसतरह नहीं पुकारे थे। उसका नाम पुकारते समय गेराका स्वर भी विचित्र ढङ्गसे झनझना उठा था। ऐसा लग रहा था मानो वह कहने आ ही रहा हो.

'साथियो, सुनिये और खुशियां मनाइये! हम अपने स्वादीको चुन रहे हैं...'

दिलचस्प मजा यह कि थोड़ी ही देर पहले वह स्वादीको गिरफ्तार करने जारहा था। क्योंकि स्वादीका यह खयाल बिलकुल पक्का होचुका था कि उसका रहस्य प्रगट होगया है, भंडा फूट चुका है और अब उसका अन्त निकट है। वह सचमुच बहुत ही ज्यादा डर गया था। इसतरहकी बातें आसानीसे भुलाई नहीं जा सकतीं। यदि गेरा आसानीसे उसको पकड़ लेता, उसकी आंखोंमें आंखें डालकर बार बार पूछता कि क्यों तूने तीन अंगुलियोंसे हाथ मिलाया? या 'जङ्गलमें मोलक लिए क्यों चिल्ला रहा था?' तो स्वादी उससे कुछ न छिपा पाता। सबकुछ मंजूर कर लेता।

गेराकी उन निगाहोंके सामने स्वादी तो क्या बड़े बड़ोंकी छाती कांप उठती थी। अपनी धार करने वालोंको वे आग बुरीतरह डरा और लज्जित कर देती थीं।

फिर चाहे डरसे कहो, चाहे लज्जासे, स्वादी सबकुछ सच सच बतला देता। यह तो उसकी किस्मत ही सिकन्दर थी कि एन मौके पर गेरा दूसरी ओर चला गया और उसका सर्वनाश होते बच गया।

इस विचारसे कि डरका कोई कारण नहीं है स्वादीको आश्वस्त होते और निर्भय होते भी अधिक देर नहीं लगी। गेरा त्रिकालदर्शी सन्त महात्मा या जादूगर तो था नहीं जो तीन अंगुलियोंका रहस्य जान लेता। लेकिन वह मोलवाली बात उसे क्योंकर मालूम हुई? यह प्रश्न भी मनमें

नहीं भर रहा था! शायद उसने इस सम्बन्धमें कुछ सुन लिया है। लेकिन कैं हूँ, गेराको कुछ भी मालूम नहीं है। यदि उसे मालूम होजाता तो ग्वाडी मोरकेतीमें निन्दा न दिखलाई पड़ता!

लेकिन उन्होंने ग्वाडीको चुना क्यों है? क्या कारण होसकता है!

अभी साल भर पहलेकी बात है। गेरा उसे चार्जहैंड तक नियुक्त करनेके लिए राज़ी नहीं हुआ था। उसने कहा था कि 'ग्वाडी उपयुक्त नहीं है।' और गरके पायवालको आगे कर दिया था। और आज एकदम ग्वाडीको चुन लिया, पायवालका नाम तक न लिया! गेराकी ही कृपाका यह फल था कि ग्वाडी अच्छे-अच्छे जाने-माने 'शाफ्ट वर्करों' के आदेशर पाँव रखता हुआ फर्मीशानमें पहुँच गया था। नहीं तो उसे पूछता कौन? देखा नहीं ओनिसी क्रिमनेद सिर धुन रहा था? मारे ईर्ष्याके उसकी आँखें निकली पड़ रही थीं। यदि उसके लड़कोंने उसके हाथ न पकड़ लिये होते तो वह अपने सिर और दाढ़ीके बाल ही नोच डालता!

'तो ओनिसी भैया, तुम्हारा यह ख़याल है कि गेराने मुझे यों गौरवान्वित कर ग़लती की है?'

और ग्वाडीको स्वयं भी ऐसा लग रहा था कि गेराने उसे चुनकर ग़लती की है।

रात होगई थी, अन्धेरा घनीभूत होने लगा था; और ग्वाडी इसी तरह सोचता-विचारता तेज़ीसे कदम रखता अपने घरकी ओर चला जाता था। लेकिन उसके पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। आनन्दातिरेकमें उसे ऐसा मालूम पड़ रहा था मानो उसके पङ्ख उग आये हों और वह हवामें उड़ा चला जारहा हो। उसके अन्दर नूतन शक्ति, नूतन साहस और नूतन सामर्थ्य संचरित होने लगे थे।

बरसोंसे कोनेमें बेकार पड़ी पेटी और उसके अन्दरके कपड़े भी उसे लौह-चुम्बककी तरह ज़ोरसे अपनी ओर खींच रहे थे। इस समय

उसकी सारी आशाएँ उस सन्दूक पर टिकी हुई थीं। उसे ऐसा लग रहा था कि इन पुराने कपड़ोंको फेंकते ही उसका पुनर्जन्म होजायगा, पुराना ग्वादी मर जायेगा और उसके स्थान पर एक नया ग्वादी अवतरित होगा, जिसका मन मुस्कान पुरानेसे सर्वथा भिन्न होगा।

मस्तिष्कके साथ उसके जो सम्बन्ध हैं उनमें भी आमूल परिवर्तन होजाएँगे।

और इस पुनर्जन्मके लिए, नये आत्मसम्मान और मूल्याङ्कनोंके लिए उसे केवल इन पुराने चिन्दोंको उतार फेंकना है और उनके स्थान पर नये कपड़े पहिन लेना है।

चाँद दूरकी एक पहाड़ीके पीछे छिपा हुआ था और उसकी तिरछी किरणोंने पहाड़ीकी चोटीको जगमगा दिया था। पहाड़ीके ऊपरका आसमान प्रकाश-पूरित होगया था, नीचे धरती अपनी ही छायामें लिपटी पड़ी थी। नीले नभके विस्तृत आँगनमें छाया और प्रकाशका घनघोर युद्ध मचा हुआ था। कभी प्रकाश विजय होता था और कभी छाया, गगनका वक्ष कभी रजत प्रकाशसे और कभी कृष्ण कालिमासे भर-भर आता था।

चाँद दिखाई नहीं पड़ता था, फिर भी ऐसा लगता था कि वह दूर नहीं है, ग्वादीकी ठीक पीठके पीछे, बिलकुल पास ही है। थोड़ी देरमें चाँद उग आया और पहाड़ियोंके बीचसे ऊपर उठते ही उसने ग्वादीको [illegible] मिलाया और उसकी छायाको घसीटता हुआ ले चला।

अपनी छायाको देखकर ग्वादी आश्चर्यचकित रह गया। वह छाया लम्बी, बहुत ही लम्बी थी और अपने चरणोंसे बड़े बड़े डग भरती हुई उसके आगे आगे चली जारही थी। उस छायाके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं था, कोई बाधा नहीं थी, ऊँचे दरख्त, बागड़ें, गड्ढोंके ढेर, बड़े पत्थर, झाड़-झंखाड़ सबको अनायासपूर्वक पार करती, सब पर होती हुई उछलती-कूदती फाँदती आगे और बढ़ी जारही थी।

अपने आगे दौड़ती हुई उस छायाको देखकर गादीको ऐसा लग रहा था मानो हमेशाकी धरती भी बदल गई है, जिस धरतीको वह बचपनसे जानता-पहिचानता है, जिसपर घुटनोंके बल रेंगा है और आजदिन तक चलता रहा है, जिसे वह एक स्थिर, अपरिवर्तनशील और ठोसपदार्थके रूप में समझता आया है आज वही धरती उसकी छायाके साथ नाचती, कूदती आगेकी ओर लुढ़कती चली जारही है और उसे भी अपने पीछे चले आने के लिए आमंत्रण कर रही है।

और गादीके मन एक अकेली धरती ही नहीं सारी दुनिया ही बदल गयी थी। जीवनकी जिस वास्तविकताका वह अभीतक अभ्यस्त था वह वास्तविकता ही पूरीतरह उलट-पलट गई थी; और उसे दुनिया बहुत छोटी मालूम पड़ने लगी थी।

अब जैसे उसकी समझमें आरहा था कि कमीशनके लिए उसका नाम प्रस्तावित करने और उसके प्रति इतना विश्वास प्रकट करनेमें गेराने कोई ग़लती नहीं की थी।

जो तर्क-वितर्क और शङ्का-कुशङ्काएँ अभीतक उसे व्यथित कर रही थीं अब वे सबकी सब व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण दिखाई देरही थीं। धीरे-धीरे उसमें यह आत्मविश्वास बद्धमूल होता जारहा था कि सारे मोरकेती गांवमें उसके सिवा दूसरा और कोई नहीं था, जिसे इतने उत्तरदायी पदके लिए चुना जाता। उसके विचार और भी आगे बढ़े और उसने पाया कि एक मोरकेती गांवमें ही क्या सारे संसारमें गादीके जैसा दूरदर्शी, विश्वसनीय और दृढ़-सङ्कल्प आदमी दूसरा नहीं होगा।

आजसे पहले यह बात गेराकी समझमें क्यों नहीं आई थी, क्यों वह गादीके सच्चे स्वरूपको पहिचान न पाया था!

आजका चुनाव गेराकी ग़लती नहीं बल्कि आज दिनतक वह जो ग़लती करता चला आरहा था उसीका परिमार्जन था।

और गाड़ीके मनमें ये विचार झूठी मान्यता और शोकके कारण नहीं उठ रहे थे।

नहीं, अपनी असमानताके प्रति वह पूरी तरहसे सजग था। दुःखके मारे वह पागल नहीं होगया था और न धोखा ही खा रहा था। जितना वह अपने आपको जानता था उतना उसे और कोई नहीं जानता था।

उसने अपने मनके समस्त सन्देहोंको फूंक मारकर उड़ा दिया था।

इस तरह सोचता विचारता वह अपने घरकी राह पर चला जारहा था। उसकी चेतनामें अभूतपूर्व परिवर्तन किस क्षण होगया इसकी जानकारी तो स्वयं उसे भी नहीं थी। फिर भी उसने एक लम्बा डग भरा था और उस एक ही डगसे वह पुरानी दुनियासे नयी दुनियामें आ पहुँचा था।

अपनी छायाको एक ऊँचे पहाड़की फुनगी पर चढ़ते देख वह पुकार उठा शाबाश मेरे शेर, शाबाश!

क्या छलाँग थी वह! क्या लम्बे डग थे वे! वह आनन्दसे ओत प्रोत होउठा। आज उसकी खुशीका, त्योहारका दिन था। अपनी छायाको उड़ते देख उसे ऐसा लग रहा था मानो वह स्वयं ही उड़ा चला जारहा हो। सच तो यह है कि वह अपनी छायाके साथ एकाकार होगया था। अपने और अपनी छायामें भेद करना उसके लिए असम्भव होगया था।

२५

ग्वादीने दुकान परसे अपना पुश्तैनी सन्दूक नीचे उतार लिया था और वह अँगीठीकी तेज आँचके सामने रखा था। सन्दूक मजबूत था और उसके कोने लोहेसे मढ़े हुए थे।

सन्दूक जमाने और धुएँकी मारके कारण ऊपरसे काला होगया था।

लेकिन उसके अन्दरके हिस्सों पर न तो समयका और न धुएँका ही कोई प्रभाव पड़ सका था। अन्दरकी ओरसे वह अब भी बिलकुल नया मालूम पड़ता था। अँगीठीकी लपटोंके प्रकाशमें अन्दरका हिस्सा हाथीदाँतकी पीली झाँईकी तरह जगमगा रहा था।

सन्दूकके खुले हुए ढकने पर उसकी अचकन, रेशमी जाकेट और फेंटा रखा था। उनके साथ ही तेज मुड़े जूते भी रखे थे।

सन्दूकके एक कोने पर कमरपेटीके साथ एक लम्बी, पुराने ढङ्गकी तलवार रखी हुई थी। पेटी जरी, कलाबत्तू और धातुके टुकड़ोंसे अलंकृत की हुई थी।

स्वादीके सभी बेटे, बड़ेसे लगाकर छोटेतक, उसी कोने पर जमे हुए थे। मन्त्रमुग्धकी तरह निर्निमेष दृष्टिसे वे उस तलवारको किसी विरल वस्तुकी तरह देख रहे थे।

अस्तित्वमें आनेके बादसे झोंपड़ेमें इतना प्रकाश कभी नहीं किया गया था जितना कि उसमय होरहा था। जिसदिन अगनिया और स्वादीकी शादी हुई थी उस रात भी उतना उजेला नहीं हुआ था। आज तो बिलकुल दिवालीका समाँ बँध रहा था।

फर्शसे लेकर फूसकी छतमें बने धुआँ निकलनेके छेदतक एक भी कोना ऐसा नहीं था, जहाँ अँधेरा हो, जहाँ प्रकाशकी किरणे नहीं पहुँच रही हों। झाड़-झंखाड़की सूखी टहनियाँ चटराती हुई बार-बार जल उठती थीं और लपटें ठेठ शहतीरतक आपहुँचती थीं।

लकड़ियोंके जलने और चटखनेका स्वर हँसीके फव्वारोंके समान मालूम पड़ता था। ऐसा लगा रहा था कि घरके चूल्हे-चौकेकी रक्षक कोई पुरातन आत्मा कहींसे ढेर-सा आनन्द बटोर लाई है और उसने उसे इस झोंपड़ीमें बिखेर दिया है और अब लपटोंकी खिलखिलाहटके द्वारा सारे संसारको इस बातकी सूचना दी जारही है। और वह आनन्द चिनगारियोंके जाज्वल्यमान

आवरणमें अवतरित होकर झोंपड़ीके अन्धेरे काले कोनोंको दीप्त करता हुआ नाच रहा था।

बच्चोंके बिस्तरेके ऊपर एक लैम्प जल रहा था। लैम्पकी नन्हीं सी टिमटिमाती जोत चूल्हेमें उठनेवाली लपटसे मानो प्रतियोगिता-सी कर रही थी कि देखें कौन अधिक ऊँचे तक कूद सकता है!

सामनेवाली दीवारके पास एक चौकीपर रखे दीपाधारकी बत्तियाँ पूरी शक्ति लगाकर इस आशामें पैंच और फुदक रही थीं कि सम्भव है कोई उनके टिमटिमाते प्रकाशको मशाल ही समझ ले।

उस प्रकाशमें घरके बरतन-भाँडे—थालियाँ, कटोरे, लोटे, पानदान आदि चाँदी और सोनेकी तरह चमक रहे थे। न जाने कबसे बाहर पड़ा बरसों पुराना सटर-पटर उजालेमें आकर घोषणा करने लगा था कि इस हँसी-खुशीकी महफिलमें उसे भी स्थान मिलना चाहिये और यह प्रमाणित करनेके लिए कि वह सर्वथा अनुपयोगी नहीं होगया है उसने अपने रङ्ग-रोगनकी नयी चमक-दमक दिखाना शुरू कर दिया था।

'देखो, हम यहाँ हैं हमारी ओर भी देखो!'—भूतकालके ये अमर ध्वंसावशेष पुकार पुकार कर कह रहे थे और धूलभरे अँधेरे कोनोंकी समाधिसे बाहर निकलकर खिसकते खिसकते पेटीके समीप चले आरहे थे।

यहाँ कड़ियाँ और तख्तोंके ठोकर जीवनकी अँगड़ाई ले रहे थे तो वहाँ फटी पतङ्गें और पानकी पर्चियोंके चिथड़े अपने अस्तित्वकी घोषणा कर रहे थे, जिन डण्डोंको बच्चोंने गुल्ली डण्डा खेलनेके बाद फेंक दिया था वे अपने फटे हुए मुँहसे मुस्करा रहे थे और छोटी छोटी प्रश्नसूचक आँखोंसे ताक रहे थे।

आनन्द और आश्चर्यका उनमें वारापार नहीं था और वे कहते हुए से जान पड़ते थे 'कौन कह सकता है कि हम क्षत-विक्षत होगये हैं, और हमें भुला देना चाहिये!'

छतकी बल्लियों, कड़ियों और बाँसोंपर वर्षोंसे कालिख जमा होते-होते पालिशनुमा बन गई थी और उसपर नीचेका प्रकाश प्रतिबिम्बित होकर सितारोंकी तरह चमक उठता था। उस चमकको देखकर भ्रम होता था कि ऊपर फूसकी छतके बदले कहीं टिमटिमाते सितारोंवाला आसमानका वितान ही तो न तना हो!

स्वामी अपने बदनपर सिर्फ एक कमीज़ पहने, पेटीके समीप खड़ा था और जाकीट तथा कोटमें मानो शृङ्गार करनेकी तैयारियाँ कर रहा था।

उसने अपना चेहरा और हाथ अच्छीतरह मल-मलकर धोये थे और इस काममें साबुनका भी उपयोग किया था। घुटनोंसे नीचे तकके पाँव भी उसने उतनी ही लगनसे धोकर साफ किये थे और इस समय पाँवोंको फर्शकी धूल और गन्दगीसे बचानेके लिए ईंधनके ढेर पर खड़ा था। हाथ-मुँह धोकर वह आग ताप रहा था। अपनी दाढ़ी और मूछोंके बालोंको वह पतले दाँतोंके कंघेसे सँवार रहा था और इस काममें भी उसे उतना ही आनन्द मिल रहा था जितना कि आग तापनेमें। जब कंघेके नुकीले दाँते उलझे हुए बालों को पार कर उसकी चमड़ीमें आ लगते थे तो उसके मुँहसे हलकी-सी हर्षध्वनि 'अहा' के रूपमें निकल पड़ती थी।

'पाला मुझको लाओ बेटा, बापको तपाओ बेटा!' उसने अपने बेटोंको सम्बोधित कर कहा: 'देखो छोकड़ो, अब मैं कपड़े पहनूँगा। चूल्हेमें बहुत-सा पलीता झोंककर काफी उजेला करदो और इस बातका ध्यान रखना कि उजेला कम न होने पाये। बाहर पेड़के नीचे बहुत-सा मोकन (ईंधन) रखा है। जाकर उठा लाओ! आज तुम्हें अपने दद्दूका पूरा-पूरा ध्यान रखना होगा। क्यों बर्दुनिया, लैम्पमें तेल तो काफी है न? नहीं हो तो भरदो। और बच्चो सुनो! तुम्हें तालियाँ बजाकर 'शाबाश'-'शाबाश' चिल्लानेकी ज़रूरत नहीं है। मैं तुमसे ऐसा करनेके लिए नहीं कह रहा हूँ। याद रखो, आगेसे तुम्हें मेरा हुक्म मानना पड़ेगा और जैसा मैं कहूँ वैसा ही करना होगा।'

इससमय बच्चोंका ध्यान अपने पिताके उपदेशोंकी ओर बिलकुल नहीं था। अपने पिताके प्रति कब और कैसे सम्मान प्रदर्शित करना चाहिये इस समय इस बातकी भी फिक्र उन्हें नहीं थी। उन्होंने तो अपने पिताकी बात भी नहीं सुनी थी। उनका सारा ध्यान उस असाधारण तलवार और उतनी ही असाधारण कमरपेटेमें केन्द्रित होगया था।

बच्चोंको इसतरह मौन और ध्यानावस्थित पाकर नादीका ध्यान भी उनकी ओर आकर्षित हुआ। उस तलवारमें उन्हें मग्न देखकर वह प्रसन्न होउठा और थोड़ी देरतक उनकी ओर देखता रहा।

'हाँ बेटो तुम्हारे दादा तुम्हारे लिए इस एक तलवारके सिवा और कोई मनोरञ्जक वस्तु नहीं छोड़ गये हैं।' उसने अपने आपसे कहा। वह बच्चों का ध्यान हटाना नहीं चाहता था इसलिए उनके माथे परसे उसने अपना हाथ अचकनकी ओर बढ़ाया। लेकिन दूरी अधिक होनेके कारण वह अचकनको ले न सका। और घूमकर अचकन तक पहुँचने का मतलब होता पैरोंको गन्दा करना जो वह कदापि नहीं चाहता था।

उसने अपने सबसे बड़े लड़के बर्दगुनियाको आवाज दी

'ए बर्दगुनिया, मेरी अचकन और जाकीट तो लाना जरा!'

अपने पिताकी बात सुनते ही पेटीके चारों ओर जबर्दस्त हङ्गामा मच गया। एक तरहसे घमासान संघर्ष ही छिड़ गया। हर लड़का अपने पिताकी आज्ञाका पालन करना चाहता था। सभी एकसाथ अचकन और जाकीट पर टूट पड़े। छोटे भाई अकेले बर्दगुनियाको इतने बड़े सम्मानका भागी नहीं होने देना चाहते थे। उधर बर्दगुनिया भी अपने अधिकारको सहजरूपसे छोड़नेके लिए तैयार नहीं था, क्योंकि पिताजीने अचकन और जाकीट मांगा तो उसीसे था!

'छोड़ो!'

'पहले मैंने उठाया!'

'छोड़ता है कि नहीं?'

'लाओ, दो!'

जिस अचकन और जाकीटको ग्यादीने अभी थोड़ी देर पहले बड़े ही जतनसे झाड़-पोंछकर और तह करके रखा था वह गेंदकी तरह लड़कोंके हाथोंमें उछलने लगा! लड़के आपसमें झगड़ने लगे और ऐसा मालूम पड़ रहा था कि जिसकी लाठी उसकी भैंसके सिद्धान्त पर ही झगड़ेका अन्त होसकता है। बदंगुनिया अकेला तीन प्रतिद्वन्द्वियोंसे मोर्चा ले रहा था। लड़ाईका परिणाम बिलकुल अनिश्चित होगया था। यह बतलाना मुश्किल था कि कौन जीतेगा और कौन हारेगा?

चिरिमेंने इस झगड़ेसे दूर रहने में ही अपनी कुशल समझी। उसकी कमरमें अभीतक लकड़ी का वह टांका टोंसा हुआ था, जो उसने सभाके समय धारण किया था। उसने समझदारीसे काम लिया और यह सोचकर कि इस छीना-झपटीमें कोई उसका टांका ही न तोड़ दे वह अपने भाइयोंसे काफी दूर हटकर खड़ा होगया था। लेकिन अचकन और जाकीट देनेके अपने अधिकारको उसने नहीं छोड़ा था। उस अधिकारकी घोषणा वह ज़ोर-ज़ोरसे चीख-पुकार मचाकर कर रहा था। मुँहमें एक अँगुली डाले कानोंके पर्दे फाड़ता हुआ वह शोर मचा रहा था:

'मैं दूँगा, पिताजी, मैं दूँगा! अचकन और जाकीट मैं दूँगा!'

घटनाएँ तड़ित्वेगसे घटित होने लगीं।

ग्यादीने महसूस किया कि उसके हस्तक्षेपके बिना मामले का निपटारा असम्भव है।

'अरे, झगड़ा बन्द करो! खींचातानी में तुम अचकन की बारह बजाओगे! उसके चिन्दे उड़ जाएँगे! सुनते हो कि नहीं! जेब वेब उधड़ जायगी!'

उसने कुपित स्वरमें डांट बतलाई। लेकिन वास्तवमें वह जरा भी क्रुद्ध नहीं हुआ था। बच्चोंको मानो हाजरीमें इसतरह मुर्दे पाकर वह मन ही मन प्रसन्न होरहा था। यदि कपड़ोंके खराब होनेका अन्देशा न होता तो वह कदापि हस्तक्षेप न करता और बच्चोंकी अपनी लड़ाईसे आनन्दपूर्वक देखता हुआ जी भरकर हँसता।

जब उसकी डँटफटकारका भी कोई असर नहीं हुआ तो अन्तमें उसे अपनी जगहसे हटना ही पड़ा। पाँच मन्टे करके भी अचकन और जाकीटका उद्धार करना अवश्यम्भावी होगया था। उसने लड़कोंके हाथोंमें से दोनो चीजें छीन लीं और साथ ही जूते भी उठा लिये, फिर अपनी जगह पर आ खड़ा हुआ और कपड़े पहिनने लगा।

झगड़ेका कारण हाथसे निकलते ही झगड़ा एकदम शान्त होगया। लड़के फिर पेटीके पास पहुँच गये और तलवार में दत्तचित्त होगये। खास चीज तो तलवार ही थी, हर बच्चा उसे अपने अधिकारमें करना चाहता था। अचकन और जाकीट तो केवल एक आकस्मिक घटना मात्र थी, जिसने थोड़ी सी देरके लिए उन्हें उत्तेजित कर दिया था।

तलवार थी भी असाधारण रूपसे लम्बी और उसका रूपरङ्ग भी कुछ कम आकर्षक नहीं था।

उसकी मुठिया काफी लम्बी और सींगकी बनी थी। पकड़नेकी जगहसे इस्तेमालके कारण थोड़ी घिस गई थी। पकड़नमें तकलीफ न हो इसलिए ऊपर पतले तार लपेट दिये गये थे। मुठियाके माथे पर शोभाके लिए धातुके दो छोटे छोटे मोगरे बने हुए थे। उजालेमें ये मोगरे और मुठियाका धतुवाला सिरा चमक रहा था। इस समय धातुवाला हिस्सा घिसकर पुराना पड़ गया था, लेकिन किसी जमानेमें इसपर चान्दीकी मीनाकारी रही होगी, क्योंके वेलबूटोंके निशान अब भी विद्यमान थे। चमड़ेकी म्यान काफी पुरानी होगई थी। वह कई जगहसे फट गई थी, टाँके उधड़ गये थे

और अगणित छेदोंमें से म्यानकी अन्दरकी लकड़ी झाँकने लगी थी। म्यानके सिरे पर कबूतरके अण्डे जैसा एक सुन्दर मोगरा बना हुआ था। यहां-वहांसे पालिश उखड़ जानेके बावजूद भी वह चाँदीकी बड़ी सी गोलीके समान मालूम पड़ता था और उजालेमें चमककर देखनेवालेको अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

सारी तलवारमें चिरिमेका ध्यान म्यानके सिरे पर बनी इस चमकती हुई गोली पर ही केन्द्रित था। वह निर्निमेष दृष्टिसे इसी मोगरेको देख रहा था। उसने अपने लकड़ीके खांडेकी मुठिया इस मोगरेसे इसतरह सटाकर रखी थी कि देखनेवालेको भ्रम होजाता था कि मोगरा तलवार पर नहीं खांडे पर ही बना है। इस भ्रमके कारण खांडा बच्चोंकी लकड़ीकी तलवारसे अपेक्षा सचमुचका हथियार मालूम पड़ रहा था। मोगरेको छूनेके लिए उसका हाथ बार बार उठता था मगर वह पूरी शक्ति लगाकर अपने आपको रोक लेता था। लेकिन यह मोगरा उसके मनमें बस गया था और वह उपयुक्त अवसरकी प्रतीक्षामें था। मौका मिलते ही वह मोगरेको हथिया लेगा और फिर कभी उससे विलग नहीं होगा; हमेशा हाथका हाथमें ही रखे रहेगा। मनमें इसतरहका भाव होनेके कारण उसके चेहरेका रङ्ग प्रतिक्षण परिवर्तित होरहा था; उसकी गोल गोल आँखें व्यग्रतापूर्वक दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे घूम रही थीं। क्या करे कि मोगरा उसके हाथमें आजाय?

चिरिमेके भाई उसकी इस मनस्थितिसे सर्वथा बेखबर नहीं थे। वे भी सजग थे और आँखों ही आँखोंमें पूछे ललकार रहे थे: 'देखें, हाथ तो लगा, फिर देखना कैसा मज़ा आता है!' दो भाइयोंकी आँखें चिरिमेकी ओर लगी हुई थीं और वे उसकी प्रत्येक हलचल पर कड़ी निगाह रख रहे थे। बाक़ीके दो भाई मोगरेकी रखवाली कर रहे थे। लेकिन चारों ही इसतरह-सतर्क थे कि यदि चिरिमे अपनी आकांक्षापूर्तिके लिए ज़रा भी प्रयत्न करता तो उसपर शिकारी कुत्तोंकी तरह एकसाथ झपट पड़ते।

गुरुनिशाने तो उसे अपने शरीरका भार देकर वहाँसे हटानेका प्रयत्न

भी शुरू कर दिया था। लेकिन चिरिमी भी अपनी पूरी शक्ति लगाकर अड़ गया था और जौनर भी नहीं हटा था। उसका तना हुआ शरीर पत्थरकी तरह कड़ा और मज़बूत होगया था।

लड़कोंकी इस चुप्पीका कोई कारण गादीकी समझमें नहीं आया, और कारणका पता लगानेके लिए इससमय उसके पास समय भी नहीं था। उसका सारा ध्यान कपड़ोंमें उलझा हुआ था। उसने जाकीट तो पहिन लिया था, लेकिन अभी उसके बटन नहीं लगाये थे, और अब अचकन पहिन रहा था। सारा दारमदार तो उस अचकन पर ही था और इसीलिए वह इतनी जल्दी कर रहा था। अस्तीनें चढ़ानेके बाद उसने पाया कि अचकन बिलकुल ठीक बैठती है। इसका नाम है तक़दीर! वह प्रसन्न होउठा। उसने अचकनको ऊपर खींचा, नीचे खींचा, गलेके यहांसे पकड़कर हिलाया; बगलमें से झटके दिये, कन्धोंको हिला-डुलाकर बराबर किया, सीना फुलाकर अचकनको पीछेकी ओरसे खींचा...

'बिलकुल ठीक बैठता है सवासोलह आने ठीक!' गादीने परम सन्तोषके साथ अपनी राय व्यक्त की और ऊपरकी ओरसे अचकन तथा जाकीटकी हुकें लगाने लगा। हुकें भी आसानी से बैठती गईं, कोई कठिनाई नहीं हुई। उसकी अँगुलियां नीचेकी ओर उतरती उतरती पेटपर आकर रुक गईं और वहीं रुकी रह गईं। उसके चेहरे पर विषाद और निरसताकी गहरी छाया फैल गई। हाथ अधरमें ही रह गये और अँगुलियाँ जैसे ठिठुर गईं। पेट पर जाकीट और अचकन दोनो ही तङ्ग हारहे थे, दोनोंकी ही हुकें नहीं लग रही थीं।

'बड़ी मुसीबतकी बात है!' बड़ी देरतक हुकोंको बैठानेका प्रयत्न करनेके बाद गादीने सोचा कि अब क्या करना चाहिये? यह तो फकीरकी फूटी क़िस्मतसे भरी चिलम ही फूल रही है! उसने ज़ोरसे फेफड़ोंकी सांस बाहर निकाली और पेटको जितना अन्दर खींचा जासकता था खींचा। इतना करनेके

बाद वह फिर हुकको आँकड़ीमें बैठानेका प्रयत्न करने लगा, लेकिन हरबार हुक और आँकड़ी दोनों ही उसकी अँगुलियोंमें से फिसल जाती थीं। अब उसकी समझमें आया कि दोष अचकन और जाकीटका नहीं इन अँगुलियोंका है! उसने अँगुलियों पर फूँक मारी, कपड़े पर रगड़ा, बारी-बारीसे चटखाया, ज़ोर-ज़ोरसे झटके दिये और फिर जोर शोरसे हुकों पर आक्रमण बोल दिया। लेकिन हुकोंने भी सत्याग्रह कर रखा था। कोई तरकीब काम नहीं दे रही थी। और सब हुक तो बैठ गई थीं, नीचेकी केवल दो हुकोंने खुली बग़ावतका ऐलान कर दिया था।

वह सिरको झुकाकर हुकोंकी ओर देखने लगा कि आखिर पता तो चले कि इन कमबख्तोंके इरादे क्या हैं? साथ ही इस बातकी भी छानबीन की जासके कि पेट पर अचकन तङ्ग क्यों पड़ रही है?

खादीके बदन पर यह अचकन एक तरहसे तङ्ग ही पड़ता था। सीनेके यहांसे कसा हुआ होनेके कारण पेट दबता था। ऊपर की हुकें फँसादी जानेके कारण पेटका पिलपिलापन वहां थोड़ा पिचक गया था, लेकिन नीचे जाकर अधिक फैल गया था। नीचे फैलनेकी अधिक गुंजाइश मिली तो कमीज़ सहित आगेको निकल आया और हुकें लगानेमें बाधक होरहा था। खादीकी आँखोंको ऐसा लग रहा था कि अचकन जहांसे बन्द होना चाहिये ठीक वहीं एक फूला हुआ गुब्बारा अन्दरसे बाहर उठ आया है!

उसे निराशा होने लगी। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने सोचा कि नहीं, ऐसा हो ही नहीं सकता:

'अवश्य ही मेरी आँखें धोखा खारही हैं। अन्धेरेमें ठीकसे दीख नहीं रहा है इसलिए भ्रम होगया है।'

पिछले दो-एक दिन काममें लग जानेके कारण अपने बढ़े हुए पेटकी ओर उसका ध्यान ही नहीं जा पाया था और वह थोड़ा पिचक भी गया था! तिल्लीने भी उसे परेशान नहीं किया था; दर्द वर्द कुछ मालूम ही नहीं होता

था। असलमें तो तिल्ली और पेटका दर्द म्वादीके लिए एक अच्छा खासा बहाना था। दर्द कम और हाय-तोबा ही अधिक थी।

'उजेला करो! उजेला! मुझे कुछ दीख नहीं रहा है!' उसने चीख-कर कहा।

और यों उसने अपना सारा गुस्सा उतारा बर्दंगुनिया पर।

'बड़ा नालायक लड़का है। कहना तो करता ही नहीं! खड़ा खड़ा सुनता रहेगा। बर्दंगुनिया, अब भी सुना कि नहीं? मैं तुझसे कह रहा हूँ। कितनी मर्तबा कह चुका कि उनसे कह सरररर घरमें बिजली लगवा ले। एक ओनिसीके लड़के हैं! घरमें ही क्या उन्होंने ढोरोंके ओसारेमें भी बिजली लगवा ली होगी। तुझसे घरमें भी लगवाते नहीं बना! आखिर तू है किस मर्जकी दवा? खड़ा मेरा मुँह क्या ताक रहा है? उजाला कर! दिखता है कि नहीं, मुझसे अचकन की हुकें नहीं लग रही हैं?'

जब बर्दंगुनियाने कोई जवाब नहीं दिया तो म्वादी और भी जोरसे चिल्लाया.

अब यहाँ क्या खड़ा है? यहाँ आकर मेरी मदद कर! चल, जल्दी आ!'

म्वादी रेशमी जाकीट, अचकन और नये जूतोंमें बिलकुल दूसरा आदमी मालूम पड़ता था। बर्दंगुनियाने उसकी ओर देखा तो पहले तो पहिचान न पाया और डर गया। सोचने लगा कि घरमें यह अजनबी कौन आ घुसा है? आवाज़ सुनी तो उसका भ्रम मिटा। लेकिन तलवारके सामीपसे वह हटना नहीं चाहता था, और पिताकी आज्ञा भी टाली नहीं जासकती थी। इसलिए बेमनसे वह अपने पिताकी सहायता करनेके लिए उठा।

उठते उठते चिरिमोरी ओर अँगुलीसे इशारा करते हुए उसने अपने भाइयोंको सचेत किया•

'इसकी ओर देखते रहना! यह कहीं गड़बड़ न कर बैठे।'

पिताके नये कपड़े, डपटती हुई आवाज़ और रौब-दाबके कारण मर्दगुनियाके मन पर कुछ ऐसी दहशत बैठ गई थी कि रमादीके समीप जानेकी उसकी हिम्मत नहीं होरही थी। वह संभ्रमपूर्वक थोड़ा दूर खड़ा होगया। रमादीने जब मर्दगुनियाको अपने प्रति यों सम्मान प्रदर्शित करते देखा तो मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ और सोचने लगा :

'निश्चय ही यह अचकन मुझ पर फबती है!'

'आजा, बेटा आजा! समीप चला आ! डरता क्यों है? मैं कोई ग़ैर नहीं तेरा बाप ही हूँ।' उसने स्नेहपूर्वक कहा और मर्दगुनियाको वे दुगमही हुक्के पतलाते हुए अपनी बात दुहराई :

'ज़रा इन्हें लगा तो दे बेटा!'

जब उसने मर्दगुनियाकी नन्हीं और चपल अँगुलियोंको अपने पेटपर तेज़ीसे चलते हुए देखा तो उसकी निराशा आशामें परिवर्तित होगई। मर्दगुनियाको डांटने और उसपर नाराज़ होनेके लिए उसे मन ही मन दुःख हुआ। अब अपने बेटेका हौसला बढ़ानेके लिए उसने और भी अधिक स्नेहसे कहा :

'एक बात मैं तुमसे ज़रूर कहूँगा बेटा! यदि तू गेरासे उसका सर्वस्व भी माँग ले तो वह देने से इन्कार नहीं करेगा। सो बिजली-बत्तीकी तो बात ही क्या है! यदि तू उससे कहे तो वह ज़रूर हमारे घरमें बिजली लगवाए। लेकिन तू तो पूरा भोंदावसन्त है! माँगनेको बुरा समझता है न! मरि जाऊँ माँगूँ नहीं, क्यों!'

वह हँस दिया और आगे बोला :

'तू जितना छोटा है उतना ही खोटा है, बेटा; सच, पूरा भोंदावसन्त है! गेरा यदि अपने हमउम्रोंमें बड़ा है और सबका नेता है तो तू भी उससे कम नहीं। तू भी अपनी उमरके छोकड़ोंमें अव्वल और उन सबका नेता है! अच्छा समझमें! मरिअमके यहाँ भी उन्होंने बिजली लगा दी है; फिर हमीं बड़ा में दलिद्री क्यों? क्या हम कियोंसे कम हैं?

'लेकिन पिताजी मरियम मैंसो तो शाकवर्कर है। उनकी तो तसवीर भी अखबारोंमें छप चुकी है!' बर्देगुनिआने जैसे अपने पिताको महत्वकी बात बतलादी हो।

'अबे, जा भी! मैं क्या कुछ कम महत्त्वपूर्ण हूं? याद है उन्होंने कितने उत्साहसे मुझे चुना और किसतरह मेरे प्रति सम्मान प्रदर्शित किया था? ग्वाडी बिग्रा जिन्दाबाद' के नारे लगाते लगाते बेचारोंके गले ही बैठ गये थे। और यह ग्वाडी बिग्रा कौन है? बतला मैं ही हूं न तेरा बाप, या तू समझता है कि यह कोई और व्यक्ति है? आये बड़े शाकवर्करकी दुम!'

'पिताजी, बोलिये मत! बोलनेसे आपका पेट फूल जाता है और हुकें लगती नहीं हैं।' बर्देगुनिआने अपने पिता पर जबानबन्दीके हुक्मकी तामील करते हुए कहा। हुकको ओंकड़ीमें फँसानेके लिए वह अपनी पूरी शक्ति लगाकर भिड़ा हुआ था। ओठ भींचकर वह बार-बार ज़ोर लगाता था और अपने पिताके पेटको इसतरह दबा और हूँचे मार रहा था कि ग्वाडीका दम ही फूलने लग गया था।

'जाने दे बेटा, तुमसे नहीं लगेगा। और मैं भी अब बर्दाश्त नहीं कर सकता। तेरे हूँचोंने तो मेरे पेटका पानी ही हिला दिया है।' उसने अनुनयके स्वरमें कहा। 'अब तो सिर्फ एक ही प्राणी है जो इसमें मेरी सहायता कर सकता है। जानता है वह कौन है? मरियम। उसके कहने पर वह कमरबन्द ढीला कर देगी या दो चार टाँके इधर उधर खिसका देगी। हुकोंको खिसकाना तो बेतुका रहेगा। ज़रा लपककर देख तो आ बेटा! ठेठ वहाँतक जानेकी ज़रूरत नहीं है। बागड़से ही दीख जायगा। बत्ती जलती हो तो समझना कि जाग रही है और अन्धेरा होगया हो तो समझना कि सोगई है। सवेरे भी करवा लेते, लेकिन सुबह उसे समय नहीं मिलता है। घरका काम और फिर चायबागान आनेकी जल्दी। काम

पर पहुँचती भी तो वह सबसे पहले है। संभव है कि इससमय वह थोड़ा समय निराकर करदे...'

दरवाजे तक जाकर वर्दगुनिया मुड़ा और उसने पूछा :

'उन्हें यहीं आनेके लिए कह दूँ, दद्दू? न हो तो साथ ही बुला लाऊँ!'

'नहीं बेटा, मैं स्वयं ही उसके यहाँ चला आऊँगा। तू सिर्फ यही देख दे कि वतो बुक्त तो नहीं गई है! यहां बुलानेकी बात कहेगा तो वह घबरा जायेगी!'

जब वर्दगुनिया चला गया तो स्वादी अपनी जगहसे चलकर लड़कोंके पास आये, जो अब भी पेट के कोने पर डटे हुए तलवारको ही देख रहे थे!

'कैसे मंत्र-मुग्धको तरह देख रहे हैं! इनके लिये तो एक अजूबा ही है!'

वह थोड़ी देरतक बच्चोंकी ओर टक लगाये देखता रहा और न, जाने क्यों उसका जी भर आया। अपने आवेशको किसीतरह रोकते हुए उसने उनसे कहा :

'हां, मेरे लाड़लो, जी भरकर देख लो! यह तुम्हारे दादाकी तलवार है! बेचारे उमरभर इसे अपनी कमरसे लगाये रहे। क्षणभरके लिए भी अपनेसे जुदा नहीं किया। घर पर रहते थे तब भी और बाहर जाते थे तब भी तलवार लटकी ही रहती थी। खेतमें काम करने जाते तब भी तलवारको साथ ले जाते थे! तलवार बांधकर चलना उनकी आदतमें ही शुमार होगया था! वह जमाना भी बड़ी मारकाटका था और मेरा ख्याल है कि इसी वजह से उनकी यह आदत पड़ गई होगी। लेकिन तुम यह सुनकर ताज्जुब करोगे कि उन्होंने अपने सारे जीवनमें किसी आदमी पर तलवार नहीं उठाई; अपनी तलवारसे किसीको चोट या नुकसान नहीं पहुँचाया। उन दिनों हमारे दुश्मनोंकी भी कोई कमी नहीं थी। कई ऐसे

थे जो हमारे खूनके प्यासे होरहे थे और मौतकी तलाशमें ही रहते थे। कम से कम दो चारको तो तुम्हारे दादा मौतके घाट उतार ही सकते थे। मैं कितना चाहता था कि वे अपने दुश्मनोंके खिलाफ तलवारका उपयोग करें लेकिन उनमें हिम्मत नहीं थी। डरते थे बेचारे! सीधे सादे किसान थे। वह डरते थे कि तलवार चलाई तो मुसीबतमें पड़ जाएंगे और बालबच्चे तबाह होजाएंगे। अकेले आदमी थे। दूसरा कोई देखनेवाला नहीं था। बच्चोंका खयाल करके रह जाते थे। उन्हें अपने बालबच्चोंका और पोते-पोतियोंका भी बड़ा खयाल था। तुम्हारा तो उस समय जनम भी नहीं हुआ था लेकिन वे तुम्हारे लिए भी सञ्चय किया करते थे। तुम्हारे लिए ही उन्होंने बैलकी तरह काम किया। जनमभर जुएमें जुते रहे। जानते हो अपनी तलवारसे वह कौनसा काम लेते थे? जब कुल्हाड़ा खोया होजाता तो लकड़ियां उससे काटते थे। कहते थे कि यह तलवार तुर्किस्तानकी बनी हुई है और लोहा भी कड़ा सख्त है। अपनी तलवारसे वह भूसी यों भी काटा करते थे। पेड़ पर चढ़ी लताएँ काटनेमें तलवार कुल्हाड़ीकी अपेक्षा कहीं ज्यादा अच्छा काम देती है।'

बोलते बोलते ग्वादीका कण्ठ गद्गद् होगया था। उसे अपने पिताकी याद हो आई थी और हृदयमें भावनाओंकी लहरें उठने लगी थीं। पुराने दिनोंकी और पिताकी स्मृतिमें कहे गए ये शब्द अपने ही शब्द उसे अच्छे लग रहे थे। अपने संस्मरणोंका यह सिलसिला न जाने कबतक चलता रहता, लेकिन थोड़ी ही देरमें वर्देयुनिकाने आकर खबर सुनाई

'पिताजी मरियम सोती नहीं है जाग रही है।'

ग्वादीने झटसे अपना फेल्ट उठा लिया और हमेशाकी तरह उसे अपने माथे पर लपेट लिया। फिर अपने कपड़ोंके थुक हुए गट्ठरोंके बीच हाथ डालकर दूसरा तलवार और कारपेटीको अपने अधिकारमें लिया।

लेकिन चिरिमीने म्यानके नीचे बनी हुई गोलीको न छोड़ा; वह उससे चिपट-सा गया और ज़ोर-ज़ोरसे चीखने लगा :

'यह मुझे देदो ! मुझे देदो !'

ग्वादी मुँहसे कुछ न बोला; उसने एक ही झटकेमें तलवार चिरिमके हाथसे खींचली और दो क़दम पीछे हटकर उसे कमरमें बाँधने लगा। पेटी बँध जानेसे उसका पेट इतना फूला और बाहर निकला हुआ नहीं मालूम पड़ता था। तलवारकी ऊपर उठी हुई मुठियाके कारण वह थोड़ा दबा हुआ सा प्रतीत होता था। मुठिया पर बने हुए मोगरे उसकी छाती तक पहुँच रहे थे और म्यानके नीचेकी अण्डाकृति गोली घुटनोंसे लग रही थी।

चिरिमी एक तो अपने भाइयोंको चिढ़ाना चाहता था और दूसरे ज़िद करके उसे वह लम्बोतरा मोगरा पा जानेकी उम्मीद थी, इसलिए वह उसे छोड़नेको उद्यत नहीं हुआ। लेकिन जब उसने अपने पिताको रेशमी जाकीट, अचकन और ऊपरसे तलवार बाँधे हुए देखा तो वह डर गया। 'अरे, यह कौन है?' डरके मारे उसके मुँहसे चीख़-सी निकल पड़ी और वह दौड़कर अपने भाइयोंके पीछे जा छिपा।

'डाकुओंका सरदार है रे चिरिमी, डाकुओंका सरदार ! पास भी गया है तो पेटमें तलवार घुसेड़ देगा ! खबरदार, बचकर रहना!' गुलुनियाने उसे परेशान करनेके विचारसे कहा।

लेकिन ग्वादीने उसको हिम्मत बँधानेके लिए एक दूसरी ही बात कही :

'चिरिमी, तेरे पास खांडा है और मेरे पास खाली तलवार है। देखता क्या है, खांडा खींचकर कूद पड़ मैदानमें ! हो जायें दो-दो हाथ ! देखें कैसा बहादुर है हमारा चिरिमी?'

अपने पिताकी आवाज़ सुनकर चिरिमीके जीमें जी आया।

'अरे, यह तो पिताजी हैं!' उसने आश्वस्त होकर कहा और छिपनेकी जगहसे बाहर आकर दो डग आगे बढ़ गया।

'खींच ले खाँडा!' ग्वादी उसे प्रोत्साहित करता हुआ कहने लगा 'हम भी तो देखें कि तू कितना बहादुर है!'

ग्वादी तलवार पकड़कर लड़नेको उद्यत हो गया।

चारों भाई एक स्वरमें चिरिमीका हौसला बढ़ाने लगे :

'हाँ चिरिमी, डरे मत खींच ले खाँड़ा!'

चिरिमी खाँडा खींचकर और पैंतरा बदलकर खड़ा हो गया।

ग्वादी म्यानमें से तलवारको खींचने लगा लेकिन वह म्यानमें फँस गई थी और बाहर निकलती ही नहीं थी। उसने बार बार खींचा लेकिन सफल न हो सका।

'निकलती ही नहीं है! ऐसा मालूम पड़ता है कि मुर्चा लग गई है। अकेले से निकलेगी नहीं। बर्दगुनिया, तू भी जरा हाथ तो बँटा भैया!'

अपने पिताको परेशानीमें पड़ा देख लड़के खिलखिला उठे।

चिरिमीने अवसरसे पूरा पूरा लाभ उठाया। उसने आगे बढ़कर खाँड़ा अपने पिताके कोटसे छू दिया और विजेताके दर्पसे खड़ा हो गया।

तलवारको निकालनेका प्रयत्न करते हुए ग्वादीने हँसकर कहा :

'हाय हाय! इसने तो मुझे मार ही डाला! मैं हार गया और यह जीत गया।'

जैसे बने वैसे तलवारको म्यानमें से बाहर खींचना था। इसलिए उसने तलवारको पेटीमें से निकाला और मुठिया कसकर पकड़ ली। बर्दगुनिया म्यान को पकड़कर अपनी ओर खींचने लगा। दूसरे भाई भी उसकी मदद पर दौड़े आये। सब मिलकर खींचने लगे।

'हाँ, खींचो मर्दो, हइँया, ज़ोर लगाओ हइँया...'.

खींचते खींचते लम्बोतरी गोली बर्दगुनियाके हाथमें रह गई और म्यान आवाज़ करती हुई फर्श पर जा गिरी। ग्वादी तलवारकी चमकती हुई धारको गौरसे देखने लगा। उसने लड़कोंसे कहा :

'दौड़कर थोड़ा-सा तेल तो ले आओ! मुठियाके ठीक नीचे मुँह पर ही मुर्चा लग गया है। इसीलिए म्यान से बाहर नहीं निकल रही थी।'

वह खुद ही अलमारीके पास जाकर तेल ढूंढने लगा।

बर्दगुनियाके हाथमें उस गोलीको देखते ही चिरिमो उत्तेजित हो उठा; उसने फिर अपना रौंडा खींच लिया और ललकार कर बर्दगुनियासे कहा :

'लाओ, इधर लाओ! चुपचाप बाएँ हाथसे रख दो!'

वह अपने पिताको पराजित कर चुका था; फिर बर्दगुनियाको हराना कौन बड़ी बात थी!

२६

उत्तेजित लड़कोंको शान्त करना कुछ सरल काम तो था नहीं। ग्वादी बड़ी कठिनाईमें पड़ गया। बच्चे अपने पिताको छोड़ते ही नहीं थे। अन्तमें उसने उन्हें बर्दगुनियाके हवाले किया कि किसीतरह समझा-बुझाकर, बहलाकर सुला दे; और आप यरियमके यहाँ चल दिया।

वह इससमय इतना प्रसन्न था जितना कि नया खिलौना पाकर, मेलेमें जाकर या नये कपड़े पहिनकर बच्चे होते हैं।

वह उसे इन बढ़िया कपड़ोंमें देखेगी तो क्या कहेगी? मुमकिन है कि पहिचान ही न पाये! यही समझेगी कि कोई अजनबी है, खूब ही

उसका दरवाजा खटखटा रहा है। वह किवाड़ ही नहीं खोलेगी। और इस लम्बी तलवारको देखकर वह कितना डर जायेगी? सम्भव है कि उसके मुँहसे चीख भी निकल पड़े!

उसे यों डरते, घबराते और भयभ्रान्त अपनी ओर देखते हुए ग्यादीको कितना मज़ा आयेगा! मरियमसे सम्मान पानेकी उसकी दबी हुई आकांक्षा पूरी हो जायेगी। हमेशा वह उसे कितना झिड़कती रहती है! तीन कौड़ीका आदमी नहीं समझती। जब देखो तब उपदेशों, सम्बोधनों और झिड़कियों उलहनोंका दफ्तर खोले रहती है। सुनते सुनते उसके कान ही पक गये। कभी सीधे मुँह दो बात नहीं करती। बस अब बहुत हो गया! ग्यादी अपनी कीमत जानता है। कैसे रहना और कैसे बरतना, उसे मालूम है। किसीको सीख देनेकी ज़रूरत नहीं। वह कोई गलीका कुत्ता है या राह चलता भिखारी कि जब चाहा फटकार दिया! आज मरियम भी देख ले कि ग्यादी कौन है और क्या है?

ग्यादीका साहस भी गज़बका था। वह धृष्टताकी सीमा तक जा पहुँचा था। उसके मनमें भय और आशङ्काका नामोनिशान नहीं था, जैसे कभी जानता ही न हो। अपना सीना फुलाये, सिर उठाये, कन्धोंको पीछेकी ओर ताने वह निधड़क आँगनमें होकर चला जा रहा था। नया जाकेट और नयी अचकन पहिनकर कोई इसतरह न चले तो फिर भला किसतरह चलेगा? ठाट-बाट और रौब-दाबमें कोई कसर बाकी न रह जाय इसलिए उसका एक हाथ तलवारकी मुठिया पर रखा था। उसमें एक नयी उमङ्ग, एक नया जोश हिलोरें ले रहा था।

लेकिन जैसे ही वह अपने आँगनमें से निकलकर बाहर गलीमें आया और सामने मरियमका मकान दिखाई पड़ा कि उसके देवता कूच कर गये। सारा जोश और उत्साह काफूर हो गया। आत्मविश्वास ऐसा विदा हुआ जैसे गधेके सिरसे सींग! और पाँव सीसेके हो गये! इतनी रात बीते मरियमके घर जानेका कोई सङ्गत कारण उसकी समझमें नहीं आ रहा था।

चुस्त मचकनको ढीला करवानेकी दलील स्वयं उसे ही सारहीन मालूम पड़ रही थी। यह कोई ऐसा महत्वपूर्ण और आवश्यक काम नहीं था जिसे लेकर आधीरातमें एक सम्भ्रान्त विधवाका दरवाज़ा खटखटाया जाय!

'नहीं, इसतरहकी दलीलसे काम नहीं चलेगा! इससे तो उलटे मुसीबतमें पड़ जानेका अन्देशा है।'

वह सोच-विचारमें डूब सा गया।

उसे कोई ज्यादा अच्छा बहाना ढूँढ़ निकालना चाहिये! बहाना कोई भी क्यों न हो सारा दारोमदार तो कहनेके ढङ्ग पर निर्भर करता है। बात जिसतरहके शब्दोंमें कही जायगी, सुनने वाले पर भी वैसा ही प्रभाव पड़ेगा। मुख्य बात तो कहनेका अन्दाज़ है। लेकिन जो भी हो मरियमको किसी भी हालतमें उसके वास्तविक उद्देश्यका पता नहीं चलना चाहिये।

उसे पूरा विश्वास था कि वह अपनी बात बनानेकी कलाकी-सहायतासे यहाँ भी बाज़ी मार ले जायगा। डरनेकी क्या ज़रूरत है? हाजिरजवाबी आबाद रहे! उसकी वाणी औचित्यपूर्ण शब्दोंको खोज ही निकालेगी। पर मानलो कि ऐनवक्त पर हाजिरजवाबी भी दग़ा दे जाय? पहलेसे तैयारी कर लेना क्या बुरा है! और जिसतरह नौकरीकी तलाशमें आनेवाला उम्मीदवार साहबके सामनेके वक्त दिये जाने वाले जवाबोंकी तैयारी करता है, उसीप्रकार वह मरियमसे वार्तालाप करनेकी पूर्व तैयारियोंमें जुट गया। पहले उसने शब्दोंका चयन किया, फिर वाक्य बनाये और उन्हें अच्छी तरह याद कर लिया। अब वह अपने अस्त्र-शस्त्रसे पूरीतरह लैस हो गया था! हारिये न हिम्मत...

लेकिन फिर भी रातमें चुस्त मचकनको ढीला करवानेके लिये जानेकी बातसे वह स्वयं भी सशङ्क-सा हो रहा था; मनमें कहीं खुटका लगा हुआ था।

वह और भी गहराईसे विचार करने लगा।

अब वह मरियमके फाटक पर पहुँच गया था।

वहाँसे खिड़की सामने दिख रही थी। फाटकसे वहाँका फासला मुश्किलसे बीस कदम होगा। लेकिन यही फासला उसे हिमालय पर्वतकी दुर्गम चढ़ाईके समान लगा। जो हालत नये शिकारीकी हाँका हो जानेके बाद होती है ठीक वही दशा इससमय ग्वादीकी होरही थी। यदि खिड़की दूर होती तो सम्भवतः उसके हाथ पैर यों न फूलते लेकिन खिड़कीका इतना निकट होना ही उसकी घबराहटका कारण बन गया। याद किये हुए शब्द और वाक्य सब भूल गये। क्यों न थोड़ा घूम आये? घबराहट मिट जायेगी। फाटकके अन्दर जानेकी अपेक्षा आगे बढ़ जाय? लेकिन आगे बढ़ कर कहाँ जाय?

उसकी गति साँप छछूँदरकी सी होरही थी। किसी भी एक निर्णय पर पहुँचना असम्भव होगया था। आगे बढ़, हिम्मतसे काम ले या घर लौट जाय?

वह इसतरह असमञ्जस में पड़ा न जाने कबतक वहाँ खड़ा रहता, लेकिन मरियमके कुत्ते मुरियाने आकर उसको इस विषम स्थितिमें से उबार लिया। दरवाज़े पर इतनी रात बीते एक आदमीको खड़ा देख मुरिया ज़ोर ज़ोर से भौंकता हुआ फाटक पर दौड़ा आया।

अब वहाँसे कदम पीछे हटाना बेमानी था। मुड़े कि मुरिया झपटा! फिर तो लेनेके देने पड़ जाते। अब तो समझदारी इसी बातमें थी कि आगे बढ़कर परिस्थितिका मुकाबला किया जाय।

'मुरिया! मुरिया! च्-च्-च्! मुरिया!' ग्वादीने कुत्तेको आवाज़ दी।

कुत्तेने ग्वादीकी आवाज़ पहिचान ली। उसने भौंकना बन्द कर दिया। लेकिन अभी कुत्तेका सन्देह पूरी तरहसे मिटा नहीं था। नवागन्तुक ग्वादी नहीं होसकता। इसके बदन पर तो ग्वादीकी हमेशाकी

पोशाक नहीं है। सम्भव है कि आवाज़में धोखा होगया हो! और कुत्ता गुर्राकर झपटनेको तैयार होगया! ख्वादीने देखा कि कुत्तेका विश्वास सम्पादन किये बिना उद्धारका कोई रास्ता नहीं है। इसलिए वह दो कदम आगे बढ़ा ताकि कुत्ता उसे ठीकसे देखकर पहिचानले! साथ ही वह स्नेहपूर्वक कुत्तेको मीठी झिड़कियाँ भी सुनाने लगा:

'वाह रे मुरिया, अपने रातदिनके पड़ौसीको ही भूल गया? ऐसी भी क्या बेरुखी!'

जब उसे कुत्तेके मनसे सन्देहके मिट जानेका पक्का विश्वास होगया तभी उसने फाटक खोलनेके लिए हाथ बढ़ाया। मुरिया 'कूँ-कूँ' करता हुआ दुम हिलाने लगा था।

ख्वादी मुरियाकी बड़ी कद्र करता और उसे बड़ा ही विश्वासपात्र कुत्ता समझता था! इतने अच्छे द्वारपालके संरक्षणमें वह मरियमको पूरीतरह सुरक्षित पाता था। आज अनायास ही मुरियाकी स्वामीभक्तिकी परीक्षा होगई थी और उसे यों उत्तीर्ण होते देख मुरियाके प्रति ख्वादीका सम्मान चौगुना बढ़ गया था! उसने अंधेरेमें फाटक खोलकर अन्दर जाने लायक रास्ता बनाया और कुत्तेसे मीठी-मीठी बातें करता हुआ अन्दर आँगनमें खिसक गया।

कुत्तेसे बातें करते हुए उसके उपजाऊ मस्तिष्कमें एक नया विचार उत्पन्न हुआ और वह उछल पड़ा।

'लो, चुटकी बजाते सब कठिनाइयाँ हल हो गईं। मैं मुरियासे ज़रा ऊँचे स्वरमें बातचीत करूँगा और आवाज सुनकर मरियम खिड़कीमें से झाँककर देखेगी कि कौन है?'

उसने अपनी पीठ ठोकली। वाह उस्ताद, क्या दूर की कौड़ी लाये हो! सीधे जाकर दरवाज़ा खटखटानेकी अपेक्षा इस तरकीबसे दरवाज़ा आप ही खुल जायगा। देखना तो सही! अपने आँगनमें किसीको कुत्तेसे बातें करते हुए सुनेगी तो मरियम या तो खिड़कीसे झाँककर या बरामदेमें आकर अवश्य पुकारेगी: 'कौन है! क्या हो रहा है?'

तब वह निकट जरूर रहेगा।

मैं तुम्हारे फाटकके सामनेसे होकर जा रहा था। मुरयाको देखकर उससे बातें करने लग गया और खुद मुझे ही नहीं मालूम रहा कि कब और कैसे अन्दर चला आया।'

और तब वह उनके आराममें खलल डालनेके लिए माफी माँग लेगा। और यों गाड़ी चल निकलेगी।

इस सारी योजनामें सबसे सुन्दर बात तो यह थी कि उसे इतनी रात बीते अपने यहाँ आने और उसे पुकारनेका कारण नहीं बतलाना पड़ेगा, न कोई सफाई ही पेश करनी होगी। मुरया और संयोग पर सारी जिम्मेदारी डालकर वह अपने निश्चिन्त हो जायेगा।

वह तत्काल अपनी इस सुन्दर योजनाको कार्यान्वित करनेमें लग गया। कुत्तेको बरामदेके निकट ले जाकर उससे इधर-उधरकी बातें करने और हाल चाल पूछने लगा।

काफी समय बीत जाने पर भी योजनाकी सफलताके कोई चिह्न दृष्टिगोचर नहीं हुए। मरियमके घरमें वैसी ही निस्तब्धता छाई रही। न तो उसने खिड़की खोलकर झाँका और न वह बरामदेमें ही आई।

'कहीं सो तो नहीं गई?' और वह बेचैनीके वश होकर कुत्तेको वहीं छोड़ बरामदेमें चढ़ गया।

उसके चलनेकी आवाज सुनकर भी किसीका ध्यान आकर्षित नहीं हुआ। वह दबे पाँवों खिड़कीके पास पहुँचा। पल्ले जरासे खुले हुए थे। उसने धीरेसे अन्दरकी ओर झाँका और दूसरे ही क्षण चौंककर पीछे हट गया। अवश्य ही उसकी आँखोंने कोई अप्रत्याशित दृश्य देखा था, क्योंकि उसके चेहरे पर गहरे विस्मयका भाव प्रकट हो गया था।

उसके सारे शरीरमें काँटे-काँटे से उठ आये थे और वह खिड़कीसे इसतरह परे हट गया था मानो उस दृश्यसे दूर, कहीं बहुत दूर भाग जाना

चाहता हो। लेकिन वह देखनेका लोभ संवरण न कर सका और अँगूठोंके बल खड़े होकर फिर अन्दरकी ओर देखने लगा।

मरियम अँगीठीके आगे एक छोटी-सी चौकी पर केवल चोली पहने बैठी थी और उसकी भुजाएँ नङ्गी थीं। उसके घने और काले बाल खुले हुए थे और उसके कन्धों एवं छाती पर बिखरे पड़े थे। उन घने बालोंमें उसका चेहरा छिप-सा गया था।

उसकी बेटी गुनगुनिया कमरे के दूसरे कोनेमें नींदमें मुँह फाड़े सोई पड़ी थी।

केवल इसी बार रशादी अन्दरका सारा दृश्य आँख भरकर देख सका। मरियम अभी सिर धोकर आई ही थी और अँगीठीके आगे बैठी बालोंमें कंघा करती हुई उन्हें सुखा रही थी। उसके सामने कुर्सी पर एक शीशा रखा था।

मरियमको इसतरह, ऐसे रूपमें रशादीने पहले कभी नहीं देखा था। वह उसे बरसोंसे देखता आ रहा था—घरमें, आँगनमें, सूरजकी तपती धूपमें, छायामें, खेत या चरागाह पर, चायबागानमें, परन्तु मरियमका यह रूप जो वह इस समय देख रहा था उसने पहले कभी कहीं नहीं देखा था।

'लक्ष्मीका रूप है! देवी सरस्वतीका रूप है!' मरियमके उस रूपके प्रति रशादीका मन श्रद्धा और सम्मानसे भर गया।

काश, वह एक उपासककी तरह अपनी इस आराध्य देवीके समक्ष घुटनोंके बल नत मस्तक होकर अपने असीम प्रेम और भक्तिकी उसे प्रतीति करा सके, अपने अन्तरतमकी समस्त आकुल भावनाओंको उसके समक्ष निवेदित कर सके तो उसका जीवन कृतकृत्य हो जाय।

वह वहीं खड़ा देखता रहा और देखता ही रहा। जब वह उस छविको कण्ठ पान कर चुका तब उसने सोचा कि मन्दिरके अन्दर प्रवेश कर देवीका

कोपभाजन बनने की अपेक्षा कुशल इसीमें है कि चुपचाप जिस राह आया उसी राह लौट जाय। मरियम कभी इस बातको जान भी न सके।

वह वहांसे हटनेके अपने निश्चयको कार्यरूपमें परिणत करने जा ही रहा था कि मरियम अनपेक्षित रूपसे चौंक पड़ी। उसके हाथका कंघा हाथमें ही रह गया और वह हाथ अधरमें जहांका तहां स्थिर हो गया। वह शीशेकी ओर झुककर उसमें अपने प्रतिबिम्बको ध्यानसे देखने लगी। फिर उसने कंघेको एक ओर रख दिया और एकाग्रतापूर्वक अपने गालपर पड़ी हुई लटके बालोंको एक-एक कर देखने लगी।

श्यादीने अपना मुँह चीरमें लगा दिया।

शीशेमें क्या देखकर वह यों चौंक पड़ी थी?

कुछ ही क्षण बाद चांदीके पतले तारों जैसे सफेद बाल उसके हाथ में झिलमिला रहे थे।

ओठ भींचकर वह असाधारण क्षिप्रतासे उन बालोंको नोचने लगी! चुन लेनेके बाद उसने उन बालोंको अपनी अँगुली पर लपेट लिया और रोशनीमें उन्हें ऊँचा उठाकर ध्यानपूर्वक देखने लगी।

उसने मरियमके चेहरे पर आन्तरिक विषादकी छाया घनीभूत होते देखी और देखा कि उसकी भौंहोंमें चिन्ताके कारण बल पड़ गया था। उसने धीरे-धीरे उन सफ़ेद बालोंको अँगुली परसे खोला और दोनो हथेलियोंके बीच एक गोली-सी बनाकर आगमें फेंक दिया।

'हूँ!' अनचाहे अनसोचे ही श्यादीके मुँहसे निकल पड़ा। वह बुरी तरहसे डर गया। कहीं मरियमने सुन तो नहीं लिया?

वह खिड़कीसे परे हट गया और जल्दी-जल्दी सीढ़ियोंकी ओर चला। उसके पाँवोंके नीचे बरामदेके तख्ते बज उठे।

वह फिर मुरियाके साथ बातें करने लगा।

धड़ामसे खिड़की पूरी खुल गई और मरियम वहाँ खड़ी दिखलाई दी। इस बीच उसने अपने सिर पर रुमाल बांध लिया था और कन्धों पर एक शाल भी ओढ़ ली थी। उसने तेज़ आवाज़में पुकारा :

'कौन है?'

सीढ़ियाँ अन्धेरेमें थीं। खिड़कीकी रोशनी वहाँतक पहुँच नहीं पाती थी। ख्वादी उसे दिखलाई नहीं पड़ रहा था इसलिए उसने अपना प्रश्न दुबारा अधिक ऊँचे और चिन्तातुर स्वरमें दुहराया।

पहले ख्वादी अपनी सदाकी खिल-खिल करती हँसी हँसा और उसके बाद ही उसने उत्तर दिया :

'मैं हूँ मरियम, मैं हूँ! तुम्हारे स्वामीभक्त मुरियाकी मैत्री और प्रेम ही मुझे अपनी राहसे तुम्हारे अहाते में खींच लाये हैं। यदि मैंने तुम्हारे विश्राममें बाधा पहुँचाई हो तो क्षमा करना...'

ख्वादीका स्वर सुनकर मरियम निश्चिन्त होगई।

'इतनी रात बीते तुम कहाँ चले ख्वादी? बच्चोंको तो कुछ नहीं हुआ न? सब कुशल-मङ्गल तो है?'

यह प्रश्न ख्वादीको उद्देश्य कर पूछा गया था, जो रातके अन्धेरेमें छिपा बैठा था।

उत्तर देनेके बदले ख्वादी स्वयं ही बरामदे में चला आया। बरामदेमें बिजलीकी तेज़ रोशनी फैली हुई थी। उस रोशनीमें वह अपनी सारी सजधजके साथ निखर उठा। मरियमने उसका अचकन, नये जूते और कमरमें लटकी हुई तलवार देखी। यह अपरिचित कौन है, जो उसके बरामदेमें एक हाथमें तलवारकी म्यान और दूसरेमें तलवारकी मूठ पकड़े खड़ा है?

'कौन हो तुम?'

मरियमने भयविह्वल स्वरमें पूछा। उसने खिड़कीके दोनों पल्ले हाथमें पकड़ लिये थे और उन्हें बन्द करने जा ही रही थी।

मारे हँसीके ग्वादीका पेट फूल गया और उससे जवाब देते न बना।

'मैं हूँ ग्वादी! जैसा मैंने सोचा था ठीक वैसा ही हुआ। तुम मुझे पहिचान नहीं सकी और डर भी गई हा हा हा ...'

अरे भले मानुस, यह तू ही है या मेरी आँखोंको धोखा होरहा है? आज इतनी सजधजसे कहाँ निकले हो? और यह तलवार तुम्हें कहाँ मिल गई? बिलकुल रामलीलाका स्वाँग बना आये हो! ज़रा अन्दर तो आओ, उजलेमें तुम्हारा बहुरूपियापन ठीकसे देखा जाय! तुम न बोलते तो मैं तुम्हें कभी पहिचान भी पाती ...'

ग्वादीने मन ही मन कहा 'जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले! तुम्हारा जानवाज रहा, क्या काम कर रहा है!'

सारा काम उसकी योजनाके अनुसार ही होरहा था। कहीं राईरत्तीका फर्क नहीं था। हिसाब बिलकुल ठीक उतर रहा था। उसने अपनी योजनामें थोड़ा सा परिवर्तन कर दिया। जब मरियमने उसे अन्दर उजलेमें बुलाया तो उसने जानेसे साफ इन्कार कर दिया।

'इसमें ऐसा क्या देखना है? मैं तुम्हें तकलीफ नहीं देना चाहता!'

ग्वादी जानता था कि मरियम आग्रह किये बिना नहीं रहती। और वह इस समय उससे खुशामद करवाना चाहता था, इसीलिए उसने यह पैंतरा बदला था।

'यों एकबार बुलानेसे ग्वादी चला आयगा? ज़रा दसबार बुलाओ, हाथ जोड़ो, नाक रगड़ो!'

यह थे ग्वादीके विचार!

और थोड़ी देर बाद ग्वादी महाशय मरियमके कमरेमें बिजलीकी बत्तीके नीचे खड़े थे और मरियम पुतलेकी तरह घुमा-फिराकर उनका निरीक्षण कर रही थी। उसके निरीक्षणकी खास चीज़ वह नयी अचकन थी। वह नन्हें बच्चेकी तरह हँसती हुई बार-बार कहती जाती थी:

'खूब, क्या खूब! कहीं मेरी आँखें तो धोखा नहीं दे रही हैं? सच, मुझे तो विश्वास ही नहीं होता!'

ग्वादीने रेशमी जाकीट और अचकनका पूरा इतिहास अथसे इति तक उसे कह सुनाया।

'सच, सौगन्धसे कहती हूँ ग्वादी कि तुम पहिचानमें ही नहीं आते! बिलकुल नये आदमी मालूम पड़ते हो। यह तलवार भी तुम्हारी कमरमें क्या खूब फब रही है! सिर्फ ज़रा सी लम्बी है; लेकिन कोई हानि नहीं। अरे भले आदमी तुमने ये कपड़े पहले क्यों नहीं पहने? क्यों इन्हें बेकार पेटीमें डाले रहे! मुझे तो सपनेमें भी कभी यह खयाल नहीं आया कि तुम्हारे पास इतने अच्छे कपड़े होंगे और तुमने उन्हें यों छिपाकर रख छोड़ा होगा। पूरे मक्खीचूस निकले! चिथड़े पहिनकर घूमते रहे! आखिर ये कपड़े किस दिनके लिए रख छोड़े थे। और किसके लिए इन्हें यों सहेज कर रखा था? आज सवेरे, जब सनारियाके वे प्रतिनिधि सज-धजकर हमारे यहाँ आये थे, तब पहना होता! उस समय पराये गाँव वालोंके सामने तुम्हारे चिथड़ोंके कारण हमें तो यों शर्मसे सिर नीचा नहीं करना पड़ता! एक बार और घूमो... खूब! क्या कहने हैं! डील-डौल भी तुम्हारा कुछ ऐसा बुरा नहीं। और गर्दन भी खूब भरी हुई है! मेरी तो समझमें ही नहीं आता कि क्या कहूँ और कैसे तारीफ़ करूँ? खासे दूल्हा मालूम पड़ते हो, केवल तोरण मारने की कसर है!'

ग्वादी चुप लगाये प्रशंसाकी चाशनी घुटकता रहा। वह जैसे बादलों में उड़ रहा था। मरियमने जब उसके दूल्हा बनकर तोरण मारने की

'बात कही तो वह आनन्दातिरेकमें सुध बुध ही भूल गया। आँखें मूँदकर उसने एक गहरी साँस ली...

वह कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसके मुँहसे शब्द ही नहीं निकल रहे थे। या तो उसे उपयुक्त शब्द नहीं मिल रहे थे या वह बोलते हुए डरता था। उसने दूसरे ही ढङ्गसे अपने भावोंको व्यक्त किया, तलवार वाले हाथको वहाँसे हटाकर निराशापूर्वक उसे हिला दिया। लेकिन हाथ हटाते ही भचकनका बेढङ्गापन, जिसे वह अभीतक प्रयत्नपूर्वक छिपाये हुए था सामने आगया; हुकें और घोंकड़ियाँ और उनके न लगनेके कारण अचकनके अन्दरसे पेटका उभार भद्दे ढङ्गसे दिखाई पड़ने लगा।

'यह क्या है ख्वादी? अचकनकी हुकें नहीं लगाई गईं? कितना भद्दा दिखता है! लाओ, मैं लगा दूँ।'

वह जल्दीसे उसके पास आई, ख्वानको सामनेसे हटाकर एक ओर किया और एक हाथमें हुक और दूसरेमें घोंकड़ी लेकर दोनोको फँसाने लगी। लेकिन हुक लगाना इतना सरल तो था नहीं जितना कि उसने समझ रखा था। मरियमने अपनी सारी शक्ति और बुद्धि लगादी लेकिन हुकें न लगीं, ख्वादी का पेट विद्रोह किये बैठा था। उसने सहानुभूति पूर्वक कहा.

तुम्हारे पेटका रोग अभीतक नहीं गया। तिल्ली अभी भी मालूम पड़ती है।'

ख्वादीने अनिश्चयात्मक स्वरमें पूछा:

'कमरपेटीको थोड़ा इधर-उधर कर देनेसे काम नहीं चलेगा? न हो तो उसमें कपड़ेका एक आध थेगला ही जोड़ दिया जाय?'

'पेवन्द वाला कपड़ा भी कोई कपड़ा है, ख्वादी? मैं तुम्हें दूल्हा बतला रही हूँ और तुम यही कलन्दर शाह बननेके फेरमें हो! पेवन्द लगानेसे तो कपड़ेकी मिट्टी पलीद हो जायेगी! उससे भद्दी बात और कुछ न होगी।

ठहरो, सलाईसे प्रयत्न किया जाय। मेरे पास एक सलाई कहीं थी तो सही। ढूँढ़ती हूँ...

मेज़के पास जाकर उसने दराज़ खींचकर खोली। उसमें न जाने क्या अटरम्-शटरम् भरा पड़ा था। पूरा कबाड़खाना ही मालूम पड़ता था। उलट-पलट कर वह सलाई ढूँढ़ने लगी। सलाई हाथमें आते ही वह उत्साह-पूर्वक ग्वादीके निकट दौड़ी आई।

'क्यों मज़ाक़ उड़ाती हो मरियम? इस उमरमें मैं कहाँका दूल्हा हूँ! क्या अभीसे तोरण बाँधूँगा? और कौन औरत मुझे स्वीकार करेगी? तुमसे तो कुछ छिपा है नहीं...'

सलाई हाथमें लिये जब मरियम लौटी तो ग्वादीने उसे उपर्युक्त बात कह सुनाई और प्रश्नसूचक दृष्टिसे उसकी ओर देखने लगा। उसके मनमें धुक-धुकी मच गई थी:

'यह क्या जवाब देती है? मेरी बातका विरोध करती है या नहीं? उसपर इस बातकी क्या प्रतिक्रिया होती है?'

वह गम्भीर होगया था और चेहरे परसे ऐसा मालूम पड़ता था। मानो उत्तरकी उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा हो।

मरियम ने उसका विरोध करते हुए कहा:

'क्यों जी हलका करते हो ग्वादी? अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? पचास बरस ऐसी कोई अधिक उम्र तो है नहीं, जो तुम इसतरह सोचने लगो! चिन्ता क्यों करते हो? जा कर जा पर सत्य सनेहू, सो तिहि मिलिहै न कछु सन्देहू! तुम्हारी दृढ़ इच्छाशक्ति किसीको न किसीको खींच ही लायेगी। फिर आई लक्ष्मी को ठोकर मत मार देना, हाथसे निकल मत जाने देना...'

'यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि आनेवाली कौन होगी और कैसी होगी...?'

कौन और कैसी क्या? औरत जैसी औरत होगी। कोई इन्द्रलोककी अप्सरा तो होगी नहीं। अब यदि तुम्हें वही चाहिये तो बात दूसरी है। तब मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती।'

'कुछ औरतें ऐसी भी होती हैं कि जिनके आगे इन्द्रलोककी अप्सराएँ तक पानी भरती नजर आती हैं।'

उसने ये शब्द हँसी में स्पष्टतापूर्वक कहे थे लेकिन बहुत कहते उसका स्वर काँपने लगा था और वह स्वयं भी काँप रहा था। मरियम आँकड़ों में सचाई पिरोकर उसके द्वारा मुझको बैठाने जा ही रही थी कि उसने ग्वादीका यह कम्पित कण्ठस्वर सुना। इस स्वरको सुनकर उसने ग्वादीकी ओर प्रश्नसूचक मुद्रामें देखा कि मामला क्या है? वह कौन कर रहा है? और उसने पाया कि ग्वादी उसकी ओर डरा हुआ सा आँख मिचमिचाता इसतरह देख रहा है जैसे कोई बच्चा मिठाई चुराते पकड़ा गया हो।

'कहीं तुमने कोई दुलहिन चुन तो नहीं ली है? तुम्हारे रङ्ग ढङ्गसे तो ऐसा ही लगता है। और मैं यह सोचे बैठी थी कि ग्वादी मुझे कभी धोखा नहीं देगा। परन्तु तुम्हें तो इन्द्रलोककी अप्सरा चाहिये और वह तो भई मैं हूँ नहीं।'

मरियमने विनोदपूर्वक तानाकशी की। ग्वादी के परिवर्तित रूप और रातमें उसके आगमनने मरियमको उल्लसित कर दिया था।

वह हुलस हुलस कर उसकी शादीकी चर्चा करने लगी। उसके बोलने के ढङ्ग और व्यवहारमें पुरुषको आकर्षित करनेवाले स्त्रीसुलभ मद और हाव भावका अनजाने ही समावेश होगया था।

यदि तुम्हारा रहन सहन अच्छा है तो ग्वादी, तुमने मुझसे यह बात छिपाई क्यों? इसमें शरमानेकी ऐसी कौनसी बात थी? इस कामसे कोई बुरा तो कहता नहीं। अपने लिए न सही, बच्चोंके लिए ही तुम्हें शादी कर लेना चाहिये। मैं तो कह कहकर हार गई। बचारोंको दो जून रोटीका ठिकाना

तो होजाय। पर चलो, सवेरेका भटका शामको घर लौट आये तो उसे भटका नहीं कहेंगे। अच्छा, यह तो बताओ कि वह भाग्यशालिनी कौन है? किसको तुमने चुना है? यदि हमारे ही सामूहिक खेतवाली कोई हो तो ज़रा सोच समझकर क़दम बढ़ाना। कहीं बीबीके आगे शर्मिन्दा न होना पड़े। वह तुमसे ज्यादा श्रम-दिन कमायेगी तो लोगोंको क्या मुँह दिखाओगे? हमारे गाँवकी तो औरतें भी तुमसे ज्यादा ही काम करती हैं। और यह तो तुम भी जानते हो हो कि मरदोंसे ज्यादा कमानेवाली औरतके मर्दकी कितनी कदर होती है...!'

'अरे, चीकूकी मौसम तो आने दो! फल पक चले हैं! फिर देखना श्यादीकी फुर्ती! जो सबसे आगे न रहूँ तो तुम भी कहना! मैं अपनी बड़ाई आप क्या करूँ! तुम खुद देख लोगी कि श्यादी फल चुननेमें अच्छे-अच्छे शाक-वर्करोंसे भी आगे है। सबको मात न कर दूँ तो मेरा नाम!'

मरियमको शरारत सूझी। दिल्लगी करते हुए बोली:

'ज़रा इन आलसीरामको तो देखो! दिनकमें तो नहीं बोल रहे हो? पेटकी तिल्लीके मारे मरे जारहे हैं, और कहते हैं कि शाक-वर्करोंको मात कर दूँगा? पेट पकड़कर बैठ जाओगे, बैठ!'

'अब देख ही लेना न! तिल्ली ससुरी क्या करेगी? उसे तो मैंने यों उड़ा दिया है!'

श्यादीने चुटकी बजाते हुए कहा।

'ठीक है, ठीक है, देखा जायगा! चीकू चुनने के दिन भी कहीं दस-बीस बरस बाद आयेंगे? महीना पन्द्रह दिन भी तो बाक़ी नहीं है! लेकिन चीकू चुननेको आप इतना दिमाग़ी काम क्यों समझते हैं? उसे तो लड़कियाँ भी कर लेंगी। श्यादी, तुम्हें तो दूसरे बड़े कामोंमें ध्यान देना चाहिये! ख़ैर, यह तो ठीक है, जब होगा, देखा जायगा। पर तुम मतलबकी बात

बतलाओ! हम भी तो सुनें कि वह तुम्हारी इन्द्रलोककी अप्सराको पानी भरवाने वाली कौन है?

ख्वादी बेचारा क्या बतलाता? उस होनेवाली पत्नीका नाम बतलाना कुछ इतना आसान तो था नहीं। और न मरियमने ही विशेष आग्रह किया। ख्वादीके उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही वह सलाई लेकर अचकनकी हुकोंसे भिड़ गई! काम इतना सरल तो था नहीं। मरियमकी सारी शक्ति और ध्यान उसीमें केन्द्रित होगये। दो बार प्रयत्न करनेके बाद भी उसे निष्फल होना पड़ा था, इसलिए इसबार उसने पूरी शक्तिके साथ हमला बोल दिया था।

बिना किसी झिझकके उसने अपना सिर ख्वादीकी छातीसे सटा दिया और पूरा ज़ोर लगाकर अचकनके पल्ले खींचने लगी। खींचातानीमें उसके कन्धे परसे शाल खिसक गया और सिरके केश बँधे हुए रूमालमें से छूटकर बिखर गये। एक लट उछलकर ख्वादीके गालसे खेलने लगी, उसके सद्यस्नात, निरावृत कन्धे उसकी आँखोंमें चकाचौंध भरने लगे! ख्वादी किसी स्वप्नलोकमें पहुँच गया। इन्द्रलोककी अप्सराको पानी भरानेवाली उसकी अपरूप रूपसी यही तो थी! मरियमके सशक्त हाथों द्वारा अचकनका खींचा जाना, पेटका दबाया जाना—झिझका भी उसे भान नहीं होरहा था। और उधर मरियम सलाईमें हुक और आँकड़ीको फँसाये एकके बाद एक हुक लगाती चली जारही थी।

विजयश्रीसे मण्डित मरियमके मुखसे यह हर्षध्वनि निकलने ही जारही थी कि 'होगया बेड़ा पार'। लेकिन ख्वादीने उसे बोलनेका अवसर ही नहीं दिया।

उसने उसके निरावृत गोरे कन्धे पर चुम्बन अङ्कित करते हुए अस्फुट स्वरमें कहा: 'मरियम...!'

'यह क्या शैतानी करते हो जी?' मरियमने चौंककर कहा और चार कदम पीछे हट गई।

'लक्ष्मी! मेरी सरस्वती! मेरे हृदय मन्दिरकी देवी!'

त्वादी प्रार्थनाके स्वरमें आग्रहपूर्वक कहने लगा। उसने अपने दोनो हाथ सामनेकी ओर ऊँचे उठा दिये थे, उसकी आँखोंमें आनन्दके आंसू उमड़ आये थे और वह मरियमकी ओर इसतरह देख रहा था जैसे भक्त अपने आराध्य देवकी ओर देखता है।

मरियमके तन बदनमें आग लग गई; लेकिन जब उसने त्वादीकी आँसू भरी आँखें देखीं, उसके चेहरे पर आन्तरिक पीड़ाके चिह्न देखे और भक्ति-भावमें उठे हुए उसके दोनो हाथ देखे तो वह अपनी हँसी न रोक सकी, खिल-खिलाकर हँस पड़ी। लेकिन दूसरे ही क्षण वह अपनेको क्रुद्ध कर गई। ऐसे मामलोंमें हँसना उचित नहीं। त्वादीको मालूम होना चाहिये कि वह क्रोध भी कर सकती है उसकी यह हिमाकत कभी बर्दाश्त नहीं की जायेगी! उसे त्वादीको अपनी मर्यादाका ज्ञान करवाना ही होगा। मर्यादाका उल्लंघन किसी दशामें सह्य न हो सकेगा। उसको फटकार सुनाना इसलिए भी जरूरी था कि उसकी वासनामयी लोलुप दृष्टि अभीतक मरियमके कन्धे पर ही टिकी हुई थी। उस दृष्टिके नीचे मरियमको अपना कन्धा जलता हुआ-सा प्रतीत हुआ और वह कांप उठी। उसका चेहरा तमतमा गया और उसने कन्धे हिलाकर शालको फिर यथास्थान कर लिया।

लेकिन त्वादी निर्निमेष दृष्टिसे उसी ओर देखता रहा, देखता ही रहा...

मरियमने अपने हाथकी हथेलीसे उसकी आंखें मूँदते हुए उत्तेजित स्वरमें कहा :

'इसतरह घूर-घूरकर क्या देख रहा है? कभी मुझे देखा था या नहीं? आया बड़ा हृदय-मन्दिरकी देवी वाला! बेशरम कहीं का! हटा अपनी आंखें! बन्द कर! कहती हूँ आँख हटा! सुनता है कि नहीं?'

लेकिन अरे, यह उसको क्या होगया? क्यों उसका स्वर काँपने लगा? शब्द तो वही थे लेकिन उनमें वह क्रोध नहीं था, वह फटकार नहीं थी। अपने जिस रोषको वह त्वादी पर प्रकट करना चाहती थी उसका तो सौवाँ

हिस्सा भी इन शब्दोंमें व्यक्त नहीं हो पाया था। उसकी वाणी तो जैसे कुछ और ही कह रही थी।

यह अपने आपको उसने किस मुसीबत में फँसा लिया? हृदय में जब क्रोध घुमड़ना चाहिये ममता क्यों उनड़ी चली आरही है! इस उमरमें उसे रातके समय ग्वादीकी शादीकी बात छेड़ने और हाव भाव तथा कटाक्ष करनेकी क्या सूझी थी?

लेकिन उसके ऐसे परिणामकी तो उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। ग्वादीके प्रति उसके सारे हृदयमें दया और दुःखके सिवा और कोई भावना नहीं थी। इस तरहका विचार तो कभी सपनेमें भी उसके मनमें नहीं उठा था।

कहीं वह उसके कपड़े देखकर तो नहीं लुभा गई थी?

हाय रे नारीका हृदय! तेरे रहस्यको आज दिनतक कौन जान पाया है? अगम अथाह जलकी थाह भले ही लग जाय लेकिन तेरी थाह पाना असम्भव है!

मरियमके नारी-स्वरकी वह चुनौती सुनकर ग्वादीका पुरुष और भी ढीठ होगया। उसे तो जैसे मुँहमाँगी मुराद मिल गई। वह अनपेक्षितरूपसे मरियमके सामने घुटनों के बल बैठ गया और अनुनय-विनय करने लगा:

'मरियम, मुझ अभागे पर दया करो! इतनी कठोर मत बनो, मरियम! तुम मेरा जीवनसर्वस्व हो! तुम मेरा जीवन और जीवनका प्रकाश हो, मरियम!'

मरियमने यह तो सोचा भी नहीं था कि ग्वादी इस हदतक आगे बढ़ जायगा। वह आँखें फाड़ उसकी ओर देखने लगी। उसकी समझमें नहीं आरहा था कि क्या करे?

अब तो उसे नाराज़ होना ही चाहिये! बिना कड़ी फटकार इसे ग्वादीकी अकल ठिकाने लगनेकी नहीं। अनजाने ही मुट्ठी भूल कर, मैंठी

है उसका परिमार्जन भी अपने क्रोधको व्यक्त करके ही किया जायगा। लेकिन फिर भी वह नाराज़ न हो सकी। कठोर शब्द उसे ढूँढ़े नहीं मिल रहे थे। ग्वादीकी उन याचना भरी दुःखी आँखोंके आगे पत्थर होता तो पिघल जाता फिर मरियम क्यों न पिघलती? उसके पास तो पत्थर नहीं नारीका हृदय था! वह भला उसपर कैसे नाराज़ हो सकती थी?

'बस, बहुत होगया, ग्वादी, बहुत होगया! अब यह तमाशा बन्द करो! अच्छा मज़ाक लगा रखा है तुमने तो! उठो भी; फ़ौरन उठ खड़े हो!' कड़ी फटकारके बदले मरियम स्नेहभरी मीठी झिड़की ही सुना पाई। वह उसके समीप चली आई और उसके कन्धे पर हाथ रख दिया; मानो उसे खड़े होनेमें सहायता दे रही हो।

अपने कन्धे पर मरियमका स्नेह-स्पर्श पाकर ग्वादीके वही हाल हुए जो गिरे हुए बच्चेके माता-पिताका पुचकारा पाकर होते हैं:

'मरियम, मुझपर दया करो! मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता......'

वह ज़ोर ज़ोरसे सिसकने लगा और उसकी आँखोंसे आँसुओंकी गंगा-जमुना बहने लगी। उसने मरियमको सँभलनेका अवसर ही नहीं दिया। अपने कन्धे पर रखे हुए मरियमके हाथको उसने इस तरह कसकर पकड़ लिया जैसे चींटा गुड़से चिपट जाता है। फिर उस हाथको अपनी छातीसे चाँपकर दूसरा हाथ मरियमके चारों ओर लपेट दिया और उस हाथपर आकुलतापूर्वक चुम्बनोंकी झड़ी लगादी। ग्वादीके तपे हुए आँसू मरियमके हाथपर पड़ने लगे और वह स्वयं इतनी विह्वल होगई कि उसे अपने आपको ग्वादीके आलिङ्गन-पाशसे छुड़ानेकी सुध भी न रही।

बड़ी मुश्किलसे वह आग्रहपूर्वक केवल इतना ही कह पाई:

'थोड़ा तो शरमाओ! क्या पागलोंकी तरह कर रहे हो? बच्ची जाग जाएगी! आखिर तुम चाहते क्या हो?'

'सुख चाहता हूँ मरियम, आनन्द चाहता हूँ...जीवन और प्रेम चाहता हूँ मरियम ! तुम दे सकती हो ! देवी हो तुम ! मैं तुम्हारा प्रेम, तुम्हारी दया, तुम्हारा स्नेह चाहता हूँ मरियम !'

मरियमको ऐसा लगा मानो वह कन्दराओंसे निकलकर पहाड़ों और तलहटियोंमें गूँजते हुए स्वरको सुन रही हो। ग्वादीका वह स्वर ठेठ उसके अन्तःकरणकी आवाज़ थी। उसमें आदिमानवके स्वरका वह कम्पन, जब उसने वासनाभिमुख होकर पहली नारीको पुकारा होगा, गूँज रहा था। ग्वादीका वह स्वर प्रणयनिवेदन नहीं उसके आकुल अन्तर की पुकार था।

कौन नारी पुरुषके इस आकुल अन्तरकी पुकारकी अवहेलना कर सकी है ? क्या मरियमका नारी हृदय उसे ठुकरा सकता था ? उसकी अवहेलना कर सकता था ?

असम्भव !

'शान्त हो जाओ ! मत बोलो ! एक भी शब्द मत बोलो ! शान्त हो जाओ !'

मरियमको ध्यान ही नहीं रहा कि यह स्वर उसका अपना नहीं है, कि उसके स्वरमें ग्वादीके स्वरकी प्रतिध्वनि सुनाई दे रही है। जिसतरह केकी के आकुल प्रणयनिवेदनको सुनकर केका रव कर उठती है उसी तरह मरियम भी पुकार उठी थी। उसने अपना दूसरा हाथ धीरेसे ग्वादीके माथे पर रख दिया, मानो उसे दिलासा दे रही हो।

'देखो, मज़ाक ही मज़ाक में हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये ? मैं तो केवल दिल्लगी कर रही थी और तुम उसे सच मान बैठे। अब कहती हूँ ज़रा शान्त हो जाओ ! मानलो कि सारा दोष मेरा ही हो...पर तुम तो ज़रा धीरज रखो...अब आओ...'

लेकिन ग्वादी गया नहीं। उसने मरियमका दूसरा हाथ भी पकड़ लिया।

२७

श्यामा मरियमके यहाँसे लौटा तो उसके पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। कुबेरका खजाना पाकर जो हालत रङ्ककी होती है वही दशा इससमय उसकी होरही थी। सबकुछ उसे स्वप्नकी तरह मालूम पड़ रहा था। मरियमके यहाँ जाना, अपना प्रणयनिवेदन, मरियमका मूर्छनापूर्ण स्वर, कुछ भी वास्तविक नहीं लग रहा था।

इससमय वह गलीमें चला जारहा था। उसका उद्वेग अभीतक शान्त नहीं हुआ था। उसे अपना दम घुटता-सा प्रतीत हुआ। फेंटा उतारकर उसने अपने हाथमें ले लिया था। कोटके बटन खोलकर छाती नङ्गी करली थी। माथे और सीने पर शरद ऋतुकी ठण्डी हवाके झोंके उसे बड़े सुहावने प्रतीत होरहे थे।

क्या वह सचमुच मरियमके घर गया था? क्या वह उसके कमरेके अन्दर था? उसे विश्वास ही नहीं होरहा था। उसे कुछ भी याद नहीं था कि कैसे उसने मरियमका कमरा छोड़ा, कैसे बरामदेमें आया, कैसे सीढ़ियों परसे नीचे उतरा, कैसे आँगनमें चलता हुआ फाटक पर आया और कैसे फाटक पार कर गलीमें होगया? वह हर कृदम पर पीछेकी ओर मुड़कर मरियमके घरकी ओर देख लेता था। क्या सच ही वह वहाँसे लौट रहा था?

उसके हृदयमें दो परस्पर-विरोधी विचारोंका मन्थन होरहा था: कभी वह प्रसन्न हो उठता था, अबाधरूपसे प्रसन्न, और कभी वह दुखी होजाता था, एकदम दुखी, दुःखकी निराशाजनक स्थिति तक ही जा पहुँचता था।

मरियमके घरसे वह क्या लेकर चला आरहा था?

मरियमने उसके प्रणयनिवेदनको ठुकरा दिया था या स्वीकार किया था?

वह निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कह सकता था।

जैसे-जैसे घर समीप आता गया मरियमके सानिध्यसे प्रादुर्भूत वासनाका ज्वार भी उतरता गया और जैसे-जैसे वासनाका आलोड़न घटता गया मरियमके प्रेमके सम्बन्धमें वह आशङ्कित होता चला गया। मरियमके साहचर्यमें जिस भावी सुखकी उसने रङ्ग बिरङ्गी कल्पनाएँ की थीं वे अब घरकी ओर बढ़ते हुए हर कदम पर आकाशकुसुमवत् मालूम पड़ रही थीं।

उसने मरियमके एक-एक शब्दको, एक एक ध्वनिको याद किया। उन्हें अच्छीतरह तौला, जौहरीकी तरह कसौटी पर कसकर जाँचा-परखा। कहीं उसने गलत अर्थ तो नहीं लगा लिया? कहीं उसे भ्रम तो नहीं होगया? कहीं उसने धोखा तो नहीं खाया?

मरियमकी प्रत्येक भाव भङ्गिमा, चेहरे परकी हर रेखा, आँखोंकी हर किरण, स्वरका प्रत्येक सम्पात; वह जिसतरह नाराज़ हो उठी थी और जिसतरह उदार होउठी थी सभी कुछ उसने याद किया। और इस बातकी छानबीन करने लगा कि उनमें सचाई कितनी थी और बनावट कितनी? अपनी उत्तेजितावस्था में सम्भव है कि वह उचित-अनुचितका भान ही खो बैठा हो और मरियमकी हर भाव-भङ्गिमा एवं हर बात और सङ्केतका गलत अर्थ लगा लिया हो! काफी छानबीन करनेके बाद भी उसे अपनी आशङ्का और सन्देह सकारण नहीं प्रतीति हुए। लेकिन इतना होने पर भी वह छाती पर हाथ रखकर यह नहीं कह सकता था कि मरियमने उसके प्रणयनिवेदन को स्वीकार ही कर लिया था। प्रेमका जो अमृत उसके हृदयसागरमें हिलोरें ले रहा था उसे आकण्ठ पान करना तो ठीक मरियम शायद उसके किनारे तक भी नहीं पहुँच पाई थी।

इसी तरहकी शङ्का-कुशङ्का में डूबता-उतराता वह अपने अहातेके फाटक पर आ पहुँचा।

फाटक खोलनेके लिए जैसे ही उसने हाथ बढ़ाया था अनपेक्षितरूपसे उसे अपना नाम सुनाई दिया। किसीने धीरे, बहुत धीरे बिलकुल दबे हुए कण्ठस्वर में पुकारा था:

'ग्वादी !'

यह आवाज़ अन्दर झोंपड़ीकी ओरसे आई थी।

चारों ओर रातका सन्नाटा था, हवा बिलकुल शान्त थी और आवाज़ एकदम साफ़ सुनाई दी थी। भ्रमकी ज़रा भी गुँजाइश नहीं थी। ग्वादी ने साफ़-साफ़ सुना था। उसकी छाती धड़कने लगी। वह खड़ा होगया और कान लगाकर सुनने लगा। आवाज़ कुछ पहिचानी-सी मालूम पड़ती थी। फाटकमें खड़े होकर और सिर निकालकर वह आँगनमें झाँका; उसकी निगाहें आँगनके एक कोने से दूसरे कोने तक घूम गईं। झोंपड़ीकी छाया आँगनकी दूब पर पड़ रही थी, वहाँ और कोई नहीं था।

थोड़ी देर बाद वही आवाज़ फिर सुनाई दी; इसबार पहले से अधिक स्पष्ट और शान्त :

'ग्वादी !'

अब तो किसी तरहकी शङ्का रह ही नहीं गई थी! सायबान में अवश्य ही कोई छिपा खड़ा था। इतनी रात गये कौन होगा भला?

मारे डरके उसके रोंगटे खड़े होगये। यदि बच्चे जाग गये तो निश्चय ही घबरा जाएँगे। उसने चिल्लाकर पूछा:

'कौन है ?'

फाटक पार कर वह अन्दर आया और तलवारकी मुठियाको दृढ़तासे पकड़कर झोंपड़ीकी ओर बढ़ा।

वह सायबानसे थोड़ी दूर पर रुक गया। एकदम सीधा दरवाजे तक चले जाना निरापद नहीं था।

कोई नहीं दिखाई दिया!

उसके बदनमें फुरहरी-सी दौड़ गई।

एक छाया सी दीवारके पाससे अलग हुई। फिर वह रेंगती हुई सायबानके नीचेसे निकलकर आँगनमें, चाँदनीमें आई।

यह आरचिल था। उसने कहा-

'ग्वादी, मैं तो तुम्हें पहिचान ही न पाया। देखा तो सोचा कि कोई इनारियावासी होगा। मैं तो यही समझे था कि तुम घर पर ही होगे। कोई साथ में तो नहीं है। अकेले ही हो न?

आरचिलको इतनी रात गये अपने आँगनमें देख ग्वादी आश्चर्यचकित रह गया; लेकिन उसे अपने आश्चर्यको व्यक्त करनेका अवसर नहीं मिला।

आरचिल जल्दीसे उसके पास आया, ग्वादी मुँह खोले उससे पहले तो उसका हाथ पकड़कर उसे पेड़के नीचे घसीट लाया। आरचिल स्वयं थर थर काँप रहा था। उसकी साँस ज़ोर-ज़ोरसे चल रही थी और वह घबराया हुआ सा अपने चारों ओर देख रहा था। थोड़ी देर बाद जब उसकी घबराहट दूर हुई तो उसने ग्वादीको सिरसे पाँव तक दो-चार बार घूर घूरकर देखा और बोला:

'यह साज-सिंगार क्यों किया है? यह तलवार और कपड़े-लत्ते कहाँसे मिल गये! उन्होंने यह अचकन इनाममें तो नहीं दी है?'

वह दो क़दम पीछे हटकर ग्वादीका अच्छीतरह निरीक्षण करने लगा। उसने मुँह बिचका दिया और उसके ओठों पर मुस्कराहट नाच गई:

'और तो क्या, एक हाथसे तलवारकी मूठ भी पकड़े है! शौनकाफर्षे बिलकुल दुरुस्त! यह सब इसने सीखा कहाँसे लिया?'

और फिर जैसे अफसोस करता हुआ बोला:

'यह भेस बनाते शरम नहीं आती? तो तुझे भी उन्होंने खरीद लिया है? तेरी भी मुट्ठी गरम कर दी गई है? तू भी बिक गया है?'

ग्वादी चुप रहा। वह आँखें सिकोड़े हुए इसतरह उसकी ओर देख रहा था मानो अन्धेरेमें आरचिल ठीकसे नजर नहीं आरहा हो! आधी रातमें उस हरामखोरके अपने यहाँ आनेका कोई कारण बहुत सोचने-विचारने पर भी उसकी समझमें नहीं आरहा था।

आरचिल अपनी हमेशाकी पोशाकमें नहीं था। इससमय उसने सिर पर एक फौजी टोपी पहिन रखी थी और उस टोपीके ऊपर एक सितारा टँका हुआ था। इसतरहकी टोपी आमतौर पर किसी बड़े ही उत्तरदायित्वके पद पर काम करनेवाले मज़दूर पहिना करते थे। आरचिल भी उस टोपीके कारण ऐसा [redacted] मज़दूर मालूम पड़ रहा था। लेकिन उसकी इस पोशाकने ग्वादीके मनमें शङ्का उत्पन्न कर दी थी और वह घूर-घूर कर उसकी टोपीके सितारेकी ओर देखने लगा था।

ग्वादीको अपनी ओर इसतरह घूरते हुए देख आरचिलने उससे कहा: 'ग्वादी, तुम्हारी अचकनको देखकर मुझे इतना आश्चर्य नहीं हो रहा है जितना कि तुम्हें मेरी टोपीको देखकर। मैं किसी पद पर चुना तो नहीं गया हूँ लेकिन बिना किसी बाहरी मददके भी मैं काफी बड़ा आदमी बन गया हूँ। माफ़ करना, अकेले तुम्हीं सम्मानित नहीं किये गये हो। ज़रा मेरी ओर भी अच्छी तरह से देखो...'

पोरिया तनकर खड़ा होगया, उसने अपना सीना फुला दिया और इस शानसे देखने लगा मानो वह कोई बड़ा ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो और लोगोंको उससे डरना और उसकी इज्ज़त करना चाहिये। टोपीके सितारे की ओर इशारा करते हुए उसने रहस्यपूर्ण स्वर में कहा:

'देख रहे हो? अच्छी तरह देखलो...सँभलकर रहना...नहीं तो...'

ग्वादी कुछ न बोला। क्षण प्रतिक्षण उसका अचरज बढ़ता ही जाता था।

'बोलते क्यों नहीं हो? चुप क्यों हो? डरो मत! सच-सच बतलाओ, इस समय इतनी रात बीते कहाँसे आरहे हो?'

उसने झुककर ग्वादीके चेहरेको देखा।

'समझ गया! तुम्हें बतलानेकी कोई ज़रूरत नहीं रही। तुम उस विधवाके यहाँ गये थे। कहा था न कि तुम मुझसे कुछ छिपा नहीं सकते। तुम्हारा चेहरा ही गवाही दे रहा है। नूर उतरा हुआ है और दम फूल रहा है। ऐसी बातें छिपा नहीं करतीं। अब तो तुम्हारी पाँचों घीमें हैं! कमीशन पर चुन गये हो न! विधवाओंको ही क्या जल्दी ही सधवाओंको भी अपनी बगलमें लेने लगोगे! जानता हूँ तुम एक ही लम्पट हो! पोरियोंने मर-खपकर अपने खून पसीनेसे समाजकी जिस मर्यादाको बनाया था अब बिना उसे पाँवतले रौंदेंगे! अच्छी बात है, रौंदो, करो नष्ट-भ्रष्ट ..'

विधवाका नाम आते ही आरचिलको जैसे ततैयाने डँस लिया हो। वह लगा ज़ोर-ज़ोरसे गाली बकने और धमकियाँ देने।

'लेकिन मैं भी एक-एकसे समझ लूँगा! मालूम पड़ जायगा कि आरचिल पोरिया कौन था! जो कहा था सो अब करके दिखा दूँगा। अब तो बन्दा आज़ाद है। किसीका डर ही नहीं रह गया है!'

यह कहते हुए उसने अपने दाँत पीस लिये।

अब ग्वादी चुप न रह सका। बोला:

'यह सब तो ठीक है। जो होगा सो देखा जायगा। लेकिन आधी रातमें मुझे परेशान करनेके लिए आनेका कारण क्या है? क्यों आये हो? तुम्हें मुझसे क्या काम है?'

इस आधी रातके मान न मान मैं तेरा मेहमानसे ऊपरका सवाल पूछते समय ग्वादीका स्वर बड़ा ही रूखा था और यों उसने यह भी बतला दिया था कि आरचिलकी धमकियोंकी उसे ज़रा भी परवाह नहीं है।

आरचिल बुरा मान गया:

'इसतरह पूछते हुए शरम नहीं आती? मैं नौकरीसे निकाल दिया गया हूँ इसलिए तुम भी ढीठ होगये हो। जानते हो न कि अब मुझसे कोई फायदा होनेका नहीं, तभी न ऐसा कर रहे हो!'

सुनकर ग्वादी तो दङ्ग ही रह गया। बोला :

'क्या कह रहे हो? मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि उन्होंने तुम्हें निकाल दिया है। क्या सच ही निकाल दिया? मैंने तो अभीतक इस सम्बन्धमें एक शब्द भी नहीं सुना।'

पोरियाको उसकी बातका विश्वास नहीं हुआ।

'सारे गाँवको मालूम होगया है कि मुझे निकालकर मेरी जगह बेसोको नियुक्त कर दिया गया है और तुम अभीतक अनजान बन रहे हो...'

'हूँ!' ग्वादी अभी भी किसी निश्चय पर नहीं पहुँच पाया था।

'और तुमने यह भी, काहेको सुना होगा कि वे मुझे गिरफ्तार करनेके लिए खोज रहे हैं?'

मारचिलने अपने दुर्भाग्यकी पूरी कथा कह सुनाई!

अबकी ग्वादी बोला। उसने अपने हाथ हिलाते हुए मारचिलसे कहा :

'नहीं, नहीं, मुझे मत सुनाओ! मुझे कुछ भी मालूम नहीं है! मैंने कुछ भी नहीं सुना है।'

और उसने दोनों हाथोंसे अपने कान ढाँप लिये।

उसने अपने आपको एक बड़ी ही विषम स्थितिमें फँसा हुआ पाया। अब वह एक जिम्मेवार नागरिक था! समाजने और जनताने उसपर विश्वास कर उसे एक उत्तरदायित्वपूर्ण पद प्रदान किया था; और वह आधीरातमें समाजके एक दुश्मनके साथ, ऐसे अपराधीके साथ, जिसकी गिरफ्तारीका वारण्ट कट चुका था, बातें कर रहा था!

लेकिन पोरियाने स्वादीकी इस उदासीन मनस्थाका एक दूसरा ही अर्थ लगाया। स्वादीके भयको उसने अपने प्रति प्रगट की गई सहानुभूति समझा। इसलिए उसे निश्चिन्त करनेके लिए वह बोला

लेकिन डरनेकी कोई बात नहीं है। मुझे पहले ही सुराग मिल गया था और मैं गायब होगया। मैंने अवसरका पूरा लाभ न उठाया होता तो अभी हथकड़ियोंमें जकड़ा होता।

लेकिन स्वादी पहलेकी ही तरह कान बन्द किये मौन रहा।

'भाग नहीं जाता तो क्या करता? शिकारी कुत्तोंकी तरह वे मेरे पीछे पड़े हैं। मैं एक डरे हुए खरगोशकी तरह जान बचानेके लिए भाग रहा हूं। उन्होंने मुझे एक मिनटका भी मौका नहीं दिया। गायब हुए बिना और कोई चारा भी तो नहीं है। मैं बहुत तंग आ गया। सबकुछ छोड़कर चला जाऊंगा।'

उसने एक लम्बी सांस ली और चुप होगया। लेकिन दूसरे ही क्षण बोलते समय वह विषधर भुजंगकी तरह फुफकार उठा

'लेकिन जानेसे पहले मैं अपना हिसाब चुकता कर जाऊंगा। वे भी जनमभर नहीं भूलेंगे। छाती पीट-पीट कर मेरा नाम न लें तो अपने बापकी औलाद नहीं!'

स्वादी अब भी कान मुंह बन्द किए गूंगा बहरेकी तरह बैठा था। लेकिन पोरिया अब भी यही समझ रहा था कि स्वादीने सहानुभूतिके कारण ही ऐसा किया हुआ है। उसने फिर कहा

'पता नहीं क्यों ये कमबख्त हाथ धोकर मेरे पीछे पड़े हैं? हर जगह ढूंढ रहे हैं! सारा गांव छान मारा है! मुझसे ये चाहते क्या हैं? उल्टा चोर शाहको दण्ड देना चाहते हैं! मेरा सर्वस्व मुझसे छीन लिया और अब मुझीको गिरफ्तार करना चाहते हैं! चोर ये हैं कि मैं?'

एक लम्बी सांस लेकर वह चुप होगया और काफी देर तक चुप्पी साधे रहा।

फिर उसकी आँखोंकी विषैली दृष्टि ग्वादीके शरीरको आरपार बींध गई और उसने एकबारगी ही पूछा :

'गोचा दलान्दियासे तुम कब मिले थे ?'

ग्वादीने जवाब नहीं दिया।

'मैं उस सालेसे भी समझ लूँगा। दिखा दूँगा कि आरनिलसे वैर बाँधनेका मतलब क्या होता है ? उसका घर बाँधनेमें मैंने मदद की है मैंने ! मुफ्तका माल नहीं था ! उलटे इससे सब रकम लूँगा। कौड़ी-कौड़ीका हिसाब चुकता कर लूँगा।'

उसका चेहरा ऐंठ गया था। आन्तरिक घृणासे भरे भीषण स्वरमें उसने कहा :

'दोगला कहीं का ! चोर दस्तोंसे अपना ईमान बेच दिया ! उधर टुकड़ा देखा तो तुम फिसलता उनके साथ जा मिला। कमीना, कुत्ता !'

उसने झटके के साथ दोनों हाथ पतलूनकी जेबमें डाल दिये और बेचैनीसे पेड़की छायामें चक्कर लगाने लगा। ग्वादीका मौन अब उसे अखरने लगा था। वह ग्वादीके समीप आकर यह देखनेके लिए उसकी ओर झुका कि आखिर वह शुरूसे अब तक एक भी शब्द क्यों नहीं बोला था ! पेड़की टहनियों और पत्तोंमें से छनकर आती हुई चन्द्र किरणोंके प्रकाशमें उसने ग्वादीका चेहरा देखा।

ग्वादीका चेहरा पत्थरकी मूर्तिकी तरह निर्जीव और स्थिर था। दोनों छोटी-छोटी आँखें दो हिमकणोंकी तरह जगमगा रही थीं। यह देख आरनिल के रोंगटे खड़े हो गये। वह उछलकर दो कदम पीछे हट गया।

थोड़ी देरतक चुप रहनेके बाद उसने लड़खड़ाते स्वरमें पूछा :

'तुम बोलते क्यों नहीं हो ?'

इतना देख लेनेके बाद भी ग्वादीकी उस सार्थक, निर्निमेष दृष्टिका अर्थ उसकी समझमें नहीं आ पाया था।

'तुम गूंगे तो नहीं हो गये हो? मुंह सीये क्यों खड़े हो? निकोरा सदा के लिए तुम्हारे हाथसे निकल गई है। वही निकोरा, जिसे पाने के लिए तुम इतने बेचैन हो उठे थे और जबतक मैंने वादा नहीं कर लिया तुम्हारी बेचैनी दूर नहीं हुई थी। बतलाओ अब तुम क्या करोगे?'

इसपर ग्वादीने जवाब दिया

'मैं तो मसखरे बारेमें हंसी कर रहा था, भैया! वह पहिया और अंगुलियों का खेल, जो हम तुम खेल रहे थे, महज दिल्लगी थी! अब उसे दुहराना और इस समय याद करना बेमानी है।'

उसके स्वरमें अभूतपूर्व दृढ़ता थी। बात समाप्त करते हुए उसने ओंठ भींचकर इसतरह सिर हिलाया मानो मार्चिनने उससे बड़ा ही कुत्सित मजाक किया हो।

पोरिगाको अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। क्या वह ग्वादी ही था? ग्वादी ही इसतरह बोल रहा था? वह बड़ी देरतक पत्थरकी मूरतकी तरह निस्पन्द खड़ा रहा। फिर एक खोखली हंसी हंसा जैसे सर्वस्व दांव पर लगाकर हार जाने वाला जुआरी हंसता है। हां, यह उसकी पराजय थी, अन्तिम और पूर्ण पराजय!

उसने मन्दस्वर में कहा

'अच्छी बात है! ऐसा ही सही! ग्वादी, आधी रातके समय मैं तुमसे गपशप लड़ाने नहीं आया हूं। भाड़ में जाय वह सुसरी भैंस और उसके कम्बख्त पहिये! कैसे न जाने कैसे मेरे खयालमें आगई और मैंने तुमसे उसका जिक्र कर दिया। मेरा और कोई मंशा नहीं था। माफी चाहता हूं। ग्वादी, इतना तो तुम भी जानते ही हो कि अकेलापन आदमीको किस तरह अखरता है? अपना सुख और दुःख इन्सान दूसरोंके साथ बांटकर हलका करना चाहता है। दुःखमें तो अकेलापन बहुत ही असहनीय होजाता है। आज मैं भी अकेला हूं नितान्त अकेला! तुम्हारे सिवा मेरा अपना कोई नहीं है जिसके पास जाकर दुःखड़ा सुनाकर हलका बनूं। अपने दुर्दिनमें

तुम्हारे दरवाज़े दौड़ा चला आया हूं। यहां न आता तो और कहां जाता? इस विश्वाससे आया हूं कि तुम मुझे ठोकर नहीं मारोगे। आज तुम्हें वे कितना ही क्यों न चढ़ादें मैं जानता हूं कि तुम अपने पुराने उपकारोंको कभी नहीं भुलाओगे। यही सोचकर तो आया हूं कि ख्वादी मेरे पिताके घरमें पाला पोसा जाकर बड़ा हुआ है और जिसके घरमें वह बड़ा हुआ उसीके बेटेको मुसीबतमें ठुकरायेगा नहीं, आगे बढ़कर छातीसे लगा लेगा। यदि तुम्हीं मुझसे सहानुभूति नहीं दिखलाओगे तो और कौन दिखलायेगा?'

ख्वादी पर अपनी बातके असरका पता लगानेके लिए वह जान-बूझकर चुप होगया था। इसतरह वह ख्वादीको अपनी भावनाएं व्यक्त करनेका अवसर दे रहा था। लेकिन ख्वादी पहले ही की तरह मौन और अव्यक्त बना रहा।

'एवड़ो को तो तुम जानते ही हो। वह मेरा माना हुआ भाई है। लेकिन मैं उसका ज़रा भी विश्वास नहीं करता। वह चकमक है। बात उसके पेटमें टिकती ही नहीं। लेकिन तुम्हारी बात दूसरी है। मैं तुमसे एक प्रार्थना करने आया हूं। यह तो मैं तुम्हें कह ही चुका हूं कि मैं यहांसे चला जारहा हूं। इसमें तो किसी तरहका सन्देह ही नहीं है। लेकिन जैसा कि अभी पहले कहा था जङ्गल में नहीं जारहा हूँ......और वह तो तुम्हें याद ही होगा?

वह चुप होगया और एक प्रश्नसूचक तीखी निगाह ख्वादीके मुँह पर डालकर आगे बोला:

'निश्चय ही तुम भूले न होगे! उस समयकी बात है जब हम अँगुलियों और पट्टियोंका खेल खेल रहे थे। याद करो...'

ख्वादी एक शब्द भी न बोला। आरचिलने आगे कहा:

'मैंने कहा था न कि यदि मुझे जाने के लिए मजबूर होना ही पड़ा तो पहले माशमिल को...'

'हैं!' ख्वादीके मुँहसे ज़ोरकी चीख निकल पड़ी; उसका चेहरा भीषण होउठा और वह तनकर खड़ा होगया। अपनी गोल आँखों में अपार घृणा

भरे, दुश्मन पर झपटनेके लिए तयार विषधरकी तरह वह आरचिलकी ओर देख रहा था।

आरचिलने उसका उग्ररूप देखा तो झटसे पैंतरा बदल दिया। उसने अपने स्वरको यथासम्भव शान्त बनाते और मुस्कराते हुए कहा :

'सब्र करो शादी! यों उत्तेजित होनेकी ज़रूरत नहीं है। जिसतरह तुमने मेरे बारेमें मज़ाक की थी उसीतरह मैं भी मजाक कर रहा था। मेरे दिल में ईर्ष्या सुलग रही है। इसतरहकी बात कहकर मैं केवल अपने दिलकी जलन मिटाना चाहता था। वैसा करनेका मेरा कोई उद्देश्य नहीं है।'

और वह इतने निर्दोष भावसे मुस्कराया कि शादीका सन्देह मिट गया।

'बस, इतनी ही बात थी शादी! जिसमें तुम इसतरह उत्तेजित हो उठे। तुम्हारी इस 'हूं' का अर्थ मेरी समझमें नहीं आया। मानलो कि मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ, सच ही कह रहा हूँ जो कह रहा हूं वह कर ही गुज़रूँ तब? तुम्हें उससे क्या मतलब? मिल मेरी है, मैं उसका मालिक हूँ, उसका जो चाहूं सो करूं। दूसरे मेरे कामोंमें दखल देनेवाले होते ही कौन हैं? जब मैंने मिल खड़ी की थी तो किसीकी सलाह लेने नहीं गया था। लेकिन अब तो यह बात करना ही बेकार होगी। कोई मेरी बात सुनेगा भी नहीं। दिनदहाड़े डाकुओंकी तरह मुझे लूटकर अपने घरसे बाहर निकाल दिया! ठीक है, मैं उनको धन्यवाद देता हूं और शादी तुम्हें भी धन्यवाद देता हूँ कि आखिर तुमने अपना मुँह तो खोला। देर सबेर मुझे अपनी राय तो बतला दी। ओह, कितना घनघोर परिश्रम करना पड़ा है मुझे तुम्हारा मुँह खुलवाने के लिए! लेकिन अन्तमें मैंने तुमसे यह स्वीकार करवा ही लिया कि तुम भी उन्हींके सङ्गी साथी हो। हां, तुम भी अपने आपको कम्युनिस्ट समझने लगे हो! ऐसा मालूम पड़ता है कि यह कमबख्त बिखवा परिवार पूराका पूरा कम्युनिस्ट बनने के लिए ही पैदा हुआ है। चलो इतिहासमें नाम होजायगा!

'लेकिन छोड़ो इन बातोंको। मुझे तुमसे कुछ दूसरी बातें करनी हैं। मैंने थोड़ी ही देर पहले तुम्हें बतलाया है कि मेरा विचार बदल गया है। अब मैं बटमार बनने नहीं जारहा हूं। अभी वक्त ठीक नहीं है। गांवमें ऐसा कोई नहीं है जिसका भरोसा किया जाय। एक मेंचाका भरोसा था लेकिन वह तो कमीना कुत्ता निकला। दगाबाज! इसलिए मैंने यहाँसे दूर ऐसी जगह चले जानेका निश्चय किया है, जहाँ मुझे कोई पहिचानता ही न हो। बहुत दूर किसी शहरमें चला जाऊँगा। इसीलिए मैं इसतरहकी टोपी पहिने हूं। शहरों में हजारों मजदूर इसतरहकी टोपी पहिनते हैं. उनमें मिल जाना आसान होगा; क्योंकि किसीके चेहरे पर तो यह लिखा नहीं होता है कि यह कौन है और कहाँसे आया है?

'उजेला होनेसे पहले मुझे स्टेशन पहुँच ही जाना चाहिए। वहीं जानेके लिए निकला हूं। सोचा, चलो, जाते-जाते ख्वादीसे भी मिलता चलूँ। सो तुमसे मिलने चला आया। मुझे तुमसे एक काम भी है। इतने कम समयमें मैं वह सब सामान जो तुम मैक्सिमके यहांसे मेरे लिए लाये थे, बेच नहीं सका। कुछ और बचा रह गया है। अधिक तो नहीं है लेकिन जो बचा है वह सारे सामानमें सबसे अधिक कीमती है। ख्वादी, इतनी मेहरबानी करना, दुबारा जब तुम शहर जाओ तो वह सामान साथ लेते जाना और मैक्सिमके हवाले कर देना। उसे बर्बाद क्यों होने दिया जाय? मैं मैक्सिमसे बिगाड़ नहीं करना चाहता। खासकर इससमय तो बिलकुल ही नहीं, क्योंकि आज नहीं तो कल मुझे उसकी मददकी जरूरत पड़ सकती है। और उसके साथ सम्बन्ध बनाये रखने पर तुम भी घाटेमें नहीं रहोगे। कुछ न कुछ फायदा होता ही रहेगा। एण्ड्री वह सामान तुम्हारे यहां पहुंचा जायेगा।

'इतना-सा यह काम जरूर कर देना! टालना मत! मैं तुम्हें तकलीफ न देता; लेकिन दूसरे आदमियोंको यह काम सौंपना उचित नहीं होगा। और फिर तुम इस मामलेमें जानकार भी हो और इसे सही-सलामत निपटानेकी एक तरहसे तुम्हारी जिम्मेवारी भी है। बस, इतना ख्याल रखना कि बाहरी आदमियोंको इस बात का पता न लगने पाये।'

ग्वादी खड़ा होगया और बोला :

'धं रेमे ! कहीं बदेगुनियाको यह मालूम न हो जाय कि तुम यहां हो। मैं एक बूढ़ा आदमी हूं। मुझे दिक मत करो। मेरे अहातेसे निकल जाओ। चुपचाप और जल्दी निकलकर चले जाओ। सवेरा होनेको ही है।'

वह दृढ़तासे और निर्ममतापूर्वक बोला; बोला, नहीं जैसे ललकार उठा हो ! अपनी बात समाप्त कर उसने आरचिलकी ओरसे मुंह मोड़ लिया और किवाड़ोंके पास आकर कुण्डी खोलने लगा।

आरचिल के्षोन्मत्त होउठा।

घर पर चांदका फीका प्रकाश पड़ रहा था लेकिन पोरिया अपनी ओर पीठ करके खड़े हुए ग्वादीको ठीकसे देख नहीं पा रहा था। ग्वादीकी आकृति उसे दीवार पर बने हुए एक काले धब्बेके समान दिखलाई पड़ रही थी।

ग्वादीने कुण्डी खड़काना बन्द कर दिया। आरचिलको ऐसा लगा कि दरवाज़ा खुल गया है और ग्वादी अन्दर चला गया है। फिर भी दीवार पर वह काला धब्बा पहले ही की तरह विद्यमान था। आरचिलको सन्देह होने लगा कि ग्वादी सायबानमें छिपा उसकी हलचलको ध्यानपूर्वक देख रहा है।

और आंगनमें फिर गहरा सन्नाटा होगया था।

आरचिलको ऐसा लगा मनो इस गहरे सन्नाटेका स्रोत उसके ठीक समीप वहीं कहीं विद्यमान हो ! काले धब्बेवाली ग्वादीकी वह आकृति ही जैसे उसका स्रोत थी; सायबानके नीचेसे रेंगता हुआ वह सन्नाटा सारे मकानमें फैल रहा था : और उस गहरे सन्नाटेमें एक ऐसी फटकार भरी थी, जो उसकी आत्माको तिलमिला देती थी। चांदकी किरणों और वृक्षकी टहनियोंकी टेढ़ी-मेढ़ी छायाओंकी झोंपड़ीकी छत, उसकी दीवारों और अहातेकी दूब पर प्रकाश-छायाकी बड़ी ही भयानक आकृतियोंका निर्माण कर रही थीं। ये आकृतियां ग्वादीकी ही तरह भास टिमटिमाती हुई उसकी ओर देख रही

थीं; स्वामीकी ही तरह इन छाया आकृतियोंकी दृष्टि आर्विनके प्रत्येक हावभाव और उसकी हरएक हलचल पर लगी हुई थी; वे आकृतियाँ कान लगाये उसके हृदयकी उस धड़कनमें बसी हुई चिन्ता और सन्तोष सुन रही थीं!

आर्विन डर गया, बुरी तरहसे डर गया! उसने जेबमें से अपना पिस्तौल निकाला और मुट्ठीमें कसकर पकड़ लिया। फिर साँस रोके हुए, दबे पाँवों मकानके फाटककी ओर चला।

वह बिल्लीकी चाल चलता हुआ चोरकी तरह जा रहा था।

२८

आर्विन बिना आवाज़ किये, चुपचाप फाटककी ओर बढ़ने लगा। आशंकित, आतंकसे आक्रान्त वह हर कदम पर पीछेकी ओर मुड़कर देखता जाता था। चलते चलते हरबार जब वह अपने पिस्तौलको ऊँचा उठाता तो उसकी नली चाँदनीमें चमकने लगती थी।

स्वामी सदानन्द नीचेसे सतर्कतापूर्वक आर्विनकी हर गतिविधिका निरीक्षण कर रहा था। वह निश्चयपूर्वक जानता था कि आर्विन उसे नहीं देख पाता। कैंपोंमें रहनेके कारण उसकी आँखें दुश्मनको अँधेरेमें बाघकी तरह देखनेकी आदी थीं। मानो अजगर चाँदनी भेद अपने शिकार हाथीको तरह जकड़ता रहा था। दुश्मनकी सामनेसे सम्पूर्ण हरकत भी उसकी नज़रसे छिपी नहीं रह सकती थी।

उसकी साँस तेज़ी और आर्विनके कदमोंकी आहटोंका पीछा कर रहा होगया था। जो सूत्र स्वामीजीके आत्मबलमें सिये हुए थे वे अचानक झटका खाकर छिन्नभिन्न हो टूट गये थे। आत्मविश्वास सर्वथा ही नहीं रहा, आतंकित हुई थीं। किन्तु वह था और रह किसी तरह भयका मुक्त पद और साथ रह गया, मुक्त हुई आँखें और कदमोंकी आहटें

उसकी दृढ़ता, आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चयको व्यक्त करने लगीं। वह निर्भय होकर सामनेकी ओर देखने लगा; ऐसा लगता था मानो उसकी आँखें आँगन में होनेवाली प्रत्येक हलचलको जैसे पी रही हों।

जब वे दोनों पेड़के नीचे खड़े थे और आरचिल उसे फोड़नेकी कोशिश कर रहा था तभी ग्वादीने यह निर्णय कर लिया था कि वह उस पर बराबर आँख रखेगा और देखेगा कि उसके अहातेसे निकलकर आरचिल कहाँ जाता और क्या करता है! मन ही मन ग्वादीको ऐसा लग रहा था कि आरचिलके इरादे अच्छे नहीं हैं; वह भीषण सङ्कल्प लेकर ही घरसे निकला है। और यही कारण था कि प्रतिरोध और क्रोधसे भरा हुआ वह अपने अनिष्ट सङ्कल्पकी पूर्तिके लिए ही इतनी रात बीते औरकेतीकी सड़कों और गलियोंमें चक्कर काट रहा था। ग्वादी के पास आकर कपड़े पहुँचाने की प्रार्थना तो केवल एक बहाना था। ग्वादीको धोखा देनेके लिए ही उसने यह चाल चली थी। उसका वास्तविक उद्देश्य तो कुछ दूसरा ही होना चाहिये! आजकी रात आरचिलके हाथों अवश्य कोई भयङ्कर अनिष्ट होनेवाला है!

आरचिलने रातकी निस्तब्धतामें चोरकी तरह आकर जो कुछ कहा था केवल उसीके परिणामस्वरूप ग्वादीके मनमें इसतरहकी शङ्काएँ नहीं उठ रही थीं। आरचिल को वह जितनी अच्छीतरह जानता पहिचानता था उतना सारे गाँवमें दूसरा और कोई नहीं जानता था। आरचिल के मनका कोई कोना, उसके हृदयका कोई रहस्य ऐसा नहीं था, जिसे ग्वादी देख न सकता हो। आरचिलके गुप्तसे गुप्त मनोभावोंको वह ग्वादी बड़ी कुशलता और सफलता से ले सकता था। मानना पड़ेगा कि इस काममें उसकी समानता करनेवाला गाँवभरमें और कोई नहीं था।

आरचिल फाटकके समीप पहुँच गया था।

ग्वादीने निश्चय किया कि आरचिल जैसे ही फाटकसे बाहर निकलकर गलीमें चला जाय और वृक्षोंकी ओट होजाय, वह सायबानके नीचेसे निकलकर

मिला कि ग्वादीको सुनाई पड़ जायगा। रातके इस सन्नाटेमें मक्खीके परोंकी फड़फड़ाहट भी सुनाई दे सकती थी, फिर आदमीके हिलने-डुलनेकी आवाज़ कहाँ छिपेगी? वह कान खड़े करके सुनने लगा।

कहींसे एक सूखी टहनीके टूटनेकी आवाज़ सुनाई दी। ग्वादीके कानोंको वह आवाज़ बिजलीके कड़कनेकी आवाज़के समान मालूम हुई। वह फिरकनीकी तरह घूम गया और अपने आपको अपनी झोंपड़ीके ठीक सामने खड़ा पाया। अभी वह अपने अगले क़दमके बारेमें सोच भी नहीं पाया था कि झोंपड़ीके पिछवाड़े पत्ते खड़कना, सूखी टहनियाँ टूटने और किसीके कूदनेका स्वर सुनाई दिया। फिर किसीके दौड़ते हुए पाँवोंकी चाप गूँजकर खो गई और पहले जैसी निस्तब्धता छा गई। सब कुछ पलक झाँपते ही हो गया था।

ग्वादी झोंपड़ीका चक्कर लगाकर सीधा पिछवाड़ेकी बागड़की ओर लपका। अन्धेरेमें आँखें फाड़ता हुआ वह सुननेका प्रयत्न करने लगा।

पिछवाड़े वाली बागड़के उसपार एक छोटा सा मैदान था। इस समय मैदान वृक्षोंकी घनी छाँहके कारण अन्धेरेमें खो-सा गया था। उस मैदानमें होकर गाँवके ढोर-डांगर जङ्गलमें चरनेके लिये आया करते थे इसलिए वहाँ भूलभुलैयाकी तरह कई पगडण्डियाँ बन गई थीं। ग्वादी उन पगडण्डियोंसे अच्छी तरह परिचित था। आगे चलकर वे सब पगडण्डियाँ एकमें मिल जाती थीं और झाड़ियों तथा झाड़-झंखाड़ोंका चक्कर लगाती हुई मकानोंके पिछवाड़े-पिछवाड़े माउमिलकी चली जाती थी। वह रास्ता सड़कसे ज्यादा दूर नहीं था, कभी सड़कके बिलकुल करीब आ लगता था, कभी थोड़ा दूर हट जाता था।

एकदम सारी बात ग्वादीकी समझमें आ गई। आगंतुक गहरी चाल चल गया था। ग्वादीको धोखा देनेके लिए पहले वह बागड़की जड़में दुबक गया, वहाँसे किसी तरह खिसकता-खिसकता या चारों हाथ-पांव पर चलता हुआ झोंपड़ीके निकट आया और उसकी बगलसे होता हुआ बागड़ फाँद गया। अब मैदानके अन्धेरे झुरमुटमें होकर झाड़ियोंमें गायब होगया था।

लेकिन ग्वादीके सामने अभी महत्वका सवाल यह नहीं था कि मारचिल कैसे भागा और कैसे फाँदा? सब सारा महत्व इस बातका पता लगानेमें था कि वह भाग कर गया किधर है? जो रास्ता उसने पकड़ा था वह सीधा मारामिलको ले जाता था। ग्वादीके मनमें भयङ्कर सन्देहों और अनिष्टोंकी सृष्टि होने लगी।

मारचिलके पीछे भागना खतरेसे खाली नहीं था। उस घने झाड़-झंखाड़ वाले अन्धेरे रास्ते पर अपना ही हाथ एक दूसरेको नहीं सूझता था। दूसरे उसका पीछा करना भी असम्भव था। और सबसे बड़ा खतरा तो यह था कि मारचिल अन्धेरेमें छिपकर ग्वादीको बड़ी आसानीसे यमलोक भेज सकता था। अब क्या किया जाय?

ग्वादीका दिमाग बड़ी फुर्तीसे काम करने लगा। तड़ितवेगसे वह नयी-नयी योजनाएँ सोचने लगा। पहले उसके मनमें आया कि दौड़ा जाकर गेराको खबर करदे और इस काममें उसकी सहायता ले। लेकिन गेराके घर पहुँचनेका सबसे पासका रास्ता भी उसी झाड़-झंखाड़में से होकर जाता था जिधर कि मारचिल गया था। सड़कसे लम्बा चक्कर लगाकर जाने और गेरासे बहस मुबाहसा करनेका वक्त नहीं था। फिर वहाँसे लौटनेमें भी काफी वक्त लग जायगा। तबतक तो मारचिल अपने मन्सूबे पूरे कर भाग भी चुका होगा।

शोर मचाये? नहीं, वह भी कारगर उपाय नहीं था। जैसे ही ग्वादी शोर मचानेके लिए मुँह खोलता कि सबसे पहले मारचिल ही वहाँ आता और उसका गला घोंटकर हमेशाके लिए उसका मुँह बन्द कर देता।

गाँववाले यदि उसकी आवाज सुन भी लेते तो भी उन्हें अपने बिस्तरोंमें से उठने, कपड़े पहनने और उसकी ओर दौड़कर आनेमें काफी वक्त लग जाता क्योंकि ओरकनीके मकान घने बसे हुए तो थे नहीं। एक मकान यहाँ था तो दूसरा वहाँ था। इससे तो ज्यादा सरल उपाय यह था कि वह किसीके घरमें जाकर उसे जगा लेता। लेकिन गेरावाली आपत्ति यहाँ भी सामने खड़ी थी। पहले उसे 'क्या है?' 'क्या है?' आदि प्रश्नोंका उत्तर

देना पड़ेगा, पूछनेवालेकी शङ्काओंका समाधान करना होगा और तबतक तो उजेला हो जायगा।

वह अपनी जगह पर खड़ा अभीतक कान लगाये सुन रहा था। निश्चय उसे कुछ सुनाई दिया था; क्योंकि वह दौड़कर झोंपड़ीके पास होता हुआ आँगनमें आया और बागड़की ओर लपका।

उसने अपनी अचकनके पल्ले ऊपर उठाकर कमरबन्दमें इसतरह खोंस लिये कि तलवार उनके बीचमें छिप गई। फेंटा उसने सिर पर कसकर बांध लिया। फिर एक ही छलाँगमें बागड़ फाँदकर गलीमें आया और तेजीसे दौड़ता हुआ सड़क पर पहुँच गया।

आरामिल खतरेमें थी। दुश्मन वहीं जारहा था। सड़कके रास्ते तेजीसे दौड़ता हुआ वह उसके पहले आरामिल पहुँच जाय और फाटक पर ही दुश्मनको संभाल ले। यह थी उसकी योजना। उसे आशा थी कि वह आरमिलके वहाँ पहुचनेसे काफी पहले जा पहुँचेगा।

लेकिन इस पूरी योजना की सफलता अन्ततोगत्वा उसकी टाँगों पर निर्भर करती थी। उसकी टाँग थकना नहीं चाहियें; उन्हें हिरनकी तरह फुर्ती दिखलानी चाहिये, तभी वह अपने दुश्मनको परास्त कर सकेगा।

अपने जीवनमें सिवा जवानीके और सो भी संभवतः स्वप्नों और कल्पनाओंके, वह कभी इतना तेज नहीं दौड़ा था!

उसकी साँस भर आई। सीना धोंकनीकी तरह चलने लगा। अंतड़ियाँ उछल-उछलकर कलेजेसे टकराने लगीं। वह कुत्तेकी तरह हाँफने लगा। घोड़ेकी तरह उसके मुँहसे फेन निकलने लगा! कपालसे पसीनेकी धाराएँ बहने और भौंहों पर होती हुई आँखोंके आगे टपकने लगीं। लेकिन उसने कदम धीमे नहीं किये। अपनी मुट्ठियाँ जोरसे, और जोरसे कसता हुआ वह दौड़ता ही रहा।

जब उसे सामने टीले पर आरामिलकी धुधली आकृति दिखलाई पड़ी तो उसके जी में जी आया। प्रसन्न होकर उसने अपने आपको शाबाशी दी

और बोला : 'शाबाश, मेरे शेर ! मार लिया है मैदान' एक ही हल्लेकी कसर रह गई है। लगादे पूरी ताकत !'

और जैसे उसमें नई शक्ति, नया साहस संचरित हो उठा।

बड़ी सड़कमें से जिस ओर आरामिल पर जानेका रास्ता फटता था वहीं आकर वह रुक गया। मिलकी ओछी चढ़ाई भी यहींसे शुरू होती थी। उसने मिलके फाटक और बागड़की ओर एक निगाह डाली। चाँदनी रातमें वहाँसे सारा दृश्य साफ साफ दिखलाई पड़ रहा था।

'मारे गये !' उसके मुँहसे शब्द भी नहीं निकल पाये थे कि वह चढ़ाई पर कटे पेड़की तरह गिर पड़ा और उसने अपना सिर धरतीके समतल कर लिया।

फाटकके एक ओर किसीकी काली छाया खड़ी दिखलाई दी; कोई बागड़से लगा हुआ खड़ा था।

कहीं उसे देर तो नहीं हो गई ?

उसने सिर उठाकर देखा। वह छाया बागड़में घुसती हुई नजर आई।

भयङ्कर क्रोध और निराशाके कारण ग्वाबी पागल हो उठा। गलेमें से उठती हुई भीषण ध्वनिको रोकनेके लिए उसने इतने जोरसे ओठ भींचे कि खून ही आ गया, और उसने दोनो हाथोंसे अपना मुँह बन्द कर लिया। उसे अपने कल्पनाचक्षुओंके आगे एक बड़ा ही भयङ्कर दृश्य दिखलाई पड़ा : आरामिलसे होलीकी तरह लपटें आसमानमें उठ रही थीं !

अपनी बची-खुची शक्तिको समेटकर ग्वाबी उठ खड़ा हुआ और ऊपरकी ओर लपका। लेकिन तबतक वह छाया गायब हो चुकी थी।

अपने दोनों हाथ हिलाता हुआ वह चीलकी तरह चढ़ाई पर झपटा जा रहा था। उसका लक्ष्य वह जगह थी जहाँ उसने उस छायाको थोड़ी देर पहले देखा था।

वह जैसे उड़ता हुआ बागड़के पास जा पहुँचा। जिस जगह वह छाया खड़ी थी वहाँसे कुछ पटिये निकालकर अन्दर घुसने लायक जगह बना ली

गई थी। म्वादी उस सेंघमें घँसा। किसीने उसके कन्धे पर ज़ोरका वार किया! चोट बड़ी कारी बैठी। म्वादी गिरते गिरते बचा। वार करनेवाले हाथने ही शिकंजेकी तरह उसका कन्धा पकड़कर उसे अन्दर मिलके अहातेमें घसीट लिया!

'तो तू चूहेदानीमें फँस ही गया न?' किसीने फुफकारकर उसके कानमें कहा और उसने मारचिन पोरियाके क्रोधसे काले पड़ रहे चेहरे और अँगारेकी तरह लाल-लाल आँखोंको अपने चेहरेके ठीक सामने देखा।

'अब प्राण नहीं बच सकते।' म्वादीने सोचा और दम साध लिया।

मारचिनने मौन, निस्पन्द और शिथिल होरहे म्वादीको झकझोरते हुए क्रोध भरे स्वरमें कहना शुरू किया :

'मैं तो जानता ही था कि तू मेरा पीछा करेगा। मैं तेरी प्रतीक्षा ही कर रहा था। अरे कमीने कुत्ते, एकदम आरामिलके लिए तेरे दिलमें इतना प्रेम यहाँ से उमड़ आया? आया बड़ा 'बचानेवाला! देखो तो इस हरामज़ादेको, हम लखाड़िये और उठाईगिरे हो। जानता हूँ तुझे क्या चीज़ यहाँ खींच लाई है! तुझे आरामिलकी नहीं, अपना मकान बननेके लिए पटियोंकी फ़िक्र है। तू मुझे क्या चरायेगा? तेरे जैसे पचासोंको अपनी जेबमें रखता हूँ! जैसे हम कुछ जानते ही नहीं! क्या रङ्ग पलटा है बातकी बातमें कि हैरत होती है! नौसौ चूहे खाकर अब बिलय्या हज करने चली है! कलका चोर और उठाईगीरा महन्तगीरीका ढोंग कर रहा है! भूल गया कि तू किसके मुकाबलेमें खड़ा होरहा है? टाँग पर टाँग धरकर खड़ा चीर दूँगा।'

उसने म्वादीको कईबार ज़ोरोंसे झकझोरा और फिर गुर्राने लगा :

'हमारी कबूतर और हमसे ही गटरगूँ? जिसके जूठे टुकड़े खाता रहा उसीकी पिण्डी पकड़ने दौड़ पड़ा? नमकहराम! बड़ा आया मुझे पकड़नेवाला! अच्छा हुआ कि तू पीछे लगा न चला आया; नहीं तो मुझे तेरे गन्दे खूनसे अपने हाथ गन्दे करना पड़ते! लेकिन जिन्दा तो तुझे अब भी नहीं छोड़ूँगा! चल मेरे साथ!'

ग्वादीको क्षिणीन-हुआ प्रतिरोध न करते देख आरचिल उसे मिलके अहातेके एक कोनेकी ओर घसीटता हुआ ले गया। उस कोनेमें लकड़ीके बहुत से शहतीर और पटिये एक दूसरे पर जमाकर रखे हुए थे। ऐसी कई थप्पियाँ लगी हुई थीं।

आरचिलने एक थप्पीकी ओर ग्वादीको धक्का दिया।

'देख रहा है? ये तेरे शहतीर और तख्ते हैं। मैंने अपने हाथोंसे छाँट-छाँटकर थप्पी लगाई थी। तेरे लिए मैंने इतना परिश्रम किया था। सपनेमें भी यह नहीं सोचा था कि तू विश्वासघात करेगा! इन्हें आखरी बार जी भरकर देख ले। सबसे पहले मैं इन्हींमें आग लगाऊँगा!'

ग्वादीको जैसे होश आया। उसका शिथिलशरीर तन गया, उसके रग-पुट्ठे धनुषकी प्रत्यञ्चाकी तरह खिंच गये। वह ज़ोर लगाकर अपना हाथ आरचिलकी पकड़में से छुड़ानेका प्रयत्न करने लगा।

ग्वादीको ज़ोर लगाते देख आरचिलने अपनी मुट्ठी और भी कस ली और डपटकर बोला:

'अच्छा, तो तू अभीतक जिन्दा है? और मैं तो समझता था कि इसने दम तोड़ दिया है! खबरदार! जो हिला डुला भी है! इतनी जल्दी क्यों मचा रहा है? अभी सब चुटकी बजाते हुआ जाता है! मैंने सब पहलेसे ही सोच विचारकर तैयारियाँ कर रखी थीं। बागड़में वह सेंध देख आया है न? मैंने पहलेसे ही पटिये ढीले करके तैयार कर ली थी! हाँ, मैंने यह नहीं सोचा था कि वह सेंध तेरे भी काममें आयेगी। उस उल्लूके पट्ठे एण्ड्रीको तेज़ शराबकी एक बोतल सरेशाम ही पकड़ा दी थी। वह ज़रूर पूरी बोतल पी गया होगा और अब पड़ा मुर्दोंसे बाज़ी ले रहा होगा। और यहाँ यह सूखी घास देख रहा है न? बिलकुल घासलेटकी तरह जलेगी। देख!'

ग्वादीको अपने पीछे घसीटते हुए आरचिल एक थप्पीके पास गया और पटियोंके बीचमें रखे हुए घास के एक पूलेको अन्दरसे खींचकर ज़मीन पर बिखेर दिया।

'अब मैं इसे सबसे पहले तेरे पहियोंके नीचे लगाऊँगा। और जब पहिये अच्छीतरह आग पकड़ लेंगे तो तुझे भी उठाकर आगमें झोंक दूँगा। तूने बहुत मटरगश्ती कर ली, अब तुझे जिन्दा रहनेका कोई हक़ नहीं है। इससे अच्छी मौत तुझे मिल भी नहीं सकती। नहीं तो मुझे तेरे खूनसे अपने हाथ रंगना पड़ते। अब तेरी राखका भी पता न चलेगा।' तेरे उन पिल्लों और तेरी आशना उस हरजाई रॉडके रोनेके लिए तेरी लाश भी न रहेगी!'

उसने ग्वादीका हाथ छोड़ दिया, फुर्तीसे घासका पूला उठाकर पहियोंके अन्दर घुसेड़ा, जेबमें से दियासलाई निकाली और एक काड़ी सुलगाई।

ग्वादी आरचिल पर झपट पड़ा और परिणामोंकी चिन्ता किये बिना फूँक मारकर दियासलाई बुझा दी।

आरचिलने उसे एक बड़ी ही भद्दी गाली दी। फिर दोनो हाथोंसे उसका गला पकड़कर झकझोर दिया और इतने ज़ोरका धक्का दिया कि ग्वादी कद्दूकी तरह भदाक्-से जमीन पर जा गिरा।

ग्वादीके गिरनेकी आवाज़से आरचिलको विश्वास होगया कि वह काफ़ी देरतक उठ न सकेगा। और उसने फिर दियासलाई घिसी।

भक्-से एक काड़ी जल उठी और पहियोंके बीचमें से लपटें उठने लगीं। ग्वादीमें न जाने कहाँसे सौ हाथियोंका बल आगया। वह गेंदकी तरह उछलकर खड़ा होगया और उसने म्यानसे तलवार खींच ली। तलवारकी मूठको दोनों हाथोंमें कसकर उसने उसे हथौड़ेकी तरह ऊँचा उठालिया। फिर एक ही छलांगमें वह आरचिलके ठीक पीछे जा पहुँचा और अपने शरीरकी पूरी ताक़त लगाकर तलवारका हाथ आरचिलके सिर पर दे मारा!

पोरियाके मुँहसे आवाज़ भी न निकली। वह वहीं ढेर होगया।

ग्वादीने उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा! वह लपककर पहियोंके पास पहुँचा, जिनके बीचमें से लपटें उठ रही थीं। उसने घासका सुलगता हुआ पूला अन्दरसे खींच निकाला और जमीनपर फेंक दिया। फिर पाँवोंसे

पुचकार-पुचकारकर, पीट पीटकर आग बुझाने लगा। इस काममें वह इतना दत्तचित्त होगया कि उसे आरचिनकी खबर भी मालूम नहीं पड़ रही थी। केवल कभी कभी वह एक निगाह आरचिनकी ओर यह देखनेके लिए डाल देता था कि कहीं वह रेंगता हुआ आ तो नहीं रहा है। उसके मनमें खटका लग रहा था कि आरचिन रेंगने लगा तो निश्चय ही वह उसके पाँवमें से जलता घास खींच ले जायगा।

लेकिन किसीने उसके काममें बाधा नहीं पहुँचाई।

जब आग पूरी तरह बुझ गई तभी उसने दूसरी ओर ध्यान दिया।

'लेकिन आरचिनकी ओर बिलकुल सन्नाटा क्यों है? किसी तरहकी आवाज या हलचल क्यों नहीं हो रही है?'

उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह मुड़कर उस ओर ध्यानसे देखने लगा जहाँ थोड़ी देर पहले उसकी तलवारकी चोट खाकर आरचिन गिरा था।

तख्तोंकी घणके बाईं ओर एक शरीर पड़ा था—निस्पंद और मौन। चाँदकी तिरछी किरणें उस शरीरके एक हिस्से पर पड़ रही थीं।

थोड़ी देर कान लगाकर सुनने लगा। बिलकुल निस्तब्धता थी। केवल उसके हृदकी धड़कन सुनाई दे रही थी।

वह तलवारके सहारे झुक गया और धरतीपर पड़े हुए उस शरीरके समीप मुँह ले जाकर देखने लगा।

उसकी घिग्घी बँध गई। वह चौंककर पीछे हट गया। उसके रोंगटे खड़े होगये और वह जूड़ीके बीमारकी तरह थरथर काँपने लगा।

जो कुछ उसकी आँखोंने देखा वह वीभत्स था, भयंकर रूपसे वीभत्स! देखकर भी उसकी समझमें नहीं आया।

कहीं उसे सन्निपात या प्रेतबाधा तो नहीं होगई है? यह उसने क्या देखा!

मनुष्यके मुँह चेहरेसे मिलती जुलती कोई चीज़ एक लम्बे, लगभग काले चेहरेमें दीख रही थी। खुले मुँहके काले गड्ढेमें से अर्धचन्द्राकार दन्तपंक्ति

भयानकरूपसे झांक रही थी। गाल पर लटकी हुई एक आंख मानो शीशेकी तरह चमक रही थी; उसकी स्थिर, निर्जीव दृष्टि मौतका आभास दे रही थी।

कहीं उसने इसे जानसे तो नहीं मार डाला? बटे सिरवाली वह बीभत्स आकृति क्या सचमुच मार्गरिता पोरियाकी ही थी?

उस विकृत चेहरेकी ओर दुबारा देखनेका साहस स्वादीको न हुआ। अपनी श्रवणेन्द्रियोंको एकाग्र कर वह सुनने लगा। संभवतः कोई ध्वनि सुनाई पड़ जाय और उसके सारे सन्देह निर्मूल हो जायें। न जाने कबतक वह इसीतरह स्थिर खड़ा सुननेका प्रयत्न करता रहा लेकिन उसे कुछ भी सुनाई न दिया।

हां, वह सन्नाटा भौतिक ही था!

हंगर्गुण-सा वह पीछे हटने लगा। फिर मुड़कर, उस शवसे दूर और दूर भाग जानेके विचारसे, आगेकी ओर चलने लगा।

लेकिन दो क़दम चलनेके बाद उसे ऐसा लगा मानो कोई चुम्बककी तरह उसे पीछेकी ओर खींच रहा है, पीछे देखनेके लिए विवश कर रहा है। उसने निस्तब्धताके हिमशीतल करका स्पर्श अपने कन्धेपर अनुभव किया। उसके सारे बदनमें कँपकँपी दौड़ गई और वह जहांका तहां जंजीरोंमें जकड़ा हुआ सा खड़ा रह गया।

अब कहीं चलकर उसे खयाल आया कि वह अकेला है! और अकेलेपनका यह खयाल इतना बोझिल था कि उसके भारके नीचे स्वादीकी आत्मा कुचली जाने लगी, उसकी सांस घुटने लगी...

क्यों न वह किसीको पुकारे?

उसने अपना मुंह खोला और चिल्लाने लगा। उसने सोचा कि उसकी आवाज़ सारे मोरकेती गांवको जगा देगी। लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकली। वह एक मौन आक्रोश था!

स्वादी पागलकी तरह अपने चारों ओर देखने लगा। पहले उसने अपनी बाईं ओर देखा और फिर दाहिनी ओर।

चाँदनी धुंधला गई थी। पौ फट रही थी। अरुणोदय होने को ही था। हवामें अस्पष्ट सी छाया-आकृतियाँ उभरने लगी थीं।

और अंधेरेके झुटपुटेमें से प्रकट होकर अन्धड़की तरह उड़े आते चेहरे ग्वादीकी आँखोंको दीख पड़ने लगे थे।

पहाड़ियों पर चढ़ते, ढालसे उतरते, खाई-खन्दकसे निकलते, ऊपरसे और नीचेसे, इधरसे और उधरसे, सब ओरसे लोगबाग आरामिलकी ओर दौड़े चले आ रहे थे। एक-दो नहीं, चार-छह नहीं, आठ-दस नहीं, कई थे। इतने अधिक कि अनगिनत! आनेवालोंकी आकृति धीरे धीरे स्पष्ट होती जा रही थी। वे सब ग्वादीके ही पड़ोसी थे। उसीके गाँव और खेतोंके रहनेवाले, उसीके अपने लोग थे। वह गेरा दौड़ा चला आरहा था, सबसे आगे भन्झा-वातकी तरह। उसके पीछे नेया और दूसरे युवक-युवतियाँ थीं। मोटा ताज़ा जोसिमी टांग पर भेड़ियेकी तरह दौड़ा आ रहा था। उसके पीछे उसकी पुरी दोनों दौड़ रही थी। उधर दूर पर झाड़ियोंमें ओनिसेका चौकनुमा मुँह और कँपती हुई छोटी-सी दाढ़ी झिलमिला रही थी। दूर झोंपड़ियोंमें से परखवाला तीन पाँवके घोड़ेकी तरह बेचैनीसे फुदकता हुआ बढ़ा आरहा, था। गीया, आगेकी ओर झुका हुआ, एक टीले पर खड़ा अपने नाबकी खोजमें टक लगाये खड़ा रहा था। वह अपने एक हाथमें तलवार पकड़े, था और दूसरे हाथसे आँखों पर ओट किये हुए था। वह पत्थरकी मूर्तिकी तरह निरानन्द खड़ा था। उसने ग्वादीकी ओर देखा और धीरेसे कहा :

'अरे, यह क्या है? मैं क्या देख रहा हूँ?'

ग्वादीके नेत्र व्यग्रतापूर्वक एक छाया आकृतिसे दूसरी पर, एक समूहसे दूसरे समूह पर और एक चेहरेसे दूसरे चेहरे पर पड़ रहे थे। जैसे कुछ खोगया हो, जैसे कोई रह गया हो इसतरह वे आँखें विह्वलतापूर्वक किसीको खोज रही थीं।

'तुम मुझे ढूँढ रहे हो, ग्वादी, लेकिन मैं तो यहाँ तुम्हारे पास ही खड़ी हूँ। तुमने पुकारा और मैं आगई।' जिसे सुननेके लिए वह उत्कण्ठित होकर प्रतीक्षा कर रहा था। वह स्वर उसे सुनाई दिया।

और वह उन सबको भूल गया जो अभी दूर थे।

उसके सामने मरियम खड़ी थी। उसकी दोनों बड़ी-बड़ी आँखोंमें प्रेमका प्रकाश पूनोके चाँदकी तरह जाज्वल्यमान होरहा था।

ग्वादी काँप गया। उसने बोलना चाहा लेकिन उसे शब्द ही ढूँढ़े न मिले।

'ग्वादी, हम सब तुम्हारे साथ हैं।' मरियमने कहा और धीरेसे, बिलकुल धीरेसे पूछा : 'क्यों ग्वादी हैं न?'

'हाँ, मरियम!' बड़ी कठिनाईसे वह केवल इतना ही कह पाया और उसने अपनी रक्तरंजित तलवार उसके आगे कर दी।

दोनों चुप हो गये। कोई कुछ न बोला।

अन्तमें ग्वादीने ही शान्ति भङ्ग की :

'तुमने मेरे बच्चों को तो नहीं देखा है, मरियम?- तुम उन्हें अकेला तो नहीं छोड़ आई हो?'

'वे भी यहाँ अभी आ जाएँगे। बस, आते ही होंगे।...वह देखो! उधर! मेरा खयाल है कि शायद वे ही आरहे हैं।'

दूर, सवेरेके दूधिया प्रकाशमें पाँच छड़ियाँ सी हिलती हुई दिखाई दीं। वे छड़ियाँ विभिन्न लम्बाईकी थीं और लम्बाईके क्रमसे एकके पीछे एक चली आ रही थीं। ग्वादीने अपने बच्चोंको पहिचान लिया : बदेगुनिया, गुंगुनिया, सितुनिया कुनुनिया और चिरिमी!

हठात् वह अस्तव्यस्त होगया। उसके मुँहसे एक कंपित आह निकल गई। उसने तलवार जमीन पर फेंक दी और अपने रक्तरंजित हाथोंको पीठके पीछे छिपा लिया।

'नहीं, नहीं, मरियम! उन्हें यहाँ मत आने दो! जाओ, दौड़ो जाओ और उन्हें वहीं रोक दो!' उन्हें वापिस घर भेज देना। उनसे कह देना कि